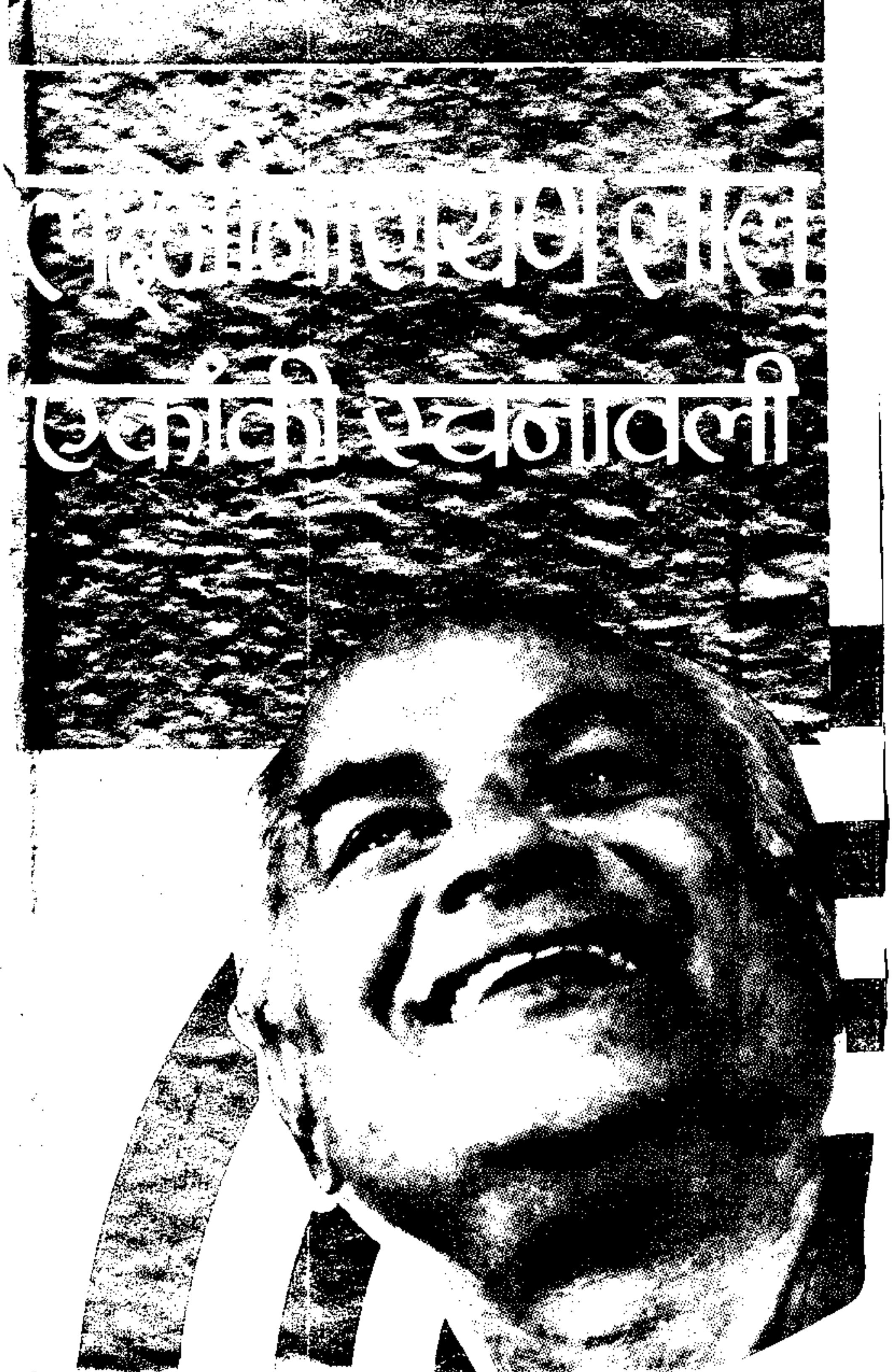
लक्ष्मीनारायण लाल
एकांकी रचनावली

लक्ष्मीनारायण लाल एकांकी रचनावली

खंड दो

प्रकाशकीय

किसी मूर्धन्य और अद्भुत मेधाशील साहित्य-सर्जक को आद्यंत जानने-समझने की दिशा में कुछ वर्ष पूर्व एक जोरदार अभियान शुरू हुआ था जिसका श्रेय प्रकाशन-जगत को जाता है। साहित्य के महान सर्जकों-हस्ताक्षरों का सम्पूर्ण कृतित्व रचनावलियों-ग्रंथावालियों की मोटी-मोटी जिल्दों में खूबसूरती से संजोकर साहित्य-अनुसंधित्सुओं-जिज्ञासुओं के लिए उपलब्ध कराने का यह सिलसिला अनवरत चलता यदि प्रकाशन व्यवसाय में कागज एवं अन्य संसाधनों की अप्रत्याशित मूल्य-वृद्धि ने व्यवधान न पैदा कर दिया होता। फलस्वरूप अभी भी अनेक विद्वान लेखक शेष हैं जिनका साहित्य फुटकर किताबों, पत्र-पत्रिकाओं अथवा अप्रकाशित पांडुलिपियों के पन्ने में बिखरा पड़ा है। हमने देखा कि इस क्षेत्र में प्रयास किए जाएँ तो अनेक प्रतिभाओं से पाठक वर्ग को परिचित कराया जा सकता है। अतः अपने सीमित साधनों में ही यह बड़ा श्रम और व्यय साध्य काम हमने हाथ में लिया और रचनावलियों के प्रकाशन का टूटा हुआ सिलसिला फिर से शुरू किया है। इस दिशा में हमने साहित्य की एक खास विधा नाटक-एकांकी पर पहल की है और अभी तक डा० रामकुमार वर्मा, डा० शंकर शेष के संपूर्ण नाट्य साहित्य को नाटक रचनावली का रूप दे चुके हैं। और अब प्रस्तुत है हिन्दी रंगमंच के सुप्रतिष्ठित लेखक-नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल की एकांकी रचनावली—दो खण्डों में।

डा० लाल उन महान नाटककारों में से हैं जिन्होंने रंगमंच के विभिन्न

आयाम उद्घाटित किए। उसे नयी दिशाएँ दीं और उसका मार्ग-दर्शन किया। नाटक और एकांकी लेखन में उन्होंने अपनी अद्भुत मेधा और प्रखर बौद्धिकता का परिचय दिया। अपने नाटकों-एकांकियों में डा० लाल ने समसामयिक समस्याओं, मनोवैज्ञानिक द्वन्द्वों, राजनीतिक-सामाजिक गतिविधियों और पौराणिक-ऐतिहासिक घटनाओं का सजीव चित्रण किया। उन्होंने विदेशी रंगमंच का 'बायकाट' करके स्वदेशी रंगमंच को गति प्रदान की, यही उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि और भारतीय रंगमंच को महान देन रही। उनके इन विविध एकांकियों से भारतीय जन-मानस को यदि कुछ भी लाभ हुआ तो हम अपना श्रम सार्थक समझेंगे। आशा है सभी साहित्य-अनुसंधित्सुओं-जिज्ञासुओं के लिए यह ग्रंथ उपयोगी सिद्ध होंगे और और उन्हें शोध-कार्य मे इनसे सहायता मिलेगी।

क्रम

पीढ़ियों का संघर्ष / 9
भावना और संस्कार / 28
कुछ और कुछ / 34
आंटी और आंटी / 44
हाय अंकल / 53
चोर-चोर बहन-भाई / 62
क्यू में / 71
गुप्त धन / 80
अब और नहीं / 97
केवल तुम और हम / 110
दूसरा दरवाजा / 129
फिर बताऊँगी / 148
धीरे बहो गंगा / 162
हाथी, घोड़ा, चूहा / 173
काफी हाउस में इंतजार / 193
अखबार / 210
परिचय / 221
शहर / 231
अप्रासंगिक / 247
खेल / 256
एक घंटा / 272
नहीं / 281
क्रिकेट / 291
भगवती जागरण / 297
एक शून्य की हत्या / 303
डिनर पार्टी / 308
हत्या की राजनीति / 313
पालिटिक्स ऑफ ह्यूमन ट्रेजेडी / 320
ड्रिल / 323

324 / वापस घर आना
325 / शादी
331 / दो व्यक्ति
337 / इतिहास की कक्षा
342 / बीरबल की खिचड़ी
347 / नया तमाशा
356 / हेमू का बलिदान
366 / लड़कियाँ
378 / मैं और मैं
383 / सबरंग मोहभंग
404 / माता
413 / फुटबाल
424 / बूढ़े पुत्रों की जवान माँ
436 / शुरू हो गया नाटक
443 / आँखों देखा तमाशा
453 / वह मेरा पति
461 / तुम चन्दन हम पानी
473 / बाहर का रास्ता
485 / सीता रामायण
498 / चंडी दी वार
508 / खाक एक सूरत बहुतेरी
520 / आईना देख अपना
540 / खुशबू
570 / इनविज़ीलेटर
582 / बिल्ली का खेल
592 / बन्दर का खेल
596 / झील में चन्द्रमा
605 / राजा लंबोदर

पीढ़ियों का संघर्ष

(अखिल भारतीय रूपक)

पात्र

अशोक
प्रान
मधु
राजा
भूपेन्दर (भूपी)
रजनी
मंगल
दादू
ईश्वरसरन
बहू
प्रोफेसर
रामदास

324 / वापस घर आना
325 / शादी
331 / दो व्यक्ति
337 / इतिहास की कक्षा
342 / बीरबल की खिचड़ी
347 / नया तमाशा
356 / हेमू का बलिदान
366 / लड़कियाँ
378 / मैं और मैं
383 / सबरंग मोहभंग
404 / माता
413 / फुटबाल
424 / बूढ़े पुत्रों की जवान माँ
436 / शुरू हो गया नाटक
443 / आँखों देखा तमाशा
453 / वह मेरा पति
461 / तुम चन्दन हम पानी
473 / बाहर का रास्ता
485 / सीता रामायण
498 / चंडी दी वार
508 / खाक एक सूरत बहुतेरी
520 / आईना देख अपना
540 / खुशबू
570 / इनविज़ीलेटर
582 / बिल्ली का खेल
592 / बन्दर का खेल
596 / झील में चन्द्रमा
605 / राजा लंबोदर

पीढ़ियों का संघर्ष

(अखिल भारतीय रूपक)

पात्र

अशोक
प्रान
मधु
राजा
भूपेन्दर (भूपी)
रजनी
मंगल
दादू
ईश्वरसरन
बहू
प्रोफेसर
रामदास

[संगीत के बाद 'फेड्स इन' कालेज के लड़के-लड़कियों का शोर]

'विद्यार्थी एकता जिंदाबाद'
'प्रिंसिपल हाय-हाय'
'हमें पुराने अध्यापक नहीं चाहिए ।'

[प्रोफेसर की आवाज ऊपर उठती है ।]

प्रोफेसर : खबरदार···जो किसी ने कानून तोड़ने की कोशिश की ! सावधान, सुनो-सुनो ···यह कालेज तुम्हारा है । तुम्हीं लोग हमारी शक्ति हो । नहीं-नहीं···कालेज की प्रापर्टी पर हाथ नहीं लगा सकते । नहीं-नहीं··· ये मेज-कुर्सियाँ, कापी-किताबें···

[आवाज शोरगुल में डूब जाती है ।]

प्रोफेसर : रजनी ! रजनी ! सुनो रजनी !

रजनी : यस सर !

प्रोफेसर : बताओ यह क्या तमाशा है ? यह हड़ताल···यह हिंसा क्यों ?

रजनी : सर, आप उधर चलिए, वरना मुझे आपसे बातें करते हुए अगर वे लड़के देख लेंगे, तो मेरी शामत आ जाएगी···।

प्रोफेसर : अच्छा-अच्छा, आओ···हाँ, अब बोलो···।

रजनी : सर, बात यह है कि पोलिटिकल साइंस के प्रोफेसर गोखले साहब हैं न, उनसे लड़के पढ़ना नहीं चाहते ।

प्रोफेसर : मगर क्यों ? प्रोफेसर गोखले इस कालेज के ऐसे अध्यापक हैं, जिन पर कालेज को गर्व है । कितनी इज्जत है इनकी । अपने इसी शहर में नहीं, पूरे मुल्क-भर में । इनके पढ़ाये हुए विद्यार्थी आज बड़े-बड़े अफसर और ऊँची जगहों पर हैं ।

रजनी : यही तो बात है सर, प्रोफेसर गोखले बहुत पुराने पड़ गए हैं । न उनकी बातें विद्यार्थी लोग समझ पाते हैं, न विद्यार्थियों की बातें, उनके प्रश्न प्रोफेसर गोखले समझते हैं ।

प्रोफेसर : कमाल है । कहाँ विद्यार्थी प्रोफेसर गोखले के क्लास में बैठने के लिए पागल हुआ करते थे, कहाँ अब कोई उनसे पढ़ना नहीं चाहता ।

रजनी : सर, असल बात यही है ।

प्रोफेसर : तो न पढ़े कोई प्रोफेसर गोखले से···। इसमें फिर इस हड़ताल और 'वाइलेंस' की क्या जरूरत ?

रजनी : अरे आपको पता नहीं, कल क्लास में प्रोफेसर गोखले ने एक लड़के को झापड़ मार दिया।

प्रोफेसर : उसने बदतमीजी की होगी। मैं यह हर्गिज मानने को तैयार नहीं, प्रोफेसर ने यूं ही···

[पृष्ठभूमि का शोर छा जाता है।]

रजनी : देखिए···देखिए···वह लड़का आग लगाने जा रहा है···आफिस में आग।

प्रोफेसर : कौन हो तुम ? कहाँ है तुम्हारा 'आइडेन्टिटी कार्ड' ?

अशोक : मैं कहता हूँ, मुझे छोड़ दीजिए। छोड़िए, वरना कहीं यह आग···।

प्रोफेसर : लो जलाओ···मुझे जलाओ···कालेज-दफ्तर में आग लगाने से तुम्हें क्या मिलेगा ?

अशोक : बंद कीजिए अपनी बकवास। आप मेरे सामने से हटते हैं या नहीं ?

प्रोफेसर : नहीं···नहीं।

[शोर। नारे। आग लगने का प्रभाव]

प्रोफेसर : (**सुपर इम्पोज**) यह मैं क्या देख रहा हूँ। कालेज दफ्तर में मेरे ही विद्यार्थी आग लगाने जा रहे थे। यहाँ आग नहीं लगा पाए तो सड़क की उस चाय की दुकान में आग लगा दी। उस चाय की दुकान की क्या ग़लती थी ? जैसे अपने ही कालेज के दफ्तर की क्या ग़लती थी ? बात क्या है ? कुछ भी समझ में नहीं आता। सवाल था प्रोफेसर गोखले से न पढ़ने का···और···इनके जवाब हैं हड़ताल···'वाइलेंस' और आगजनी। यह ऐसा क्या सवाल था, जिसे लेकर इतना हंगामा। इतना क्रोध। यह कैसी बात है, जिसे ना हमारी पीढ़ी समझ पाती है, ना यह नई पीढ़ी। नयी-पुरानी पीढ़ियाँ तो हमेशा ही एकसाथ रहती हैं। आखिर हम भी एक दिन विद्यार्थी थे। हमारे भी बुजुर्ग अध्यापक थे। हम भी उनके लेक्चर नहीं समझ पाते थे। मगर उन्हें समझने के लिए ही तो हमें क्लास में बैठना पड़ता था···।

[सहसा एक चीख : बचाओ···बचाओ···प्रोफेसर साहब देखिए···बचाइए।]

प्रोफेसर : कौन ? क्या है ? बोलते क्यों नहीं ? ह्वाट इज़ योर नेम ? ह्विच क्लास ?

रामदास : रामदास सर, बी० ए० आनर्स, थर्ड इयर ! वे लड़के मुझे मारना चाहते हैं। कहते हैं, मैं उनके साथ जलूस में चलूँ। दुकानों में आग लगाऊँ। प्रोफेसर गोखले का घेराव करूँ, सर !

प्रोफेसर : घबराओ नहीं। मेरे साथ रहो। बताओ लड़कों का जलूस किधर जा रहा है ?

रामदास : सर, लड़कों का कोई ठिकाना नहीं। वे कहीं भी जा सकते हैं···कुछ भी कर सकते हैं। ना उनके कोई उसूल हैं ना स्कीम। वे आपस में ही दुश्मनी निकाल सकते हैं। कुछ भी तोड़-फोड़ सकते हैं। कुछ भी खामखा जला सकते हैं।

प्रोफेसर : आओ, मेरी गाड़ी में बैठो। मैं देखता हूँ, वे कहाँ जाते हैं ?

रामदास : सर, आप उनके पीछे मत जाइए। वे उल्टे आप ही पर टूट सकते हैं। यह प्रिंसिपल और प्रॉक्टर की जिम्मेदारी है। आप पुलिस को फोन कीजिए।

प्रोफेसर : नहीं, मैं ऐसी ग़लती नहीं कर सकता। पुलिस को बुलाने का मतलब है 'रायट', 'मोर वाइलेंस'। प्रिंसिपल साहब छुट्टी पर हैं। प्रॉक्टर साहब बीमार हैं। यह जिम्मेदारी मेरी है···इन लड़के-लड़कियों को पागलपन से बचाया जाए। आओ बैठो कार में।

[कार में बैठते हैं। कार चलती है]

प्रोफेसर : देखो-देखो रामदास, ये लड़के अलग-अलग दिशाओं में क्यों जा रहे हैं ? देखो ···वे अलग हो रहे हैं।

रामदास : सर, कुछ लड़के मैटिनी शो देखेंगे। कुछ काफी हाउस में जाएँगे और कुछ 'डिस्कोथेक' में···और कुछ घेराव करने जाएँगे।

प्रोफेसर : तुम उनसे अलग क्यों ?

रामदास : सर, मैं गरीब माँ-बाप का बेटा हूँ। मेरे पास ना तो इतने पैसे हैं···ना उतना समय और मैं 'शेड्यूल कास्ट' का भी तो हूँ। मैं उनमें इतना 'मिक्स' भी नहीं हो पाता।

प्रोफेसर : किधर चलूँ ? मेरा खयाल है उस चौराहे पर पहुँचा जाए।

रामदास : सर, मुझे यहीं छोड़ दीजिए, वरना वे मुझे पकड़ने के लिए आपकी कार पर 'अटेक' करेंगे। प्रोफेसर एँ···हैं मैं सही कह रहा हूँ···मुझे छोड़ दीजिए।

प्रोफेसर : घबराओ नहीं। मेरे रहते तुम्हारा बाल बाँका तक ना होगा।

[कार की चाल। लड़कों का शोर]

अशोक : अरे रे रे···वह देख, प्रोफेसर की कारमें वह चमचा बैठा है।

एक आवाज : अबे रामदास···खुशामदी···कमीने।

भूपी : यार चलो, चखा दें मजा इस मक्खनबाज़ को।

अशोक : यस···यस···पकड़ लो···। अबे साले रामदास···छोटी जात।

[अटैक]

प्रोफेसर : नहीं···नहीं। दूर रहो। खबरदार, जो किसी ने रामदास को हाथ लगाया। मैंने खुद बैठाया है इसे अपनी कार में। मैं खुद···। पुलिस···पुलिस···पुलिस !

[पुलिस की सीटियाँ, घोड़े दौड़ते हैं। शोर। टीयर-गैस का फूटना। धीरे-धीरे फेड्स आउट। फेड्स इन लड़के-लड़की की हँसी।]

अशोक : यार, मज़ा आ गया, क्यों प्रान साहब, अपके डैडी प्रोफेसर मेहता सोचते होंगे कि मेरा प्रान बेटा यहाँ से दूर लखनऊ युनिवर्सिटी में पढ़ रहा है, और आप हैं कि यहीं जमे हैं···पर्दे के पीछे···।

प्रान : जनाब ! मज़ा तो पर्दे के पीछे ही है।

भूपी : अगर प्रान के डैडी को कहीं यह पता चल जाए कि उनका बेटा ही इस हड़ताल और घेराव का लीडर है तो वह खुदकुशी कर लें।

प्रान : मगर उन्हें पता ही क्यों चले···यही तो 'ट्रेड सीक्रेट' है।

मधु : कहो तो मैं बता दूँ···बस थोड़ा मजा लेने के लिए।

प्रान : डार्लिंग, तुम्हें तो मजा आएगा···मगर मैं मारा जाऊँगा। कम ऑन लेट्स हैव ड्रिंक्स। (**गिलासों में डाला जाना**) थ्री चियर्स फार स्टुडेन्ट यूनिटी। थ्री चियर्स फार अवर यंग जनरेशन।

अशोक : एण्ड फार दी डाउनफाल अवर फादर्स, प्रिंसिपल्स एण्ड हिस्ट्री।

भूपी : एण्ड प्रोफेसर गोखले।

मधु : और वे लड़के-लड़कियाँ, जो अब तक अपने माँ-बाप के थोथे प्यार के चक्करों में रहते हैं।

[सब हँसते-बोलते पीते-पाते हैं।]

अशोक : 'लेट्स प्ले म्युजिक'। (अंग्रेजी संगीत उभरता है)

प्रान : 'लेट्स गो मैड···'

मधु : 'लेट्स ट्विस्ट···जर्क···'

भूपी : आहा···अहा···पर्फेक्ट···।

[ऊँचे संगीत पर शोर-भरा ट्विस्ट धीरे-धीरे दूर चला जाता है।]

प्रोफेसर : (**वाचक के लहजे में**) यह कैसी आदत है। नये-पुराने, छोटे-बड़ों का अन्तर मैंने भी देखा है। अब तक देख रहा हूँ। मेरे भी अध्यापक थे। मेरे भी माँ-बाप थे। मगर यह क्या देख रहा हूँ? मेरी समझ में कुछ नहीं आता। अच्छा किया मैंने अपने इकलौते बेटे प्राननाथ को यहाँ के जहरीले वातावरण से दूर लखनऊ युनिवर्सिटी में पढ़ने को भेज दिया। ओह, कैसी पीढ़ी है यह? इतना गुस्सा···इतनी नफरत। बेचारे रामदास को मेरे सामने खींचते हुए किस बेरहमी से मारा अशोक ने। मेरे मित्र ईश्वरसरन के साहबजादे अशोक ने···जिसे मैंने मैंने अपनी गोदी में खेलाया है। अशोक के बाबा दादूजी अभी जिंदा हैं। उन्हें अशोक का यह व्यवहार और चरित्र बताऊँ, तो उन पर क्या बीतेगी? उस गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानी दादूजी की क्या हालत होगी? अपनी इस संतान पर उन्हें कितना पश्चात्ताप होगा?

[संगीत, फेड्स इन]

ईश्वरसरन : अशोक···अशोक!

अशोक : जी डैडी। क्या है?

ईश्वरसरन : प्रोफेसर मेहता का मेरे पास दफ्तर में टेलीफोन आया था, तूने आज कालेज में क्या गुलगपाड़ा किया?

अशोक : डैडी, ऐसी कोई खास बात नहीं। यह तो होता ही रहता है। बात यह है कि पढ़ने-लिखने में हम लोग का जी तो लगता नहीं। हम अपने कालेजों से बेतरह 'बोर'

हो जाते हैं। फिर उस 'बोरियत' को तोड़ने के लिए···डैडी, आप कहाँ जा रहे हैं ?

ईश्वरसरन : भई, क्लब जा रहा हूँ। आज वहाँ एक 'मैच' है।

अशोक : ताश का मैच डैडी या··· (हँसना)

ईश्वरसरन : 'डाइवर्शन'···'डाइवर्शन'··· (हँसना)

अशोक : डैडी, गुडबाई···अब कल शाम को भेंट होगी।

ईश्वरसरन : क्या मतलब ? कल शाम क्यों ?

अशोक : आज रात-भर मैं बाहर रहूँगा।···'डैडी जैम सेशन'।

ईश्वरसरन : अच्छा, ओ० के०। बाई।

अशोक : डैडी···एक बड़ा-सा हरा-हरा नोट···।

ईश्वरसरन : क्यों ? तुम्हारी महीने भर की 'पाकेट-मनी' एक सौ रुपये पहली तारीख को नहीं मिली ?

अशोक : उससे अब कहाँ काम चलता है डैडी ? हर रोज दस रुपये से कम खर्च नहीं होता। और आज मुझे सौ रुपये के नोट की बेहद जरूरत है।

ईश्वर : मेरे पास इतने रुपये नहीं हैं। मैं नौकरी-पेशा हूँ···रुपये कहीं बरसते नहीं। और तुम अभी विद्यार्थी हो···तुम्हें अभी संयम से काम लेना होगा।

अशोक : डैडी, आप संयम से काम लेते हैं ? **(हँसता है)** जाइए···जाइए डैडी, मैं रुपये मम्मी से ले लूँगा।

[कार स्टार्ट होकर चली जाती है।]

अशोक : मम्मी···मम्मी···रामपाल ! रामपाल···अबे साले नौकर की दुम। कोई घर में नहीं। डैडी गए क्लब···मम्मी कहीं मार्केटिंग करने गई होगी। नौकर साला कहीं बैठा बीड़ी दाग रहा होगा। देखूँ, बाबा साहब भी हैं या नहीं।···ओह, ग्रैंड फादर भी नहीं हैं। मजा आ गया। अब मम्मी की आलमारी किसी तरकीब से खोली जाए। 'वंडरफुल', यही तरीका ठीक रहेगा।

[आलमारी पर किसी लोहे का धीरे-धीरे प्रहार।]

दादू : कौन है ?···कौन ?···अशोक, यह क्या कर रहा है ?

अशोक : ओह बाबाजी, ग्रैंड फादर ! हाऊ डू यू डू ?

दादू : यह क्या कर रहा है ?

अशोक : देखते नहीं, आलमारी खोल रहा हूँ···हाई स्कूल की किताब में पढ़ा था—'आवश्यकता आविष्कार की जननी है'। मुझे सौ रुपयों की बेहद जरूरत है। आप ही दे दीजिए।

दादू : यही तू पढ़ता-लिखता है ? चोर-डाकू-अपराधी बन रहा है ?

अशोक : कुछ न होने से कुछ बन जाना बेहतर है, क्यों बाबाजी ?

दादू : तू मुझसे जुबान लड़ाता है ?

अशोक : मेरे माँ-बाप से पूछिए।

दादू : तूने आज जो अपने कालेज में किया···रोज़-रोज़ जो इस घर में होता है···वह मुझे कतई पसंद नहीं। वह कौन लड़की है···जिसे संग लिए हुए तू रोज़-रोज़ घर आता है?

अशोक : कोई एक लड़की हो तो बताऊँ बाबाजी, आप किसकी बात पूछ रहे हैं?

दादू : नालायक बेशर्म!

अशोक : इतना गुस्सा आपको शोभा नहीं देता ग्रेंडफा···। आई मीन···

दादू : बंद कर अपनी अंग्रेजी ज़बान। बड़ा आया अंग्रेजी बूकने वाला। कल का छोकड़ा, चला है मुझसे जुबान लड़ाने।

अशोक : बाबाजी, थोड़ी देर के बाद आइए, मैं तब तक आलमारी खोल लूं, नहीं-नहीं, तोड़ लूँ।

दादू : तेरी यह हिम्मत! तुझे मेरी कोई परवाह नहीं? मेरी उमर का भी ख्याल नहीं? मैं टेलीफोन करता हूँ तेरे बाप को। **(टेलीफोन करता है।)**

अशोक : अरे···रे···रे···डैडी क्लब थोड़े हो गए हैं। वह जहाँ कह कर जाते हैं, वहाँ नहीं जाते···मुझे पता है वह कहाँ गए होंगे।

दादू : बता, कहाँ गए होंगे?

अशोक : मुझे क्या पता? मैं किसी की 'पर्सनल' जिंदगी में दिलचस्पी नहीं रखता और न पसंद करता हूँ कि कोई मेरी 'पर्सनल' ज़िन्दगी में दिलचस्पी ले।

दादू : **(वाचक शैली में)** हाँ, हाँ, क्यों नहीं? तेरी दिलचस्पी जिन चीजों में है···हे भगवान, यह मैं क्या देख-सुन रहा हूँ? इसी दिन के लिए मैं जीवित था क्या? मैं भी किसी दिन विद्यार्थी था। मेरे भी माँ-बाप थे। मेरे भी उतने अध्यापक थे। हमने कभी कोई बेअदबी नहीं की। कभी सोचा तक नहीं। हमारे सामने जीवन का एक लक्ष्य था···। हम चरित्र को सबसे ऊँचा दर्जा देते थे। विद्या, गुरु, माँ, बाप हमारे लिए धर्म की तरह पवित्र और पुण्य की तरह गरिमामय थे। हमने आजादी की लड़ाई लड़ी है। स्वदेशी-आंदोलन में पाँच वर्षों की कड़ी जेल-सज़ा मैंने भोगी है। सत्य-अहिंसा, देश-सेवा, परोपकार, समता-समानता यही मुख्य बिन्दु थे मेरे जीवन के। लेकिन हाँ, मैं एक बार, सिर्फ एक बार, अपने उसूलों से गिरा हूँ। वह भी अपने इकलौते पुत्र ईश्वरसरन के लिए। उसकी नौकरी के लिए। यह सोचकर कि बुढ़ापे में दो रोटी का इंतजाम तो हो सके। मगर देखता हूँ, इतनी अच्छी बड़ी नौकरी पाते ही ईश्वरसरन अपने आपको कितना बड़ा समझने लगा है। मुझे लगता ही नहीं, यह वही मेरा इकलौता बेटा है, जिसे लेकर मैंने कितने-कितने ख्वाब देखे थे। और अब ईश्वरसरन का बेटा अशोक···अपने बाप के भी कान काटने वाला! लगता है, हमारी इन तीन पीढ़ियों में न जाने कितना लंबा फ़ासला और कितनी खामोश दूरियाँ फैल गयीं। (सहसा) कौन?

मंगल : नमस्ते दादूजी!

दादू : कौन! ओह मंगल। आओ···आओ···बैठो। अरे इधर कुर्सी पर बैठो, मेरे साथ।

मंगल : अरे साहब, कहाँ आप ब्राह्मण-ठाकुर और कहाँ हम शूद्र। हमारे बीच फासला

तो होना ही चाहिए।

दादू : यह आज कैसी बातें कर रहे हो मंगल ?

मंगल : मेरे बेटे रामदास को आपके पौत्र अशोक बाबू ने अपने कालेज के साथियों से पिटवाया है।

दादू : ऐसा ! कहाँ है अशोक ? (**पुकारना**) अशोक···अशोक !

बहू : क्या है ? क्यों इस कदर चिल्ला रहे हैं ?

दादू : अच्छा ! मैं चिल्ला रहा हूँ ?

बहू : आप जानते हैं, अशोक कहीं घर में बैठा रहता है···कहीं गया होगा। फिर मैं भी तो अभी थकी-माँदी मार्केटिंग करके आ रही हूँ।

दादू: तुम्हारे लाड़ले सिरफिरे अशोक ने मंगल के लड़के रामदास को खामखा पीटा-पिटवाया है।

बहू : तो हम क्या करें ? लड़के-लड़कों का मामला है, इसमें हमारे कूदने-चीखने से क्या ? (**सहसा**) अरे, मेरी आलमारी की कुंडी किसने तोड़ी ? यह कैसे हुआ ? आप घर पर थे, बताइए, जवाब दीजिए।

दादू : तुम्हारे बेटे अशोक ने यह कुंडी तोड़ी है। उसे सिर्फ सौ रुपयों की जरूरत थी।

बहू : (**आलमारी को छानती, डिब्बों को खोलती-बंद करती हुई**) आपको मना करना चाहिए था···उसने इत्ती बदतमीजी की। देखिए, सारी जगहों पै उसने हाथ लगाया है।

दादू : (**स्वांग**) बहू, लड़के-लड़कों का मामला है, इसमें हमारे कूदने-चीखने से क्या ?

बहू : आपकी यह हिम्मत ! आप-आप मेरा मज़ाक उड़ाएँ !

दादू : अभी तुमने खुद यही कहा था न बहू !

बहू : नानसेन्स। (**विराम**)

मंगल : दादूजी, आप में और आपके बेटे, बहू और पौत्र में जमीन-आसमान का फ़र्क़ है। यह फ़र्क़ ऐसा है जो नीच-ऊँच की दूरियों से ज्यादा तकलीफदेह है। यह फ़र्क़ पीढ़ियों के भीतर आए हुए फासलों के नतीजे हैं।

दादू : तुम भी मंगल भाषा आज कैसी बोल रहे हो ? मैं पूछता हूँ, यह फ़ासला, ये दूरियाँ क्या तुम्हारे और तुम्हारे बेटे के बीच आई हैं ? बोलो, क्या वह तुम्हारी बातें नहीं समझता ? या कि तुम उसकी बातें नहीं समझते ?

मंगल : हम ग़रीब आदमी हैं दादू, ये फासले और दूरियाँ मेरे और मेरे बेटे के बीच भला कहाँ से आ सकती हैं ?

दादू : ये सब फिजूल की बातें हरामखोरी से पैदा हुई हैं। जिनके पास न काम है न कोई उसूल और ऊपर से जिन्हें हराम का धन मिलता है, ये सब फासले और दूरियाँ उन्हीं के चोंचले हैं।

मंगल : मैं अपने मुँह से ये बातें कैसे कहूँ दादू, वही मसल कि छोटा मुँह बड़ी बात !

दादू : किसने कहा, तुम छोटे हो···और ये हरामखोर बड़े हैं। तुम मेरे बेटे ईश्वरसरन के बराबर पढ़े हो। तुम एम० ए० फर्स्ट क्लास पास हो···और ईश्वरसरन ने कभी

फर्स्ट क्लास का नाम तक नहीं सुना है ।

मंगल : अब ये बातें क्यों मुँह से निकालते हैं दादू ? क्या फायदा उन बीती बातों को याद करने से ? सब अपनी-अपनी तकदीर है दादू ।

दादू : तकदीर-वकदीर कुछ नहीं होती, ना कोई छोटा, ना कोई बड़ा होता है । तुम्हारे पीछे भी मेरी तरह कोई होता तो तुम आज उस छोटी-सी नौकरी पर न सड़ते होते, ना किसी कालेज के लौंडे की यह हिम्मत होती कि तुम्हारे बेटे रामदास पर हाथ उठाता ।

मंगल : छोड़िए दादू जी ! इसमें आपका क्या कसूर ? आप जिन संस्कारों और जीवन के उसूलों में पले हैं, वे दिन बीत गए हैं दादू । अच्छा अब मैं चलता हूँ···नमस्ते ।

दादू : मैं अभी थोड़ी देर में रामदास को देखने आता हूँ—मगर उससे पहले मैं यहाँ अपने घरवालों से कुछ बात करना चाहूँगा···रुको, एक गिलास जल तो पीते जाओ···बैठो···मैं खुद पानी ले आ रहा हूँ । (**विराम**)

बहू : अरे···रे···रे···यह आप क्या करते हैं दादूजी, हमारे पीने के गिलास से आप मंगल को पानी पिलाना चाहते हैं ?

दादू : क्यों, मंगल में ऐसा क्या है जो वह हमारे गिलास से पानी नहीं पी सकता ?

बहू : उसे शीशे के गिलास में पानी पिलाइए, यह लीजिए !

दादू : ले जाओ अपने दोनों गिलास । (**गिलास गिरना**) जो फासले तुम्हारे दिमाग में उभर आए हैं···मैं उन पर लानत भेजता हूँ ।

[संगीत]

दादू : (**वाचक के स्वर में**) अपने बेटे ईश्वरसरन को नौकरी दिलाने में मैंने किस-किस से सिफारिश नहीं की ! मुझे यहाँ तक कहना पड़ा—'आई एम ए पोलिटिकल सफरर' । छी-छी-छी, यह मैंने क्या कहा था ? देश की सेवा का कितना ओछा मूल्य मैंने वसूल किया ? और नौकरी पाकर ईश्वरसरन में जो परिवर्तन हुआ उसमें इस कदर छोटे-बड़े का भाव, विलासिता, क्लब की ज़िन्दगी, झूठ, प्रपंच, हे राम ! लगता है यह मेरे उसी पाप का प्रायश्चित है । मैंने मंगल के लिए कोई सिफारिश क्यों नहीं की ? उसे तो बहुत थोड़ी-सी मदद की जरूरत थी । वह आज ईश्वरसरन से कहीं आगे बढ़ गया होता । ईश्वरसरन एक बड़ा अफसर है···मंगल आज उससे भी बड़ा अफसर होता । उससे समाज का ज्यादा हित होता ।

[संगीत । फेड इन—सम्मिलित हँसी ।]

अशोक : यार, मजा आ गया ।

मधु : प्रोफेसर गोखले एक महीने की छुट्टी पर चला गया ।

प्रान : और मेरे फादर प्रोफेसर मेहता···दो सौ रुपये महीने भेजते थे मेरे पास···मैंने कहा, फादर, ढाई सौ से कम में काम नहीं चलता । उन्होंने कहा, आपने खर्चों की तफसील भेजी···(**सहसा**) यार, तफसील क्या होता है ? इन बुड्ढों की तो भाषा

भी नहीं समझ आती।

मूपी : तफसील माने तबियत का हाल··· (हँसी)

मधु : जी नहीं। तफसील माने तफरीह··· (हँसी)

अशोक : जी जनाब, तफसील माने मेरी भैंस को डंडा क्यों मारा···

[सब हँसते हैं।]

दादू : (सुपर इम्पोज) इन बेहूदी हँसियों को सुन-सुनकर मेरे तो कान पक गए। इनकी बातें निराली, इनके कर्म निराले। पता नहीं ये जीव हैं या जानवर···।

[फेड्स इन ईश्वरसरन]

ईश्वरसरन : हेलो डैडी !

दादू : यह डैडी क्या बला है ? अगर मुझे पिताजी कहने में तुम्हें शर्म आती है, तो तुम बड़े शौक से मुझे मेरा नाम लेकर पुकार सकते हो।

ईश्वरसरन : डैडी, आप तो खामखा नाराज हो जाते हैं।

दादू : तुम कभी अपने घर-परिवार में रहो तो पता चल जाए, यहाँ क्या हो रहा है। तुम, तुम्हारी पत्नी, तुम्हारा छोकड़ा···। लगता है, यह घर नहीं कोई होटल है—जहाँ अलग-अलग कमरों में रहने वालों में कोई आपसी ताल्लुक नहीं। आपस में एक-दूसरे से कोई नाता नहीं।

ईश्वरसरन : डैडी, यू आर ओवर सेंसिटिव।

दादू : भाई, मुझे अंग्रेजी में गाली क्यों देते हो···हिन्दी में दो अपनी ज़ुबान में, ताकि मैं भी समझ सकूँ।

ईश्वरसरन : आपकी मुसीबत यह है कि आप खामखा दूसरों की ज़िंदगी में दिलचस्पी रखते हैं उसमें दखल डालते हैं।

दादू : जरूर-जरूर ! हमें दूसरों की जिंदगी में दिलचस्पी होनी चाहिए। जब दूसरा खुश रहेगा, तभी हम खुश रह सकते हैं ! एक की जिंदगी, उसका सुख-दुख दूसरे से जुड़ा हुआ है।

ईश्वरसरन : ये ऊँची बातें हैं, मैं नहीं जानता।

दादू : तुम इतने नीचे गिरते जा रहे हो ?

ईश्वरसरन : आप अपने आईने से सारी दुनिया को क्यों देखते हैं ? गांधी-तिलक का जमाना बीत गया।

दादू : वह जमाना नहीं बीता···वे अमर हैं। हमेशा-हमेशा गांधी-तिलक जिंदा रहेंगे। बीत तुम रहे हो···अपनी ऐयाशी और बेपनाह आज़ादी में।

ईश्वरसरन : यह मेरी जिंदगी है। आपको इसमें दखल देने का कोई अधिकार नहीं।

दादू : ओह, इसीलिए मैंने तुम्हें जन्म दिया। इसीलिए अपने उसूलों को बेचकर तुम्हें इत्ती बड़ी नौकरी दिलायी।

ईश्वरसरन : सुनिए, सुनिए पिताजी, ऐसे ही गुस्से में एक दिन मैंने अपने बेटे अशोक से कहा था···आपको पता है, उसने मुझे क्या उत्तर दिया ? उसने मुझे दो टूक उत्तर

दिया—मुझे जन्म देना आपकी 'बाइलोजिकल नेसेसिटी' थी और मुझे पालना-पढ़ाना आपके अहं की तुष्टि···।

बादू : तो तुम अशोक के बहाने वही उत्तर मुझे दे रहे हो ? तो मुझसे बढ़कर तुम्हारी और यह तीसरी पीढ़ी यहाँ तक पहुँची है ? ख़ैर, मुझे अब और कुछ नहीं कहना।

बहू : देखो जी, मैं पिक्चर जा रही हूँ।

ईश्वरसरन : मैं क्लब जा रहा हूँ।

[संगीत]

बादू : (**याचक के लहज़े में**) जाओ···सब जाओ। मैं भी अब यहाँ से चला जाऊँगा। लगता है, मैं किसी परदेश में आ गया हूँ। यह मेरी संतान नहीं ! किसी अजनबी के घेरे में मैं आ गया हूँ। मुझे यह पता नहीं था···मेरी इन तीन पीढ़ियों में इस क़दर ज़मीन-आसमान का अंतर आ जाएगा। इतना अंतर कि एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी की भाषा, भाव, विचार तक न समझ सके।

[संगीत 'फेड्स इन' रजनी और प्रान की बातें]

रजनी : कहाँ हैं अशोक, मुझे क्या मालूम ?

प्रान : क्यों नहीं, वह तुम्हारा भाई है, तुम दोनों एक ही कालेज में पढ़ते हो···मतलब एक ही घर में रहते हो···एक ही माँ-बाप की संतान हो।

रजनी : तो क्या हुआ, मैं नहीं जानती अशोक को !

प्रान : यू डोन्ट लाइक मी ?

रजनी : यस, आई डोन्ट।

प्रान : भूपी मुझसे ज्यादा बेहतर है ? प्लीज़, टेल मी।

रजनी : बकवास बंद करो।

प्रान : चलो ना, आज राज क्लार्ट होटल में 'जैमसेशन' है।

रजनी : मैं अपने बायफ्रेंड के साथ 'इसकाई लार्क' जा रही हूँ।

प्रान : हू इज दैट लकी गाइ ?

रजनी : नन आफ योर बिज़नेस।

बादू : कौन है ? क्या है बेटी ?

रजनी : बाबाजी, यह प्रान है, अशोक का दोस्त···और प्रो॰ मेहता के साहबजादे !

प्रान : कीप क्वायट रजनी। अच्छा जी, नमस्ते।

बादू : प्रोफेसर मेहता का लड़का प्रान, तुम तो शायद लखनऊ में पढ़ते थे ?

प्रान : जी-जी, बात यह है कि, वह जो···वह जो···।

रजनी : (**हँसती है**) बात यह है बाबाजी, यह पढ़ते तो ज़रूर हैं लखनऊ में···मगर हाज़िरी इसी शहर में देते हैं।

प्रान : बाबाजी, वह झूठ बोलती है।

रजनी : 'कावर्ड', ह्वाई डोन्ट यू एक्सेप्ट द ट्रुथ ?

प्रान : खबरदार, अगर किसी ने मेरे फादर को मेरे बारे में बताया।

रजनी : गो टू हेल···

दादू : कमाल है, तुम लोग अंग्रेजी ज़बान के अलावा जैसे अपनी भाषा में बोल ही नहीं सकते ?

प्रान : हम इन बातों की परवाह नहीं करते। मगर हाँ, कान खोलकर सुन लो, मेरे पापा से मेरे बाबत कुछ नहीं कहना है।

दादू : वाह ! चोरी और सीनाज़ोरी। तू मुझे धमकाने आया है, तेरी यह हिम्मत। तुझे पता है अंग्रेज़ों की बन्दूकों के सामने हमने आजादी की लड़ाई लड़ी है। सच्चाई ही मेरी ताकत है। मैं जरूर-जरूर तुम्हारे पापा प्रोफेसर मेहता से तेरी सच्चाई का बयान करूँगा। यह मेरा फ़र्ज़ है। प्रोफेसर मेहता मुझे जानते हैं। मैं उन्हें जानता हूँ। वह एक निहायत ज़िम्मेदार, शरीफ और ईमानदार इंसान हैं। उनमें अध्यापक का आदर्श है।

[संगीत। फेड्स इन कालेज की हलचल]

अशोक : अरे भूपी···ओ भूपी, प्रान कहाँ है ? कल से नहीं दिखा।

भूपी : कल रात मुझे तो मिला था।

मधु : उसने होटल में एक कमरा ले लिया है।

अशोक : ओह, मधु को सब मालूम है।

भूपी : इसी की वजह से तो उसने कमरा लिया।

मधु : नानसेन्स, डोन्ट बी वल्गर।

[दोनों हँसते हैं।]

अशोक : यार, कालेज में अब क्या रखा है। प्रिंसिपल ने हमसे माफी माँग ली···प्रोफेसर गोखले एक महीने की छुट्टी पर भाग गए। अब बताओ, कालेज में नया चकल्लस क्या हो ?

मधु : खामखा 'बोर' हो रहे हैं।

भूपी : हाँ, यार, अब कोई बहाना भी नहीं कि कालेज में हड़ताल करायी जाए।

अशोक : चलो मधु, कहीं घूम आएँ।

भूपी : अमाँ यार, आज अंग्रेजी के टीचर कुछ इमपोरटेंट सवाल बताने वाले हैं।

अशोक : यार, परवाह मत करो इम्तहान की। 'स्टूडेन्ट यूनिटी जिंदाबाद' आओ। मधु, 'लेट अस गो एण्ड फ्लर्ट विथ टाइम एण्ड स्पेस'।

भूपी : अरे, आज मेरी 'डेट' है इसके साथ।

अशोक : अबे चुप।

[कार स्टार्ट होना]

दादू : **(वाचक के स्वर में)** पता नहीं यह कैसा संघर्ष है। एक पीढ़ी दूसरी से अपरिचित है—अगर इतनी ही बात है, तब भी कुछ-कुछ समझ में आता है। मगर एक ही

पीढ़ी में भी तो संघर्ष है। मंगल का लड़का रामदास, चूंकि गरीब है···हरिजन है, मगर पढ़ने-लिखने में सबसे प्रतिभाशाली और शराफत में भी इनसे आगे—उससे भी इनके संघर्ष हैं। वह सब तक घायल पड़ा है अपने घर। अशोक और भूपी में कल लड़ाई हो गयी, एक निहायत छोटी-सी बात पर—मधु किसको बेवकूफ नहीं बनाती, इस सवाल-जवाब पर भूपी और अशोक में लड़ाई। मधु खड़ी मज़े लेती रही और दोनों लड़के घूसेबाजी करते रहे। तो संघर्ष आपस में भी। जो अपने से अच्छा है, उससे लड़ाई और जो अपने से छोटा है, ग़रीब है, सीधा-सादा है उससे विद्वेष।

[कालबेल की आवाज]

प्रोफेसर : दादूजी, क्या मैं अंदर आ सकता हूँ ? नमस्कार। मैं प्रोफेसर मेहता हूँ।

दादू : आइए, आइए···प्रोफेसर मेहता ! मैं तो सोचता था, एक मैं ही बदकिस्मत हूँ। अपने इस खानदान के लिए···ऐसा बेटा-बहू, ऐसा पोता···मगर देखता हूँ चारों ओर आग लगी है।

प्रोफेसर : पूछिए नहीं दादूजी, यहाँ के हालात बहुत खराब हैं। हमारे कालेजों की बात मत कीजिए। इसीलिए तो मैंने अपने लड़के प्राननाथ को यहाँ के विषाक्त वातावरण से दूर लखनऊ भेज दिया है, पढ़ने को।

दादू : काश यही सच होता !

प्रोफेसर : क्यों, यही सच है दादूजी ! मैं हर महीने उसे रुपये भेजता हूँ। अभी लखनऊ से प्रान का खत आया है इस महीने में उसने ढाई सौ रुपये मंगाए हैं—इक्जामिनेशन फीस जमा करनी है उसे।

दादू : आपको सच बताना मेरा फर्ज है···सुनिए प्रोफेसर साहब, आपके साहबजादे प्रान साहब यहीं इसी शहर में मौजूद हैं। कालेज में जो हड़ताल हुई है, वही थे उसके लीडर और संचालक।

प्रोफेसर : यह क्या कह रहे हैं दादूजी ?

दादू : यक़ीन नहीं आता ? जब तक मैंने भी अपनी आँखों से नहीं देखा था, मुझे भी यक़ीन नहीं आता था।

प्रोफेसर : दादूजी, मुझे साफ-साफ बताइए।

दादू : आपके प्रान साहब यहीं इसी शहर में हैं···यह है होटल का नाम···आप जाकर अपनी आँखों से देखिए वहाँ।

[संगीत। बंद दरवाजे पर दस्तक]

प्रोफेसर : दरवाजा खोलो !

आवाज : कौन है बे ?

[दरवाजा खुलना]

प्रोफेसर : मैं हूँ बे !

प्रान : ओह, डैडी ! 'आई एम सॉरी डैडी' ।

प्रोफेसर : 'ह्वाई यू आर सॉरी' ? कैरी आन···खत्म करो अपना ड्रिंक···ओह मधु, तुम भी यहीं हो । जरा खिड़की खोल दो । सिगरेट के धुएँ और ड्रिंक की बदबू से मेरा सिर चकरा रहा है ।

[खिड़की खुलने की आवाज]

प्रान : डैडी, बैठिए···बात यह हुई कि लखनऊ से मेरे कुछ···

प्रोफेसर : 'डोन्ट टाक', मैं सब सुन चुका हूँ । तुम और मेरी आँखों में धूल नहीं डाल सकते । तुम्हारे सारे कारनामे मेरे सामने हैं ।

मधु : अच्छा प्रान, मैं चलती हूँ, 'बाई-बाई' !

प्रोफेसर : कहाँ जाती हो ? रुको, तुम शायद हमारे ही कालेज में पढ़ती हो।

मधु : जी, कहिए, मेरा मतलब, बकिए ।

प्रोफेसर : बक रहा हूँ । किस क्लास में पढ़ती हो ?

मधु : आपसे मतलब···? यह कालेज नहीं है । 'दिस इज माई पर्सनल लाइफ' ।

प्रोफेसर : तुम किसकी लड़की हो ? तुम्हारे घर का पता क्या है ?

मधु : पता नहीं । कालेज के फार्म में लिखा होगा । आप दफ्तर से पता करें ।

प्रोफेसर : 'यू गेट आउट' ।

प्रान : डैडी, यह कहने का आपको कोई अधिकार नहीं ।

प्रोफेसर : अधिकार क्या है मेरा, क्या नहीं है—यह मैं अभी बताता हूँ । पहले तुम यह बताओ, तुम यहीं लखनऊ में बैठकर पढ़ाई कर रहे हो ?

प्रान : मैं एक जरूरी काम से यहाँ आया था । कल वापस लखनऊ जा रहा हूँ ।

प्रोफेसर : यहाँ जरूरी काम इस होटल में पूरा किया जा रहा है ? तुम आकर अपने घर नहीं रुक सकते थे ? बदतमीज···नालायक ।

प्रान : डैडी, आप कायदे से बात कीजिए । अच्छा मधु, तुम जाओ !

प्रोफेसर : नहीं, तुम नहीं जा सकती । मैं तुम दोनों को पुलिस के हवाले करूँगा ।

प्रान : स्टुपिड डैडी ।

प्रोफेसर : मैं स्टुपिड सही । तुम कौन हो, आज इसका फैसला होकर ही रहेगा । तुम यहाँ रहकर कालेज में दंगे मचाते हो—यही है तेरा कर्म···मेरी कमाई को इस तरह फूंक रहे हो, यही है तेरा चरित्र !

प्रान : कर्म और चरित्र मैं नहीं जानता, क्या होते हैं इसके मतलब !

प्रोफेसर : यह कौन है तुम्हारी ?

प्रान : 'शी इज माई फ्रेंड । दैट्स आल' । आप इसे कुछ नहीं कह सकते । सुनो मधु, तुम जाओ ।

प्रोफेसर : यह ऐसे नहीं जा सकती । तुम दोनों को अपनी-अपनी कैफियत देनी होगी । मैं बुलाता हूँ अभी पुलिस को ।

प्रान : अगर आप मुझे मजबूर करेंगे, तो मैं बुलाता हूँ पुलिस को । आपको किसी की

'पर्सनल लाइफ' में दखल देने का कोई अधिकार नहीं। यहाँ आकर आपने 'ट्रेसपास' किया है। 'यू हैव नो राइट टु ट्रेसपास लाइक दिस।'

प्रोफेसर : नालायक ! बदतमीज !

[संघर्ष होता है। किवाड़ पर चोट, चीजों के गिरने की आवाज]

मधु : मैं जा रही हूँ।

प्रान : 'यस यू गो···डोन्ट वरी फार मी।'

प्रोफेसर : तू जन्म लेते ही मर क्यों नहीं गया। नालायक···दुश्चरित्र···! 'कावर्ड'··· बुजदिल···झूठे···मक्कार !

प्रान : खबरदार, आप मुझे सब कुछ कह सकते हैं, कावर्ड नहीं। 'कावर्ड' सिर्फ आप हैं···आपकी जनरेशन है। बताइए, आपने मुझे यहाँ से दूर लखनऊ क्यों पढ़ने को भेजा ?

प्रोफेसर : नालायक, तेरी बेहतरी और भलाई के लिए। ताकि तू कम-से-कम बी० ए० तो पास कर ले।

प्रान : बी० ए०, एम० एम० पास करना आपकी जनरेशन का उद्देश्य था, हमारे पास ऐसा कोई उद्देश्य नहीं।

प्रोफेसर : क्या है तेरा उद्देश्य ? बाप की कमाई फूंकना ? कालेजों में स्ट्राइक, तोड़-फोड़ करना। शराब, सिगरेट···ऐयाशी···बोल।

प्रान : मेरे पास कोई उद्देश्य नहीं। यही है मेरा उद्देश्य। आखिर हम खाली बैठे करें क्या ? अपना गुस्सा कहाँ निकालें ? अपने को कहाँ, कैसे 'आइडेन्टीफाई' करें ?

प्रोफेसर : अपना गुस्सा समाज की गरीबी, पिछड़ेपन, कर्महीनता पर क्यों नहीं उतारते ?

प्रान : इस सबकी जिम्मेदारी आप सब पर है। आप लोग हैं इसे बनाने वाले और कायम रखनेवाले। हम सिर्फ अपना गुस्सा निकाल सकते हैं—यही है हमारा 'इक्सप्रेशन' इसके लिए हमें कोई भी बहाना चाहिए—कैसा भी, चाहे वह प्रोफेसर गोखले का बहाना हो, चाहे आप हों।

प्रोफेसर : प्रान ! प्रान !

प्रान : ओह ! आहिस्ता बोलूं, ताकि कोई सुन न ले। ताकि होटल का मैनेजर यह न जान जाए कि प्रोफेसर मेहता का लड़का मैं हूँ, और आप वही प्रोफेसर मेहता हैं।

प्रोफेसर : चुप रहता है या नहीं ? ओह, इसी दिन के लिए तुझे मैंने पाल-पोस के इत्ता बड़ा किया।

प्रान : यही तो मेरी ट्रेजिडी है। मैं निरुद्देश बड़ा होता गया। और आप लोग चरित्र-कर्म की फालतू बातें करते रहे। दिन-रात वही नौकरी की बातें···दिन-रात पैसा कमाने की चिंता। हर वक्त अपने को बड़ा और हमें छोटा समझते रहना।

प्रोफेसर : यू शट अप।

[तेज संगीत धीरे-धीरे फड्स आउट]

प्रोफेसर : (**वाचक के स्वर में**) यह क्या सुना और देखा मैंने ? मुझे अब भी यकीन नहीं आता। दादू की बातें इस कदर सच होंगी—मुझे पता नहीं था। दादू तो हमसे भी एक पीढ़ी पहले के हैं। गांधी युग के इंसान। मैं अब उनकी तकलीफ का अंदाज लगा सकता हूँ। दादू कहते थे—

[फ्लैश बैक संगीत]

दादू : भाई प्रोफेसर साहब, मेरी समझ में तो कुछ नहीं आता। मैं जिस ज़माने का हूँ—वह स्वाधीनता-संग्राम का ज़माना था। हमारी पीढ़ी के हर काम में एक उद्देश्य था। हर व्यक्ति में एक जीवन-मूल्य था।

प्रोफेसर : आप निराशावादी हो रहे हैं दादू, हर नई पीढ़ी का अपना ही जीवन-मूल्य होता है।

दादू : मुझे बताइए ना···मुझे कोई मिसाल देकर समझाइए। मेरे लड़के ईश्वरसरन के जीवन-मूल्य को बताइए ? या ईश्वरसरन के लड़के अशोक या उसकी लड़की रजनी के जीवन में ऐसा कोई उदाहरण बताइए।

[फ्लैश बैक संगीत से समाप्त]

रामदास : दादूजी···दादूजी।

दादू : आओ-आओ···रामदास। बैठो। कहो, अब कैसी तबियत है ?

रामदास : अब ठीक हूँ, बाबाजी ! पर अब अपने कालेज में पढ़ने को जी नहीं होता। सोचता हूँ, अपने देश गाँव चला जाऊँ, वहीं किसी छोटे से कालेज में पढ़ूँ। पर मेरे पिताजी कहते हैं—ऐसे भागने से कैसे काम चलेगा ?

दादू : मंगल ठीक कहता है। संघर्ष ही जीवन है।

रामदास : आपने सुना दादू, प्रोफेसर मेहता ने अपने बेटे प्रान को होटल के कमरे में रँगे हाथ पकड़ा। मगर उल्टे प्रान ने ही प्रोफेसर साहब को चुप कर दिया। वह बहुत ही परेशान हैं।

दादू : मैंने ही उन्हें प्रान के बारे में सूचना दी। उन्हें विश्वास नहीं था कि उनका लड़का यही है और वही सारी खुराफात की जड़ है।

रामदास : खुराफात की जड़ कौन नहीं है दादू ? मुझे तो लगता है, हमारे समाज की उद्देश्यहीनता सारी खुराफात की जड़ है।

[संगीत]

दादू : (**वाचक के स्वर में**) रामदास सही कहता है—हमारे समाज में इस कदर सर्वव्यापी उद्देश्यहीनता ही सारी खुराफात की जड़ है। लेकिन इसका कारण क्या है ? मैंने तो अपने लड़के ईश्वरसरन को जीवन का उद्देश्य दिया था ! ऐसी बहू ले आया था उसके लिए, जो बहुत अच्छे आदर्श घर की लड़की थी। सो मेरे ही घर में क्या हुआ ? लड़का और बहू दोनों घर में नहीं रहते। फिर इसका असर उनके

बच्चों पर क्या पड़ता ? उनसे अपने बच्चों के बीच जैसे कोई संवाद ही नहीं··· कोई मानसिक रिश्ता ही नहीं—जैसे सब अलग-अलग दुनिया में रहनेवाले, एक-दूसरे से कटे हुए।

[संगीत]

ईश्वरसरन : अशोक···अशोक !

बहू : वह रात से अभी घर ही नहीं लौटा।

ईश्वरसरन : कहाँ गया ?

बहू : मुझे क्या मालूम ?

ईश्वरसरन : रजनी कहाँ है ?

बहू : अपने कमरे में ही भीतर से बंद किए बैठी है।

ईश्वरसरन : (दस्तक) बेटी···रजनी ! दरवाजा खोलो।

रजनी : (दरवाजा खुलना) क्या है डैडी ?

ईश्वरसरन : यह मैं क्या सुन रहा हूँ, सारे लोग तुम्हारे बारे में क्या-क्या कह रहे हैं ?

रजनी : शुक्र है, आपके पास मेरे बारे में अफवाहें सुनने की फुर्सत तो है।

बहू : यह आवारा लड़कों के साथ दिन-रात घूमती है।

रजनी : और आप दिन-रात कहाँ घूमती हैं ?

बहू : बदतमीज ! तेरी यह हिम्मत ! (चाँटा मारती है।)

रजनी : 'यस', मेरे पास सिर्फ हिम्मत है। आपके पास वह भी नहीं।

ईश्वरसरन : बंद करो बकवास। तुम जाओ यहाँ से···मुझे अकेले रजनी से बातें करने दो।

बहू : नहीं। मैं नहीं जाती। यह मेरे बारे में उल्टी-सीधी बातें करे, मैं हर्गिज बर्दाश्त नहीं कर सकती।

ईश्वरसरन : मैं यहाँ पंचायत करने नहीं आया हूँ, मेरे पास इतनी फुर्सत नहीं।

रजनी : जी हाँ, आपके पास इत्ती फुर्सत कहाँ ? सुबह-ही-सुबह काम पर, रात को काकटेल, डिनर···क्लब···रमी। फिर नींद···बेहोशी। बताइए पिछले दस-बारह सालों से आपने मुझे कब देखा ? क्या बातें कीं ? क्या जाना ? क्या पूछा ?

ईश्वरसरन : बकवास बंद।

रजनी : हाँ-हाँ, आज दस सालों बाद एकाएक जब मुझसे बातें करना चाहेंगे तो मेरी बातें आपको बकवास तो लगेंगी ही।

बहू : इससे बात करना फिजूल है।

रजनी : हाँ, मुझसे बातें करना फिजूल तो है ही। आप सिर्फ शृंगार कीजिए···हर वक्त मेकअप···फोन···शापिंग···फिल्म।

बहू : (मारकर) बदतमीज···नालायक।

ईश्वरसरन : यह क्या किया ? हमें बच्चों को मारने का कोई अधिकार नहीं।

बहू : तुम चुप रहो। खामोश···ज्यादा बात बढ़ायी तो···।

रजनी : लड़िए···लड़िए···आप दोनों खामोश लड़ने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते। यही किया है आप दोनों ने इन दस वर्षों में। और हम अपनी-अपनी खामोश तनहाइयों में घुटते रहे हैं···फिर हम सिगरेट न पीएँ, घूमें नहीं···फ्लर्ट न करें तो और क्या करें !

[दादू की हँसी छा जाती है।]

बहू, ईश्वरसरन : दादू।···चुप रहिए दादू···हँसी बंद कीजिए। हँसी बंद कीजिए।

[संगीत]

दादू : (वाचक के स्वर में) अब कुछ-कुछ बातें समझ में आ रही हैं···रजनी, अशोक, मधु, प्रान और भूपी की बातें मेरे कानों में टकरा रही हैं—आजादी मिलने के बाद किसे फुर्सत थी, दूसरे से संवाद करने की। दूसरों के सुख-दुख जानने की। सब में होड़ थी···बड़ी-से-बड़ी नौकरी में जाने की, खूब खाने-पीने की। भूख शांत करनी की। और इस अमानुषिक दौड़ में एक पीढ़ी दूसरे से अपरिचित अजनबी होती गयी।

[संगीत]

प्रान : भूपी, जरा छिपके···छिपके चल। वह आ रहा है टहलने दादू, बड़ा आया है गांधीवादी बनने।

भूपी : अरे, इसे ऐसी मार मारो कि छठी का दूध याद आ जाए।

प्रान : बड़ा चला था मेरे बाप से मेरी शिकायत करने।

भूपी : पता बताने।

प्रान : पैर में मारो···लँगड़ा हो जाए।

[दौड़ पड़ना और दादू को मारना।]

दादू : आह ! आह ! बुजदिलो···भागते कहाँ हो···मैं तुम्हें पहचानता हूँ प्राननाथ··· तुझे भी भूपेन्दरनाथ,···तुम अपनी हिंसा से मेरी सच्चाई को नहीं दबा सकते। मैं सत्याग्रही हूँ···तुम मेरी आवाज नहीं छीन सकते।

[संगीत]

प्रोफेसर : नमस्ते दादू···मैं प्रोफेसर मेहता हूँ।

दादू : आइए, आइए। क्यों तकलीफ की ?

प्रोफेसर : कैसी तबियत है ? एक्सरे रिपोर्ट क्या है ?

दादू : ठीक ही है। एक पैर की हड्डी ही तो टूटी है। और चोटों का दर्द भी क्या है ! असहयोग आंदोलन के दिनों में कितनी लाठियाँ खाई हैं—अँगरेजों की लाठियाँ। (हँसना) आप इतने गंभीर क्यों हैं प्रोफेसर मेहता ?

प्रोफेसर : मैं इतना शर्मिन्दा हूँ दादू, सोचता हूँ, मैं मर क्यों नहीं गया। प्रान ने मुझे

मारा होता···

दादू : नहीं-नहीं, ऐसा मत सोचिए। मुझमें और आप में फ़र्क़ ही क्या है ? और भाई, मैं तो मार खाने का आदी हो चुका हूँ।

प्रोफेसर : मैंने अपने लड़के प्रान को पुलिस के हवाले कर दिया दादू। वह अपराधी है··· उसे सजा मिलनी चाहिए।

दादू : यह क्या किया आपने ? आपने भी उसी नई पीढ़ी की तरह व्यवहार किया। वही क्रिया-प्रतिक्रिया। (कराहना)

प्रोफेसर : नहीं दादू, आप बोलिए नहीं, आपकी चोट···

दादू : भई यह अस्पताल है···यहाँ तो बोलने दो···और अब बोलने के अलावा और कर भी क्या सकता हूँ ? सुनो-सुनो, इस नयी पीढ़ी का क्या कसूर है ? उनके पास अपनी शक्ति, प्रतिभा को प्रकट करने का मारपीट, तोड़-फोड़ के अलावा और साधन ही क्या है ?

प्रोफेसर : मैं यह नहीं मानता, दादू ! यह पीढ़ियों का संघर्ष झूठा है।

दादू : नहीं, सच है। मेरा घर इसका सबसे ज्वलंत उदाहरण है।

प्रोफेसर : पीढ़ियों का संघर्ष मंगल और रामदास में क्यों नहीं दादू !

दादू : (हँसना) भाई, तुमने तो मेरे मर्म को ही छू लिया।

[मंगल रामदास आते हैं—प्रणाम करते हैं।]

दादू : आओ भाई मंगल, बैठो बेटा रामदास।

दोनों : कैसी तबियत है दादू···हमारे लायक कोई सेवा।

प्रोफेसर : दादू, आपके घर के लोग कहाँ हैं ?

दादू : क्यों, मेरे घर के लोग तुम सब नहीं हो क्या, सभी तो मेरे घर के लोग हैं। मेरा बेटा ईश्वरसरन, उसकी बहू···उसके दोनों बच्चे···सबकी अलग-अलग दुनिया है।

प्रोफेसर : ओह, आपके बेटा-बहू आ रहे हैं।

दादू : हाँ, कभी-कभार आ जाते हैं। उनकी कृपा है।

[दोनों आते हैं।]

ईश्वरसरन : हैलो, डैडी !

दादू : बहू, तुमने कितनी अंग्रेज़ी मेरे बेटे को पढ़ा दी। लगता है यह तो अंग्रेज है।

बहू : यू मस्ट टेक रैस्ट दादू !

दादू : सुन लीजिए।

[संगीत]

दादू : अस्पताल में पड़े-पड़े हर वक्त यही सोचता हूँ यह सब कैसे हुआ ? यह पीढ़ियाँ कहाँ से आईं ? ये आपसी संघर्ष कहाँ से पनपे ? यह संघर्ष उन गरीबों में क्यों नहीं है जिसके प्रतिनिधि मंगल और रामदास हैं। मैंने अपने दोस्तों के दबाव में रचनात्मक कार्य की जगह भावात्मक कार्य को महत्त्व दिया। मैं अंधा हो गया था। (हँसी)

भावना और संस्कार

पात्र

वाचक
रामगोपाल

वाचक : लोग कहते हैं, मनुष्य की जिन्दगी और समाज इन दोनों की बनावट में भावना और संस्कार का बहुत बड़ा हाथ है, लेकिन सवाल यह है कि भावना और संस्कार को कौन जन्म देता है और कौन इसे बनाता है ? इतिहास साक्षी है कि जब समाज को चार वर्गों में बाँटा गया, उसे छूत और अछूत में बाँट कर देखा गया तो इसके पीछे ना कोई मानवीय शक्ति थी और ना ही कोई ऐसा संस्कार काम कर रहा था जिसे हम दैवी कह सकते हैं। मनुष्य ने अपने स्वार्थों के लिए शायद ऐसा किया था। मनुष्य द्वारा मनुष्य पर शोषण बना रहा, इसके लिए उसने समाज को छूत और अछूत में बाँटा और आगे चलकर यही बँटवारा हमारे भीतर भावना के रूप में समा गया और आज तक वही भावना हमारे भीतर बैठी हुई संस्कार के नाम से जानी जाती है। लेकिन मनुष्य जब जन्म लेता है तब तो सर्वत्र समान है। जन्म लेने के बाद ही वह क्यों और कैसे एक छूत होता जाता है और यह छूत, कैसा अन्याय है ? श्री रामगोपालजी, आप अपने जीवन की क्या ऐसी विशेष घटना बता सकते हैं जो इस बुनियादी सवाल पर रोशनी फेंक सके।

रामगोपाल : हाँ, जिस वक्त मैं पाँचवीं क्लास में पढ़ता था, उस वक्त मेरे साथ काफी ऐसी घटनाएँ मेरे साथियों ने कीं जो मुझे बहुत बुरी महसूस हुईं। क्योंकि वो समझते थे कि यह अछूत जाति से संबंध रखता है, तो मैंने उनसे कहा कि भई मेरे साथ क्यों ऐसा नाजायज़ बर्ताव किया जाता है। तो उनका मुझसे बर्ताव क्या था। जिस वक्त दो-चार इकट्ठे होते थे, तो वे कहते थे कि यह जो है, अछूत जाति का है। यह चमार जाति का है। इसके साथ बैठना नहीं, इसके साथ पढ़ना नहीं। तुम्हें पढ़ना नहीं चाहिए। उनका आपस में क्या था कि किताबों को चुरा लेना, आपस में मारपीट करना हम लोगों के साथ में। एक दिन ऐसा हुआ, उन्होंने मेरे काफी थप्पड़ जमा दिए और मैंने जो है रोते-रोते अपने पिताजी से कहा कि मेरे साथ ऐसी घटनाएँ हुईं हैं।

वाचक : उस बालक का क्या दोष जो अपने स्कूल में शायद यह जानता भी नहीं था कि अछूत क्या होता है, लेकिन जब उसे इस कच्ची उमर में समाज से यातना मिली तो उसका मन स्वभावतः विद्रोह कर बैठा। उसने इन्सपेक्टर आफ स्कूल से शिकायत की और रामगोपाल के शब्दों में सारा अभियोग सामने आया। अभियोग क्यों समाज की संकीर्णता की एक तस्वीर।

रामगोपाल : मैंने कहा कि नहीं, जो मेरे साथ नाजायज़ बर्ताव किया जा रहा है, रोजाना होता है यहाँ पर। शहर में होते हुए भी हमारे साथ ऐसी नाजायज़ हरकतें ये लोग करते हैं। तो उन्होंने पूछा—क्या हुआ आपके साथ तो मैंने कहा—देखिए ये

रोजाना मेरे साथ, रोजाना मुझसे कहते हैं कि यह चमार है, अछूत है। इसको यहाँ बैठना नहीं है, इसको पीछे बैठना चाहिए तो मुझे यह बात रोजाना बुरी लग रही थी, यहाँ तक कि पढ़ने में मेरा वहाँ दिल नहीं लगता था। एक दिन इन्होंने मेरे साथ में मारपीट की और मेरी किताबों को फाड़ भी दिया, चुरा भी लिया है। इस वजह से मुझे मजबूर होकर के अपने पिताजी से कहना पड़ा, और यह जो है सब जो आया और यहाँ तक जब यह बातें मैंने मास्टर साहब को बताईं, उन्होंने भी आनाकानी कर दी। कोई भी जो है 'एक्शन' नहीं लिया। बाद में जब उन्होंने यह शिकायत इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स के लिए भेजी और वे सुन कर गए तो पता फिर क्या हुआ वहाँ पर।

वाचक : लेकिन समाज और व्यक्ति पर कोई कितना 'एक्शन' ले सकता है। भारत सरकार ने छुआछूत को खत्म कर देने के लिए वर्षों पहले कितने कानून बना चुकी है, लेकिन उसका पालन करना तो हमारी भावना और हमारे संस्कार पर मुनसर है। लेकिन भावना एक दिन में तो नहीं बदली जा सकती और संस्कार भी एकाएक नहीं बदले जा सकते। समानता का नया संस्कार अपने भीतर ढालने के लिए हमें छुआछूत की सच्चाई की गहराई में जाना होगा। ऐसी सच्चाई जिससे रामगोपाल ने बड़े दर्दनाक अनुभव से हमें बताया है।

रामगोपाल : मैंने जहाँ तक यह जो अपना अन्दाजा लगाया था कि उनमें यह भावना जो थी, पता नहीं कुछ समाज की ऐसी प्रवृत्तियाँ चली आ रही हैं, पुराने जमाने से भई यह अछूत है, यह इस जाति का है, वह उस जाति का है इसलिए इससे घृणा करनी जरूरी उन्होंने समझा। लेकिन वो अगर अपने-अपने दिल के अन्दर यह बात सोचकर कि भई इसके अंदर क्या कमी है, क्या बुराइयाँ हैं इनके अंदर यह बात सोचते तो मेरा ख्याल है वो कभी ऐसा व्यवहार आपस में नहीं करते तो यह जो समाज की प्रवृत्तियाँ चली आ रही हैं, पुराने जमाने से कि जो अभी तक हमारे समाज में बनी हुई हैं, हमारे दिल में बैठी हुई हैं, वो निकाल नहीं पा रही है।

वाचक : किन्तु आज़ादी के बाद वही पुराना जमाना नहीं रहा। जमाना बदल रहा है, नयी भावना समानता के नये संस्कार हमारे भीतर पैदा हो रहे हैं। इस परिवर्तन को सभी महसूस करते हैं। रामगोपाल ने भी अनुभव करना शुरू कर दिया है।

रामगोपाल : जहाँ तक आजकल मैं देख रहा हूँ, काफी जागृति आ चुकी है। गवर्नमेंट ने काफी जो है, अछूतों के लिए सुविधाएँ प्रदान की हैं, एजूकेशन का प्रभाव डाला है, वैसे ही हर तरीके से मदद की गई है तो ये चीजें दूर होती गई हैं। मैंने यही देखा था कि उनमें ऐसे कुछ पुराने रीति-रिवाज चले आ रहे थे, कि जो यह जरूरी है करना इनके साथ में। भेदभाव तो इस वजह से ही उन्होंने किया है। बाकी जो है मैंने अंदर कोई कमजोरी महसूस नहीं की। सिर्फ यह जो पुराने जमाने की 'जनरेशन टु जनरेशन' की चली आ रही थी। यह जो मैंने फर्क पाया उसमें।

वाचक : शहरों में छुआछूत, ऊँच-नीच का भेद-भाव तो काफी कम हो रहा है, लेकिन गाँव में छुआछूत की भावना अपने पिछड़ेपन के कारण अभी भी बनी हुई है। गाँव

में अभी भी ऐसी न जानें कितनी घटनाएँ होती रहती हैं। जहाँ रामगोपाल जैसे अनेक संवेदशील युवक दुखी होते रहते हैं। एक बार ये अपनी किसी रिश्तेदारी में गए हुए थे, देखिए इन पर कैसी घटना घटी।

रामगोपाल : एक बार मैं अपनी रिश्तेदारी में गया था तो वहाँ पर ऐसा हुआ था कि जो दूसरी जाति में जो हिन्दू दूसरी जाति के लोग थे उनके यहाँ पर कुछ दावत थी, तो जो मेरे संबंधी थे यानी जो अछूत थे उनके यहाँ पर जो निमंत्रण आया था उनको। उन्होंने मुझसे भी कहा कि आप भी चलिए, तो मैं गया था वहाँ पर तो मैंने वहाँ पर देखा था कि दावत जिस वक्त हो रही थी, तो मैं भी उनमें जाकर बैठ गया—खाना-पीना खाया मैंने, लेकिन उनमें मैंने यह देखा कि जिस वक्त खाने-पीने का सामान बचा हुआ था तो कहा—इसे अपने आप फेंकिए। उठा करके मैंने इस चीज को बुरा महसूस किया।

वाचक : ये बुरा मानने की बात थी ही। मनुष्य बाहर-भीतर, दोनों से मनुष्य है। उसे एक समान भूख लगती है, उसे एक समान मान और अपमान अनुभव होता है। इसीलिए रामगोपाल ने निर्भय होकर इस घटना का प्रतिवाद किया था और लोगों को प्रभावित किया।

रामगोपाल : और फिर उन्होंने वहाँ पर जो है मैंने उनको यह प्रभावित किया कि यह जो आपका तरीका है यह गलत है क्योंकि मैं, और यह जो आपके साथी हैं इनमें कोई फर्क नहीं है क्योंकि इनसे अच्छा मेरा 'स्टैन्डर्ड आफ लिविंग' है और मैं अच्छे रहन-सहन में हूँ। उन्होंने कहा—वास्तव में यह ठीक है तो मेरे कहने से काफी प्रभावित हुए। जो बुजुर्ग थे उन्होंने कहा—ठीक है, आपस में बुराई नहीं होनी चाहिए। यह तो भाई समाज की पुरानी बुराइयाँ चली आ रही हैं। इन चीजों को तो निकाल फेंकना चाहिए, क्योंकि भई इंसान ये हैं और वो ही इंसान हम हैं। तो बस इतना मेरे साथ जरूर हुआ था वो जो समझाने से वो सब समझ गए थे।

वाचक : लेकिन इतना ही नहीं है। रामगोपाल के जीवन में इससे भी अधिक मार्मिक घटना घटी है। जो छुआछूत आज फैली है वह मानवता के नाम पर कलंक है।

रामगोपाल : वहाँ पर तो एक सड़क के किनारे एक गाँव था, वहाँ पर एक कुआँ था। मुझे खूब याद है, मुझे प्यास लगी तो मैंने सोचा कि भाई मेरा एक मित्र और था साथ में—मैंने कहा कि भाई मुझे तो प्यास लगी है, गर्मी का वक्त है। अपना जो दिल जमे है बड़ा घबड़ा रहा है, कहने लगे—यहाँ पर तो यह पता नहीं किस जाति का यह गाँव है और किस जाति का कुआँ है पता नहीं। किसी को पता लग गया भई, तो हड्डी-पसली एक कर देंगे। पानी पीना तो अच्छा नहीं है यहाँ पर। मैंने कहा कि भई इससे तो मरना अच्छा है, मुनो दम तोड़ दें। इससे वो अपने हाथ से मार देना तो कम से कम समाज को तो पता चलेगा कि एक इंसान की पानी के पीने से जो है इस तरह से जान यहाँ पर खतम कर दी गई।

वाचक : यानी यह सच है कि लोगों में हमारे समाज में इंसानियत की समझ की कमी की वजह से यह सब छूत-अछूत और इतना सारा संप्रदायवाद चल रहा है, लेकिन

उसे क्या कहा जाए। जहाँ पढ़े-लिखे लोग भी जात-उपजात और उससे भी नीचे न जाने कहाँ-कहाँ तक चले जाते हैं। रामगोपालजी के ऊपर एक ऐसी घटना भी घटी है जो संकीर्ण और जातिवाद और संप्रदाय का बड़ा ही घिनौना उदाहरण है।

रामगोपाल : मुझे याद है कि देहली-शाहदरा के पास जो लोनी रोड है, वहाँ पर जगह थी, तो लोगों ने जो है जी, तो मैं भी वहाँ पर जगह लेने के लिए गया और मैंने भी जगह ली, तो एक दिन ऐसा हुआ था कि वहाँ पर जब मैं बैठा हुआ था तो और भी अड़ोस-पड़ोस के जो आदमी थे, यानी एक तो शर्मा जी थे, एक वर्मा जी थे, दूसरे कुलश्रेष्ठ थे वहाँ पर, तो आ करके मेरे पास बैठ गए। लेकिन, उनको यह पता नहीं था कि ये भी इस जगह यहाँ पर, इन्होंने भी जगह ली है। ये रहेंगे, आ करके। तो वो कहने लगे कि भाई यह तो यहाँ पर बहुत बुरा हुआ। मैंने कहा कि क्या बुरा हुआ साहब ? कि साहब बुरा ऐसे हुआ कि हम शर्मा जी हैं, ये वर्मा जी हैं, ये कुलश्रेष्ठ हैं और यहाँ पर ये जो प्लौट है, यहाँ पर कोई अछूत जाति का आदमी आ करके प्लौट बना करके रहेगा, यह तो बुरा हुआ कि हमारे बीच में वो आ करके रहेगा।

वाचक : यह कैसा संस्कार है कि दो मनुष्य छूत-अछूत के नाम पर जो बिलकुल गलत स्वार्थी मनुष्य बनाया हुआ है, इसके आधार पर वह आज भी एक साथ नहीं रहना चाहता है। यह कैसी भावना है जो मनुष्य-मनुष्य के बीच में दीवार बना कर उठती है, लेकिन अब मनुष्य चाहे वह कितना भी अछूत, गरीब, कमजोर, समाज के सामने क्यों न हो, वह अपने मानवीय अधिकार के प्रति सचेत होने लगा है।

रामगोपाल : मैंने कहा—साहब बुरा क्या हुआ मान लो, उस अछूत का आपसे भी अच्छा रहन-सहन का दर्जा है और आपसे ज्यादा पढ़ा हुआ है और आपके हर तरह से जो है उसे तहजीब है तो उसमें क्या बुरा होगा। तो कहने लगे कि साहब ऐसी कोई बात नहीं, लेकिन, कोई न कोई तो बुराई होगी ही। मैंने कहा—भई, ऐसी क्या बात है, कौन-सी बुराई होगी ? जब आप ठीक हैं, आपने यहाँ पर जो है एक मकान बनाया तो वो जो मकान बना लेता है आपसे अच्छे और आप अगर मान लो दसवीं क्लास पढ़े हो, मान लो वह बारहवीं क्लास पढ़ा हुआ हो और अगर मान लो, आप दो सौ रुपए कमाते हों, वो चार सौ रुपए कमाता हो, और आपके मान लो एक बच्चा हो और उसके दो बच्चे हों और बच्चे भी अच्छी तरह से हों, तो उसमें क्या बुराई होगी। तो साहब कुछ कहते हैं कि समाज में अछूत लोग जो हैं, बुरे होते हैं। भई बुराई बताओ तो सही, क्या बुराई है उनमें।

वाचक : दरअसल यह सही बात है कि कोई आज यह नहीं बताता कि अछूत कैसे कहते हैं। गांधी ने अछूत को परमेश्वर कहा था और यह कहकर उन्होंने छूत-अछूत का अंतर सदा के लिए मिटा दिया, लेकिन वे तो गांधी थे, हमारे भीतर वो गांधी कहाँ है, जो अपने पुराने संस्कार को नष्ट करके रामगोपाल के दर्द को समझ सके।

रामगोपाल : तो साहब बताइए क्या ? आपने कैसे महसूस किया कि अछूत जो रह रहा है, इसका हमारे बीच रहना ठीक नहीं है । यह तो मुझे जँची नहीं बात । भई, वो तो मैं ही आदमी हूँ जो यहाँ पर आ करके रहूँगा । या तो आप ऐसा कर जाना कि भई या तो आप अछूत बन जाना या फिर वो तो अछूत है ही है । जब वो मान लो उससे आपका रहन-सहन का दर्जा गिरा हुआ हो तो भई आप भी अछूत बन जाना । तो कहते हैं कि नहीं साहब हम कैसे बन जाएँगे, हमने तो उच्च जाति में जन्म लिया है । भई यह क्या आखिर इंसान, ईश्वर ने तो हर एक को एक ही जाति बनाई है, आदमी की जाति ।

वाचक : यह कैसी सच्चाई है, जिससे हम भावना और संस्कार के नाम पर अभी तक अपने भीतर जिन्दा रखे हुए हैं । मनुष्य जन्म से ही छूत-अछूत है न कर्म से छूत-अछूत है । मनुष्य मृत्यु तक केवल मनुष्य है, यही बुद्ध ने कहा था और यही हमें भी अनुभव करना चाहिए, लेकिन ये अनुभव, इन्हें सरकार कानून बनाकर समय से करवा सकती है ओर न संसार के सारे उपदेश हम में यह नयी भावना पैदा कर सकते हैं । भारत सरकार ने तो कितना कुछ किया है, इसे सभी स्वीकार करते हैं ।

रामगोपाल : हाँ, हाँ । हमारी भारत सरकार ने तो बहुत कुछ किया है । करना भी चाहिए, क्योंकि हर किसी को अधिकार है जो समाज में जो पिछड़ी जातियाँ हैं, अछूत जातियाँ हैं वैसे ही उनका जो है रहन-सहन का दर्जा कम था, क्योंकि पैसे से हमेशा कमी रही उनके पास । पढ़े-लिखे नहीं रहे तो और कुछ उनका कारोबार जो है, जीवन भी ऐसा ही बिगड़ा चला आ रहा था । समाज में बुरी रीति-रिवाज चली आ रही थी तो उनको दूर करने के लिए हमारी भारत सरकार ने हर तरीके से, रुपए-पैसे से, यानी आर्थिक सहायता देना शुरू किया बच्चों को पढ़ाने की तालीम मुफ्त की, भारत सरकार ने यहाँ तक उनको जो है रहने-सहने के लिए मकानों का भी प्रबंध किया भारत सरकार ने । हर तरीके से सहूलियतें दे रही है ।

वाचक : परस्पर सद्भावना बढ़ाने के लिए और विभिन्न जातियों में, मनुष्यों में भेद-भाव कम करने के लिए सभी पढ़े-लिखे मनुष्य प्रयत्नशील हैं । रामगोपाल जैसे व्यक्ति भी अपने अनुभव के आधार पर कुछ व्यावहारिक उपाय बताते हैं ।

रामगोपाल : भई, एक अछूत की लड़की को दूसरे समाज में स्वीकार की है और उनको लड़की है वह अछूत समाज में स्वीकार की है । तो ऐसे करने से उनमें जो है आपस में भेद-भाव कम हो जाएगा । सद्भावना बढ़ेगी और यहाँ तक कि मान लो जैसे मैं देखता हूँ कि जो दूसरा समाज है, अछूतों के अलावा, उसमें धन का अभाव है । अपनी लड़कियों को दहेज देने के लिए जीवन भर उनको कमाना पड़ता है, घुटते रहते हैं, दम तोड़ना पड़ता है । लेकिन बहुत परेशानियाँ होती हैं । तो ऐसे समाज के ऐसे जो पुरुष हैं, उनको अछूतों में आकर के शादी कर देनी चाहिए ।

वाचक : वक्त बदल रहा है धीरे-धीरे, पुरानी रीतियाँ कम हो रही हैं । छूत-अछूत का भेद-भाव कम होता जा रहा है, लेकिन जो अछूत का संस्कार का बोध हमारी भावना में जाकर बैठ गया है, उसे हम पूरी तरह से कब निकाल पाएँगे ।

कुछ और कुछ

(दूरदर्शन एकांकी)

पात्र

डिप्टी साहब (45 वर्ष)
मिस्टर सिंह (45 वर्ष)
पी० ए० (40 वर्ष)
खोसला साहब (50 वर्ष)
मिस वासवानी (25 वर्ष)
कमला (20 वर्ष)
और कुछ लोग

[शुरू के संगीत के बाद फेड इन दफ्तर में आते हुए लोग। कट टु स्टाफ कार—उसमें से डिप्टी साहब उतर रहे हैं। कट टू आफिस की बिल्डिंग। दरवाज़ा। उसमें घुसते हुए लोगों के बीच डिप्टी साहब।]

डिप्टी : हलो मि० सिंह।

सिंह : हलो मि० प्रसाद।

[दोनों हाथ मिलाते हैं।]

डिप्टी : जनाब कल कहाँ गायब हो गए? रात बारह बजे तक जमी।

सिंह : आप ही जीते होंगे।

डिप्टी : भई, शतरंज भी क्या खेल है। वाह!

सिंह : और सब ठीक-ठाक?

डिप्टी : यह भी कोई सवाल है?

सिंह : सच, आपको देखकर तबीयत खुश हो जाती है।

डिप्टी : लीजिए, सिगरेट पीजिए।

[दोनों का सिगरेट पीना]

डिप्टी : मुझे याद है, आप कभी-कभार पान रखते थे।

सिंह : आज ले आया हूँ, लीजिए।

डिप्टी : चलिए···कमरे में···।

[दोनों जाते हैं। हँसते-बोलते हुए। कट टु डिप्टी साहब का कमरा। नेम प्लेट—टी० प्रसाद, डिप्टी सेक्रेट्री। फेड इन—डिप्टी साहब मि० सिंह के साथ हँसते हुए आते हैं।]

डिप्टी : बिल्कुल यही बात। अजी कोई काम ही नहीं करता। और जब से हर दफ्तर में यूनियन बन गयी, तौबा।

सिंह : और हर दफ्तर में कैंन्टीन।

डिप्टी : भाई पूछो नहीं मि० सिंह, मुल्क की कुछ हवा ही बदल गयी।

सिंह : आइए, मेरे कमरे में, आप से कुछ बहुत जरूरी बात करनी है।

डिप्टी : जरा अपने कमरे में तो झाँक लूँ, वरना मेरा पी० ए० गायब···।

[कमरा खोलना। मेज पर फाइलों के पहाड़। फाइलों को देखना। पी० ए० आता है।]

पी० ए० : साहब, यह फाइल अभी जानी है। बड़े साहब का चपरासी आया था।

डिप्टी : चाय पीने आया होगा।

पी० ए० : आज आप की डायरी पर'''।

डिप्टी : आज ?

पी० ए० : मतलब पिछले कई दिनों''' (**डायरी का पेज पढ़ता हुआ**) वेरी अर्जेन्ट में—नम्बर तेरह की फाइल पर नोटिंग, साहब के पास नोट पुट-अप करना, सेक्रेट्री को दोनों एप्लीकेशन फारवर्ड करना। होम मिनिस्ट्री को स्टेटमेन्ट मोस्ट इमीजिएट में—पार्लियामेंट के सवाल का मैटर भेजना। खोसला कमीशन की फाइल पर नोट तैयार करना'''।

[सहसा बाहर से मिस वासवानी का प्रवेश।]

डिप्टी : हेलो, मिस वासवानी।

[पी० ए० घूरता है।]

डिप्टी : जाओ, अपना काम करो।

[पी० ए० जाता है।]

वासवानी : कुछ डिक्टेशन दे रहे थे ?

डिप्टी : यह तो चलता ही है। एन आफिसर शुड बी ड्यूटीफुल एज ए वोमन शुड बी ब्यूटीफुल।

वासवानी : थैंक यू सर।

[फोन आता है।]

डिप्टी : (**उठकर**) हलो, ओह मिस्टर सिंह'''आया'''आया, अभी आया। (**फोन रखना।**)

वासवानी : सर, मेरा ब्रदर काफी दिनों से बेकार है। आपने कहा था, एल० डी० सी० में'''

डिप्टी : आप तो 'एअर लाइन्स' में काम कर रहे हैं—वहाँ कुछ ?

वासवानी : वहाँ लड़कियों को 'प्रिफरेंस' दिया जाता है।

डिप्टी : अरे अपने बॉस से बोलो। थोड़ा घुमाओ-फिराओ—'आउटिंग''पिकनिक'।

वासवानी : बहुत 'बिजी' और 'बोर' भी।

डिप्टी : (हँसकर) आप लोगों के रहते हुए'''हद है।

वासवानी : आप टालिए नहीं, 'ब्रदर' के लिए कुछ जरूर कीजिए।

डिप्टी : वह कुछ गाता-बजाता है ?

वासवानी : यह तो पता नहीं'''शायद कुछ बजाता है—आई डोन्ट नो'''बड़ा स्मार्ट है।

डिप्टी : क्या बजाता है ?

वासवानी : पूछकर बताऊँगी।

डिप्टी : तुम्हें उस दिन लुंगी पहने देखा था···कैसी लगती है लुंगी ?
वासवानी : आप बताइए ।
डिप्टी : मुझे तो साड़ी अच्छी लगती है···।
वासवानी : नीचे तक कमर खुली हुई ।

[दोनों हँसते हैं ।]

वासवानी : देखिए, उमी तरह पहनती हूँ ।

[कट टू कमर]

डिप्टी : आई एम सारी···दफ्तर में बहुत काम है।
वासवानी : काम तो रहता ही है।···आज आप बड़े स्मार्ट लग रहे हैं। आपकी एज क्या है ?
डिप्टी : किसी से उम्र पूछते हैं ?
वासवानी : लड़कियों से नहीं पूछते। आप लोगों की उम्र तो अच्छी लगती है, 'मेच्योर एण्ड सोबर'।
डिप्टी : थैंक यू वेरी मच।···अच्छा फिर भेंट होगी।
वासवानी : हाय, आपको इतनी जल्दी क्या है। 'यू डोन्ट लाइक माई कम्पनी ?'
डिप्टी : ओहो, ऐसी बात नहीं। अच्छा तो ऐसा कीजिए, आप अपने ब्रदर को लेकर किसी दिन मेरे घर आइए।
वासवानी : आप मेरे घर आइए ना। डिनर पर···यू विल लाइक।
डिप्टी : 'स्योर, स्योर।'
वासवानी : तो कल···।
डिप्टी : अच्छा, कल सुबह फोन करूँगा···वैसे तुम अपने बॉस से कहो। मैं भी कहूँगा।
वासवानी : मैंने कहा न, वह दफ्तर में लड़कियाँ फिट करता है।
डिप्टी : अजी, अब लड़के-लड़कियों में क्या फर्क रह गया है।

[चपरासी दरवाजा खोलकर आता है।]

चपरासी : साहब, सलाम। सिंह साहब के कमरे में हुजूर की चाय ठंडी हो रही है।
डिप्टी : बस, बिल्कुल आया।

[चपरासी जाता है।]

सवाल यह है कि चारों ओर ओवर स्टाफ है। न दफ्तरों में जगह···न कैन्टीनों में···हाँ, पिछले दिनों कॉफी हाउस गया था। ओहो, क्या भीड़ थी ! (**कहते हुए कमरे के बाहर आते हैं।**)

वासवानी : सर, आप ही के भरोसे वह बैठा है। आपको याद दिलाने आयी थी। थैंक यू···अब दफ्तर पहुँचना है। (**जाने लगती है**)
डिप्टी : आजकल मौसम फिर अच्छा हो गया है।

वासवानी : फिर मिलूँगी सर। अब देरी हो रही है। थैंक यू।

डिप्टी : एक्सपो सेविन्टी में तुम्हें जाना चाहिए था। क्या ख्याल है एक्सपो सेविन्टी के बारे में तुम्हारा ?

वासवानी : अच्छा है···वेरी गुड···फाइन···

डिप्टी : अपने ब्रदर से बोलो···वह बेकार घूमता न रहे। कुछ पढ़े-लिखे···लाइब्रेरी जाए···कम-से-कम अपनी सेहत का तो ख्याल रखे। तंदुरुस्ती लाख नियामत है।

[चपरासी आता है]

चपरासी : हुजूर आपका इन्तजार कर रहे हैं !

डिप्टी : अच्छा नमस्ते। मुझे ख्याल है, मैं कोई चीज भूलता नहीं। और अपना वायदा तो कभी नहीं।

वासवानी : वेरी काइंड आफ यू, सर। (चली जाती है।)

[कट टु मि० सिंह का कमरा। मेज पर फाइलें, कागज-पत्तर। नीचे दो आराम-कुर्सियाँ। टेबुल पर चाय। डिप्टी साहब का प्रवेश।]

डिप्टी : भाई, माफ करना, एक मैडम आ गयीं।

सिंह : आइए, आपकी चाय ठंडी हो रही है।

डिप्टी : अब तो गरम ही मँगाइए। (बैठते हैं।)

सिंह : चपरासी,ग र्म ले आओ।

[चपरासी चाय की ट्रे ले जाता है।]

डिप्टी : सिंह साहब, स्टूडेंट प्राबलम बहुत बढ़ता जा रहा है।

सिंह : लीजिए, पान खाइए।

डिप्टी : चाय के बाद···थैंक यू···हाँ, तो मैं कह रहा था···क्या कह रहा था ?

सिंह : स्टूडेंट-प्रावलम।

डिप्टी : बात यह है साहब, बेकारी बहुत है। ऊपर से इतनी महँगाई है। जानते हैं, इस बेकारी की वजह ? हिन्दुस्तान की बढ़ती हुई आबादी। जनाब, मैंने कहीं कहा था, सन सैंतालीस के बाद ही 'फेमिली प्लानिंग' कम्पलसरी कर दी गई थी। पर तब किसी ने मेरी बात नहीं सुनी। आज चले हैं 'फेमिली-प्लानिंग' करने, जब मुल्क की आबादी आल रेडी इतनी बढ़ गयी है।

[फोन की घण्टी। सिंह साहब उठते हैं।]

सिंह : हेलो···यस···जी हाँ···आपका फ़ोन !

डिप्टी : देखिए, मेरे पी० ए० की शरारत। वह लंच लेता है, मैं कहाँ हूँ। किसका फोन है ? (लेकर) हेलो···हाँ-हाँ, फाइल आई है···हो जाएगा···तो तीन महीने हो गए, मैं क्या करूँ ? हो जाएगा···इत्मीनान रखिए। (फोन रखकर) और जानते हैं, महँगाई की वजह क्या है ?···इंसान में धैर्य की कमी। पहले आदमी कम खाता,

कम पहनता, कम पीता और संतुष्ट हो जाता···समझे न !

[चपरासी चाय लेकर आता है । चाय चलती है ।]

डिप्टी : मतलब पहले का इंसान इतना भूखा नहीं था ।

[पी० ए० का प्रवेश ।]

पी० ए० : हुजूर ! साहब का चपरासी फाइल लेने आया है ।

डिप्टी : कह दो, पहुँच जाएगी ।

पी० ए० : अर्जेन्ट है साहब···पिछले तीन दिनों से···

डिप्टी : आज हो जाएगा ।···जाओ···हाँ तो सिंह साहब, बात यह है कि आज के जमाने में आदमी की भूख ज्यादा बढ़ गयी है । वजह वही राजनीति है ।

सिंह : और धैर्य की कमी ।

डिप्टी : एक्जैक्टली ।

पी० ए० : साहब, चोपड़ा साहब के दो टेलीफोन आ चुके हैं ।

डिप्टी : यह बताइए, आप लोगों को यह क्यों बताते रहते हैं, कि मैं कहाँ बैठा हूँ···किस फोन नम्बर पर ?

पी० ए० : साहब, मैं क्या करूं ?

डिप्टी : लो, एक कप चाय पियो ।···लो···दिस इज द एज आफ डेमोक्रेसी ।

पी० ए० : थैंक यू सर ! (चाय का घूंट भरता है) सर, समाजवाद कहते किसे हैं ?

डिप्टी : एकता···समानता···और वगैरह-वगैरह ।

सिंह : मेरा ख्याल है, 'डेमोक्रसी' आ गयी है हमारे समाज में ।

पी० ए० : मगर मुल्क में नहीं आई है ।

डिप्टी : बिना मेहनत और ईमानदारी के 'डेमोक्रेसी' कैसे आएगी ? जिसका जो काम है, जिम्मेदारी है, उसे वह भी चुराता है—यह अजीब बात है ।

पी० ए० : साहब, जल्दी आइए । कम-से-कम वे तीनों फाइलें तो···

डिप्टी : हो जाएँगी, हो जाएँगी, तुम जाओ ।

पी० ए० : चपरासी को क्या बोलूँ, सर ?

डिप्टी : भेज दो उसे । फाइलें पहुँच जाएँगी ।

पी० ए० : आज ही लंच से पहले ।

डिप्टी : हाँ, हाँ, कह तो दिया ।

[पी० ए० जाता है ।]

सिंह : और चाय लीजिए ।

डिप्टी : हाँ तो सिंह साहब, और क्या हालचाल है ?

सिंह : ज्वाइन्ट सेक्रेट्री के पास मेरी पर्सनल फाइल पड़ी है—एन्ट्री के लिए उसके पास मेरे सैक्शन वालों ने शिकायत पहुँचाई है कि मैं 'फ्रेवेटिज्म' करता हूँ ।

डिप्टी : मतलब हुस्ट दे मीन वाई 'फ्रेवेटिज्म' ।

सिंह : उनका कहना है—मैं ब्राह्मण और क्षत्रियों का पक्ष लेता हूँ।
डिप्टी : दिस इन नाट फेवरेटिज्म। दिस इज कम्यूनलिज्म।
सिंह : मैंने अपने सैक्शन में अपने प्रदेश के लोगों को भर लिया है।
डिप्टी : दिस इज प्राविंशियलिज्म।
सिंह : मुझे डर है, ज्वाइंट सेक्रेट्री बैड एन्ट्री न कर दे। वह बड़ा शक्की आदमी है—क्लर्कों का ही पक्ष लेता है।
डिप्टी : मैं बोल दूंगा उन्हें इत्मीनान रखिए।
सिंह : लीजिए, अब पान खाइए। (पान खाते हैं)
डिप्टी : ओह ! मगही है। बस पान हो तो मगही। मगर कितना महँगा हो गया है।

[फोने आता है]

सिंह : यस, सिंह स्पीकिंग। हाँ-हाँ, फाइल आई है। उसे पढ़ रहा हूँ···उस पर सोचना पड़ेगा···इतनी जल्दी कैसे ! हाँ-हाँ···ठीक है, ओ के···जी हाँ···स्योर-स्योर। (फोन रखना।)
डिप्टी : लोग सोचते हैं, फाइल नहीं कैरमबोर्ड की गोट है···
सिंह : गोट नहीं, स्ट्राइगर इधर आया नहीं कि मारा।

[दोनो हँसते हैं।]

डिप्टी : वाह-वाह ! आप बहुत अच्छी मिसाल देते हैं।
सिंह : बी० ए० तक लिट्रेचर पढ़ा है।

[कट टू दीवार घड़ी। साढ़े ग्यारह बजे हैं।]

डिप्टी : आपकी यह घड़ी ठीक है ?
सिंह : ठीक ही होनी चाहिए।
डिप्टी : देखिए, मैं तो अपनी घड़ी में चाबी ही देना भूल जाता हूँ।

[चाबी देते हैं। फिर फोन आता है।]

सिंह : हेलो !···आपका फोन।
डिप्टी : हाँ···हाँ···हाँ। तो पार्लियामेंट में तो सवालात पूछे ही जाते हैं। यह उनका काम है—दे आर पेड फॉर इट। और उनका सिर्फ यही काम है···सवाल पूछना, बस। हम भी जवाब दे देंगे।···जी···जी···यस जनाब, जवाब सोच-विचारकर इत्मीनान से दिया जाता है—दिस इज ट्रेडीशन।···नो-नो, यह कैसे कह सकते हैं, यह 'ब्यूरोक्रेसी' है। दिस इज डिमोक्रेसी। जी आज हो जाएगा···जी जरूर भेज दूंगा···लंच से पहले···अच्छा आई विल ट्राई···भाई, काम बहुत है शुक्ला जी। (फोन रखते हैं।)

[इस बीच चपरासी ने चाय के बर्तन उठा लिए हैं। सिंह साहब अखबार पढ़ने लगे हैं।]

2

डिप्टी : कोई खास खबर ?

[कहीं से विविध भारत

डिप्टी : कोई खास खबर ?

[कहीं से विविध भारती का संगीत और विज्ञापन का कार्यक्रम आने लगता है। दोनों ही अखबार देखते हैं।]

डिप्टी : (सहसा) अब देखिए कमाल, लोग दफ्तरों में ट्रांजिस्टर लाते हैं। दिस इज लिमिट। (सुनकर) वैसे संगीत अच्छा बज रहा है।···वाह !

[पी० ए० का प्रवेश।]

पी० ए० : साहब, बड़ा ज़रूरी टेलीफोन आया है।

डिप्टी : अच्छा सिंह साहब, फिर भेंट होगी।

[डिप्टी साहब का कमरा।]

डिप्टी : (फोन लेकर) जी हाँ···यस सर ! आई एम सॉरी···आज हो जाएगा। अभी करता हूँ, जी हाँ, लंच से पहले। जी हाँ···तीन बजे तक किसी भी हालत में आपके पास पहुँच जाएगा। (फोन रखते हैं।)

[खोसला साहब अन्दर आते हैं।]

खोसला : नमस्ते प्रसाद साहब।

डिप्टी : आइए···आइए···तशरीफ रखिए। आप तो जैसे ईद के चाँद हो गए।

खोसला : वाह-वाह ! दिखते खुद नहीं···देखिए, मैं खुद हाजिर हुआ। कल भी आया था।

डिप्टी : भाई, काम के मारे दम लेना तक मुश्किल है।

खोसला : यह तो चलता ही रहेगा। आज आप लंच मेरे साथ लेंगे।

डिप्टी : श्योर ! श्योर ! भाभी साहब ने कुछ खास चीज बनाई है, लगता है।

खोसला : बिल्कुल, आपको बहुत याद करती हैं।···हाऊ इज़ मिसेज़ प्रसाद ?

डिप्टी : थैंक यू। फाइन।

[कट टू घड़ी। ढाई बजे हैं। फिर कट टू खोसला का कमरा। दोनों ने लंच ले लिया है। बर्तन बिखरे हैं टेबुल पर। दीवार-घड़ी में ढाई बज रहे हैं। दोनों सिगरेट पी रहे हैं। हँसते हैं।]

डिप्टी : (सहसा) ओह ! ढाई बज गए।

खोसला : वह तो बजता ही रहता है।

[पी० ए० आता है।]

पी० ए० : हुज़ूर ! साहब का चपरासी फिर आया है।

डिप्टी : आना उसका काम है। कमाल है। चलो, आता हूँ। (पी० ए० जाता है) ये फोर्थ ग्रेड के मुलाज़िम नाक में दम किए रहते हैं।

खोसला : आज स्टाफ कार मुझे चाहिए प्रसाद साहब।
डिप्टी : पहले क्यों नहीं कहा ? बड़े साहब के···हो।
खोसला : क्या हो रहा है भाई ? (बाहर जाते हैं।)

[इस बीच डिप्टी साहब एक मैगजीन देखने लगते हैं।]

ओहो, एक फाइल के लिए लड़ाई हो रही है।

डिप्टी : अच्छा, मैं चला।

दृश्य-परिवर्तन

[डिप्टी साहब की मेज। बढ़कर कुर्सी पर बैठते हैं। पी० ए० और कागजात लेकर आता है।]

डिप्टी : लाओ···कहाँ हैं मेरे काम।···अभी निपटाता हूँ फटाफट। मैं औरों की तरह कामचोर नहीं।
पी० ए० : चपरासी तो चला गया, सर।
डिप्टी : जाने दो···कौन ?

[कमला का प्रवेश।]

डिप्टी : ओहो ! कमला···आओ···आओ···बैठो···अरे ये तुम्हारी आँखों में आँसू !
कमला : मेरा इंटरव्यू चौपट हो गया।···आपने बताया था अंकल, 1959 में भारत की जनसंख्या 50 करोड़ थी, जबकि थी 36 करोड़ 11 लाख।
डिप्टी : 14 करोड़ का फर्क कोई फर्क नहीं।
कमला : आपने बताया था, भारत जनतांत्रिक गणराज्य है, जबकि यह लोकतंत्रात्मक गणराज्य है ? (रोने लगती है।)
डिप्टी : रामनाथ जी, जरा इधर आइए ?

[पी० ए० आता है।]

डिप्टी : देखो फुल सेट चाय मँगाओ···कमला, डोंट वरी।
पी० ए० : साहब, बहुत काम है। घड़ी देखिए, अभी एक भी काम नहीं···
डिप्टी : अच्छा-अच्छा···आओ कमला, आओ मेरे साथ··· (दोनों जाते हैं)

[कट टू घड़ी। घड़ी की सुई चार बजाती है। कट टू फोन, फोन आया है। पी० ए० उठाता है।]

पी० ए० : (डरा हुआ) जी हुजूर ! बस आ ही रहे होंगे···मैं क्या करूँ हुजूर···ओह, आ गए। (डिप्टी का प्रवेश) साहब का फोन है, सर।

डिप्टी : हेलो··· (सहसा ...
(पी० ए० को डाँटना) ...

[फोन रखना। सर प...

डिप्टी : हेलो··· (सहसा डरना) यस सर···यस सर···सॉरी सर···वेरी सॉरी··· (पी० ए० को डांटना) तू जा यहाँ से···यस सर···यस···

[फोन रखना। सर पर हाथ रखना। घड़ी देखना, फिर फाइलों के ढेर पर नजर गड़ जाना। लोग घर जा रहे हैं। डिप्टी साहब देखते हैं फिर फाइल निहारते हैं। पी० ए० जाता है। दोनों की नजरें मिलती हैं।]

डिप्टी : (कई जगह फोन करते हैं, मि० सिंह, खोसला साहब को, पर सब चले गए हैं) साढ़े चार बजे नहीं कि लोग दफ्तरों से गायब, मैं हूँ अकेला···जी। इस देश का चरित्र कितना गिर गया है, हे भगवान !

आंटी और आंटी

पात्र

मिसेज़ प्रसाद (मि० प्रसाद की पत्नी)
लीला (डाइवोर्स्ड)
मिसेज़ मेहरा (सेपरेटेड)
मिस बाववानी
पंडितजी (पामिस्ट)
मि० प्रसाद (डिप्टी साहब)

[प्रारंभिक संगीत के बाद 'फेड इन'—लीला का ड्राइंग-रूम। लीला, मिसेज़ मेहरा और मिस बावनानी सब सोफे और कुर्सियों पर बैठी हुई 'रमी' खेल रही हैं। लीला पत्ते बाँटती है। सब औरतें अपने अपने कार्ड्स चूमती हैं।]

लीला : तो पपलू हुआ पान का बादशाह !

मिसेज़ मेहरा : उल्लू का पट्ठा पान का बादशाह।

बावनानी : तो बीवियाँ हुईं जोकर !

लीला : और मर्द हुए पपलू !

[सब हँसती हैं। सभी पत्ते चलना शुरू करती हैं। खेल शुरू। औरतें तरह-तरह से मुँह बना रही हैं। मिस बावनानी पत्ते फेंककर वहीं अपना बैग खोलकर मेकअप ठीक करने लगती हैं।]

मिसेज़ मेहरा : इसके मानी, साला पपलू किसी के पास नहीं आया।

लीला : 'बैड लक'।

मिसेज़ मेहरा : बड़े ही खराब पत्ते आए।

लीला : मंगलवार का दिन मेरे लिए अच्छा नहीं रहता।

मिसेज़ मेहरा : डियर बावनानी, यहाँ किसके लिए मेकअप कर रही हो, मेरी जान ?

बावनानी : क्यों, औरतों को हर वक्त खूबसूरत 'अट्रेक्टिव' बने रहना चाहिए। 'दैट इज़ ए मस्ट'।

[औरतें खेल रही हैं…पत्ते निकालना, मिलाना, फेंकना…तरह-तरह की 'स्टाइल' और अन्धविश्वास के ढंगों से।]

मिसेज़ मेहरा : बस, एक ही पत्ते की कमी है…'द लास्ट लकी कार्ड'।

लीला : मेरा तो डियर, अभी तक सिक्वेन्स ही नहीं बना।

मिसेज़ मेहरा : बावनानी, जरा इस पत्ते पर आँख तो मारो।

बावनानी : पाँच रुपये फीस।

मिसेज़ मेहरा : एक रुपया।

बावनानी : जी, मैं इत्ती सस्ती नहीं…'आई एम अनमैरिड वर्किंग गर्ल'।

मिसेज़ मेहरा : गर्ल नहीं आंटी।

[तीनों की हँसी।]

लीला : हर कोई जब औरत से आंटी कही जाने लगती है, तो समझो वक्त आ गया।

मिसेज़ मेहरा : चलो, आँख मारो ।

[मिसेज़ मेहरा पत्ता खींचती है । बावनानी उस पत्ते पर आँख मारती है···और वह पत्ता पपलू है । मिसेज मेहरा खुशी से चिल्ला पड़ती है···'पपलू'···'पपलू'··· नाचना शुरू करती है । बावनानी को अपने संग घसीटती है । एक तूफान मचा देती है । चीजों को फेंकना, पत्ते का चूमना आदि । इसी बीच बाहर से मिसेज़ प्रसाद आती है ।]

लीला : हैलो मिसेज़ प्रसाद ।

[इन्हें दोनों औरतें मारे खुशी के पकड़ लेती हैं, 'पपलू' 'पपलू' कहकर गुदगुदाती हैं ।]

मिसेज़ प्रसाद : बस भई बस, कॉफी पिलाऊंगी···

[सब बैठती हैं ।]

मिसेज़ मेहरा : तो मेरे प्वाइन्ट्स हुए (कागज पर लिखती है) मेरा प्लस थ्री फिफ्टी, लीला माइन्स टू हंड्रेड और बावनानी का···माइन्स हंड्रेड फिफ्टी ।

मिसेज़ प्रसाद : अब खेल बंद···यह क्या तमाशा है···तुम लोग इस कदर रमी खेलती रहती हो ।

लीला : (उठकर सिगरेट जलाती है) हम आज़ाद हैं ।

मिसेज़ मेहरा : (उठकर होंठों पर लिपस्टिक लगाकर शीशे में देखती हुई) 'आई एम इन्डिपेंडेंट' ।

बावनानी : 'आई एम फ्री' ।

मिसेज़ प्रसाद : ओहो, बड़े-बड़े नक्शे हैं···।

लीला : मुझे मेरा शौहर नहीं जँचा, मैंने तलाक ले लिया ।

मिसेज़ मेहरा : मेरा हसबेंड नालायक, दगाबाज निकला । मैं उससे 'सेपरेट' हो गई ।

बावनानी : मुझे अभी तक कोई जँचा नहीं, 'आई एम फ्री', 'अनमैरिड वर्किंग गर्ल' ।

मिसेज़ प्रसाद : फिर, तो मैं आपकी सोसायटी लायक कहाँ ? मैं तो धर्मपत्नी हूँ···आपकी नजर में गुलाम ।

मिसेज़ लीला : हाय, मिसेज़ प्रसाद, आप तो खामखा रूठ गईं ।

मिसेज़ मेहरा : हाय, कितनी स्वीट लग रही हैं आप ।

बावनानी : आप अपने ब्लाउज किससे सिलवाती हैं । हाय !

मिसेज़ प्रसाद : आप क्या करेंगी, आप तो लुंगी पहनती हैं ।

बावनानी : क्या करूँ 'नेसेसिटी इज द मदर आफ इनवेन्शन' ।

लीला : शुक्र है, इस कहावत पर किसी मर्द की नजर नहीं पड़ी, वरना कहावत होती— 'नेसेसिटी इज द फादर आफ इनवेन्शन' ।

[सामूहिक हँसी]

लीला : कहाँ से आ रही है ?

मिसेज़ प्रसाद : जरा कनाटप्लेस गई थी···कुछ कपड़े खरीदने थे ।

मिसेज मेहरा : **(पैकेट खोलती है)** आह, अपने शौहर के लिए कपड़े। अरे, अपने लिए कपड़े खरीदो···मरदों को कपड़ों की क्या जरूरत···दो-एक काफी हैं।

लीला : मैं तो अपने 'एक्स हसबैंड' को एक भी कपड़ा नहीं खरीदने देती थी। सादा रहन-सहन, ऊँचे विचार। (हँसी) मतलब हसबैंड जितना ही स्मार्ट होगा उतना ही खतरा होगा।

मिसेज मेहरा : मगर फिर भी आपका एक्स हसबैंड तुम्हें डोज दे गया।

लीला : तुम्हारा हसबैंड क्या कम निकला। उसके तो तीन-चार से 'एफेयर' थे।

मिसेज मेहरा : 'माई हसबैंड वाज एक्जीक्यूटिव इंजीनियर'।

लीला : 'माइन वाज मेजर जनरल'।

मिसेज प्रसाद : देखिए, लड़िए नहीं···मेरा दिल धक-धक करने लगता है।

लीला : जिंदगी-भर पत्नी बने रहने से दिल धक-धक नहीं करेगा तो और क्या !

मिसेज मेहरा : जिन्दगी में 'चेंज' जरूरी है।

लीला : अभी तो तुम जवान हो मिसेज प्रसाद। **(कपड़े देखती हुई)** ओह, आपने तो बच्चों के लिए भी कपड़े खरीदे हैं।

मिसेज प्रसाद : क्यों, बच्चों को कपड़े न पहनाए जाएँ।

लीला : बच्चे तो बढ़ते रहते हैं। मैं तो यही बहाना जानती हूँ।

बावनानी : भई, मैं तो अब बोर हो रही हूँ··· चलो कहीं चलकर कॉफी पी जाए।

मिसेज मेहता : क्यों मिसेज प्रसाद, आपके घर चलें ?

बावनानी : आज किसी 'डिस्कोथेक' में···।

लीला : अपनी उमर तो देखो।

बावनानी : तुमसे तो कम ही है मेरी उमर।

लीला : शादी न हो तो क्या उमर भी न बढ़े।

बावनानी : 'डोंट टाक नानसेंस'।

मिसेज मेहता : जब गुस्सा करती हो तो अच्छी लगती हो।

बावनानी : 'थैंक यू वेरी मच'। **(खुशी से सबको देखती है।)**

मिसेज प्रसाद : चलो, तुम्हारे प्रेमी के यहाँ आज कॉफी पीने चलें।

लीला : हाय मिसेज प्रसाद ! ह्वाट ए वंडरफुल आइडिया।

बावनानी : जी नहीं, मुझे अभी पामिस्ट के यहाँ जाना है।

सब : पामिस्ट ! हाय हम भी चलेंगे।

लीला : कोई नया पामिस्ट है क्या ?

मिसेज प्रसाद : अब मैं चलूंगी···चार बज रहे हैं···।

[जाती हुई मि० प्रसाद को लीला और मि० मेहता पकड़ लेती हैं। उन्हें सोफे पर जबरन बैठाती है।]

बावनानी : **(पत्ते मिक्स करती हुई)** चलो हो जाय थोड़ी देर 'पपलू' पाँच पैसे प्वाइंट।

मिसेज प्रसाद : मैं नहीं जानती 'कार्ड खेलना', सच नहीं जानती।

लीला : अच्छा यह लो सिगरेट।

मिसेज प्रसाद : मुझे कतई पसन्द नहीं है कि औरतें सिगरेट पीएँ।

मिसेज मेहता : क्यों, औरत मर्द से कम है क्या ?

लीला : 'मेन आर हंगरी वुल्फ'—भूखे भेड़िये हैं आदमी।

मिसेज मेहता : मर्दों को एक सबक मिलना चाहिए।

मिसेज प्रसाद : हाय, कैसी बातें करती हैं आप, औरत माँ है। धरती माँ है।

लीला : हाँ-हाँ, मैं धरती माँ हूँ। आए कोई, मुझसे बात करे।

मिसेज प्रसाद : पर धरती माँ में धैर्य है···त्याग है।

लीला : हम माडर्न धरती हैं। आप कब की बातें कर रही हैं ?

मिसेज प्रसाद : 'गॉड इज़ ही, नाट शी'।

मिसेज मेहता : ये आँखों के चोंचले हैं···उन्होंने हर चीज को 'ही' बना लिया है। हम ईश्वर को 'शी' बनाएँगे।

लीला : 'यस, व्हाई नाट···द हैंड दैट रैक्स द क्रेडिल रूल्स द नेशन'। नैपोलियन को किसने बनाया ? उसकी माँ ने···हा-हा···आ।

बावनानी : ओहो, सवा चार बज गए, साढ़े चार बजे पामिस्ट के साथ मेरी ऐंगेजमेन्ट है···।

लीला : चलो, हम भी चलते हैं।

मिसेज मेहता : आइए न मिसेज प्रसाद···क्या घर में पड़ी-पड़ी झख मारती हैं···आजाद बनिए···आजाद···

[सब का जाना]

दूसरा दृश्य

[कॉफी हाउस का दृश्य। कैमरा घूमता है 'फार फेमिलीज़ ओनली' के भाग में। वहाँ एक मेज के चारों ओर पंडित जी को घेरे हुए चारों औरतें बैठी हैं।]

पंडित : (बावनानी से—कागज पर लिखते हुए) तो आपकी जन्मतिथि क्या है ?··· मतलब सन्···

बावनानी : सॉरी, कोई डेट आफ बर्थ बताने की चीज है।

पंडित : जरा हाथ देखूँ···दायाँ नहीं···बायाँ हाथ···हाय, क्या नक्षत्र हैं आपके··· चन्द्रमा बली है···बता दूँ···बुरा मत मानिएगा···जिस लड़के से आपका 'एफेयर' चल रहा है, वह टूट जाएगा।

शोख आँखें : मजा आ गया···वंडरफुल···ही इज़ ग्रेट···

पंडित : अगले मंगलवार को आपका एक दूसरे लड़के से 'एफेयर' चलेगा।

वावनानी : एफेयर ही एफेयर चलता रहेगा या शादी भी···?

पंडित : च···च···च ! क्या दशा आ रही है। आते-आते रह गई। यह पाँचवें में जो राहु की दशा है न, यह अगले महीने खत्म हो रही है।

वावनानी : थैंक यू पंडित जी।···मेरी शादी कब होगी ?

पंडित : आपका होने वाला पति अभी विदेश में पढ़ रहा है।

वावनानी : हाय, कब लौटेगा ? उसका पता बता सकते हैं ?

लीला : छी ! पागल हुई है ! 'हैव सेलाय रिस्पेक्ट' पंडित जी, जरा मेरे बारे में बताइए।

पंडित : (**घूरकर देखता है**) हाथ देखूँ ? पहले माथा तो देखूँ··· (**छूकर देखता है**) आपको लाल रंग पसन्द है न ?

लीला : 'यस, रेड इज़ माई फैवरिट कलर'।

पंडित : हाय, क्या दशा पायी है आपने। बहुत अच्छी दशा चल रही है। क्या योग है ! आपके जीवन में एक ऐसा पुरुष आने वाला है जो ट्रकों का व्यापारी होगा। उससे आपका 'एफेयर' होगा।

लीला : शादी होगी ?

पंडित : शादी क्या, वह आपका गुलाम होगा।

लीला : वंडरफुल···पर कब, कितनी देर है ?

पंडित : आप लाल रंग धारण कीजिए···मंगल को व्रत रखिए। हनुमान जी को सिंदूर चढ़ाइए। काली साड़ी पहनिए। लाल धागा हाथों में बाँधिए।

[लीला बेहद खुश है]

मिसेज़ मेहता : जरा मेरा हाथ देखिए।

पंडित : आप···हाय···च-च-च। बता दूँ ? आपका तो योग ही योग है। आप हवाई जहाज की यात्रा करेंगी। वहाँ आपकी मुलाकात होगी एक फिल्म एक्टर से !

[सारी औरतें हाय-हाय करती हैं।]

लीला : मिसेज़ प्रसाद, आप भी पूछिए न···दस ही रुपए तो लगते हैं। इन्हें बताइए पंडितजी।

मि० प्रसाद : पंडितजी, आप मेरे बंगले पर आइए, आज शाम को। यह मेरा पता है··· (**कागज पर लिख देती है**) आप वहीं आइए। मैं बीस रुपये दूँगी।

बेयरा : यस प्लीज़···क्या आर्डर है ?

लीला : पानी ले आओ।

बेयरा : कुछ आर्डर नहीं ?

लीला : मिसेज़ मेहरा, आप बताइए।

मिसेज मेहरा : मुझे जाना है।

पंडित : हाय, आज बुधवार है···पीली चीज खाइए, पीली चीज।

[सारी औरतें एक-दूसरे का मुंह देखती हैं]

पंडित : आमलेट लाओ···आप क्या लोगी ?

बावनानी : आई वुड लाइक सम कोल्ड ड्रिंक।

पंडित : अरे-रे-रे, आप गरम चीज पीजिए, गर्म चीज।

बावनानी : अच्छा, हाट कॉफी ?

[बेयरा जाता है।]

लीला : एक बात तो बताइए, क्या शादी जरूर होगी ?

पंडित : अगर आप चाहेंगी।

लीला : 'आई वान्ट जस्ट ए एफेयर, दैट इज़ मोर थ्रिलिंग'।

मिसेज मेहरा : यस···इट इज़ थ्रिलिंग टू बी इन लव···।

मिसेज़ प्रसाद : हाँ, शादी में मजा जाता रहता है।

बावनानी : हाय···यू मिसेज़ प्रसाद !

[सब औरतें हंसती हैं।]

तीसरा दृश्य

[मि० प्रसाद घर में आते हैं।]

मि० प्रसाद : कहाँ हो भाई ? अरे सुनती हो ? क्या कर रही हो ? कहाँ हैं सब लोग ?

[अन्दर आते हैं। मिसेज़ प्रसाद मेकअप कर रही हैं।]

मि० प्रसाद : चाय-वाय पिलाओगी या मेकअप ही करती रहोगी ? यह क्या तमाशा है ?

मिसेज़ प्रसाद : डियर, आज तुम्हीं चाय बना लो, मैं थक गई हूँ ?

मि० प्रसाद : क्या ? मैं चाय बनाऊँ, तुम्हारा दिमाग तो ठीक है ?

मिसेज़ प्रसाद : क्या यह जरूरी है कि रोज-रोज मैं ही चाय बनाऊँ ! शादीशुदा औरत गुलाम तो नहीं।

मि० प्रसाद : यह क्या कह रही हो तुम ?

मिसेज़ प्रसाद : चीखो नहीं, 'आई एम नॉट योर सर्वेन्ट'।

मि० प्रसाद : तुम्हें सर्वेन्ट कौन कह रहा है। अजीब बात है···आखिर बात क्या है ?

मिसेज़ प्रसाद : मर्द लोग भूखे भेड़िये हैं···यह सही बात है।

मि० प्रसाद : तुम पागल तो नहीं हो गई।

मिसेज़ प्रसाद : पागल होगे तुम···जाओ मेरा दिमाग मत चाटो। रमी मर्द से किसी तरह कम नहीं।

[बाहर घण्टी बजती है। मिसेज़ प्रसाद दौड़ी हुई ड्राइंगरूम में आती हैं। पंडित आता है।]

मिसेज़ प्रसाद : आइए, पंडितजी, बैठिए-बैठिए !

मि० प्रसाद : कौन हो तुम ?

मिसेज़ प्रसाद : तुमसे मतलब !···जाओ दो कप चाय बना लाओ।

मि० प्रसाद : कौन हो तुम ?

पंडित : आई एम पामिस्ट, सर।

मि० प्रसाद : ओहो, तो यह बात है। आज तुम उन्हीं आंटी लोगों की सोहबत में थी।

मिसेज़ प्रसाद : तुम्हें क्या मतलब। मैं आजाद हूँ···मैं चाहे जिस की सोहबत में रहूँ···

मि० प्रसाद : अच्छा जी, तो यह बात है पंडित, जरा मेरा हाथ तो देखना···बताओ 'डाइवोर्स' की दशा है मेरे भाग्य में ?

पंडित : (देखता है) है क्यों नहीं ? बहुत अच्छी दशा है।

मिसेज़ प्रसाद : क्या कहा ?

मि० प्रसाद : पंडितजी, जरा इधर तो आइए···आइए···क्या देखते हैं, आइए···मैं कहता हूँ।

[मिसेज़ प्रसाद दूर से देखती रहेगी।]

पंडित : (देखता है) बड़ा उम्दा योग है···आपका ट्रांसफर होगा···आपकी तरक्की···आप पूरब दिशा में जाएँगे—कलकत्ता।

मि० प्रसाद : फिर तो मुझे अकेले जाना पड़ेगा···बच्चे यहाँ पढ़ेंगे···मिसेज़ भी यहीं रहेगी।

पंडित : कह दूँ···बता दूँ सर ? जरा इधर आइए···। वहाँ आपकी सेहत बहुत अच्छी हो जाएगी।

मि० प्रसाद : वह तो होगी ही।

पंडित : बता दूँ भाग्य की बात ? वहाँ आपकी जिन्दगी में एक महान घटना घटेगी।

मि० प्रसाद : मतलब ?

पंडित : किसी को बताइए नहीं, वहाँ आपका एक एफेयर होगा···।

मि० प्रसाद : एफेयर ! वंडरफुल ! किससे ?

पंडित : बता दूँ ? कह दूँ ? एक शादीशुदा औरत से। बड़ी-बड़ी आँखों वाली। साँवला रंग···।

मिसेज़ प्रसाद : क्या कहा ?

मि० प्रसाद : एफेयर—एन एफेयर।

मिसेज प्रसाद : जरा फिर से तो कहना।

पंडित : यही···यही योग है भागवान।

मिसेज प्रसाद : क्या···क्या कहा ?

पंडित : हाँ, एक शादीशुदा औरत से इनका एफेयर है।

मिसेज प्रसाद : गेट आउट, भागता है कि नहीं। गेट आउट फ्राम हियर !

[पंडित भागता है। मिसेज प्रसाद गुस्से में लाल। प्रसाद उसके कंधे पर धीरे से हाथ रखते हैं।]

मि० प्रसाद : घबड़ाओ नहीं, डियर ! वह शादीशुदा और तुम्हीं हो।

[दोनों प्यार से मुस्कुराते हैं। संगीत।]

हाय अंकल !

[दूरदर्शन एकांकी]

पात्र

केजी (20-22 साल का युवक)
ममी
डैडी
गोगी (केजी का दोस्त, हमउम्र)
गेटी (केजी की गर्लफ्रेंड)
डिप्टी

[फेड इन केजी बैठा गिटार बजाने की कोशिश कर रहा है और गोगी खड़ा उसके सिर के बाल ठीक कर रहा है—दोनों के सिर दिखाई दे रहे हैं।]

केजी : (मस्त) डैंडली···डैडली···सिगरेट-सिगरेट···

[गोगी उसके मुँह में सिगरेट लगाता है। खुद दागता है फिर गिटार का बजाना। गोगी बाल ठीक करके शेक करने लगा है।]

गोगी : ब्यूटी-ब्यूटी डैम्स। ब्यूटी-ब्यूटी डैम्स···। ब्यूटी डैम्स। डैम्स ब्यूटी···डैम्स··· डैम्स···डैम्स।

[गोगी शेक कर रहा है केजी के गिटार पर। कट टू मेज पर किताबें-कापियाँ। फिर कट टू दीवारों पर अजीबोगरीब चित्र—बीटग्रुप वादकों, गायकों, कुछ लड़के-लड़कियों के। कट बैक टू केजी।]

केजी : (गिटार रखता है) स्टाप गोगी···ऐ···स्टाप।···आह मच्च इज देयर। ओह स्टाप, सन आफ गन।

गोगी : (रुककर) हाय !

केजी : दिस इयर, इम्तहान देना है या नहीं ?

गोगी : व्हाट इम्तहान।···

केजी : बी० ए० फाइनल···।

गोगी : नानसेन्स, हाइट आफ इट।···हाउ इज योर डैम्स ?

केजी : शी इज हिश-हिश। आहा ! गो-गो-गो···ए गो।

[गोगी गिटार उठाता है—बजाना। केजी जर्क स करता है। कट टू दूसरा सीन—डैडी अपना कोट लिए आते हैं।]

डैडी : सुनती हो, मेरे पर्स से सौ रुपए का नोट किधर गया ?

[मम्मी आती हैं।]

मम्मी : कल रात जैमसेशन था केजी का। उसकी गर्लफ्रेंड भी आयी थी—गेटी। हाय, कितनी ब्यूटीफुल है !

डैडी : तो केजी रुपए माँग लेता···उसे चोरी करने की क्या जरूरत थी ?

मम्मी : तो क्या हो गया। लेट हिम इन्जाय, डियर।

डैडी : यस-यस, ही मस्ट इन्जाय, डार्लिंग।···सुनो, अब वह कितना अच्छा गिटार बजाता है।

[गिटार का संगीत···ममी-डैडी भी शेक करने लगते हैं। बन्द दरवाज़े पर दस्तक।]

डैडी : कौन ?

[दरवाज़ा खोलते हैं। डिप्टी का प्रवेश।]

डैडी : हैलो, मिस्टर टी० प्रसाद !

ममी : हैलो। हाऊ डू यू डू ?

डिप्टी : गुड, फाइन ! यह गिटार कौन बजा रहा है ?

डिप्टी : माई सन केजी। ही इज़ वंडरफुल। बीट म्युज़िक।

डिप्टी : उसे इस साल बी० ए० का इम्तहान नहीं देना ? हर वक्त गिटार बजाता रहता है। सुना है हर सुबह शाम डिस्कोथिक्स जाता है।

डैडी : इट इज़ हिज़ लाइफ···वह हमारी बात ही नहीं मानता।

डिप्टी : उसे समझाइए···अच्छा लड़का है, वह कम से कम बी० ए० तो पास हो जाए।

ममी : वी हैव गौट एनफ मनी। ही मस्ट इन्जाए।

डिप्टी : मगर यह भी कोई तरीका है—हरदम सिगरेट···डांस···ड्रिंक···! उसे आप लोग हिप्पी बनाना चाहते हैं ?

ममी : ही इज़ ए फ्री मैन·· वह बीट ग्रुप का लीडर है।

डिप्टी : सारे मुहल्ले पर इसका क्या असर पड़ेगा और पड़ रहा है। यह मालूम है आप लोगों को ?

डैडी : आप समझाइए—उसे पढ़ना भी चाहिए···आप सही कहते हैं—ही शुड बी एटलीस्ट ए ग्रेजुएट।

डिप्टी : (पुकारते हैं) केजी···केजी।

दृश्य-परिवर्तन

[डिप्टी का केजी के कमरे में प्रवेश। केजी गिटार बन्द कर किताब उठा लेता है]

केजी : अंकल, हाय !···मीट माई फ्रेंड गोगी, ही इज़ अवर ड्रमर (हाथ मिलाते हैं)

डिप्टी : केजी, बेटे तुम्हें पढ़ना-लिखना भी चाहिए। यह गरीब मुल्क है···कितने पिछड़े लोग हैं यहाँ···तुम्हें कुछ ऐसा बनना है जो···यू नो···समथिंग ग्रेट।

केजी : थैंक यू अंकल। यस···मच्च इज़ देयर।

डिप्टी : तुम्हें अपनी सोसाइटी के लिए बहुत काम करने हैं।

केजी : ग्राजी अंकल···ग्राजी।

डिप्टी : यह ग्राजी क्या है बेटे ?

केजी : ग्राजी मीन्स थैंक्स···यू नो अंकल···दिस इज़ इटैलियन···

डिप्टी : कितनी सिगरेट पीते हो ?

[कट टू सिगरेट के टुकड़े फर्श पर—ऐश-ट्रे में कट टू केजी और गोगी के चेहरे।]

डिप्टी : आह, कैसे बाल बढ़ा रखे हैं। पता ही नहीं चलता, तुम लोग लड़के हो या लड़की।

केजी : दिस इज़ पंकीज स्टाइन एण्ड दिस इज़ चिपमांग्स।

डिप्टी : ये क्या बला हैं ?

[गोगी हँसता है।]

केजी : दे आर वर्ल्डफेमस बीट म्यूजीशियन्स अंकल।

डिप्टी : भाई, अपनी समझ में तो कुछ नहीं आता।···ये तस्वीरें ?

[कट टू पिक्चर्स। कट टू पूरे कमरे की चीजें—कपड़े, गिटार, टेप रिकार्डर, सिगरेट, शराब की बोतलें, रिकार्डरप्लेयर, रिकार्ड्स, केजी गोगी, किताबें, कापियाँ, खाली गिलास, जलते हुए सिगरेट और फिर डिप्टी का चेहरा।]

गोगी : डैम इट केजी ! आई गो। बाई-बाई···अंकल, हाय ! (जाता है।)

केजी : बैठिए अंकल।

डिप्टी : भाई, मेरा तो यहाँ दम घुट रहा है। डोंट बी लाइक दिस माई ब्वाय। तुम्हें कुछ अच्छा बनना चाहिए···समथिंग यूजफुल टू द सोसाइटी···टू द कंट्री···टू द पब्लिक।

केजी : आज शाम को आइए अंकल···मैं अपने डैम से आपकी मुलाकात कराऊँगा···शी इज़ सिम्पली हुश-हुश।

डिप्टी : (हतप्रभ) डैम ?···डैम क्या ?

केजी : माई गर्लफ्रैंड। इंग्लैंड में बीट लोग अपनी गर्लफ्रैंड को डैम कहते हैं।

डिप्टी : और यह हुश-हुश क्या है ?

केजी : समथिंग अनयूजअल···एब्सर्ड···फंटास्टिक।

डिप्टी : फंटास्टिक।

केजी : अंकल, आप लोग वेरी स्लो हैं।

डिप्टी : अच्छा, तुम फास्ट हो। पढ़ाई-लिखाई में बनो तो जानूँ।

केजी : सारी पढ़ाई टुडे ओल्ड जनरेशन के लिए है।

[डैडी आते हैं।]

डिप्टी : देख रहे हैं अपने साहबजादे को···बहुत फास्ट जा रहे हैं—रोकिए वरना···

डैडी : मेरी बात ही नहीं मानता, आपका ख्याल जरूर करता है।

डिप्टी : केजी, पहले ये बाल कटाओ।

केजी : हाय अंकल, व्हाट डू यू टाक···हिस, इज जोगी।

डैडी : जोगी नहीं आवारागर्दी···लड़कियों जैसा चेहरा बनाए।

डिप्टी : तुम्हारी किताबें कहाँ हैं ? (एक किताब उठाते हैं) बी० ए० हिस्ट्री आनर्स···

पढ़ ली यह किताब ?

केजी : माई डैम हैज रेड ।

डैडी : डैम ? यह कौन है ?

डिप्टी : हिज गर्ल फ्रेंड···ये लोग अपनी प्रेमिका को डैम कहते हैं।

[डैडी और डिप्टी हँसते हैं]

केजी : आप लोग हँसते हैं ? डैम ब्यूटीफुल ।

[ममी आती हैं।]

ममी : हैलो सनी।···ओह, आप लोग यहाँ ?

डैडी : बेटे का असर ममी पर जरा गौर कीजिए···हनि एजर बन रही है।

डिप्टी : वाह···नमस्ते। क्या हालचाल है ?

ममी : गुड। फाइन। आप लोग ऐसे क्यों देख रहे हैं ?

केजी : ममी, ये लोग मुझे बुली कहते हैं ।

ममी : वेरी बैड। कम आन सनी···मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं ।

डिप्टी : हाँ, बेटे, महात्मा गौतम बुद्ध कौन थे ?

केजी : ओह, लौर्ड बुद्ध ?···ही वाज फर्स्ट हिप्पी ।

डिप्टी : सुन लीजिए, नयी तवारीख लिखी जा रही है···केजी खबरदार, बहुत गलत रास्ते पर जा रहे हो ?

केजी : रियली अंकल···सॉरी, आई टू मीट माई डैम । (जाता है)···अच्छा अंकल, हाय !

[डिप्टी केजी को देखते रह जाते हैं। सीन डिजाल्व। फेड इन—'सेलर का सीन'। लड़के बाल बढ़ाए हुए अजीबोगरीब शक्ल में बैठे हैं। बीट संगीत तेजी से उभर रहा है। कुछ लड़के-लड़कियाँ शेक और जर्क कर रही हैं, कुछ सिगरेट के धुएं में ऊँघ रहे हैं। कट टू केजी और गेटी। दोनों सिगरेट पी रहे हैं। संगीत की धुन में दोनों बैठे ही बैठे शेक कर रहे हैं। गोगी आता है।]

गोगी : हाय, गाय !

गेटी : डेडली !

केजी : यू, सन आफ ए गन ।···बी आफ।

गोगी : ऐब !···डैम्स आर डांसिंग।···मच्च इज़ देयर।

गेटी : गो अवे···हाट आफ इट।

केजी : हाय, गाय !

[गोगी जाता है।]

गेटी : केजी, डोंट स्लीप ।

केजी : माई···गाई···।

[दोनों उठकर 'जर्क शेक' करने लगते हैं। संगीत और शोर से सारा वातावरण भर जाता है। दूसरा सीन। रात के चार बज रहे हैं टावर क्लाक में। केजी अपने घर के दरवाजे पर आया है—नशे में धुत्त। दरवाजे पर माथा टिकाए खड़ा है। कट टू ममी और डैडी—दोनों नाइट गाउन में हैं। ममी सो रही हैं। डैडी उठते हैं। घड़ी देखते हैं।]

डैडी : देखूं केजी आया कि नहीं।

[कट टू केजी का कमरा। इधर डैडी का प्रवेश, उधर खिड़की से कूद कर केजी घुसता है।]

डैडी : हैलो केजी···माई मन···डियर···

केजी : डैडी···कल से मुझे डुप्लीकेट चाबी चाहिए।

डैडी : व्हाट नानसेंस ! तुम इस तरह रात चार बजे घर आओगे ?

केजी : माइंड योर बिजनेस डैडी।

[वह उसी तरह बोतल से पानी पीकर सोने लगता है।]

डैडी : अरे कपड़े उतार कर···स्लीपिंग गाउन पहनो···कायदे से पलंग पर सोओ केजी···आराम से सोओ डियर !

केजी : मच इज देयर डैडी। गिव मी डुप्लीकेट की। डैड···की।

डैडी : नहीं-नहीं, डुप्लीकेट चाबी नहीं। वक्त से घर आ जाया करो।

केजी : गुडनाइट डैडी।

[वह उसी तरह सोने लगता है। डैडी लाइट बुझाकर जाते हैं। केजी लाइट जलाता है फिर सिगरेट दागकर मुँह में लगाता है और सो जाता है।]

दृश्य-परिवर्तन

[वही कमरा। केजी और गेटी। रिकर्ड चेंजर पर बीट संगीत। दोनों आमने-सामने बैठकर मोमबत्ती जलकर मोम पिघलाते हैं और उसमें चाबी का निशान बनाते हैं।]

गेटी : फेन्टास्टिक···नाऊ···फाइन···मेकिंग आफ डुप्लीकेट की।

केजी : माई डैड इज ए सन आफ गन।

गेटी : एण्ड यू आर ए सन आफ अलादीन।

केजी : मच्च इज देअर···एअ···फाइन।

गेटी : डेडली।

[उठकर रिकार्ड बदलना। गेटी उठ कर केजी के बालों में कंघी करती है। केजी गेटी के बालों को हिप्पी स्टाइल देता है। कमरे में अजीब ड्रेस में ममी का प्रवेश।]

केजी : हैलो ममा !

ममी : फाइन सन !···हैलो गीता !

केजी : ममी ! गीता नहीं गेटी । आई लव गेटी ।

गेटी : आपका ड्रेस कितना अच्छा है, वंडरफुल !

ममी : केजी मेरे लिए बंबई से ले आया है।

केजी : दिस ड्रेस इज काल्ड 'हुश-हुश' । यह लेटेस्ट फैशन है ।

गेटी : ओह, वंडरफुल ! ममा, सुना है आप बहुत अच्छा 'शेक' करती हैं।

ममी : केजी ने सिखाया है।

गेटी : लेट अस शेक मम । डियर केजी, माई गाय ।

[तीनों शेक करते हैं । डैडी का प्रवेश ।]

डैडी : यह क्या तमाशा है ।···आज मेरा पर्स ही गायब !

ममी : तो क्या हुआ । यू डिस्वर्ड डार्लिंग !

केजी : यह लीजिए अपना पर्स डैड !

डैडी : तुम चोरी क्यों करते हो ? रुपये चाहिए तो माँग लिया करो।

केजी : चोरी से लेना अच्छा लगता है, डैड !

डैडी : बट दिस इज वेरी बैड।

[पृष्ठभूमि से डिप्टी की पुकार—अरे भाई, कहाँ हैं आप लोग ?]

डैडी : आइए···आइए···प्रसादजी ।

[डिप्टी का प्रवेश । उन तीनों को देखते रह जाते हैं ।]

डिप्टी : यह क्या तमाशा है, आप लोग कहीं फैंसी ड्रेस कम्पटीशन में तो नहीं जा रहे ?

ममी : नहीं तो···दिस इज़ लेटेस्ट फैशन 'हुश-हुश' !

डिप्टी : क्या शकलें बना रखी हैं !

केजी : अंकल, मीट आई डैम ।

डैडी : उसकी गर्ल फ्रेंड ।

केजी : फियान्सी अंकल ।

डिप्टी : इधर आओ···उठाओ···आओ-आओ मेरे पास । (केजी को दूसरे कमरे में ले जाकर) कौन है यह लड़की ?

केजी : क्यों अंकल ? आप मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं ?

डिप्टी : इस लड़की का नाम क्या है ?

केजी : गेटी ।···हिन्दी में गीता ।

डिप्टी : तो गीता कहो न !

केजी : नो-नो अंकल···मच्च इज देयर अंकल । गेटी इज़ स्वीट !

डिप्टी : पता है, यह मेरे दफ्तर में रिसेप्शनिस्ट थी। निकाल दी गई···शी इज़ बैड। तुम्हें इसके साथ तक नहीं रहना चाहिए ।···यू शुड मेनटेन योर स्टैंडर्ड ।

[डैडी आते हैं]

डैडी : इन्हें समझाना अब फिजूल है।
केजी : ओह डैड, डोंट से लाइक दैट।
डिप्टी : गलती हमारी भी है। आपने पहले मना नहीं किया। आपको भी मज़ा आया।
डैडी : पर मुझे क्या पता था। यह कंवलजीत से केजी हो जाएगा।
केजी : डोंट बी क्रूअल डैड।
डैडी : और वह जो इसका दोस्त है गोगी, वह गयादत्त से गोगी हो गया।
डिप्टी : इन्हें अपने नाम तक नहीं पसन्द।
डैडी : जी नहीं, ये सब कुछ करेंगे हमारा क्या ?
डिप्टी : जी नहीं, ये सब कुछ तबाह कर देंगे।
केजी : हम सोसाइटी को फ्री एण्ड ब्रेव बनायेंगे।
डिप्टी : फ्री एण्ड ब्रेव···जरा मुझसे हाथ तो मिलाओ। चलो, बढ़ाओ हाथ।

[हाथ बढ़ते हैं। केजी रुकता है।]

केजी : वी डोंट वांट वार···वी लव पीस ?
डिप्टी : समाज को और अपने को बरबाद करके ?
डैडी : खुद बरबाद होंगे···हमें क्या।
डिप्टी : नहीं, ऐसा नहीं सोचते। हमें यह देखना पड़ेगा···ये लोग ऐसे हुए क्यों ?
डैडी : क्योंकि हुए।
डिप्टी : लेकिन क्यों ?
डैडी : पता नहीं।
डिप्टी : क्योंकि हमने इन्हें कोई आदर्श नहीं दिए। हम इधर रुपये कमाते रहे, कोठियाँ-कार खड़ी करते रहे···और ये···।
केजी : एण्ड वी आर स्ट्रेंजर्स।
डिप्टी : हिन्दी में बोलो।
केजी : ह्वाट हिन्दी ?

[डैडी गुस्से से जाते हैं।]

केजी : डैडी, हाय !
डिप्टी : कुछ तमीज़ सीखो, बेटे !
केजी : अंकल, आप बहुत ओल्ड विचार के हैं। हम मारेल्टी के ऊपर हैं।
डिप्टी : क्या कहा ?
केजी : वी आर यंग जनरेशन।
डिप्टी : क्या मतलब ?
केजी : मतलब हम माडर्न हैं।
डिप्टी : यही बाल बढ़ा लेने से ? यही कमर हिलाने से ? बीटल और हिप्पी बनने से ? देखा नहीं इसका असर अपनी ममी पर ? मुझे डर है कहीं मुझ पर भी न असर पड़ जाए।

केजी : अंकल, आप तो एंग्री हो गए।

डिप्टी : आई एम एंग्री मैन। अगर तुम ऐसी-वैसी लड़की के साथ रहे, तो तुमसे मेरा कोई मतलब नहीं। आई हेट यू। (जाने लगते हैं)

केजी : अच्छा, आई एम सॉरी अंकल।

दृश्य-परिवर्तन

[डैडी का कमरा। केजी डैडी का कोट टटोल रहा है। पर्स निकालता है। डैडी रंगे हाथों पकड़ लेते हैं]

डैडी : यह क्या है ?

केजी : मनी, डैडी मनी। आई हेट मनी बट आई नीड इट।

डैडी : तूने डुप्लीकेट चाबी बनवा ली···अब मेरी सेफ की भी चाबी बनवाएगा। दिस इज लिमिट। मुझे यह पता नहीं था कि तेरी आज़ादी का यह नतीजा होगा।

केजी : डैडी, आपने शुरू में तो मुझे रोका नहीं। बकअप करते रहे। 'गो एहैड सन, गो एहैड'।

डैडी : नाऊ आई से यू, कम बैक।

केजी : ह्वाट आफ इट फादर, ह्वाट आफ इट ?

दृश्य-परिवर्तन

[गोगी गिटार बजा रहा है—ममी और गेटी जर्क कर रही हैं। डैडी और केजी का प्रवेश।

डैडी : बन्द करो···चलो इधर···जाकर सीधे से साड़ी पहनो।

ममी : ह्वाट नानसेन्स, डियर ! (केजी को खींचते हुए) चले जाओ तुम लोग यहाँ से। हमारे पड़ोसी दोस्त डिप्टी साहब ने हमारे बारे में क्या ओपीनियन बनायी है पता है ?

[ममी-डैडी का प्रस्थान]

गोगी : अच्छा डीयर, गाय···आई गो···रात को डिस्कोथिक्स में···हाय ! (जाता है)

[केजी रिकार्ड लगाता है। कैमरा रिकार्ड पर स्थिर है। एकाएक घूमता है—सड़क पर। केजी मोटर बाइक पर बैठा है, पीछे बैठी है गेटी। मोटर बाइक चलती है। डिप्टी साहब सामने दिखते हैं।]

केजी : हाय, अंकल !

[मोटर बाइक दौड़ती है]

डिप्टी : केजी, माई ब्वाय !

केजी : (दूर से) हाय, अंकल। सियो !

गेटी : अंकल, हाय !

[दोनों जाते हुए दिखते हैं। बीट म्यूज़िक छा जाता है।]

[फेड आउट]

चोर-चोर बहन-भाई

[दूरदर्शन एकांकी]

पात्र

मिस्टर प्रसाद (डिप्टी साहब)
मिसेज़ प्रसाद
मिस्टर मेहता
रीता (मिसेज़ मेहता)
मोहन (नौकर)

समय : शाम 6 बजे स्थान : डिप्टी साहब का ड्राइंग रूम

[फेड इन—मिसेज़ प्रसाद सोफे पर बैठी हुई आराम से कोई मैगजीन पढ़ रही हैं। रेडियो पर विविध भारती का संगीत चल रहा है। थोड़ी ही देर बाद बाहर मि० प्रसाद आते हैं। खाँसते हैं, तब मिसेज़ प्रसाद का ध्यान बँटता है।]

मिसेज़ प्रसाद : अरे, आप आ गए !

मि० प्रसाद : तुम्हारा क्या ख्याल है ?

मिसेज़ प्रसाद : आज दफ्तर से बहुत जल्दी आ गए।

मि० प्रसाद : क्या पढ़ा जा रहा है ? (**मैगजीन देखते हैं**) इस उमर में यह मैगजीन ? (**मैगजीन रखते हैं।**)

मिसेज़ प्रसाद : चाय लाऊँ ?

मि० प्रसाद : (**रेडियो बन्द करते हैं**) तुम्हारा भी क्या टेस्ट है ?

मिसेज़ प्रसाद : क्या करते हो—अकेले में रेडियो भी न सुनूँ ?

मि० प्रसाद : (**टाई उतारते हुए**) अगला बच्चा अभी नहीं—तीन के बाद कभी नहीं !

मिसेज़ प्रसाद : मैं तो संगीत सुन रही थी।

मि० प्रसाद : संगीत या विज्ञापन !

[दोनों की मुस्कराहट]

मिसेज़ प्रसाद : हमें क्या, अपने तो दो ही हैं।

मि० प्रसाद : वे भी इन दिनों बाहर गए हैं···अरे हाँ, अपने मेहमान लोग कहाँ हैं ? (**पुकारना**) मोहन, जरा पान खिलाना।

[पृष्ठभूमि से—'जी साब ! अच्छा साब !' की आवाज]

मिसेज़ प्रसाद : दोनों लोग सुबह दस बजे ही चले गए। मैंने पूछा, कहाँ जाएँगे ? मिस्टर मेहता ने कहा—भाभी जी, मुझे खुद कुछ पता हो तो बताऊँ। और उनकी मिसेज रीता ने कहा—बस घूमेंगे, शायद कुछ बोर्डम टूटे।

[मोहन तश्तरी में पान और तम्बाकू की डिबिया लेकर आया है। प्रसाद साहब मजे से पान लेते हैं। इस बीच मिसेज़ बोल रही हैं—]

अब देखो न, कैसी अजीब बात है—अभी शादी हुए दो साल भी नहीं बीते—दोनों बोर्डम की बातें करते हैं। वह भी प्रेम-विवाह ! इतनी अच्छी जोड़ी। आखिर किस चीज की कमी है उन्हें ! धन, इतनी प्रोपर्टी—इतना मालदार बाप···! मगर

सुना है, पहले यह मेहता फेमिली मालदार नहीं थी। पहले क्या थे इनके पिता ?

[इस बीच नौकर चला गया है। प्रसाद साहब का मुंह पान से भर गया है। वह अखबार देखने लगे हैं। मिसेज प्रसाद कह रही हैं—]

(अखबार पर हाथ मारते हुए) बैठ गए न अखबार लेकर ? और मुंह में पान भर लिया।

मि० प्रसाद : हूं···हूं···हूं···प्लीज···कूं···कूं···

मिसेज प्रसाद : यही है न मेरी जिन्दगी तुम्हारे साथ ? दिन-भर अकेली रहूं—शाम को घर आएं तो मुंह में पान भरकर···कूं···कूं···कूं···कूं···

[नाराज बैठ जाती हैं। प्रसाद साहब बाहर जाकर पीक थूककर वापस आते हैं।]

मि० प्रसाद : अब बोलो, पूछो···।

मिसेज प्रसाद : कुछ नहीं।

मि० प्रसाद : अरे भाई मिस्टर मेहता के फादर पहले कुछ नहीं थे। रेलवे का कोई कांट्रेक्ट मिला—लखपती हो गए। यही हाल रीता के फादर का···बेशुमार धन। जब करने को कोई काम नहीं तो बोर्डम तो होगा ही। अरे तुम तो सचमुच नाराज हो गई ! ···अच्छा भई कसम खाता हूं, अब घर में पान नहीं खाऊंगा।

[दोनों एक-दूसरे को देखते हैं।]

मि० प्रसाद : अब बोलो, चाय पियोगे या कॉफी ?

मिसेज प्रसाद : जो भी हो, मेहता और रीता में प्यार बहुत है। आज चार दिन हो गए हमारे यहां आए—न कभी झगड़े, न रूठे।

मि० प्रसाद : अच्छा अब तो कुछ चाय-शाय पिलाओ।

मिसेज प्रसाद : एक मिनट भी एक-दूसरे से अलग नहीं होते।

मि० प्रसाद : दोनों को एक-दूसरे पर शक है।

मिसेज प्रसाद : हटो जी। दोनों मस्त हैं।

मि० प्रसाद : कद्दू हैं।

मिसेज प्रसाद : दे इन्जाय लाइफ।

मि० प्रसाद : हमें यही आशा करनी चाहिए।

मिसेज प्रसाद : सुनो न, अभी कल ही रात की तो बात है—दोनों जब उधर कमरे में···

मि० प्रसाद : बस-बस, तुम्हारी आदत भी खूब है ?

[मोटर का हार्न बजता है।]

मिसेज प्रसाद : लगता है, आ गए ?

मि० प्रसाद : तो आने दो न।

मिसेज प्रसाद : वह मेहमान हैं कि··· (दरवाजे पर नजर) देखो न, बिना घण्टी बजाए घर

में पैर नहीं रखते हैं।

मि० प्रसाद : और घण्टी पति बजाता है यह भी कहो।

[दरवाजा खोलकर मेहता और रीता आते हैं।]

मिसेज़ प्रसाद : हैलो, वेलकम !

मि० प्रसाद : भाई, कहाँ थे दिन-भर ?

मि० मेहता : भाभी जी, आपके जूड़े में खोंसने के लिए यह फूलों का···भाई साहब, लीजिए···भाभी के जूड़े में···

[मेहता के हाथ में गजरा झूल रहा है—सब देख रहे हैं। रीता पैकेट रखकर अपना बैग खोल रही है।]

मि० प्रसाद : यार, तुम्हीं लगा दो। क्या फर्क पड़ता है !

मि० मेहता : क्यों भाभी ?

रीता : भाई साहब, आपके लिए पान ?

मि० प्रसाद : वंडरफुल ! यू आर ग्रेट, रीता।

मिसेज़ प्रसाद : अभी-अभी कसम खायी थी न ?

रीता : मघई पान है भाई साहब।

मि० प्रसाद : थैंक यू रीता। (मुँह में पान लेते हैं।)

[मिसेज़ प्रसाद स्वयं जूड़े में गजरा लगा रही थी। रीता मदद करती है, प्रसाद हाथ के इशारे से मेहता से पूछते हैं कि कहाँ रहे।]

मिसेज़ प्रसाद : लो अब इनका हाथ चमकना शुरू हो गया।

रीता : भाभी, यू आर वेरी रफ टू भाई साहब।

मिसेज़ प्रसाद : देखो अब कूँ···कूँ करने लगे।

[मिसेज़ मेहता और रीता की हँसी।]

मि० मेहता : भाई साहब, कहीं कोई मजा नहीं आता।

[प्रसाद पान का बीड़ा देते हैं।]

सब बेकार है भाईसाहब मेरे लिए। दिन भर यही तो करते रहे—पान-सिगरेट, रेस्त्रां, चाय-कॉफी, पिक्चर-शापिंग।

[प्रसाद हाथ के इशारे से सवाल करते हैं।]

मि० मेहता : भाई साहब, आई डोंट फालो यू।

मिसेज़ प्रसाद : मेहरबानी करके अब पीक थूक आइए।

मि० प्रसाद : (इशारे से) अभी धैर्य रखो ! (रीता की ओर देखकर इशारे से) क्या लाजवाब पान है, वाह !

रीता : भाई साहब, कितने अच्छे हैं।

मि० मेहता : अब हँसी है न ? भाभी जी, यकीन कीजिए, हम दिन-भर में इससे पहले एक बार भी नहीं हँसे ।

मोहन : (प्रवेश करके) साहब, चाय तैयार है ।

मि० प्रसाद : (इशारे से) यहीं ले आ ।

मिसेज प्रसाद : रहने दो । यहाँ नहीं । वहीं लगाओ ।

मि० प्रसाद : (इशारे से) अच्छा मैं जाता हूँ, तुम सब यहीं चाय पिओ ।

[प्रसाद का अन्दर जाना ।]

मिसेज प्रसाद : अब चाय यहाँ ले आओ ।

रीता : मोहन, मेरे लिए नहीं ।

मि० मेहता : तो मेरे लिए भी नहीं !

मिसेज प्रसाद : वाह ! कमाल है ! मोहन, सबके लिए ।

[मोहन जाता है । मि० मेहता वही मैगजीन उठाकर पढ़ने लगते हैं । रीता अपना बैग खोलती है ।]

रीता : भाभी जी, देखिए, मैंने क्या शापिंग की है ।

मि० मेहता : बस, जो-जो इनके मूड में आ जाए ।

रीता : कहीं कुछ मूड भी तो नहीं बनता ।

[मि० मेहता मैगजीन पढ़ रहे हैं । रीता बैग से तरह-तरह की चूड़ियाँ, मालाएँ, सोने-चाँदी के गहने निकालती है । दोनों स्त्रियाँ बहुत प्रसन्नता से चीजें देख-परख रही हैं । रीता गहने पहनकर दिखाती है । मिसेज प्रसाद को पहनाती है ।]

मि० मेहता : (सहसा) रीता, यह पढ़ो—यह यहाँ से यहाँ तक ।

[रीता मैगजीन पढ़ने लगती है ।]

मि० मेहता : यह गहना आपको अच्छा लगता है, भाभीजी !

मिसेज प्रसाद : आपने भी कुछ शापिंग की ?

मि० मेहता : मुझे तो भाभी, कुछ भी अच्छा नहीं लगता ।

मिसेज प्रसाद : क्या हो गया ?

मि० मेहता : भाभीजी, कोई उपाय बताइए—हमारी जिन्दगी में कोई मजा नहीं आ रहा ।

[भीतर से प्रसाद का प्रवेश ।]

मि० प्रसाद : हाँ, जनाब, अब बतइाए—क्या रंग हैं ?

मिसेज प्रसाद : मतलब, अब इनका मुँह खाली है ।

[मेहता की हँसी]

मि० प्रसाद : सुना है, आप बहुत बोर हो रही हैं—क्यों रीता ?

हुले

रीता : यस, भाई साहब ।
मि० मेहता : यस सर ।
मि० प्रसाद : जाओ, देखो मोहन कहाँ रह गया ?

[मिसेज़ प्रसाद जाती हैं ।]

रीता : (**मैगजीन देती है**) वंडरफुल । इंट्रेस्टिंग ! मगर पता नहीं कहाँ तक सच है ।
मि० मेहता : थेंक्यू···आई वोन द प्वाइन्ट ।
मि० प्रसाद : यह क्या जादूई भाषा में आप दोनों डायलॉग कर रहे हैं ?
मि० मेहता : हमारी जिन्दगी में डायलॉग ही तो नहीं हैं, भाई साहब !
मि० प्रसाद : अरे भाई, अभी तो जुमा-जुमा मुश्किल से आठ दिन हुए आपकी शादी को और अभी से लगे जम्हाई लेने ।···और कुछ जश्न करो···डू समथिंग, एक्ट समथिंग, कमिट समथिंग ।
रीता : यस···कुछ···इंट्रेस्टिंग···
मि० मेहता : यस···कुछ···इंट्रेस्टिंग···

[भीतर से मोहन चाय की ट्रे लिए आता है । मेज पर रखता है । मिसेज़ प्रसाद आती हैं ।]

दूसरा सीन

समय : सुबह स्थान : वही

[प्रसाद दफ्तर जाने की तैयारी में हैं । भीतर से मिसेज़ प्रसाद आती हैं ।]

मिसेज़ प्रसाद : सुनिए वे लोग इम्पाला गाड़ी से आगरे जा रहे हैं—ताज देखने । आज पूरनमासी है । चाँदनी में ताजमहल !
मि० प्रसाद : मैं भी चलूँ !
मिसेज़ प्रसाद : नहीं-नहीं, हम लोग कल दस बजे तक आ जाएँगे ।
मि० प्रसाद : तो यह बात है ।
मिसेज़ प्रसाद : जी ।
मि० प्रसाद : जाओ मगर खामखा उनकी प्राइवेसी···समझती हो न ?
मिसेज़ प्रसाद : दोनों कह रहे हैं—उन्हें कम्पनी चाहिए ।
मि० प्रसाद : कमाल है, दोनों की कंपनी नहीं है क्या ?
मिसेज़ प्रसाद : पता नहीं ।
मि० प्रसाद : अरे, ऐसे ही कह रहे हैं । उन्हें जाने दो—हम अगली पूरनमासी को चलेंगे । ठीक ?
मिसेज़ प्रसाद : बस, हो चुकी अगली पूरनमासी ।

तीसरा सीन

[मेहता और रीता यात्रा की तैयारी में हैं। रीता पैंट पहने है। आँखों पर चश्मा। मेहता टूरिस्ट लग रहा है। दोनों चुपचाप बैग में साबुन, तौलिया, ब्रश, पेस्ट वगैरह रख रहे हैं।]

चौथा सीन

स्थान : ड्राइंग रूम

मिसेज मेहता : (आकर पुकारते हैं) भाई साहब···भाई साहब !

मि० प्रसाद : (आते हैं) रेडी ?

रीता : (आती है) आप भी चलिए न।

मि० प्रसाद : कबाब में हड्डी बनने के लिए ?

[हँसी। मिसेज प्रसाद का आना।]

रीता : भाभी जी, कल सुबह तक के लिए गुडबाई !

[सब बाई-बाई करके विदा लेते हैं।]

पाँचवाँ सीन

स्थान : भीतर सोने का कमरा   समय : रात

[फेड इन—रात के समय कुत्तों का भूँकना। चौकीदार की लाठी पटकने की आवाज। ड्राइंग रूम की घड़ी में तीन बज रहे हैं। कट टू बेडरूम। प्रसाद सो रहे हैं। मिसेज प्रसाद डरी हुई उन्हें जगा रही हैं।]

मिसेज प्रसाद : सुनिए···उठिए···उठिए···

[प्रसाद जग कर दूसरी करवट सो जाते हैं। साथ वाले कमरे में खट-खट की आवाज आती है। मोहन हाथ में डंडा लिए हुए डरा हुआ आता है।]

मोहन : खबरदार ! घर में चोर घुसा है।

मिसेज प्रसाद : मुझे भी लगता है।

मोहन : सुनिए—बक्स खोलने की आवाज।

मिसेज प्रसाद : जागिए, चोर-चोर···

मि० प्रसाद : (जगकर) क्या शोर मचा रखा है।

मिसेज प्रसाद : चोर बगल के कमरे में।

मोहन : हाँ साहब।

मिसेज प्रसाद : सुनिए···सुनिए···।

मि० प्रसाद : अरे छोड़ो···चूहे होंगे।

[कुंडी खोलने की आवाज ।]

मिसेज प्रसाद : सुनिए···सुनिए···पुलिस को फोन कीजिए।
मि० प्रसाद : मोहन, जरा जोर से डंडा तो पटक।

[मोहन डडा पटकता है।]

मि० प्रसाद : हम लोग जरा जोर से खंखारें···साले भाग जाएँगे।

[मिस्टर और मिसेज खँखारते हैं। मोहन डंडा पटक रहा है। बगल के कमरे से अब भी चीजों के उठाने-गिराने की आवाज आ रही है। दोनों डर गए हैं।]

मि० प्रसाद : साले चोरों की यह हिम्मत ! कहाँ है मेरी पिस्तौल ? **(ड्रार में से पिस्तौल निकालकर बढ़ते हैं।)**
मिसेज प्रसाद : **(पकड़ कर)** नहीं, नहीं, दरवाजा मत खोलो।
मि० प्रसाद : हटो, जाने दो मुझे। **(दरवाजा खोलकर लाइट जलाते हैं)** हैंड्स अप ! खबरदार !

[चोर के मुंह पर काला मास्क लगा है। उसने दोनों हाथ ऊपर उठा दिए हैं।]

मि० प्रसाद : तुम्हारे साथ और कौन है ? किधर छुपा है ?

[चोर पीछे के कमरे में इशारा करता है। लाठी ताने मोहन आता है और छुरी निकाले मिसेज प्रसाद।]

मिसेज प्रसाद : ओह ! माई गॉड।
मोहन : साहब, मार दूँ एक लाठी !
मि० प्रसाद : नहीं, इसके हाथ बाँध दो।
मिसेज प्रसाद : पुलिस बुलाओ, पुलिस।
मि० प्रसाद : नहीं, लाठी ताने रहो। भागने न पाए।

[मिसेज प्रसाद भीतर से दरवाजा बन्द करती हैं। प्रसाद पीछे के कमरे में जाते हैं और तेजी से लौटते हैं।]

मि० प्रसाद : **(डरे हुए)** लेडी थीफ···लेडी थीफ···
मिसेज प्रसाद : रुको, मैं देखती हूँ।

[कट टू लेडी थीफ]

मिसेज प्रसाद : हैंड्स अप।

[हाथ ऊपर उठाती है। प्रसाद आते हैं।]

मि० प्रसाद : आह ! कितनी खूबसूरत !
मिसेज प्रसाद : आप क्यों आ गए ? ···बोल, कौन है तू ? बोल ?
लेडी थीफ : चोर-चोर भाई-बहन।

[प्रसाद पिस्टल प्वाइंट पर चोर को भी यहीं लाते हैं। दोनों के हाथ ऊपर उठे हैं।]

मि० प्रसाद : चेहरे पर से मास्क हटाओ। हटाओ···हटाओ···।

[दोनों मास्क हटाते हैं और मेहता तथा रीता को देखकर लोग आश्चर्यचकित होते हैं। दोनों हँसने लगे हैं।]

छठा सीन

स्थान : बेडरूम समय : थोड़ी देर बाद

[प्रसाद पलंग पर बैठे हैं। मेहता का प्रवेश।]

मि० मेहता : कैसी रही भाई साहब ?

मि० प्रसाद : अपनी तो नींद हराम हुई।

मि० मेहता : सच, जिन्दगी में इतना मजा कभी नहीं आता।

[सीता और मिसेज प्रसाद आती हैं।]

रीता : इट इज ए ग्रेट फन।

मिसेज प्रसाद : यह आइडिया कहाँ से आया ?

रीता : देखिए, इस मैगजीन में लिखा है—पेरिस में बोर्डम से दुखी एक पति-पत्नी ने चोरी करते हुए अपने को गिरफ्तार कराया—जेल गए। लौट कर आए तो बोले, हमने अपना बोर्डम तोड़ा।

मि० मेहता : एक्ज़ेक्टली !

[सामूहिक हँसी।]

मि० प्रसाद : मोहन, एक बीड़ा-पान ला···तम्बाकू और किमाम भी।···हाँ तो पेरिस की नकल करके आप इस तरह बोर्डम तोड़ेंगे ?

मिसेज प्रसाद : इट इज ए गुड आइडिया। पीक दबा कर बैठने से तो अच्छा है।

[सब हँसते हैं।]

मि० प्रसाद : मेरी लाइफ में कोई बोर्डम नहीं ? मैं काम करता हूँ। आई इन्जाय एण्ड वर्क।

[मोहन पान लाता है।]

मि० मेहता : आज मैं एक पान खाऊँगा।

रीता : मैं भी।

मिसेज प्रसाद : फिर तो मैं भी।

मि० प्रसाद : फिर मैं नहीं।

[प्रसाद सो जाते हैं। तीनों हँसते हैं। मोहन जाता है।]

क्यू में

[दूरदर्शन नाटक]

पात्र

डिप्टी साहब
पत्रकार
कालेज का छात्र
व्यापारी
क्लर्क
लड़की
युवती

[फेड इन—लोगों की भीड़। शोरगुल। कट टू काउंटर नम्बर पाँच, कट टू खिड़की। उसमें से झाँकता हुआ क्लर्क।]

क्लर्क : देखिए, आप लोग मेहरबानी करके क्यू लगाइए। बिना क्यू के मैं काम नहीं कर सकता।

युवक : और अब तक कैसे काम किया है ? अपने लोगों को तो टोकन दे दिए।

क्लर्क : मैं कुछ नहीं जानता, क्यू बनाइए।

[लोग क्यू में आगे आने के लिए दौड़ते हैं और आपस में लड़ जाते हैं।]

पत्रकार : मैं पहले से खड़ा था यहाँ।

व्यापारी : मैं आपसे पहले आया था।

डिप्टी : भाई, मैं सबसे पीछे खड़ा हो जाता हूँ—लड़िए नहीं। मेलजोल से काम लीजिए। आप लोगों को मालूम होना चाहिए, एकता में कितनी शक्ति होती है। चलिए, लाइन में खड़े हो जाएँ। आइए, प्लीज़···यस···राइट।

युवक : सबसे पहले मैं यहाँ खड़ा था।

पत्रकार : कमाल है, मैं खड़ा था सबसे आगे।

डिप्टी : अच्छा, आप ही नम्बर वन हो जाइए।

व्यापारी : नम्बर वन मैं था।

डिप्टी : बताइए, अब इसका फैसला कौन करे।

युवक : जिसकी लाठी उसकी भैंस।

डिप्टी : मतलब मेरी भैंस को डंडा क्यों मारा।

[कुछ हँसते हैं, कुछ गंभीर रह जाते हैं और फिर धक्का-मुक्की होती है।]

डिप्टी : भाई, ऐसे काम नहीं चलेगा। वह देखिए क्लर्क साहब उठ गए।

[क्लर्क उठकर जाता है। लोग हारकर क्यू में खड़े हो जाते हैं—पहले नम्बर पर वन व्यापारी, दूसरे पर युवक, तीसरे पर पत्रकार, सबसे पीछे डिप्टी।]

डिप्टी : अरे साहब, आप आ जाइए, लोग क्यू में खड़े हो गए।

[क्लर्क एक चिट्ठी पढ़ रहा है। क्यू के लोग कभी एक-दूसरे का मुँह देखते हैं, कभी घड़ी और कभी सूने-सूने काउंटर पर। कोई जम्हाई लेता है। कोई सिर खुजा रहा है, कोई दूसरे को घूर रहा है। डिप्टी साहब खड़े-खड़े कोई मैगजीन देख रहे हैं।]

व्यापारी : साहब, आप पुकारिए।
डिप्टी : खिड़की पर तो आप खड़े हैं।
युवक : खुद नहीं पुकार सकते।
व्यापारी : देखिए, मैं आपसे बात नहीं कर रहा।
युवक : तो चुपचाप खड़े रहिए।

[सब उसी तरह विभिन्न चेष्टाओं में खड़े हैं।]

पत्रकार : अरे साहब, देरी हो रही है।

[क्लर्क वहीं से देखकर चुप रह जाता है।]

व्यापारी : सही बात यह है कि हममें एकता नहीं।
युवक : एकता कहाँ से हो?
व्यापारी : सब अपने-अपने स्वारथ में···
पत्रकार : हरेक चाहता है, उसका काम किसी तरह से हो जाए और लोग जाएँ भाड़ में।
डिप्टी : हमारी सोसायटी में इन्कलाब आना चाहिए।
व्यापारी : कितने बजे हैं साहब?
पत्रकार : इन्कलाब कोई अलादीन का चिराग तो है नहीं।
युवक : मुझे मैटिनी शो देखना है। मेरी गर्ल फ्रेंड। अजी साहब···
व्यापारी : अरे साहब, साढ़े ग्यारह बज गए।

[युवक हँसता है।]

व्यापारी : लोग हँसने के अलावा और जानते क्या हैं?
युवक : लोग चुपचाप खड़े कैसे रहते हैं?
पत्रकार : सेहत के लिए अच्छा है।
व्यापारी : देखिए साहब, मुझे अभी जाकर दुकान खोलनी है।

[क्लर्क काउंटर पर आता है।]

पत्रकार : साहब, जरा जल्दी कीजिए।

[कट टू क्लर्क]

क्लर्क : देखिए जी, रसीद बुक खत्म हो गयी है, चपरासी लेने गया है।

[कट बैक टू क्यू]

युवक : कभी यह बहाना, कभी वह बहाना—रसीद बुक खत्म हो गई।
पत्रकार : मालिक हैं, जो कह दें।
डिप्टी : (सहसा) अब क्या देर है भाई?
पत्रकार : पूछिए।

[सबकी अलग-अलग मुख-मुद्राएँ देखते हैं।]

डिप्टी : सबके चेहरे के भाव अलग-अलग। क्या बात है बड़े बाबू ? जरा मेहरबानी करके बोल ही दीजिए।

व्यापारी : देखिए बाबूजी (क्लर्क से) मैं चुपचाप खड़ा हूँ।

युवक : हाँ भाई, अपना-अपना उल्लू सीधा रखो।

[सबकी प्रतिक्रिया अलग-अलग]

डिप्टी : उल्लू···मतलब ?

[सब अलग-अलग चुप। एक युवती आती है। बढ़कर काउंटर पर खड़ी हो जाती है। सब अलग-अलग से उसे देखते हैं।]

व्यापारी : बहनजी, क्यू में, हम पूरे डेढ़ घंटे से खड़े हैं।

युवती : थोड़े-से तो लोग हैं।

डिप्टी : पर कुछ काम तो हो।

पत्रकार : अब जरूर हो जाएगा।

डिप्टी : हाँ, क्यों नहीं ? लेडीज़ फर्स्ट।

युवक : फारेन कंट्रीज़ में औरत-मर्द में कोई फर्क नहीं किया जाता।

युवती : चन्द्रा साहब हैं अन्दर ?

पत्रकार : अब हो गया काम।

[कट टू क्लर्क]

क्लर्क : आप ही चन्द्रा साहब की···

[कट बैक टू युवती]

युवती : जी···जी ! मुझे बहुत जल्दी है। हेयर ड्रेसर के यहाँ नम्बर लगा कर आयी हूँ। आई एम सॉरी···क्या करूँ ?

[अंदर जाने लगती है।]

व्यापारी : बहन जी, मेरा भी···।

युवती : सॉरी, आई हैव नो टाइम। सॉरी, डोंट माइंड, प्लीज़ ! (जाती है।)

पत्रकार : कमाल है, वाह रे वाह !

युवक : चारों ओर करप्शन।

पत्रकार : आप लोग इसके खिलाफ अखबार में क्यों नहीं देते ? कम से कम लेटर टू द एडीटर।

व्यापारी : देखिए जी, क्या फायदा··· क्यों बाबूजी, आ गयी रसीद बुक।

युवक : लोग क्लर्कों की भी मक्खनबाजी करते हैं—यही तो दिक्कत है।

व्यापारी : आइए न, आप ही बड़े बहादुर हैं—करा लीजिए काम।

युवक : ठीक है देखता हूँ—आइए इधर। (आगे बढ़ता है।)

युवक : एजी, सुनिए साहब ! सुनिए।

[काउंटर पर आवाज। कट टू भीतर क्लर्क—दोनों बैठे हैं। मेज पर चाय। कट बैंक टू क्यू—व्यापारी युवक पर हँस रहा है। पत्रकार जम्हाई ले रहा है। डिप्टी एक कापी पर लोगों की शक्लें बना रहे हैं। कट टू क्लर्क और युवती।]

क्लर्क : चन्द्रा साहब का मेरे ऊपर बहुत अहसान है।

युवती : क्यों नहीं, वह बहुत अच्छे आदमी हैं।

क्लर्क : आप भी यहीं काम करती हैं ?

युवती : चन्द्रा साहब की स्टेनो थी, अब एक अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाती हूँ।

क्लर्क : क्या पढ़ाती हैं ?

युवती : डांस।

क्लर्क : ओ हो, वेरी नाइस। चाय लीजिए।

[कट बैंक टू क्यू, लोग चुप खड़े हैं। डिप्टी ने क्लर्क और युवती का चित्र खींचा है।]

व्यापारी : अरे बाबू साहब, बड़ी देर हुई।

युवक : (गाता है) बड़ी देर भई नंदलाला—तेरी राह तके ब्रजवाला।

व्यापारी : लोग खामखा गाते हैं।

युवक : लोग यूँ ही बड़बड़ाते हैं।

व्यापारी : चुप रहिए।

युवक : कह आए।

पत्रकार : बड़ी उमस है, साहब।

डिप्टी : इन्टरेस्टिंग। कहिए, काम शुरू हुआ ?

पत्रकार : अभी रसीद छप रही है। वह देखिए भीतर।

[कट टू क्लर्क और युवती। युवती चाय पीकर लिपिस्टिक ठीक कर रही है। बाहर लोग खड़े हैं।]

क्लर्क : आप इसी बहाने आयीं। आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई।

युवती : अच्छा, अब मैं चलूंगी। जल्दी कर दीजिए।

[कट टू क्यू]

व्यापारी : साहब, बड़ा अत्याचार है आज की दुनिया में।

पत्रकार : लोग इसके खिलाफ अखबार में क्यों नहीं देते ?

युवक : अखबार वाले भी तो···कौन छापता है।

पत्रकार : क्यों, मुझे दीजिए, मैं छापूंगा।

डिप्टी : तो आप अखबार में काम करते हैं—क्यों साहब ?

पत्रकार : जी हाँ।

डिप्टी : फिर तो आप खुद लिखिए—सेल्फ एक्सपीरियंस।

पत्रकार : क्यों साहब, आ गयी रसीद।

[कट टू क्लर्क—वह पहले युवती का काम करता है। युवती मुस्कराती है। बाहर आती है। क्यू के लोग उसे जाते हुए अलग-अलग ढंग से देखते हैं। फिर कट टू व्यापारी—क्लर्क उसका काम कर रहा होता है।]

क्लर्क : पाँच रुपए टूटे नहीं हैं ?
व्यापारी : जी नहीं। देखिए, बहनजी, मैंने आपको अभी रुपए दिए हैं।
क्लर्क : थोड़ा रुकिए।
व्यापारी : क्यों भाई लोग, किसी के पास पाँच रुपए टूटे हैं ?

[सब चुप है।]

व्यापारी : अच्छा टोकन तो दीजिए।

[क्लर्क टोकन देता है।]

युवक : अब तो हटिए।
व्यापारी : कमाल है, अपने बाकी तो ले लूं।
पत्रकार : वह भी लीजिएगा !
व्यापारी : (क्यू से बाहर होते हुए) क्या मतलब ? कोई हराम के हैं क्या ? और पाँच रुपए नहीं देंगे तो क्या मैं मर जाऊँगा। समझ लो कि दान किया।
डिप्टी : बड़े धर्मात्मा हैं।
व्यापारी : चुप रहिए।

[चला जाता है।]

युवक : अब क्या हो गया साहब, हमें देर हो रही है।

[कट टू क्लर्क]

क्लर्क देखते नहीं पेंसिल टूट गयी।

[कट बैक क्यू]

पत्रकार : अभी कार्बन खतम होगा।
डिप्टी : फिर लंच टाइम। थोड़ा पान-सिगरेट बाहर जाकर।
युवक : देखिए, मुझे देर हो रही है। अगर मेरा मैटिनी शो छूट गया तो ठीक न होगा।

[एक लड़की आती है।]

लड़की : हैलो, मि० टी० प्रसाद। आप यहाँ कैसे ?
डिप्टी : मेला देखने—यहाँ क्या-क्या होता है···।
लड़की (युवक से) अरे, तुम अब तक क्यू में ! मैं रास्ता देखती-देखती थक गयी।
युवक : चारों ओर आप ही लोगों का राज्य है।

डिप्टी : जी हाँ, आप अंदर आइए और फटाफट'''।

लड़की : (डिप्टी से) मगर मुझे ताज्जुब है, आप यहाँ कैसे ?

डिप्टी : आत्मनुभव के लिए।

लड़की : यह क्या बना रहे हैं, (देखती है) ओह, सबकी तस्वीरें ! यह कौन हैं ?

डिप्टी : एक युवती। जो अंदर गयी। जिसने क्लर्क से चाय भी पी और काम करा के फट बाहर निकल गयी।

लड़की : यह मैं भी कर सकती हूँ।

[युवक पास आ गया है। कट टू क्लर्क]

क्लर्क : देखिए साहब, क्यू मत तोड़िए।

युवक : चाहे अपना सर भले तोड़ दीजिए।

क्लर्क : देखिए, जबान सँभाल कर बोलिए।

व्यापारी : देखिए, मैं कुछ नहीं कह रहा हूँ, मेरा काम तो कर दीजिए।

पत्रकार : साहब, पेंसिल मुझसे ले लीजिए।

डिप्टी : कॉपीइंग पेंसिल चाहिए, भाई !

पत्रकार : अब तो आपका काम हो गया।

डिप्टी : और मैटिनी शो भी मिल गया।

लड़की : मैं अंदर जाऊँगी तो मेरी भी तस्वीर बनाएँगे ?

डिप्टी : अगर कलम में स्याही खत्म हो गई ?

युवक : जल्दी करो न।

लड़की : (अलग) जानते हो, यह कौन है ?

युवक : होगा कोई—अपने से क्या मतलब ?

लड़की : डिप्टी साहब हैं—बड़े दफ्तर के।

युवक : छोड़ो भी, जल्दी करो।

[लड़की डिप्टी के पास आती है।]

लड़की : आइए, अंदर चलिए न।

डिप्टी : यू गो एहैड।

लड़की : लगता है, समथिंग सीरियस।

डिप्टी : चलता है'''मनुष्य को अपना काम खुद करना चाहिए।

लड़की : तो आप इन्क्वायरी में आए हैं।

डिप्टी : चुप, खबरदार। एकदम चुपचाप।

[लड़की हँसती है।]

युवक : देखो न, पेंसिल टूट गई इनकी।

लड़की : अजी, मुझे दो, अभी लाई—फटाफट।

पत्रकार : लिमिट है लिमिट।

[लड़की अशोक के कागजात लेकर बढ़ती है।]

लड़की : डिप्टी साहब, अपने कागज भी दे दीजिए।

डिप्टी : नो, थैंक्स।

[कट टू क्लर्क और लड़की।]

लड़की : आपको पता भी है, बाहर क्यू में कौन खड़ा है।

क्लर्क : (कागज बनाते-बनाते) कौन है ?

लड़की : ट्रांसपोर्ट मिनिस्ट्री के डिप्टी सेक्रेट्री मि० प्रसाद।

क्लर्क : (घबड़ाहट में उठकर) क्या ? कहाँ है ?

लड़की : खुद आए हैं—क्यू में ही खड़े रहकर···हाँ।

[कट टू क्यू—क्लर्क कुर्सी लिए आता है।]

क्लर्क : नमस्ते सर, लाइए अपने कागज।

डिप्टी : ठीक है, ठीक है। डू योर वर्क। बस-बस, मैं यहीं क्यू में ही हूँ।

क्लर्क : अच्छा, कुर्सी पर बैठ जाइए। बैठ जाइए, सर!

डिप्टी : यह क्यू हैं कि मजाक ?

क्लर्क : सॉरी सर, तशरीफ रखिए।

युवक एवं पत्रकार : अरे साहब, बैठ भी जाइए। वरना यह अन्दर नहीं जाएँगे।

[डिप्टी बैठते हैं। क्लर्क अंदर जाता है। लड़की एक कप चाय लेकर आती है।]

लड़की : प्लीज हैव टी।

डिप्टी : यह क्या तमाशा है ! प्लीज गैर-मुमकिन। नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता—दे कांट ब्राइब मी लाइक दिस।

[कट टू क्लर्क—वह घबड़ाया हुआ देखता है।]

पत्रकार : देखिए साहब, नाऊ आई कांट टालरेट।

युवक : जल्दी कीजिए, क्यू में और लोग आने को हैं।

पत्रकार : यह क्यू है कि तमाशा ?

लड़की : प्लीज डोंट साउंड। अभी सबका हो जाएगा।

पत्रकर : हो जाएगा।

[डिप्टी चाय पी रहे हैं। क्लर्क तेजी से काम कर रहा है। कैमरा एक-एक के मुख पर टिकता है।]

लड़की : और क्या हालचाल है, सर ?

डिप्टी : बड़ी महँगाई है।

लड़की : क्लर्क्स आर क्लर्क्स—प्लीज डोंट माइंड।

डिप्टी : आफिसर्स आर आफिसर्स—डोंट माइंड।

[क्यू के लोग जा रहे हैं। लड़की युवक के संग। क्लर्क डिप्टी के सामने।]

क्लर्क : सर, और कोई सर्विस ?

[क्यू में नये लोगों की भीड़—आवाज।]

डिप्टी : क्या तमाशा है, जाओ काम करो—डू योर ड्यूटी—लोग क्यू में खड़े हैं।

क्लर्क : सर, लंच आवर शुरू हो गया।

[कट टू घड़ी। कट बैक—डिप्टी साहब घड़ी देखते हैं। दोनों की आँखें मिलती हैं।]

क्लर्क : हें-हें-हें···नमस्ते सर।

[डिप्टी साहब मुस्कराकर चले जाते हैं।]

गुप्त धन

[रेडियो एकांकी]

पात्र

चिरंजी···(उम्र 50 वर्ष)

विमला (चिरंजी की पत्नी···उम्र 45 वर्ष)

बिघू (चिरंजी का बड़ा पुत्र···उम्र 23 वर्ष)

श्याम (चिरंजी का छोटा पुत्र···उम्र 21 वर्ष)

गौरी (चिरंजी की लड़की···उम्र 19 वर्ष)

रहमान (चिरंजी का दोस्त···उम्र 52 वर्ष)

सिपाही एक···उम्र 30 वर्ष

सिपाही दो···उम्र 40 वर्ष

पंडित जी···उम्र 60 वर्ष

चंपालाल···उम्र 55 वर्ष

ताई जी (बुढ़िया)···उम्र 70 वर्ष

बेबी···8 वर्ष का बच्चा

[प्रारंभिक संगीत के बाद फेड इन—गहरी रात का ध्वनि-प्रभाव। दूर कुत्तों का भूंकना। चौकीदार की सीटी। डंडा पटकना। चिरंजी सोते-सोते बड़बड़ाते हुए चीख पड़ता है—आग···आग, आग लग गई, बचाओ···आग···आग।

विमला, बिधू, श्याम, गौरी—सब का जागना। सब की प्रतिक्रियाएँ।]

बिधू : बाबू कोई सपना देख रहे थे !

श्याम : यह सपना ही देखते हैं—हमारी नींद हराम करते हैं।

विमला : देख तो, चिराग जला गौरी बेटी।

[स्विच आन का स्वर।]

गौरी : क्या है बाबूजी ? कहीं आग तो नहीं···

[चिरंजी की तेज साँसें।]

विमला : लो, पानी पी लो। भगवान का नाम लो, गौरी के बाबूजी !

बिधू : बाबूजी चुपचाप सो जाइए।

श्याम : गौरी, लाइट बंद कर।

गौरी : कमाल है, तुम लोगों को अपनी नींद की पड़ी है। जरा उठकर बाबूजी का मुंह तो देखो। च···च···च···! हाय राम ! क्या हुआ बाबूजी ?

चिरंजी : बेटी, मैंने देखा—मेरे घर में आग लगी है। आग यहाँ मेरे भीतर लगी हुई है। यहाँ से आग बढ़ती हुई पूरे घर को जला रही है। देखो आग···वह देखो।

विमला : चुप भी हो जाइए गौरी के बाबू, कोई सुनेगा तो क्या कहेगा !

चिरंजी : क्या कहेगा ?

श्याम : बाबूजी, खामोश रहिए, हमारी नींद हराम मत कीजिए। आपको नींद नहीं आ रही है, तो जाकर बाहर टहलिए।

गौरी : श्याम ! चुप रहो। कोई तमीज नहीं बोलने की। बाबूजी, अब कैसी तबीयत है ? लाइट बुझा दूँ ?

विमला : क्या आँख फाड़े देख रहे हो। कहाँ आग लगी है !

गौरी : माँ ! क्यों डाँटती हो बाबू को इस तरह !

बिधू : बताइए न बाबूजी, कहाँ आग लगी है, हम उसे बुझा दें।

चिरंजी : बता दूँ बेटे ? बता दूँ···?

श्याम : हाँ-हाँ, बताइए न, नींद हराम किए दे रहे हैं।

चिरंजी : बता दूँ ? बता दूँ ? आग मेरे भीतर लगी हुई है।

[दोनों बेटों की हँसी ।]

चिरंजी : (घबराहट) गौरी की माँ ! विमला ! सुन, एक कप चाय पिला सकती है ?

श्याम : (हँसी) हाँ-हाँ, आग लगी हुई है। आग बुझाने के लिए चाय चाहिए।

बिधू : फिर सिगरेट ।

श्याम : फिर चाय । फिर झगड़ा । फिर चिल्ल-पों । फिर भाषण । आस-पड़ोस-मोहल्ले वाले मुफ्त में तमाशा देखें।

गौरी : लो बाबू जी, चाय ।

बिधू : खबरदार जो इन्हें चाय दी ।

श्याम : चाय बाहर जाकर पीजिए ।

चिरंजी : चुप रहो । मैं चाय यहीं पीऊँगा । तुम लोगों को जाना हो तो चले जाओ यहाँ से ।

बिधू : तुम जाओ, हम क्यों जाएँ ।

श्याम : बड़े आए हैं रात के ढाई बजे चाय पीने ।

चिरंजी : यह मेरा घर है । सब मेरी कमाई है। मैं अपनी मर्जी से एक कप चाय भी नहीं पी सकता !

बिधू : जरूर पीजिए···। एक नहीं दस कप चाय पीजिए। मैं जा रहा हूँ—बाहर तख्त पर सोऊँगा ।

श्याम : अब आग बुझ जाएगी तुम्हारी ।

गौरी : तुम लोगों को बोलने की अकल नहीं आएगी ।

[झगड़े का प्रभाव]

बिधू : चापलूस कहीं की—बड़ी आई है मक्खन लगाने !

श्याम : तुझे बोलने की बड़ी तमीज है। बदतमीज कहीं की !

बिधू : श्याम, मोहल्ले वाले क्या कहेंगे !

श्याम : अपना सिर और तुम्हारा सिर।

बिमला : श्याम !

श्याम : माँ, तुम चुप रहो । मैं किसी से डरता नहीं हूँ। कमाकर देता हूँ तभी रहता हूँ इस घर में।

बिधू : जैसे मैं मुफ्त में रहता हूँ !

विमला : हे राम ! सब लड़ते हैं एक-दूसरे से । जैसे किसी का किसी से कोई रिश्ता ही नहीं है। सब अपनी-अपनी कमाई और पैसे का ताना देते हैं।

गौरी : लाइट बुझा दूँ बाबूजी !

चिरंजी : बुझा दे बेटी ! (लाइट बुझाना) विमला, तू सो जा ! जा बेटी, तू भी सो जा। सुन बेटी, चाय में चीनी कम थी। क्या चीनी खत्म हो गई ?

गौरी : कल चीनी आ जाएगी, चिंता मत कीजिए बाबूजी ! सो जाइए।

चिरंजी : अरे अब मुझे नींद कहाँ आएगी रे ।

विमला : अरे मुंह बंद करो गौरी के बाबू । नींद पूरी न हुई तो कल काम कैसे करूंगी। हाय राम ! हे गौरा-पार्वतीजी, मेरी भी पार करो। यह घर-परिवार है कि भूतखाना। सबकी हाय-हाय । हे भगवान !

गौरी : मां, चुप भी हो जाओ ।

[रात का फिर वही ध्वनि-प्रभाव ।]

चिरंजी : कितनी जल्दी इन सबों को नींद आ जाती है ! कैसी है मेरी किस्मत ! कभी चैन की नींद नहीं आई। एक कमी पूरी करता हूं तो तीन कमियां सिर उठाकर मुझे निगल जाना चाहती हैं। कोई मुझ पर विश्वास नहीं करता । सबके सब घुटे हुए हैं। सब मुझसे कपट रखते हैं। मैं दिन-रात इन्हीं के सुख-दुख की चिंता में डूबा रहता हूं। हे भगवान ! तुम्हीं बताओ मैं क्या करूं ।

गौरी : बाबू, तुम क्या बड़बड़ा रहे हो। अभी फिर सब डांटने-फटकारने लगेंगे।

चिरंजी : बेटी, मैं भगवान की पूजा कर रहा हूं। प्रभु से विनती कर रहा हूं। और मेरा कौन सहारा है !

गौरी : पूजा-विनती मन में ही करो बाबू···भीतर दिल में ।

चिरंजी : दिल में तो आग लगी रहती है, बेटी !

गौरी : वही धन की आग न ! वही पैसा-धन-रुपया-माल ! रुपया···रुपया···रुपया।

चिरंजी : हां, वही-वही धन । मेरा जी (बहुत धीरे) कहता है बेटी, मेरी किस्मत में कहीं धन गड़ा हुआ है। सारे ज्योतिषी, सारे जन्मपत्री वाले बताते हैं—मुझे कोई गुप्त धन एक दिन मिलेगा और मैं मालामाल हो जाऊंगा।

गौरी : अच्छा सो जाओ, बाबू ! सिर दबा देती हूं। नींद आ जाएगी।

चिरंजी : नहीं, नहीं, बेटी से सिर नहीं दबवाया जाता। तू मन ही मन हनुमान चालीसा पढ़। मुझे नींद आ जाएगी । हे राम ! हे बजरंगबली ! तोड़ दे दुश्मन की नली ! बता दे मुझे वह गली जहां धन की गगरी मिली !

[गौरी का बहुत धीरे-धीरे हनुमान चालीसा पढ़ना और चिरंजी का धीरे-धीरे सो जाना ।]

जै हनुमान ग्यान गुन सागर ।
जै कपीस तिहुं लोक उजागर ।।
रामदूत अतुलित बल धामा ।
अंजनी पुत्र पवन सुत नामा ।।

[सुबह होने का ध्वनि-प्रभाव ।]

बिधू : मां, चाय लाओ।

श्याम : मेरा चाय कहां है ?

बिधू : मां, मेरा नाश्ता तैयार करो । मुझे जल्दी जाना है।

गौरी : तुम लोग उठते ही चिल्लाने लगते हो—जैसे यह घर नहीं, सराय नहीं, रेलवे प्लेटफार्म है।

श्याम : तू चुप रह। हम माँ से बातें कर रहे हैं।

गौरी : माँ कोई मशीन है कि आर्डर दिया और चाय आ गयी !

बिधू : यह लड़की बहुत बक-बक करती है।···माँ, ओ माँ···पता नहीं कहाँ मर गयी !

गौरी : माँ एकदम से नहीं मरेगी भाई साहब। वह तिल-तिल कर रोज-रोज मरती जाएगी। थोड़ा-थोड़ा। माँ इस समय चारपाई से उठते ही चूल्हा जला रही है। लकड़ियाँ गीली हैं। पंखा झल रही है।

श्याम : बाप रे बाप ! घर में धुआँ। पच्चीस साल की कमाई की बाबूजी ने—गैस का चूल्हा तक न खरीद सके। सारे मुहल्ले के पास गैस सिलेण्डर, कुकिंग चूल्हा है—हमारा ही घर है—चूल्हे में सिर मारो। धुएँ में साँस घोटो। धुएँ वाली चाय पीयो रोज देरी से दफ्तर पहुँचो।

[फेड इन बेबी]

बेबी : (दौड़ती हुई) बाबा जी ! बाबा जी ! अरे अभी तक तुम सो रहे हो बाबा ! यह देखो अखबार। मेरे अब्बा ने भेजा है।

चिरंजी : रहमान भाई कहाँ हैं। उन्हें भेज।

बेबी : अब्बा बाल कटाने गए हैं। यह देखो, यही पढ़ने को अब्बा ने भेजा है। पढ़ो तो।

चिरंजी : अच्छा (अखबार खोलना) राशिफल ! यह रहा पंचांग। मेष···वृष···मिथुन ···कर्क···यह कर्क मेरी राशि—कर्क राशि। बेबी, जरा दरवाजा तो बंद कर दे।

बेबी : क्यों बाबा, (दरवाजा बंद करके) दरवाजा क्यों बंद करा दिया ?

चिरंजी : चूहे बहुत हैं घर में। यह टाफी खा ले। खा ले। कर्क राशि। शुक्ल षष्ठि। सूर्य षष्ठि। कुंड में स्नान करने से लाभ, परस्पर संघर्ष होगा। मिष्टान्न पदार्थ विशेष लाभकारी होंगे। संघर्ष होते हुए भी विजय लाभ का हर्ष होगा। वाह···वाह···! कहाँ है रहमान भाई ! चल नाई की दुकान ही चलता हूँ···चल।

[नाई की दुकान का फिल्मी पुराना कोई गाना]

चिरंजी : छोड़ो भी, क्या रखा है इसमें। चलो !

[दूर से वह गाना सुनायी देता है।]

रहमान : हाँ, अब बोलो चिरंजी भाई, तुम्हारी तकदीर में चार चाँद···। मालामाल। अखबार में रासिफल देखा। अरे बात यह है कि अपने चंपालाल जी हैं न, अरे वही मिष्टान्न भंडार के मालिक। उनकी इकलौती लड़की है। नाम है कंचनकुमारी। अपने बड़े लड़के बिधू से कंचन का रिश्ता मान लो मालामाल हो जाओगे।

चिरंजी : हाय-हाय, मुझे मंजूर है ! मगर रहमान भाई, चंपालाल अपनी लडकी का रिश्ता मेरे यहाँ करेंगे !

रहमान : अमें, मेरी बात हो चुकी है।

चिरंजी : सच रहमान भाई ? फौरन करो । बात पक्की ।

रहमान : भई, अपने बरखुरदार बिधू कुमार से भी तो बात कर लो । आजकल के लौंडे हैं ।

चिरंजी : उसकी फिकिर तुम मत करो रहमान भाई । मेरी बात मेरा लौंडा टाल दे—मैं उसकी खाल खींचकर रख दूँगा ।

रहमान : देखो भाई, तुम खामखा ताव में आ जाते हो । गुस्सा कर बैठते हो । गुस्से और लक्ष्मी में बड़ा वैर है । हाँ, जरा इत्मीनान से बात करो, हाँ !

चिरंजी : अच्छा-अच्छा, जो तुम कहोगे, वही करूँगा । अब बोलो असली बात । मिलेगा क्या ?

रहमान : अपने तक ही रखना—पचास हजार कैश । शादी का सारा खर्चा वही उठाएँगे । गहने-कपड़े सब वही…

चिरंजी : कमाल है । वाह-वाह ! वाह-वाह ! तो बात पक्की ।

रहमान : बात सिर्फ यही है कि चंपालाल की लड़की कंचन की एक आँख फूटी हुई है । मतलब कानी है । मतलब पत्थर की है ।

चिरंजी : हाय राम, तुमने तो मुझे घबड़ा ही दिया था । अरे आँख तो है न, चाहे पत्थर की हो चाहे कैसी भी हो । हमें तो रिश्ता मंजूर है । चंपालाल को आज शाम मेरे यहाँ सात बजे बुला लो । बस, बुला ही लो । आगे मैं देखूँगा ।

[गली-बाजार का शोर, संगीत]

बिमला : मैं पूछती हूँ, यह सारा तामझाम किसलिए किया जा रहा है ?

चिरंजी : मेरे बड़े बेटे, बिधू कुमार बी० काम०, एल-एल० बी०, डिप्लोमा इन लाइब्रेरी साइंस, की शादी के लिए लाला…लाला नहीं सेठ चंपालाल जी, मिष्टान्न भंडार के मालिक खुद तशरीफ ले आ रहे हैं—अभी इसी वक्त । जाओ कपड़े बदलो । बिधू कहाँ है, कहाँ है बिधू ?

बिमला : चीखो नहीं । बिधू को यह रिश्ता मंजूर नहीं ।

चिरंजी : यह क्या । फिर से तो कहो । जबान खींच लूँगा हाँ, मुझे समझती क्या है । मेरा सुफल योग आ गया है । (पुकारना) बिधू…बिधू…बिधू ।

बिधू : जी, पिताजी !

चिरंजी : (बिल्कुल नम्र-विनीत स्वर में) बैठो बेटे ! तुम सचमुच भाग्यवान हो । तुम्हारी जन्मकुंडली में था कि तुम परम भाग्यशाली हो । तुमसे इस घर में धन, कीर्ति, सम्मान, ऐश्वर्य, उच्च संबंध आएगा । धन्य हो पुत्र ।

बिधू : बकवास बंद कीजिए । असली बात बताइए, क्या है ।

चिरंजी : हाय…हाय…हाय ! पिता की वाणी को पुत्र बकवास कह रहा है । हे प्रभु, क्षमा करना । यह मेरा दोष है । मैंने संस्कार नहीं दिए । वैसे मेरा बेटा महान है—श्रेष्ठ है ! श्रेष्ठ नक्षत्र में शुक्ल पक्ष में इस मेरे सुपुत्र का जन्म हुआ है ।

बिधू : बात क्या है यह तो बताइए ।

चिरंजी : आओ बैठो। यहाँ बैठो बेटे ! आराम से, शांति से मेरी बात सुनो।

बिधू : मैं सब सुन चुका हूँ। मैं चंपालाल की कानी लड़की से किसी भी कीमत पर शादी नहीं करूँगा, नहीं करूँगा।

चिरंजी : (क्रोधावेश में) क्या कहा ! तेरी यह हिम्मत ! फिर से तो कह !

बिधू : आपको धन का लालच है। आप धन के लिए कुछ भी कर सकते हैं। मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं कोई बिकाऊ माल नहीं।

[दरवाजे पर दस्तक। चंपालाल और रहमान की बातें सुनायी देती हैं—"बड़े आदमी हैं चिरंजीलाल जी", "सबसे दिल नहीं खोलते", "बड़े विश्वासी हैं।"]

चिरंजी : आइए, आइए चंपालाल जी ! यह हमारा अहोभाग्य है, आप मेरे घर आए। रहमान भाई, आप यहाँ बैठिए। और आप यहाँ। यही मेरे सुपुत्र है बिधू कुमार जी। बेटा, यही हैं सेठ चंपालाल जी !

बिधू : जी, नमस्ते।

चंपालाल : आओ बेटा। इधर आओ। क्या करते हो बेटा ?

बिधू : जी, बैंक में क्लर्क हूँ—वह भी टेम्पोरेरी !

चंपालाल : उसकी चिंता न करो। कहो तो कोई दुकान करा दूँ। कोई बिजनेस कर लो अपना। कोई सरकारी नौकरी भी मिल जाएगी—परमानेंट।

बिधू : जी, आप तो इतने महान हैं। शक्तिशाली हैं। मेहरबान हैं। पर यह इतनी सारी कृपा मुझे गरीब पर क्यों कर रहे हैं।

चिरंजी : अरे बेटा, इसी को भाग्य कहते हैं। यही है कर्मफल। यही है पूर्वजन्म की कमाई। प्रभुकृपा।

बिधू : पिताजी, आप शांत रहें।

रहमान : वाह, कितना तेज है बेटे में !

बिधू : रहमान चाचा, गुस्ताखी माफ। मैं···मैं चंपालाल जी की बेटी से शादी नहीं कर सकता।

चिरंजी : क्या कहा ?

बिधू : जी, मैंने कहा—मैं यह शादी नहीं कर सकता।

रहमान : आखिर क्यों ? कोई वजह ?

चंपालाल : कोई खास शर्त ? कोई डिमांड ?

बिधू : जी, नहीं। मैं कोई बिकाऊ माल नहीं हूँ, बस। और मुझे कुछ नहीं कहना।

चिरंजी : बिधू ! बिधू बेटे ! रुको···सुनो तो।

रहमान : कमाल है, वह तो चला गया।

चिरंजी : चंपालाल जी, आप कतई बुरा न मानें, मैं सब ठीक कर लूँगा। लीजिए मुँह मीठा कर लीजिए (पुकारना) अरे विमला, गौरी बेटी पानी तो ले आओ। यह है विमला, मेरी धर्मपत्नी। यह है मेरी बेटी गौरी, बी० ए० फर्स्ट क्लास पास है।

[विमला और गौरी, दोनों नमस्कार करती हैं।]

चिरंजी : अरे चाय भी पिलाओगी कि सिर्फ पानी ही···?

गौरी : चाय तैयार है।

चंपालाल : जी नहीं, मैं चाय पीता ही नहीं।

विमला : देखिए, मैं साफ बात कहती हूँ लालाजी, बुरा मानो चाहे भला, आपकी बेटी से मेरा बेटा कभी शादी नहीं करेगा।

चिरंजी : तू यहाँ से जाती है या नहीं। दफा हो जा।

विमला : बस यह धन के पीछे पागल हैं। मगर असली धन क्या है, कहाँ है, इन्हें कुछ पता नहीं।

गौरी : माँ, चुप भी रहो।

चंपालाल : अच्छा, माफ कीजिएगा। चलता हूँ।

चिरंजी : मेहरबानी करके बुरा मत मानिए। आपका रिश्ता मुझे मंजूर है। मैं सबको मना लूँगा। क्यों रहमान भाई, सही है न?

रहमान : सही है। सब ठीक हो जाएगा। रिश्ता तो रिश्ता ही है। और ऐसा रिश्ता खुदा के फजल से···वाह !

चंपालाल : जी नहीं, ऐसे घर-परिवार में मेरी लड़की की शादी नहीं होगी।

चिरंजी : ऐसा न कहिए महाराज !

चंपालाल : यह कोई घर-परिवार है। जहाँ किसी से किसी का कोई रिश्ता ही न हो। कोई मर्यादा ही न हो—क्या बेटे से, पति-पत्नी से। माफ कीजिए चिरंजीलालजी, आप मेरे घर से रिश्ता जोड़ रहे थे—मुझसे या मेरी बेटी से नहीं !

चिरंजी : यह आप क्या कह रहे हैं !

चंपालाल : आपका बेटा, आपकी पत्नी दोनों निहायत ईमानदार और नेक इंसान हैं। आप गड़बड़ आदमी हैं, माफ कीजिएगा। नमस्ते।

[संगीत]

चिरंजी : सब नालायक हैं। सब बदमाश हैं। सब मेरे दुश्मन हैं। सब मुझ पर शक करते हैं। किसी का मुझ पर विश्वास नहीं है। सब मुझसे अपने दिल की बातें छिपाते हैं। सब चोर हैं। जैसे धन मैं अपने लिए कमाना चाहता हूँ। जैसे मैं ही धन का लालची हूँ। सब लालची हैं। झूठे, मक्कार। निकल जाओ सब मेरे घर से। यह घर मेरा बनवाया है। बड़ी लड़की हंसी की शादी का मेरे ऊपर अभी बारह हजार का कर्ज है। कौन अदा करेगा? कैसे अदा होगा? सब अपनी-अपनी तनखाह छिपाकर बैंक के खाते में डालते हैं। घर का सारा खर्चा मैं चलाऊँ। क्यों? क्यों चलाऊँ? मैं चलाऊँ क्यों? क्यों चलाऊँ भला?

गौरी : बाबूजी, शांत हो जाइए।

चिरंजी : अभी तेरी शादी करनी है। कहाँ से आएगा धन?

बिधू : आपके चीखने-चिल्लाने से धन नहीं आएगा। आपके कारण घर में इतनी अशांति है—सब एक-दूसरे से लड़ते हैं। सबके बीच में कोई रिश्ता नहीं, कोई मर्यादा नहीं

—वजह आप हैं ।

चिरंजी : मैं हूँ वजह ! ले मुझे मार दे । मार दे जान से । कर दे किस्सा खतम । घर में आ जाए शांति । आ जाए धन ।

श्याम : इन्हें डाक्टर से चैकअप कराना होगा । इनका दिमाग ठीक नहीं है ।

विमला : मुझे भी ऐसा लगता है । नींद की गोली खाते हैं तो ठीक रहते हैं वरना बस जगे-जगे सपने देखते रहते हैं ।

गौरी : तुम सबके सब बाबूजी के खिलाफ सोचते हो । वक्त उनको गलत समझना, उनकी गलतियाँ ढूंढ़ना, उनका विरोध करना—यह भी कोई जीवन है ! आखिर वह जो कुछ भी हैं, हमारे पिता हैं । इस घर के मालिक हैं ।

श्याम : मालिक नहीं, घर में आग लगाने वाले हैं ।

[पंडित जी की आवाज]

पंडित : जै हो, कल्याण हो । अरे कहाँ हो भाई चिरंजीलाल । **(पास से)** अरे, सब लोग कुछ बोलते क्यों नहीं । जैसे घर में कोई है ही नहीं । अरे भाई, कहाँ गए सबके सब ?

गौरी : पां लागी पंडित जी ।

पंडित : जै हो बेटी । घर में और कोई नहीं ।

गौरी : घर में कौन रहता है । सब घर में खाने आते हैं या सोने । और ऊपर से एक-दूसरे से लड़ने-झगड़ने आते हैं । घर नहीं है, यह कबूतरखाना है ।

पंडित : घर जब मकान हो जाता है बेटी, तभी सुनसान होता है । संध्या समय है । घर में एक चिराग तक नहीं जला, कमाल है ।

गौरी : मैं वही जला रही थी, लगता है बल्ब फ्यूज हो गया ।

पंडित : देखता हूँ, मेन स्विच का फ्यूज तो नहीं उड़ गया । **(मेन स्विच खोलना)** फ्यूज ही उड़ा है बेटी । तार होगा ? नहीं है ?

गौरी : देखिए इस तार से चलेगा, पंडित जी ।

पंडित : देखता हूँ । लग तो गया । 'ऑन' करता हूँ । लो लाइट आ गयी न ! अरे जब तार ही टूटा हो तो रोशनी कहाँ से आए । तार ही तो संबंध है । चिरंजी कहाँ गया है ।

गौरी : आप से क्या छिपाना, वह एक ज्योतिषी के पास गए हैं । वह कई दिनों से एक ही सपना देखते हैं—कहीं गुप्त धन गड़ा हुआ है । वह जगह भी वह कई बार देख आए हैं पर उनमें एक अजीब तरह का डर समा गया है कि कहीं वह पागल तो नहीं हो रहे हैं ।

पंडित : नहीं, नहीं, चिरंजी बेहद ईमानदार, चरित्रवान है—इसी वजह से उसमें इतना गुस्सा और जिद है । वह कभी पागल नहीं हो सकता । वह लोग खुद गलत हैं जो दूसरे को गलत समझते हैं । अच्छा चलता हूँ—कह देना मैं आया था । मेरा आशीर्वाद कहना चिरंजी को । जै हो । कल्याण हो ।

गौरी : वह आ गए पिताजी ।

चिरंजी : पाँव लागूँ पंडितजी । मैं तो ज्योतिषी के यहाँ से सीधे आप ही के पास गया था। इधर आ बेटी, तू भी बैठ। हम तीनों के अलावा यह रहस्य और कोई न जाने । बेटी, किवाड़ बंद कर ले । रोशनदान भी ।

[गौरी किवाड़-रोशनदान बंद करती है]

चिरंजी : बात यह है, मैं पिछली सात रातों से लगातार एक ही सपना देखता हूँ । एक जगह है । इमारत के पास है । एक पत्थर पड़ा है । बगल में गुलाब का पेड़ है । दायीं तरफ काली मिट्टी है । उसी मिट्टी के नीचे सात हाथ की गहराई में चाँदी के ढाई लाख रुपए गड़े हैं—पीतल के बर्तन में । ज्योतिषी को मैंने नहीं बताया । बात ही ऐसी है । अब तुम राय दो मुझे । क्यों बेटी ।

पंडित : सात रात एक ही सपना—फिर तो सत्य होना ही चाहिए । चिरंजी, लग जाओ इस काम पर । प्रयत्न करना ही हो होगा ।

चिरंजी : पैर पड़ता हूँ—किसी को कानोकान खबर न हो ।

पंडित : आपे आप पर विश्वास रखो । आत्मविश्वास कभी न डिगने पाए ।

[संगीत चेंज ओवर]

चिरंजी : बिल्कुल यही जगह है । यह रही वह इमारत और यह रहा पत्थर···ओह, यह है गुलाब···वाह-वाह···दायीं तरफ काली मिट्टी ।

[एकाएक सिपाही की आवाज]

पहला सिपाही : कौन है ! चल इधर । चल ।

दूसरा सिपाही : अरे, यह तो मारे डर के काँप रहा है ।

पहला सिपाही : कोई पागल है क्या ।

दूसरा सिपाही : अबे कौन है तू । यहाँ क्या ढूँढ़ रहा था । जानता नहीं यह कन्टोनमेंट एरिया है । यहाँ आया कैसे ?

चिरंजी : हाथ जोड़ता हूँ माई-बाप । मैं भी सरकारी मुलाजिम हूँ । यह देखिए मेरा आइडेंटिटी कार्ड । मैं चोर-उचक्का नहीं हूँ ।

[दोनों सिपाही हँसते हैं]

पहला सिपाही : अबे ढूंढ़ क्या रहा था ?

चिरंजी : जड़ी-बूटी । एक घास । पत्ती ।

पहला सिपाही : क्या मर्ज है तुझे ?

दूसरा सिपाही : लगता है लूलू है । इसके पीछे सी०आई०डी०लगा दो । पता करो सब ।

पहला सिपाही : यस सर ! भाग जा यहाँ से ।

चिरंजी : यस सर ! गलती माफ सर ।

[दोनों की हँसी]

पहला सिपाही : वह देखो, वह फिर आ रहा है।

दूसरा सिपाही : वह कल भी आया था और परसों भी, मुझे देखते ही डर के मारे नौ-दो ग्यारह हो गया। ऐसे गायब हुआ जैसे गधे के सिर से सींग। **(हँसी)**

पहला सिपाही : सुनो, ऐसा करते हैं। आज मुझे अकेले इससे बात करने दो। तुम दूर हट जाओ। इधर पुल के पास। मैं उसके दिल की बात जानकर रहूँगा।

दूसरा सिपाही : अरे, तुम इस मामले में माहिर हो। किसके पेट में क्या है—कुछ भी तुम से बच सकता है क्या। अच्छा, 'आल द बेस्ट' मतलब तुम्हें कामयाबी मिले। **(जाता है)**

पहला सिपाही : थैंक यू, सर ! ओ भाई, सुनो तो। डरो नहीं। आओ, मेरे पास आ जाओ। उसे मैंने हटा दिया। आओ बैठो। मुझे बिलकुल अपना ही आदमी समझो।

चिरंजी : भगवान कसम।

पहला सिपाही : बिलकुल अपनी कसम। भगवान कसम। तुम्हारी कसम।

चिरंजी : आप तो साक्षात मेरी किस्मत हैं, सर !

पहला सिपाही : तुम्हारा नाम क्या है ?

चिरंजी : चिरंजीनाथ···यह देखिए मेरा आइडेंटिटी कार्ड।

पहला सिपाही : ओह, बिलकुल ठीक। तुम तो एक निहायत जिम्मेदार आदमी हो। सच-सच बताओ, यहाँ किस बात के लिए रोज-रोज चक्कर काट रहे हो।

चिरंजी : सर, मेरे सिर पर हाथ रखकर कहिए किसी को नहीं बताएँगे। किसी को भी नहीं।

पहला सिपाही : लो, कभी किसी को भी नहीं बताऊँगा।

चिरंजी : **(रहस्यमय स्वर में)** सर, इधर आइए मेरे साथ। **(चलना)** इधर। अब इधर। थोड़ी दूर और। बस, अब यहीं रुक जाइए, सर यहाँ इस ! जगह। इस काली मिट्टी के नीचे गुप्त धन गड़ा हुआ है। लाखों रुपये हैं, सर ! सर, कान लगाकर सुनिए। अशर्फियों की रुनझुन। धन की रुनझुन। किस्मत का चुनमुन।

पहला सिपाही : यह रहस्य किसने बताया तुम्हें। सच-सच बताना।

चिरंजी : मैं पिछले सवा महीने से हर रात, यहीं, इसी जगह गुप्त धन गड़े होने का सपना देख रहा हूँ, सर ! एक ही सपना। एक ही सत्य।

पहला सिपाही : अच्छा। वाह, वाह !

चिरंजी : सर, हम लोग आधा-आधा बांट लेंगे।

पहला सिपाही : पर खोदेंगे कैसे। यह तो गैरिसन का इलाका है। गोली मार देगा देखते ही। दिन-रात पहरा है।

चिरंजी : कोई तरीका निकालो, सर ! ले-देकर सब काम हो जाता है, सर !

पहला सिपाही : अच्छा, अपना दायाँ हाथ दिखाओ।

चिरंजी : आप हाथ देखते हैं, सर ? देखिए सर, देखिए।

पहला सिपाही : सर्प, बृहस्पत, मंगल। तुम्हारे दो लड़के, दो लड़कियाँ। एक लड़की की शादी। तुम्हारे घर में झगड़ा। सबसे तुम्हारी लड़ाई···।

चिरंजी : धन्य हो···धन्य हो त्रिकालदर्शी, महाराज ! धन्य हो !

पहला सिपाही : उठो-उठो। मेरे पैरों पर मत गिरो। अब ध्यान से मेरी बात सुनो। तुम्हारे घर में पूरब दिशा में रसोई है। रसोईघर में पूरब दिशा को मिट्टी का चूल्हा है।

चिरंजी : सत्य वचन। बिलकुल सही, महाराज ! हे त्रिकालदर्शी !

पहला सिपाही : तुम्हारा सपना बिल्कुल सही है। यहाँ धन जरूर गड़ा था, पर यहाँ खुदाई तो हो नहीं सकती, मिलिट्री कानून है। तो हुआ यह कि यहाँ का गुप्त धन जमीन के भीतर ही भीतर तुम्हारे घर में रसोई के चूल्हे के नीचे तेरह हाथ नीचे गहराई में पहुँच गया है।

चिरंजी : धन्य हो ! धन्य हो ! जै हो महाराज आपकी !

पहला सिपाही : जाओ मजे से, आराम से, घर-परिवार सबको विश्वास में लेकर चूल्हे के नीचे गड़े धन को खोदकर मालामाल हो जाओ।

चिरंजी : सर, आपकी फीस ! आपको कितना हिस्सा मिलना चाहिए ?

पहला सिपाही : बस, चुपचाप रफूचक्कर हो जाओ यहाँ से। भाग जाओ। अरे टैक्सी करके जल्दी से घर पहुँचो।

[भागना, हाँफना। टैक्सी की पुकार। टैक्सी का आना। टैक्सी में जाना। दोनों सिपाहियों की हँसी]

दूसरा सिपाही : अरे, क्या मंत्र पढ़ा दिया उसे।

[दोनों की हँसी]

पहला सिपाही : अरे, क्या बताऊँ ! हँसी नहीं रुकती। बेवकूफ, उल्लू कहीं का। सपना देखा था कि यहाँ, इस जगह—जहाँ वायरलैस की बैट्रियाँ गड़ी हुई हैं—यहाँ लाखों रुपयों अशर्फियाँ गड़ी हुई हैं।

दूसरा सिपाही : फिर क्या किया तुमने ?

पहला सिपाही : बेवकूफ था। उल्लू को पाठ पढ़ाकर भेज दिया। सी० आई० डी० से मिली हुई 'इनफारमेशन' के आधार पर एक मजाक गढ़ दिया। उसे यकीन हो गया कि उसके घर के चूल्हे के भीतर जमीन में धन गड़ा हुआ है।

[हँसी। संगीत]

रहमान : अरे, चिरंजी भाई ! ओ चिरंजी भाई ! अरे, यह तो कुछ बोलता ही नहीं।

विमला : पता नहीं क्या हो गया है। कुछ बोलते ही नहीं। गौरी बेटी, तू कोशिश कर बेटी।

गौरी : बाबूजी, बाबू···। चाय पीएँगे ? रहमान चाचा पान लेकर आए हैं आपके लिए। बिधू भैया और श्याम भैया—इन्हीं से नाराज होकर···।

बिधू : बाबूजी, आप दफ्तर नहीं जाएँगे। आज तीन दिन हो गए—छुट्टी की दरखास्त तो लिख दीजिए। मैं आपका बड़ा लड़का बिधू कुमार हूँ।

श्याम : मैं आपका छोटा लड़का श्याम हूँ, बाबूजी ! मुझसे कोई गलती हो गयी हो तो मुझे माफ कर दीजिए।

विमला : जिन्दगी भर मजा है—पहले उस तरह, अब इस तरह। मैं इनके सब चोंचले जानती हूँ।

बिधू : चुप रहो माँ। रहमान चचा, क्या किसी डाक्टर को दिखाया जाए।

रहमान : भई, इन्हें कोई बीमारी तो है नहीं। खाना खाते हैं, पानी पीते हैं। ब्लडप्रेशर नार्मल, नींद नार्मल···

बिधू : पर एक चीज एबनार्मल है : यह तीन दिन से रात में चौके में ही जाकर सोते हैं।

रहमान : इसमें कोई खास बात नहीं है। ऐसा है, मैं चिरंजी भाई की ताईजी को बुलाकर ले आता हूँ। चिरंजी ताईजी की गोद में पला है। ताईजी से जरूर अपना दुख-सुख कहेगा।

बिधू : बहुत-बहुत शुक्रिया रहमान चचा।

रहमान : इन्हें चुपचाप आराम करने दो, मैं अभी आया। (जाता है)

गौरी : बाबूजी को मैंने कभी इस तरह आराम करते नहीं देखा। दिन-रात काम। घर-गृहस्थी की चिन्ता। सबकी नौकरी की चिन्ता। अब हमारी शादी की चिन्ता।

[बेबी गाती हुई आती है—]

सोने की पालकी, उसमें बैठी जानकी।
जै कन्हैयालाल की, हाथी, घोड़ा-पालकी
जै जै बोलो राम की श्याम की घनश्याम की।

चिरंजी : अरे बेबी ! यह क्या गा रही है। यह क्या है।

बेबी : यह मेरा पर्स है—माँ कहती है, पर्स नहीं बटुआ। इसमें नोट रखा जाता है—नोट माने कागज। बटुए में धन रखा जाता है। उसका मुँह बंद रहता है। पर्स का कोई मुँह ही नहीं होता। सिर्फ पेट होता है।

[चिरंजी की हँसी]

बिधू : (दूर से) देखो, बाबूजी कैसे हँस-बोल रहे हैं।

गौरी : ताईजी आ रही हैं।

[सब नमस्ते करते हैं। चिरंजी पाँव छूता है।]

चिरंजी : पाँव छूता हूँ ताईजी।

ताई : (बुढ़ियऊ स्वर) खुश रह। सुख पा। सुना है तेरी कुछ तबीयत खराब है। अरे तबीयत खराब हो तेरे दुश्मनों की। हाँ रे, कैसा है रे ?

चिरंजी : ताईजी, तुमसे एक बहुत जरूरी बात करनी है। वह बात और किसी से नहीं कर सकता।

ताई : आ-आ, चल। यहीं कर लेना। तुम सब यहाँ से जाओ। गौरी, दरवाजा बंद कर।

(दरवाजा बंद होना) हां, जी खोलकर बोलो।

चिरंजी : ताईजी, तुम हमारे पूरे खानदान, परिवार की सबसे बड़ी···बुजुर्ग···सबसे प्यार करने वाली। ईमानदार। तुम्हीं ने मुझे पाला-पोसा। माँ-बाप तो बचपन में ही···।

ताई : रो नहीं। बात कह। मर्द होकर रोता है।

चिरंजी : ताईजी, मेरे चौके-चूल्हे के नीचे धन गड़ा हुआ है। उसे खोदकर निकालना है। मेरी सारी गरीबी, अभागापन दूर हो जाएगा।

ताई : चल, मैं तेरे साथ हूँ। पर मेरी एक बात मान।

चिरंजी : मानूँगा। वचन देता हूँ, मानूँगा।

ताई : तू अपने बेटे, बेटी, माली—पूरे घर को बुला। सब के बीच में बैठकर इस काम में सबका विश्वास, सबका सहयोग ले। अपने भीतर से सारा डर, सारी शंकाएँ निकाल दे।

चिरंजी : सब मेरी बात मानेंगे।

ताई : अरे, तू देख तो सही। दिल खोलकर कह दे—सब में बराबर-बराबर धन बँट जाएगा। सबका हिस्सा बराबर। सब बराबर।

चिरंजी : ठीक है, बुलाओ सब को···आ जाओ सब।

[संगीत। विशेष संगीत का मिश्रित प्रभाव। जमीन का हल्के-हल्के खोदना! वहाँ पर सारा घर ताई सहित उपस्थित है।]

बिधू : बाबूजी, आप कुर्सी पर बैठें। आराम से हमें आज्ञा देते रहें।

श्याम : जैसा आपने कहा है, हम उसी तरह खोद रहे हैं।

विमला : गौरी के बाबूजी, लीजिए चाय पीजिए।

चिरंजी : अरे ताईजी को पहले।

ताई : ताई चाय नहीं पीती, पान खाती हूँ, हाँ।

गौरी ताईजी, यह लीजिए पान।

[पृष्ठभूमि में खोदना]

चिरंजी : तेरह हाथ नीचे है गुप्त धन, हाँ। और बिलकुल चूल्हे के नीचे है। एक दिन में सिर्फ एक ही हाथ गहरी खुदाई—वह भी खुरपी से, हाँ।

विमला : आज तीन दिन तो हो गए ताईजी। अभी दस दिन लगेंगे।

ताई : अरे, यह धन तुम्हारे परबाबा का गाड़ा हुआ है।

बिधू : ताईजी, हमारे परबाबा कौन थे, क्या करते थे?

ताई : धरम तराजू बनाते थे। एक बखत खाना खाते थे। जब सारा मोहल्ला खा लेता था तब वह निकलते थे—कहीं कोई भूखा तो नहीं बैठा है। बिधू बेटे, तुम्हारे परबाबा कोई धनवान नहीं थे। साधारण बनिए थे मुला! लोग उन्हें देखने आते थे, हाँ।

बिघू : देखने क्यों आते थे ?

ताई : वह सबके दिल की बात जान लेते थे।

बिघू : ताईजी, आज मैं भी अपने दिल की एक बात बता रहा हूँ। मैं एक लड़की से प्रेम करता हूँ और उसी से शादी करना चाहता हूँ। वह बहुत गरीब घर की है। मेरे ही बेंक में क्लर्क है। मुझसे उसकी उम्र भी ज्यादा है। वह कोई खास सुन्दर भी नहीं है।

ताई : अरे कोई तो खास बात होगी उसमें, तभी न शादी करना चाहता है तू उससे !

चिरंजी : क्या बात है बिघू बेटे ?

बिघू : मुझे उससे प्रेम है पिताजी। क्यों है यह नहीं जानता।

ताई : अपने पिता से कभी नहीं कहा।

बिघू : हमारी आज तक पिता-पुत्र में कभी कोई बात ही नहीं हुई। हम कभी एक साथ नहीं बैठे। पिताजी ने आज पहली बार मुझे 'बिघू बेटा' कहा।

ताई : तूने भी तो आज पहली बार अपने दिल का दरवज्जा खोला।

चिरंजी : बिघू बेटे ! तू खुशी से उस लड़की से शादी कर। तेरा ही प्यार मेरा धन है।

[खुदाई का प्रभाव]

ताई : तेरे बाबा कैसे बहादुर आदमी थे, बाप रे बाप ! बस्ती के चारों ओर चार कुएँ हैं न, बाबा के ही बनवाए हुए हैं। सन् पचीस की बात है। सुराजी लोग की मदद करते थे। कुएँ पर गुड़ बँटवाते थे। एक सुराजी का संदेशा दूसरे को देते थे। गुड़ वाले लाला के नाम से मशहूर थे। तीन बार जेल गए थे आजादी की लड़ाई में।

[खोदना]

श्याम : पिताजी !

चिरंजी : हाँ, श्याम बेटे।

श्याम : अजीब बात है। जैसे-जैसे हम चूल्हे के नीचे खोदते जा रहे हैं वैसे-वैसे आग की गरमी बढ़ती जा रही है।

चिरंजी : बेटे, मेरे पिताजी कहते थे—जैसे हर घर में चूल्हे की आग पर भोजन बनता है जिसे खाकर हम जिन्दा रहते हैं, उसी प्रकार हम सबके भीतर अपना-अपना चूल्हा जलता रहता है। एक आग घर के चूल्हे में, वही आग हमारे भीतर दिल में और वही आग इस जमीन में।

गौरी : अरे पिताजी, अब हम दस हाथ नीचे पहुँच गए। मजा आ गया बाबूजी। हम सब पहली बार यहाँ एकसाथ बैठकर मजे से खाना खाते हैं। ताईजी हमारे पुरखों की बातें बताती हैं। हाय, कोई चीज हमें जोड़ती जा रही है। यह कैसी आग है इस गहरी माटी में।

ताई : चूल्हे की आग है रे। सात पुस्त के लोगों ने इसी चूल्हे की आग से जीवन जिया है।

[खोदना]

विमला : गौरी के बाबूजी, एक बात कहती हूँ—बुरा न मानना। मेरे माता-पिता बहुत गरीब थे। मैं छिपकर आपकी कमाई से रुपए भेजती रही हूँ नैहर।

चिरंजी : गौरी की माँ, मेरे बेटे, गौरी बेटी, तुम सब सुन लो। मैंने बड़ी बेटी हंसी की शादी में जो उतने रुपए कर्ज लिए थे, वे कर्ज नहीं थे। मैं झूठ कह रहा था। मुझ पर किसी का कर्ज नहीं है। पता नहीं क्यों पैसे वालों को देखता हूँ तो सोचा पैसा ही सबकुछ है। तो धन के बारे में ही हर वक्त सोचता। वहीं मेरे दिल में गाँठ बन गयी।

[खोदने की आवाज तेज होती जा रही है।]

चिरंजी : देखो, इस मिट्टी में कितनी गर्मी है।

बिधू : जैसे नीचे भी चूल्हे की आग है।

चिरंजी : मेरे बाबा के गुरुजी कहते थे—चारों तरफ, नीचे-ऊपर सब जगह केवल आग है। अग्नि, अर्थात् जीवन—जीवन यानी संबंध। मिट्टी का चूल्हा। चूल्हे में लकड़ी। लकड़ी में आग। आग में मिट्टी। चूल्हे में आग। मेरा दिल भी वही जलता हुआ चूल्हा है। बिधू, श्याम, विमला, गौरी, ताईजी, सुनो···तभी मैं नींद में अक्सर चिल्ला पड़ता था, 'आग···आग···आग लगी है आग!' तुम लोग मुझ पर गुस्सा करते थे। विमला मुझे पागल कहती। श्याम मुझे सिरफिरा कहता। (तेज साँसें, रुँधा गला) दिल एक जलता हुआ चूल्हा है—इस पर चाहे भोजन पका लो, चाहे अपने साथ पूरे घर में आग लगाकर सब कुछ स्वाहा कर लो।

श्याम : पिताजी, आपने कभी हमसे ये बातें नहीं कीं।

चिरंजी : मुझे खुद कहाँ पता था बेटे!

श्याम : पिताजी, आपने सपना देखा कि चूल्हे के नीचे धन गड़ा है या किसी ज्योतिषी ने बताया?

[भागता हुआ संगीत। गहरा राग अंत में]

चिरंजी : न सपने में कोई सत्य है, न किसी ज्योतिषी के पास। यह सत्य मुझे एक अपरिचित, अजनबी आदमी से मिला—धन दूर नहीं, बिलकुल अपने पास है। यहाँ, इसके नीचे छिपा हुआ।

श्याम : ताईजी कहाँ हैं। ताईजी, ताईजी!

विमला : गौरी, बिधू कहाँ है। बिधू बेटे!

गौरी : भैया और ताईजी से जमीन पाटकर फिर उसी जगह चूल्हे में आग जला दी है।

[ताईजी की मंत्र-ध्वनि सुनाई देती है—'···अग्ने नय सुपथा राये अस्मान···']

विधु : ताईजी, इसका अर्थ क्या है।

ताई : हे अग्नि, हमें सुपथ पर ले चलो, जहां इतनी संपदा, इतना धन है कि हम सबको दान कर सकें।

श्याम : पिताजी, इसका असली अर्थ क्या है। हम आपसे सुनना चाहते हैं।

चिरंजी : हमने अपनी धरती के गर्भ में वह अमूल्य धन पाया—जो कहीं अँधेरे में खो गया था, जिसे हम भूल गए थे। यह आग कभी न बुझने पाए।

[अनेक कंठ-स्वरों में वहीं मंत्र-संगीत धीरे-धीरे उभरकर पूरे वातावरण पर छा जाता है—अग्ने नय सुपथा राये अस्मान…]

अब और नहीं

[रेडियो नाटक]

पात्र

पापा
सुभाष
माताजी
नीना
अनीता
अफसर
कुछ स्वर

[प्रारम्भिक संगीत के बाद स्त्री के कराहने का स्वर, फिर दस्तक]

पापा : जैसे घर में कोई नहीं। (दस्तक) पर बाहर से ताला-वाला बंद नहीं है ? लगता है भीतर से ही बंद है। (भीतर कुछ गिरने-टूटने की आवाज) नहीं, लगता है, भीतर कोई है ! (दस्तक) सुभाष बाबू ! मिस्टर सुभाष ! अनी बेटी ! सुभाष जी !

सुभाष : कौन है ?···ओह, आप !

पापा : कैसी है अनी बेटी ? अरे बेटे, मुझे अंदर तो आने दो। मैं तो समझा घर में कोई नहीं है। अस्पताल में हैं सब।

सुभाष : आपको कैसे खबर हुई, अनीता बीमार है ?

पापा : मुझे अंदर तो आने दो। क्या बात है सुभाष बेटे ? यह देखो टेलीग्राम— 'अनीताज कंडीशन सीरियस, रश इमीडिएटली।'

सुभाष : (टेलीग्राम लेते हुए) किसने भेजा ? (पढ़ना) राहुल ? यह झूठ है। बकवास !

पापा : बहुत अच्छी बात है, झूठ है और क्या चाहिए। अंदर तो चलो बेटे ! हे भगवान, शुक्र है तेरा।

सुभाष : सब दुश्मन हैं। हमें किसी से मिलना-जुलना नहीं चाहिए।

पापा : मेरी बेटी कहाँ है ? अरे मुझसे सीधे बोलो तो बेटे।

सुभाष : धीरे बोलिए। ऊँची आवाज में बोलेंगे तो···

पापा : (धीरे से) बात क्या है बेटे ? मुझे साफ-साफ बताओ तो भला।

सुभाष : अनीता बिलकुल ठीक है। आराम कर रही है। सो रही है। वह बिलकुल ठीक है। 'राहुल बास्टर्ड ! सन आफ बिच ?'

पापा : सुभाष बेटे, मुझे बैठने के लिए तो कहो। अच्छा, आओ बैठो ! बैठो तो सही।

सुभाष : यह दुनिया नहीं चाहती, कोई आराम-चैन-आनंद से रहे। सब कमीने जलते हैं। जलील ! लुच्चे !

पापा : अरे, बैठो तो सही।

सुभाष : अब देखिए न, आपको खामखा बदतमीजों ने तार देकर बुला लिया, जबकि यहाँ ऐसी कोई बात नहीं।

पापा : बेटे, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।

सुभाष : इसमें समझने की क्या बात है। आपकी बेटी बिलकुल ठीक है। आप जा सकते हैं।

पापा : क्या, बैठो तो सही बेटे ! मेरी बेटी है कहाँ ?

सुभाष : बगल के कमरे में अपने पलंग पर सो रही है। बिल्कुल आराम से। घबराने की जरूरत नहीं है।

[कराहने की आवाज]

पापा : यह कौन कराह रहा है ?

सुभाष : यह आपका महज शक है—यहाँ कोई कराह नहीं रहा। (कराह)

पापा : नहीं, यह मेरी बेटी की कराह है।

सुभाष : बिलकुल गलत। आपका दिमाग खराब है।

पापा : मुझे देखने दो बेटे।

सुभाष : नहीं, यहाँ से उठिए नहीं। वह जग जाएगी, आप मानते क्यों नहीं ?

पापा : बेटे, ऐसा नहीं करते। मैं अपनी बेटी की आवाज पहचानता हूँ। हाथ जोड़ता हूँ बेटे !

सुभाष : आप यहीं बैठिए, आपके लिए चाय ले आता हूँ। मुझ पर यकीन कीजिए। बैठिए तो सही। (पुकार) माँ ! माताजी ! फौरन एक कप चाय लेकर आइए। अनीता के पापा हैं।

पापा : सुनो तो बेटे ! बेटे सुभाष ! मैं चाय नहीं पीता।

माताजी : नमस्ते जी ! लो चाय पीयो। कब आए, हमें तो पता ही न चला।

पापा : सब शेरांवाली की महर है महाराज !

पापा : मेरी बेटी कैसी है ?

माता : अरे तुसी चाय तो पीयो, सब चंगा है इधर। बहनजी कैसी हैं ? उन्हें भी संग ले आते।

[कराह]

पापा : मुझे अपनी बेटी को देख लेने दीजिए।

माता : सुभाष को पसंद नहीं है। वह ठीक से डाक्टर को भी नहीं देखने देता। पता नहीं, शेरांवाली जाने। हैं जी !

पापा : क्या हुआ है मेरे बेटी को ? हाथ जोड़ता हूँ, कृपा कर बताइए मुझे ! मैं आप सब का हूँ। मुझसे क्या पर्दा।

[कालबेल]

माता : लगता है, मेरी बेटी नीना आ गयी। दफ्तर में काम करती है। ग्यारह सौ रुपए महीने तनख्वाह है।

[दरवाजा खुलना]

नीना : हर वक्त दरवाजे बंद।

माता : अनीता के पिताजी।

पापा : नमस्ते बेटी !

नीना : आप कब आए ?

पापा : अभी आया।

नीना : सब ठीक-ठाक हैं इलाहाबाद में ?

पापा : आओ बैठो। यहाँ सब कुछ अजीब लग रहा है।

नीना : माँ, अंदर जाओ !

माँ : सुभाष ने कहा है—इन्हें उधर···! हाँ जी !

नीना : हो-हो ! जाओगी भी तुम ! आप लोग कैसे हैं ? उधर इलाहाबाद के क्या हाल-चाल है ?

पापा : सब ईश्वर की कृपा है।

नीना : और क्या हालचाल हैं ?

पापा : मुझे अपनी बेटी से क्यों नहीं मिलने दिया जा रहा ?

नीना : ऐसी तो कोई बात नहीं। (जाना, पुकारना) सुभाष ! सुभाष !

सुभाष : क्या है ? ओह, तुम आ गयी। नीना सुनो, अनीता के पापा से बोलो, अनीता किसी से नहीं मिलना चाहती। हमें कोई तंग न करे। विदा करो।

नीना : यह मैं नहीं कर सकती।

सुभाष : करना होगा।

[नीना का आना]

नीना : पता नहीं इसे क्या हो गया ! सुनिए, सुभाष ने बताया है—अनीता किसी से नहीं मिलना चाहती।

पापा : ऐसा नहीं हो सकता।

नीना : दरअसल बात यह है—सुभाष से कहिएगा नहीं, प्लीज, सुभाष नहीं चाहता, कोई उसकी पत्नी से इस तरह मिले।

पापा : मैं भी नहीं ?

नीना : पता नहीं।

पापा : ओह, समझ गया। तुम चिन्ता न करो बेटी, सुभाष मुझे मेरी बेटी को देखने देगा। समझ गया।

नीना : पता नहीं।

पापा : घबड़ाओ नहीं बेटी।

[विराम]

पापा : मुझे पता है, मेरी बेटी अपने पति के साथ सुखी नहीं है। तो क्या हुआ ? जिन्दगी तो जिन्दगी है। उसकी बनावट ही ऐसी है। कहीं कोई 'च्वायस' नहीं है। हमें भावुकता से काम नहीं लेना चाहिए। सुभाष कहाँ है ? मेरा मतलब अनीता का पति इस समय कहाँ है ? नीनाजी, हिम्मत से काम लीजिए। सुभाष कहाँ है ?

नीना : आपकी बेटी के पास।

पापा : मैं वहीं जाता हूँ।

नीना : कमरा भीतर से बंद है।

पापा : खोल लूंगा। मेरा विश्वास है, सुभाष इतना बुरा नहीं है।

नीना : सुभाष को बिलकुल पसंद नहीं कि कोई और उस कमरे में आए। बात यह है कि···

पापा : हाँ, कह डालो, डरो मत। कहो, बोलो। (दस्तक)

सुभाष : (दरवाजा खोलकर) आप ! जाइए, यहाँ से। जाइए, यहाँ आपकी कोई जरूरत नहीं।

पापा : सुनो तो बेटे।

सुभाष : जिद मत कीजिए। सुना नहीं ! यहाँ आपकी कोई दरकार नहीं। वह आपकी बेटी पहले थी। अब वह मेरी पत्नी है। 'माई वाइफ, यू नो ?' जाइए, प्लीज़ !

पापा : हाथ जोड़ता हूँ, अगर तुम बुरा न मानो बेटा, मैं एक नजर अपनी बेटी को देख लूँ, बस। बस चुपचाप चला जाऊँगा।

सुभाष : आप कुछ बोलेंगे नहीं ?

पापा : भीतर जाकर चुपचाप खड़ा रहूँगा।

सुभाष : सच कह रहे हैं न, धोखा तो नहीं देंगे आइए, धीरे से···यहाँ···इधर, बस खड़े रहिए। मुँह बंद किए हुए।

[पापा की साँसों का उतार-चढ़ाव। बीच-बीच में अनीता की हल्की कराह]

सुभाष : देखिए न, बिलकुल ठीक है आपकी बेटी। लोग झूठे हैं। मक्कार हैं।

पापा : (सोचता है) आह ! मेरी बेटी बेहोश है। शरीर पर जख्म हैं। तेज बुखार भी है। ऊपरी होंठ पर खून का धब्बा। मुँह सूजा हुआ। शरीर रह-रहकर काँप उठता है। आह ! मेरी बेटी, मेरा जिन्दा रहना बेकार है। हे ईश्वर, यह क्या देख रहा हूँ ! (साँसों में दर्द)

सुभाष : देख लिया न, अब बाहर जाइए। जाते हैं या नहीं ? आप इस तरह नहीं जाएँगे। (धक्के) चलिए, निकल जाइए।

पापा : यह क्या करते हो !

[दरवाजे पर टक्कर]

पापा : कमरे से बाहर हूँ—अब बोल सकता हूँ ?

सुभाष : आप यही पूछना चाहते हैं न, आपकी बेटी की यह दशा कैसे···?

पापा : नहीं बेटे, तुम कैसे हो ? तुम्हारी तबीयत ठीक है न ? मैं यह जानना चाहता हूँ।

सुभाष : झूठे ! दगाबाज ! मुझ पर दया दिखाकर मुझे ठगना चाहते हो। कमरे में घुसकर बेटी से असलियत पूछना चाहते हो। चले जाइए इस घर से बाहर। यहाँ किसी और की कोई दरकार नहीं। बड़े होशियार बनते हैं। मुझे, समझा क्या है ?

पापा : बहुत परेशान हो। काश, मैं तुम्हारे किसी काम आ सकता ! बताओ न, तुम्हारी दिक्कत क्या है ?

सुभाष : बातें मत बनाओ, जाओ यहाँ से।

पापा : हे ईश्वर !

सुभाष : ईश्वर-फीश्वर के चकमे देने की कोशिश यहाँ बेकार है। मैंने बहुत दुनिया देखी है।

पापा : ठीक है बेटे, मैं यहीं चुपचाप खड़ा रहूँगा।

सुभाष : हर्गिज नहीं ! जाइए यहाँ से। (पुकार) नीना !

नीना : (दूर से) क्या है ?

सुभाष : इन्हें घर से बाहर कर दरवाजा बंद कर लो।

नीना : क्या करते हो भाई साहब ? कोई ऐसा करता है !

नीना : ईश्वर से डरो भाई साहब।

सुभाष : क्यों ?

पापा : नहीं बेटे, झगड़ते नहीं। इधर आ जाओ।

नीना : पता नहीं, अपने आपको…।

सुभाष : खबरदार, अगर जबान खुली तेरी।

पापा : बेटे, ऐसे नहीं बोलते। यह तेरी बड़ी बहिन है।

सुभाष : खाक है।

[कराह। हल्का-सा करुण संगीत]

सुभाष : नीना से आपकी कुछ बात हुई ?

पापा : नहीं, कतई कोई बात नहीं।

नीना : (दूर से) मैं क्या बात करूँगी भाईजी, मैं भी तो एक औरत हूँ।

सुभाष : बकवास बंद।

नीना : जैसे दरवाजे बंद हैं, क्यों ?

[विराम]

सुभाष : देखिए ! बात यह है कि आपकी बेटी मिरगी की मरीज है। इधर लगातार कई दौरे पड़े हैं। दौरे में गिरकर उसे चोट लगी है। और कुछ जानना है आपको ? आप इस तरह चुप क्यों हैं ? पूछिए न, जो पूछना हो।

पापा : कुछ नहीं जानना है, बेटे।

सुभाष : आखिर क्यों ?

पापा : क्या फायदा !

सुभाष : आप जी रहे हैं। अपनी बेटी से मिलेंगे नहीं ?

पापा : तुमसे मिल लिया बेटे। सब ठीक है।

सुभाष : क्या ? आप इतने बेरहम हैं ?

पापा : हाँ हूँ, मैं बेरहम हूँ।

सुभाष : आपके दिल में बेटी के लिए कोई जगह नहीं…रुकिए।

पापा : घबड़ाओ नहीं, मेरी बेटी जल्दी ठीक हो जाएगी।

सुभाष : आप अजीब हैं।

पापा : मेरी बेटी को

सुभाष : आपका मतलब,

पापा : ईश्वर तुम्हारा

सुभाष : सुनिए, बैठिए

पापा : और मुझे कुछ

[भीतर से अनीता

सुभाष : अनीता !

पापा : मेरी बेटी !

[दोनों का

पापा : अपनी, बेटी

अनीता : पापा !

सुभाष : बाहर

पापा : मैं बेटे,

पापा : मेरी बेटी को कभी मिरगी नहीं आती। वह मरीज नहीं है।

सुभाष : आपका मतलब, मैं मरीज हूँ ?

पापा : ईश्वर तुम्हारा भला करे।

सुभाष : सुनिए, बैठिए। मैं आपको शुरू से बताता हूँ।

पापा : और मुझे कुछ नहीं जानना, बेटे !

[भीतर से अनीता की चीख]

सुभाष : अनीता !

पापा : मेरी बेटी !

[दोनों का दौड़ना। अनीता की कराह]

पापा : अपनी, बेटी !

अनीता : पापा !

सुभाष : बाहर आइए। मैं कहता हूँ बाहर···बाहर···।

पापा : मैं बेटे, यहीं चुपचाप खड़ा रहूँगा।

[संगीत का टुकड़ा]

सुभाष : हमें कोई अलग नहीं कर सकता। हमारे बीच में और कोई नहीं आ सकता। हमारा विश्वास है। यह मेरे साथ बिलकुल संतुष्ट है। यह जब से यहाँ पड़ी है मैं दफ्तर नहीं गया। एक क्षण के लिए भी मैं इससे दूर नहीं हो सकता।

अनीता : (दर्द से गुजरती हुई) सुभाष ! तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। दवा खा लो। जाकर सो जाओ।

सुभाष : मैं किसी बहाने यहाँ से हटाया नहीं जा सकता। तुम्हें किसी तरह भी अकेला नहीं छोड़ सकता। अनीता ! मैं···अनीता, माई डियर।

अनीता : पापा, मेरे पास आ जाओ। बैठो, यहाँ आओ पापा। क्या बात है पापा, आओ न !

सुभाष : अब आप यहाँ से तशरीफ ले जाइए।

अनीता : नहीं सुभाष, कम से कम मेरे पापा के साथ तो ऐसा न करो। सुभाष ! (कराहना)

सुभाष : डाक्टर ने मना किया है—'कम्पलीट रेस्ट'। सुनिए, बाहर आइए ! आइए तो।

पापा : बेटे, अब मैं बिलकुल यहीं और यहीं रहूँगा। (विराम) क्या बात है बेटी ?

सुभाष : मैं यहाँ तुम्हें इसके साथ अकेला छोड़ने वाला नहीं। तुम मुझे नहीं जानते, यू नो !

पापा : धीरे बोलो बेटे ! धैर्य रखो।

सुभाष : जब तक तुम यहाँ रहोगे, मैं धीरे नहीं बोल पाऊँगा।

अनीता : सुभाष ! सुनो, मेरे लिए एक कप चाय ले आओ।

सुभाष : मुझे उल्लू बनाना चाहती हो ?
पापा : तुम दोनों बैठो। मैं चाय ले आता हूँ।
सुभाष : क्या तुम चाहती हो···सुनो अनीता···चुपचाप लेटी रहो। नींद की दवा दूँ
अनीता : अच्छा, पानी ही पिला दो···।
क्या ?

[सुभाष का जाना। संगीत-प्रभाव]

अनीता : पापा !
पापा : मेरी बच्ची !
अनीता : पापा ! पा-पा···
पापा : हाँ बेटी, बोलो।
अनीता : मुझे यहाँ से ले चलो। अब और नहीं पापा !

[बाहर गिलास का गिरना-टूटना]

पापा : डरो नहीं, बेटी !
अनीता : पापा, न जाने कैसे अपनी बेहोशी में अक्सर यही देखती हूँ। हर बात रंग में घुल जाती है।

[संगीत फ्लैश-बैक]

अनीता : (उत्साहपूर्वक) पापा ! पापा !
पापा : क्या है बेटी ?
अनीता : पापा, यह देखो ! पढ़ो मैट्रीमोनियल।

[अखबार पढ़ना]

पापा : वान्टेड टाल, फेयर, हाइली एजूकेटेड एंड रियली माडर्न ब्रेव ब्यूटीफुल गर्ल फ्राम रिस्पेक्टेबुल क्षत्रिय फेमिली फार दिल्ली बेस्ड राजपूत···बिजनेस एक्जीक्यूटिव, ड्राइंग फोर थाउजेंड, नो डावरी। राइट बाक्स नं०···।
अनीता : हाउ वंडरफुल पापा ! नो डावरी।
पापा : तुझे पसंद है ?
अनीता : वह मैट्रीमोनियल मेरे लिए है पापा। मैं सारी शर्तें पूरी करती हूँ—टॉल, हाइली एजूकेटेड···हाई स्कूल से लेकर एम० ए० तक फर्स्ट क्लास हूँ। ब्रेव ब्यूटी-फुल हूँ।
पापा : इन मैट्रीमोनियल्स का क्या पता, बेटी !
अनीता : पापा, आपकी चिन्ता खतम। मैं इससे पत्रव्यवहार करती हूँ।

[शादी का संगीत। माहौल-प्रभाव—उस पर ये स्वर सुपर इम्पोज]

पापा : मेरी बेटी कितनी भाग्यवान है ! सब सच हुआ।

अनीता : देखा पापा, हाउ लकी आई एम !
पापा : ईश्वर की कृपा है बेटी।

[देखो बेटे, मेरी अनीता बेटी निहायत ईमानदार, सच्ची, सेन्सटिव है। बड़े प्यार और दुलार से पाली है।]

सुभाष : पापा ! आप कभी किसी बात की चिन्ता न कीजिए। अनीता को मैं अपने सिर-आँखों पर रखूँगा।

[हँसी-खुशी। विवाह-गीत उभर कर फेड्स आउट। अनीता का कराहना]

पापा : बोलने में इतनी तकलीफ है तो मत बोलो, बेटी !
अनीता : पापा, सोहागरात में ही इन्होंने मुझे मारा।

[फ्लैश बैक]

सुभाष : शराब पीनी पड़ेगी तुम्हें।
अनीता : मैंने कभी नहीं पी। हमारे यहाँ किसी···
सुभाष : नानसेन्स ! आई वान्टेट रियली माडर्न-ब्रेव ब्यूटीफुल गर्ल ! तुम हो बेवकूफ देहाती। ईडियट।
अनीता : नहीं सुभाष, न यह आधुनिकता ही है, न बहादुरी।
सुभाष : मैं जो चाहूँगा, वही तुम्हें करना पड़ेगा। चलो नंगी हो जाओ। पुट आफ।
अनीता : नहीं ! नहीं !
सुभाष : पुट आफ।

[शारीरिक संघर्ष शुरू]

सुभाष : बेवकूफ ! देहाती। काटकर रख दूंगा।
अनीता : सुनो, सुनो···सुभाष।

[पकड़ना, मारना, धर-पकड़—गिलास टूटना। बर्तन गिरना]

सुभाष : लो पीयो।
अनीता : नहीं, नहीं।
सुभाष : नहीं ?
अनीता : हाथ जोड़ती हूँ, मुझे मौका दो।
सुभाष : मैं अभी, यहीं, इसी वक्त चाहता हूँ।
अनीता : क्या ?
सुभाष : अब बताऊँगा नहीं, करूँगा (धर-पकड़, मारपीट, संघर्ष) मैं जो चाहता हूँ पाकर रहता हूँ। आई वांट।
अनीता : नहीं, ऐसा न करो। नहीं···नहीं।

[संघर्ष। अनीता का रो पड़ना। सुभाष का शराब डालना। पीना। अनीता की सिसकियाँ। संगीत]

पापा : बेटी ! मैं तुम्हारे लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। तुम चुपचाप आराम करो।

[ईश्वर-प्रार्थना]

अनीता : कमरे का दरवाजा खुला है न पापा ?

पापा : हाँ, बेटी, क्या चाहिए !

अनीता : सुभाष कहाँ है ?

पापा : बाहर दरवाजे पर खड़े हैं।

अनीता : उन्हें अंदर बुला लो, पापा।

[विराम]

पापा : आओ, सुभाष बेटे !

सुभाष : नहीं।

पापा : कहाँ जा रहे हो ? आओ न। अनीता तुम्हें बुला रही है बेटे। सुनो।

सुभाष : मैं अभी आता हूँ। **(जाने लगता है)**

पापा : सुनो तो, तुम्हें बुला रही है अनीता।

सुभाष : आप उसके पास रहिए। मैं अभी आता हूँ। आप उसके पास से हटिए नहीं, मैं अभी आया।

पापा : सुनो बेटे ! हिम्मत से काम लो।

[जिन्दगी इतनी आसान नहीं है। मुझे मालूम है। रुको तो।

सुभाष : मैं अपने लिए एक दवा लेने जा रहा हूँ। आप प्लीज अनीता के पास बैठिए।

पापा : नहीं, मैं तुम्हें अकेले नहीं छोड़ूँगा।

सुभाष : क्या ?

पापा : सुभाष बेटे !

सुभाष : पापा !

[सुभाष का रो पड़ना]

पापा : **(सँभालते और प्यार करते हुए)** घबड़ाते नहीं, बेटे ! इंसान से ज्यादा कमजोर और कोई नहीं है। होने और करने में जहाँ इतना अंतर्विरोध हो, धीरज बाँधो। रोको अपने आप को, बेटे ! तुम्हें पहली बार देखा था, तुम मुझे अच्छे लगे थे। मुझे लग गया था, मेरी बेटी भाग्यवान है। तुम एक अच्छे नौजवान हो। बचपन में ही जिसके पिता छिन गए हों, जो इतने संघर्ष कर अपने पैरों पर खड़ा हुआ, माँ और बहन को अपने साथ लेकर जिसने इतना सब किया !

सुभाष : पापा !

पापा : हाँ बेटे ! धैर्य रखो। मैं साथ हूँ। आओ, उधर चलें। बाहर लान में आओ।

सुभाष : नीना।

पापा : चलो बेटे।

सुभाष : नीना जी !

नीना : हाँ जी, भाई साहब !

सुभाष : प्लीज़ अनीता के पास बैठो ।

नीना : जी हाँ ।

सुभाष : आइए, पापाजी ।

[दरवाजा खुलता है । संगीत । खुली जगह का माहौल । चिड़ियों की चहचहाट । दूर बच्चों का खेलना-बोलना ।]

सुभाष : मैं आपसे सच कहता हूँ, अनीता को देखते ही मैं न जाने क्यों इतना कठोर हो जाता हूँ—यह उसी समय से हुआ जब मैंने उसे पहली बार आपके यहाँ इलाहाबाद में देखा । मैं इतनी कोमल के प्रति इतना कठोर क्यों हो जाता हूँ, पापा ?

पापा : देखो, बच्चे कितनी खुशी से खेल रहे हैं ।

[बच्चों के खेलने का प्रभाव]

सुभाष : हाँ ।

पापा : देखो, यह चिड़िया कैसे गा रही है ।

सुभाष : मैंने इन बातों पर कभी ध्यान नहीं दिया । मुझे कभी ऐसा अवसर ही नहीं मिला ! मैं हर वक्त काम ही काम···

पापा : तभी कठोरता आती है, बेटे ! इसमें तुम्हारा कोई कसूर नहीं । हाँ, तुम्हारा क्या कसूर ?

[वही बच्चों की खेल—चिड़िया]

सुभाष : पापाजी !

पापा : हाँ बेटे ।

सुभाष : मेरा कोई कसूर नहीं ?

पापा : मजबूर का क्या कसूर हो सकता है, बेटे ?

[फ्लैश बैक संगीत या ध्वनि-प्रभाव । आफिस की घंटी का प्रभाव]

अफसर : (गुस्से से) सुभाष ! सुभाष ! जरा इधर आइए ।

सुभाष : यस, सर !

अफसर : यह क्या ड्राफ्ट तैयार किया है ! बिलकुल बकवास, 'नानसेन्स' ! (फेंककर) ले जाइए इसे ।

सुभाष : सर, मेरी बात सुनिए । पहला ड्राफ्ट मेरे पास···

अफसर : मुझसे जबान लड़ाते हैं !

सुभाष : सर, यह ड्राफ्ट आपका है । मेरा यह है । कल दस बजे रात मैं दफ्तर से घर गया था । आपने···

अफसर : चुप रहिए । इस साल की 'कान्फिडेंशियल रिपोर्ट' मुझे लिखनी है ।

सुभाष : सॉरी, सर ! मुझे माफ कीजिए ।

[फिर वापसी का प्रभाव]

पापा : सुभाष, बेटे ! क्या सोच रहे हो ?

सुभाष : ईमानदारी की कोई कीमत नहीं है। मैं दफ्तर में सुबह नौ बजे से रात के नौ बजे तक···

पापा : सुभाष, बेटे !

सुभाष : जी, पापाजी।

पापा : बेटे ! कितने दिन हो गए तुमने सूर्योदय और सूर्यास्त नहीं देखे ?

सुभाष : जब से नौकरी में आया···

पापा : कल से देखना शुरू कर दो, बेटे ! देखना ही जानना है। सूर्य जलता है—जलना ही प्रकाश है।

सुभाष सीधा होना बहुत बुरा है, पापा ?

पापा : कौन कहता है।

[फ्लैश बैक कहकहे, हँसी]

एक स्वर : ये लो आ गए सुभाषचन्द्र बोस।

दूसरा स्वर : क्यों, ये क्या सूरत बना रखी है ! अबे कुछ खाया-पीया कर।

एक स्वर : अरे, कुछ ऊपर से आमदनी किया कर।

सुभाष : यार, कभी तो मेरा दुख-सुख सुन लिया करो।

दूसरा स्वर : चल सुना—पहले अपना सुख-दुख।

सुभाष : भाई, मैं अपनी बहन नीना की शादी के लिए कोई ठीकठाक लड़का नहीं ढूंढ़ पा रहा हूं।

[हँसी का ठहाका]

सुभाष : क्यों, इसमें इस तरह हँसने की क्या बात है। सुनो, सुनो तो।

दूसरा स्वर : साले, अपनी शादी तो कर ली—ठीकठाक लड़की बीमार कर दी···।

पहला स्वर : अब बहाने बना रहा है।

दूसरा स्वर : कभी खिलाया-पिलाया भी नहीं।

पहला स्वर : जैसे यही काम करता है, हम हराम की नौकरी करते हैं।

सुभाष : अच्छा भाई, माफ करना।

दूसरा स्वर : देखो, मिर्ची लग गयी।

[हँसी का ठहाका। वापस आने का प्रभाव]

सुभाष : पापा !

पापा : हाँ, बेटे !

सुभाष : कहीं कोई उम्मीद नहीं दिलाता। कोई साथी नहीं होता।

पापा : पहले अपना साथी खुद होना पड़ता है, बेटे !

सुभाष : पर कैसे पापा ? मैंने अब तक यही देखा है…।

पापा : क्या ?

सुभाष : मैंने शुरू से अब तक देखा है—खासकर अपनी नौकरी में आगे बढ़ने की कहीं कोई उम्मीद नहीं है। कहीं कोई आशा नहीं दिखती, पापा !

पापा : तभी तो आदमी कठोर, बेरहम हो रहा है, बेटे !

सुभाष : आप इतने कोमल कैसे हैं ?

पापा : ईश्वर की कृपा है।

सुभाष : यह ईश्वर क्या है ?

पापा : ईश्वर माने जानना। अपने-आप को जानना। अपने चारों तरफ की दुनिया को जानना। ईश्वर विश्वास नहीं है—ज्ञान है।

सुभाष : पापा !

पापा : जानना ही कोमलता है।

[यही ध्वनि-प्रभाव]

सुभाष : ओह ! जब आदमी मर जाता है तो कितना कठोर हो जाता है !

पापा : आदमी नहीं, शरीर—शव। जिसमें जान नहीं है—मतलब जान से जानना है।

[पापा का हँसना]

सुभाष : ओह, पापा ! (रो पड़ता है।)

पापा : मेरे बेटे !

[संगीत का टुकड़ा]

नीना : भाभी ! उठोगी ? रुको।

अनीता : अब और नहीं।

नीना : क्या ?

अनीता : दरवाजा मैं खुद खोलकर बाहर आँगन में जाऊँगी।

नीना : भाभी, सँभलकर ! मुझे थामने दो। (चलती है)

[संगीत शुरू]

अनीता : पापा कहाँ हैं, सुभाष ?

सुभाष : मेरी अन्नी।

अनीता : पापा ! सुभाष !

सुभाष : मेरी !

[संगीत।]

केवल तुम और हम

पात्र

जया
रीता
हेमा
मालती तथा कुछ लड़कियाँ

[लड़कियों के एक होस्टल का बाहरी कमरा। शाम के साढ़े छः बज रहे हैं। किनारे दीवार में पब्लिक टेलीफोन लगा है। एक बेंच तथा कुछ कुर्सियाँ रखी हैं। गोल मेज पर कुछ पत्र-पत्रिकाएँ रखी हैं। पर्दा उठते ही, या प्रकाश आते ही दृश्य में प्रकट होती हैं—टेलीफोन के लिए क्यू में खड़ी कुछ लड़कियाँ। पृष्ठभूमि में पॉप संगीत कभी-कभी सुनाई दे जाता है।]

पहली लड़की : (**फोन लिए**) हाय उल्लू, तुझे यहाँ आना था न? क्या···हूँ···यस··· हाँ···अरे अन्धे-बहरे, यहाँ आज इंटर गर्ल्स होस्टल पॉप म्यूजिक कंसर्ट था।··· क्या···क्यों था···?

दूसरी लड़की : मुझे दे मैं बताती हूँ। (**फोन लेकर**) जी हाँ, सुनिए क्यों था। पहली बात—हम लोग भारतीय संगीत से ऊब चुके हैं। पिछले पच्चीस सालों से वही एक राग विलम्बित लय और तीन ताल में अलापा जा रहा है···अ-आ···आ ···आ···आ···आ···आ···आ! और दूसरी बात—आज पढ़ाई-लिखाई में न टीचरों की दिलचस्पी है···न हमारी···।

तीसरी लड़की : अबे, टेलीफोन कर रही हो या हमारे हिस्ट्री टीचर की तरह बूर्जुआ क्रान्ति पर हमें बोर कर रही हो!

दूसरी लड़की : लो, विश्वशांति के लिए फोन मिलाओ!

चौथी लड़की : फोन नहीं, हॉट लाइन!

तीसरी लड़की : चुप बे!···हेलो···डैडी···अरे आज तुम अब तक क्लब नहीं गए। कमाल है, जल्दी जाइए···ताकि ममी भी कहीं घूम आएँ। जी हाँ, नहीं तो उनके ब्लडप्रेशर का क्या होगा! (**फोन पर हाथ रखकर सहसा**) ओफ् मीना, बब्बी, रुक, साथ चलते हैं छः नम्बर बस से। वही राजेश खन्ना मार्का हीरो मिलेगा··· साले को आँख मारेंगे! (**फोन पर**) हेलो···जी डैडी, मैं देर से घर आऊँगी।··· क्यं, यहाँ···वही जो रोज होता है···हें हें हें!

चौथी लड़की : प्लीज कट शार्ट···!! कम टू द प्वाइंट!

तीसरी लड़की : चुप्प! जब मिसेज गुप्ता लिटरेचर पढ़ाते-पढ़ाते अपने घर की बातें करने लगती हैं, तब उन्हें नहीं चिल्लातीं—'प्लीज कट शार्ट···कम टु द प्वाइन्ट'!

चौथी लड़की : अच्छा बाबा, रागदरबारी में अपना ख्याल जारी रखो।

तीसरी लड़की : अबे मेरे लौंडे का फोन इंगेज्ड है···वरना मैं डैडी को फोन करती! डैडी-मम्मी तो इत्ते बिजी हैं कि वे जानते भी नहीं, मैं किस क्लास में हूँ। जैसा कालेज वैसा घर···!

[अब चौथी लड़की फोन मिलाती है।]

चौथी लड़की : हेलो,···क्या कहा ? ह्वाट ?···ज़रा ज़ोर से, यहाँ बहुत शोर है !

पहली लड़की : लगता है, लौंडा बहरा है।

दूसरी लड़की : बहरा या बेयरा ?

[शेष लड़कियाँ संगीत पर बदन हिला रही हैं।]

चौथी लड़की : ओ के···कल···यस···वहीं, ठीक सवा दस बजे।

पाँचवीं लड़की : अब तो हो गया, हटो भी···या इकनॉमिक्स की टीचर की तरह चरित्र-संगठन पर उपदेश दोगी !

चौथी लड़की : नहीं हटती, अब करो शोर !

[सब लड़कियाँ समवेत स्वर में आ आ आ आ करती हैं। चौथी लड़की गुस्से से दूर हटती है।]

चौथी लड़की : देखना, अपना गुस्सा मैं कल उतारूँगी। अपने कालेज के फ्रेंड से बोलूँगी, वह तेरह नम्बर की बस पर पत्थर मारेगा। कंडक्टर से झगड़ा होगा। ड्राइवर को वह पीटेगा। और फिर वह बस सर्विस कैंसिल। देखूँगी, तुम लोग घर कैसे जाओगी !

पहली लड़की : अजी, दोस्तों की टैक्सियों में जाएँगे !

दूसरी लड़की : और घर पहुँचना कोई जरूरी है !

तीसरी लड़की : डियर, कालेज बन्द करा दो···पढ़ाई से बोर हो गई।

पाँचवीं लड़की : मैं तो सारी दुनिया से बोर हो गई। (**फोन पर**) हेलो सतीश, मैं आज 'डेट' नहीं कर सकती। तुम्हीं बताओ आज उमस कित्ती है !

[फोन रखती है। छठी लड़की फोन उठाती है।]

चौथी लड़की : प्लीज़ मीना, मान जाओ मेरी डार्लिंग ! तुझे राजेश खन्ना की कसम !

[पहली लड़की मुस्कराती हुई जाने लगती है।]

तीसरी लड़की : हाय मीना, रुको, छः नम्बर की बस से साथ चलेंगे, वही राजेश खन्ना मार्का हीरो मिलेगा···

[पहली लड़की कुर्सी पर बैठ गई है। दूसरी लड़की फोन कर रही है।]

छठी लड़की : ममी, मैं ज़रा देर से घर आऊँगी। बड़ी आंटी के यहाँ विश्वनाथ अंकल की सालगिरह है न···प्लीज़ ममी।

पहली लड़की : टियूँ टियूँ टियूँ टियूँ···(**गिटार की नकल**)

दूसरी लड़की : झिम झिम झिम झिम···(**ड्रम की आवाज़ की नकल**)

तीसरी लड़की : टक टक टक टक··· (**बैंगो की आवाज़ की नकल**)

पाँचवीं लड़की : रों रों रों रों रों (**एकार्डियन की आवाज़ की नकल**)

छठी लड़की : छिम छिम छिम छिम (प्लेट्स की आवाज़ की नकल)

[तीसरी लड़की फोन करती है। दूसरी चली जाती है।]

तीसरी लड़की : हाय ! इन्तज़ार करना, आ रही हूँ।

[जाती है। चौथी लड़की फोन करती है।]

चौथी लड़की : ओय मोटे ! प्लाज़ा के पीछे टैक्सी स्टैंड पर। वहाँ मुँह लटकाए खड़े रहना। बाई···!

[जाती है। पाँचवीं फोन लेती है।]

पाँचवीं लड़की : हेलो, फंट ! मैं आज 'डेट पर नहीं आ सकती ! मुझे कहीं और जाना है। चुप बे !

[पॉप संगीत छा जाता है। लड़कियाँ चली जाती हैं। थोड़ी ही देर में जया आती है। उसके हाथ में गिटार है। वह फोन उठाती है और नम्बर मिलाती है।]

जया : हेलो जॉनी ! मैं यहाँ इन्तज़ार कर रही हूँ। जल्दी आओ। डियर, तो मैं क्या करूँ ? मैं कुछ नहीं जानती। जल्दी आओ।

[फोन रखती है। रीता आती है।]

रीता : हाय जया !

जया : (गाती है) 'यू डोन्ट हैव टू से यू लव मी' ! हाय ! एलविस प्रीसले का यह पॉप संगीत कितना जमा !

रीता : डोटी वेस्ट का 'फॉर एवर योर्स' भी खूब जमा !

जया : यार, तुम्हारे होस्टल की लड़कियाँ कितनी बेवकूफ हैं—उन्हें इतने बड़े 'पॉप सिंगर' एलविस प्रीसले का नाम नहीं पता !

रीता : जब से हमारे होस्टल की वार्डन मिसेज़ घई हुई हैं, वहाँ की सारी हवा बिगड़ गई। साढ़े सात बजे होस्टल के दरवाज़ों पर ताले लग जाते हैं—बताओ कोई लड़की न कहीं 'डेट' कर सकती है न किसी ब्वाय फ्रेंड के साथ रह सकती है।

जया : हमारे होस्टल के दरवाज़े साढ़े दस बजे रात तक आफिशियली खुले रहते हैं और वैसे साढ़े बारह बजे तक ! हमारी वार्डन मिस खन्ना अभी पेरिस से लौटी हैं। हमारे कालेज में पढ़ाई नहीं पालिटिक्स होती है—मर्द बनाम औरत की पालिटिक्स।

[हेमा आती है।]

हेमा : हाय रीता, जया भादुड़ी !

जया : डोन्ट काल मी 'जया भादुड़ी' ! छी, 'गुड्डी' फिल्म में वह कितनी बचकानी हरकतें करती है।

रीता : हेमा, होस्टल जा रही हो ?

हेमा : साले अभी कौन होस्टल जाता है। मेरा लौंडा आ रहा है। ज़रा कर्नाटिंग करने जाऊँगी उसके साथ। कल यूनिवर्सिटी में स्ट्राइक होने वाली है !

[फोन करती है।]

(फोन पर) हेलो टोनू…छिक छिक छुक छू…यस, डा डा डा रूँ रूँ रूँ…कम इमीडियटली ! डब्लू० होस्टल के गेट पर।

[फोन रखती है।]

रीता : मुझे टेलीफोन करने की ज़रूरत नहीं पड़ती। लौंडा कार लिए हुए गेट पर आधे घंटे से मेरे इन्तज़ार में उल्लू के पट्ठे की तरह बैठा है।

जया : मेरा टोटू बेहद 'बिजी' है। पूरे फर्म का मैनेजिंग डाइरेक्टर है। मगर अभी दौड़ा आ रहा होगा। छू छू छू !

रीता : देखना, कहीं अपने फर्म में तुझे 'रिसेप्शनिस्ट' न बना दे। लू लू…लू लू ! ग्लीन कांपबेल का वह गाना…'इट इज़ ओनली मेक बिलीव'…हाय !

जया : ग्लीन कांपबेल नहीं, 'ग्लेन कैम्बेल'…।

रीता : आई बैट् !

जया : बाज़ी !

[हाथ मारती है। जया 'जूनियर स्टेट्समैन' पत्रिका दिखाती है। रीता हार जाती है।]

रीता : आई एम सॉरी !

जया : तुम्हारे होस्टल और कालेज की हवा ही बैकवर्ड है।

हेमा : अच्छा बताओ, संसार के पाँच मशहूर पॉप सिंगर के नाम !

रीता : सैन्टाना…जार्ज हैरिसन…!

हेमा : हट बे साले, जार्ज हैरिसन बीटिल सिंगर है !

जया : अच्छा, तुम बताओ…!

हेमा : पाँच नाम ? सैन्टाना…एलविस प्रीसले…डान…पाल मेकार्टने…।

जया : पाँचवाँ नाम… जया माइकेल…।

रीता : मेरा नाम…किलोपेट्रा…लाचिक लाचिक लाचिक…।

हेमा : माई नेम सालमा…टियूँ टियूँ टियूँ ट्इयूँ !

जया : खासी गर्ल…ओई कोमोबा…ओई कोमोबा !

[तीनों मुँह से आवाज़ें निकालती हुई शोर मचाती हैं। दौड़ी हुई मालती आती है।]

मालती : बन्द करो शोर ! हमारी प्रिंसिपल मिसेज दास नाराज़ हो रही हैं।

जया : आपकी तारीफ ?

मालती : तुम लोग यहाँ से जाती क्यों नहीं ?

रीता : अबे छुप रह साले !

हेमा : हम लोग किस वाहियात गर्ल्स कालेज के होस्टल में आ गए ? इससे कहो···यह यहाँ से फौरन फूट जाए···!

रीता : हम लोग अपने-अपने ब्वाय फ्रेंड का इन्तजार कर रहे हैं।

जया : चलो, तुझे भी ले चलें !

हेमा : पता चल जाएगा कितनी खूबसूरत हो !

रीता : खूबसूरत नहीं, स्मार्ट !

[तीनों बेहूदे ढंग से हँसती हैं।]

मालती : कीप क्वायट ! हमारे वार्डन की तबीयत खराब है !

जया : हाय, साली अंग्रेज़ी बोलती है !

रीता : कालेज की 'चमचा गर्ल' है !

हेमा : टें···यं···यें···ऊँ ! टंअं···

रीता : छी छू छी छू···छीछू छीछू···।

जया : जुक जुक छिक छुरु !

मालती : शटअप !

[लड़कियाँ मुँह बनाए चुप खड़ी रह जाती हैं।]

जया : अच्छा चलिए, हम आपसे महाभारत की चौपाइयाँ सुनेंगे।

रीता : महाभारत की या रामायण की ?

जया : दोनों में कुछ फर्क है क्या ?

हेमा : अबे, क्या फर्क पड़ता है !

जया : अच्छा चलिए, कोई भजन सुनाइए ?

रीता : पूजा आरती···वन टू थ्री···।

[तीनों गा उठती हैं—]

जय जगदीश हरे !
ॐ जय जगदीश हरे···!
संतन के दुख दूर करे
क्यों तू गुस्सा करे···
ॐ जय जगदीश हरे···!
तू दिन-रात पढ़े
क्यों नहीं प्रेम करे···
ॐ जय जगदीश हरे···।

मालती : चलो प्रिंसिपल के पास।

जया : होगी तेरी प्रिंसिपल। मेरी प्रिंसिपल है मिसेज चटर्जी···'माई फेयर लेडी !' वह कहती है, 'मुझे वाइस चांसलर होना है' ! हिप्-हिप् हुर्रे !

रीता : मेरे कालेज का नाम है माडर्न लेडी कालेज। हमारी प्रिंसिपल हमें कभी नहीं बुलाती। उसके पास इत्ता वक्त ही नहीं !

मालती : हेमा, तू तो इसी कालेज की है न, तुझे चलना होगा !

हेमा : हुश् ! मेरा ब्वाय फ्रेंड आ रहा है···मुझे उसके साथ जाना है।

जया : हाय, इसका भी कोई ब्वाय फ्रेंड होता !

रीता : कौन जाने हो ही। ऐसी लड़कियाँ बड़ी घुटी होती हैं।

हेमा : यह तो दिन-रात पढ़ती है और प्रिंसिपल-टीचरों की चमचागीरी करती है।

रीता : तभी तो इसका ब्लड प्रेशर हाई है !

मालती : तुम लोग बकवास नहीं बन्द करोगी ?

जया : अच्छा बाबा, तुम्हीं करो बकवास ! चलो शुरू हो जाओ !

मालती : या तो प्रिंसिपल के पास चलो वरना गेट पर जाकर इन्तज़ार करो !

रीता : यह क्या बकवास कर रही है ?

हेमा : मालती, मेरी प्यारी सखी, जा तू अपने कमरे में घोंटा लगा, हम लोग यहाँ शोर नहीं करेंगे !

जया : वाह ! शोर क्यों नहीं करेंगे। हमें किसी का डर पड़ा है। मेरा टोटू इस शहर के सबसे बड़े गुंडे हरीसिंह का दोस्त है !

रीता : ओह. दादा हरीसिंह···? उसको तो मेरे 'डैम' ने एक दिन इतना मारा···इतना मारा कि उसे 'हाथी मेरे साथी' याद आ गया···जैसे राजेश खन्ना ने उस विलेन को पीटा था।

हेमा : हाय, बड़ा ज़ालिम है वह गुंडा हरीसिंह। एक दिन कालेज की दो लड़कियों को दिन-दहाड़े जीप में उठा ले गया !

रीता : अरे मेरे 'डैम' के नाम से वह थर-थर काँपता है।

[इस बीच मालती एक कुर्सी पर बैठकर कोई पत्रिका पढ़ने लगी है।]

जया : देखो, देखो···यह यहाँ भी पढ़ने लगी।

रीता : मैं ज़रा बाहर देख आऊँ अपने 'डैम' को···।

जया : मेरा टोटू गेट पर आते ही हार्न बजाएगा···किं किं किं कीं !

[रीता बाहर जाती है।]

हेमा : मेरा टोनू आवाज़ लगाएगा···इआहू !

मालती : ओ हो हो···क्या जंगली प्रेमी मिला है !

जया : अरे, यह तो कुछ और भी बोलती है !

मालती : मालूम है, यह पॉप संगीत मैंने आर्गेनाइज़ किया था।

हेमा : यस···दैट्स राइट !

जया : रियली ? वंडरफुल ! ···समझती भी है, पॉप म्यूज़िक क्या बला है ?

मालती : 'पॉप' माने 'पॉपुलर' !

जया : दैट्स राइट ! किसी फेमस पॉप सिंगर का नाम बता सकती हो ?

मालती : नोट कीजिए—सान्ताना, रेयरअर्थ, ग्लेन कैम्बेल, बर्ट वेकरेच, एलविस प्रीसले, डॉन···।

जया : बस—बस···ओह गॉड !

[रीता आती है।]

रीता : अभी तक ईडियट नहीं आया।

जया : अरे···यह चिड़िया तो जितनी ऊपर है उतनी ही जमीन के नीचे ! इसी ने पॉप म्यूज़िक आर्गनाइज़ किया था।

रीता : पर इसकी शकल तो हॉल में कहीं दिखी नहीं !

हेमा : यह बैकग्राउण्ड में थी। थी असली यही !

जया : इसे सारे पॉप सिंगर्स के नाम मालूम हैं···। अभी धड़ाधड़ बताने लगी।

रीता : हमें इसी ने बुलाया ?

मालती : यस मैडम !

जया : कुछ गुनगुना रही है !

रीता : माई डार्लिंग, ज़रा ज़ोर से···।

हेमा : यस मालती···कम आन !

मालती : जय जगदीश हरे, ॐ जय जगदीश हरे !
संतन के दुख छन में दूर करे···ॐ जय जगदीश हरे !

जया : नानसेन्स !

रीता : माई लिटिल बेबी, मैं सुनाती हूँ···याद कर ले ! **(गाती है)** 'लव इज़ जस्ट ए फोर लेटर्ड वर्ड···'

मालती : यस लिटिल बर्ड !

[सब साश्चर्य मालती को देखने लगती हैं। और चुपचाप सलाह करती हैं उसे तंग करने के लिए।]

जया : कितनी खूबसूरत !

रीता : हाय, मेरी नीलम परी !

हेमा : हुकुम की बेगम !

[उसके चारों ओर कुर्सियाँ खींचकर बैठ जाती हैं।]

जया : तुम्हारे दाँत कितने खूबसूरत हैं,···कितने हैं···तीस या बत्तीस। ज़रा मुँह खोलो···गिनें तो···।

मालती : यह क्या बदतमीज़ी है ?

[तीनों उसे पकड़कर उसका मुँह खोलती हैं। दाँत गिनने के बजाय उसके मुँह में कुछ डाल देती हैं।]

मालती : थू···थू···नानसेन्स···आवारा···!

जया : बिगड़ती क्यों हो ? लो मेरे दाँत गिन लो !

मालती : तेरे मुँह से सिगरेट की बदबू आती है।

रीता : हाय, सब्ज़परी के मुँह में तो दूध भरा है !

मालती : मैं अभी रिपोर्ट करती हूँ प्रिंसिपल से !

जया : मालूम है हरीसिंह गुंडे का नाम···दिन-दहाड़े उठवा दूँगी यहाँ से। बड़ी सती सावित्री बनती है !

हेमा : हाय, इसकी कमर तो देखो !

[तीनों उसकी कमर में चिकोटी काटती हैं। वह भागती है। दोनों ओर दरवाज़े पर लड़कियाँ खड़ी हो जाती हैं।]

जया : इस कमरे से बाहर नहीं जा सकतीं।

रीता : कसम खाओ···हमारी रिपोर्ट नहीं करोगी।

हेमा : मेरी कोई शिकायत नहीं !

मालती : करूँगी···सारी रिपोर्ट करूँगी। यह मेरा कालेज है···मेरा होस्टल।

तीनों : तुम इस कमरे से बाहर नहीं जा सकतीं !

मालती : शोर मचाऊँगी—चपरासी···चौकीदार !

[तीनों दौड़कर उसका मुँह दबा लेती हैं। जया उसके दोनों हाथ पीछे बाँध देती है। हेमा उनके मुँह पर पट्टी चढ़ा देती है।]

हेमा : अब पुकारो—चौकीदार।

रीता : और अगर फिर भी रिपोर्ट की तो हरीसिंह के हाथ से तुझे जहन्नुम में पहुँचा दिया जाएगा !

[मालती उसी तरह बँधी खड़ी है। तीनों बेंच पर बैठी उसे घूरती हैं।]

हेमा : अब गाओ—'संतन के दुख दूर करे, ॐ जय जगदीश हरे।'

जया : चलो, हवा में एक निबंध लिखो—'आज का विद्यार्थी वर्ग और अनुशासनहीनता', लिखना शुरू करो···!

[मालती हवा में लिखने लगती है।]

रीता : राइटिंग खूबसूरत हो···अंधा आदमी भी पढ़ ले !

हेमा : एक भी स्पेलिंग की गलती न हो !

जया : तेज़ लिखो···और तेज़ !

[मालती लिख रही है।]

जया : शाबाश ! मेहनती लड़की है !

रीता : चरित्रवान है !

हेमा : आज तक किसी लड़के से प्रेम नहीं किया।

जया : मतलब किसी लड़के ने घास नहीं डाली !

रीता : बंद करो। वक्त खत्म हो गया !

हेमा : देखें, क्या लिखा ?

[तीनों अदृश्य निबंध देखती हैं।]

जया : क्यों री बिटिया, तुलसीदास या तुलूसीदास ?

रीता : इतनी गल्तियाँ, छी छी छी ! यही लिखती-पढ़ती है ?

हेमा : इत्ती गंदी लिखावट। चल उठक-बैठक कर ! चल !

जया : ओ हो हो। निबंध में लिखा है—'देश और समाज का भविष्य विद्यार्थियों के हाथ में है। उन्हें चरित्रवान होना चाहिए···उनका धर्म है विद्या प्राप्त करना, अपने व्यक्तित्व को बनाना'···ओ हो हो। यह क्यों नहीं लिखा···विद्यार्थियों को घास खाना चाहिए···हवा पीना चाहिए···और आँखों पर पट्टी बाँधे रखना चाहिए, ताकि वे सच्चरित्र रहें। हमारे कालेज की मैनेजिंग कमेटी में जो घपले होते हैं, हमारी क्लासों में पढ़ाई की जगह जो उल्लू बोलते हैं···वह कहाँ है तेरे निबंध में ?

रीता : यह क्या लिखा है ? 'हमारा देश महान है···यहाँ की विद्या-शिक्षा की परम्परा स्वर्ण-अक्षरों में लिखी जाने लायक है। महान नहीं कद्दू है···यहाँ की विद्या और शिक्षा···वाह, वाह, वाह ! अगर प्रोफेसर ब्राह्मण है तो 'मेरिट लिस्ट' में ब्राह्मणों की आबादी बढ़ जाती है। अगर वाइस-चांसलर क्षत्री है, तो क्षत्री छात्र जिंदाबाद !

हेमा : जरा मैं भी तो देखूं !···वाह वाह···क्या लिखा है 'विद्यार्थी वर्ग में अनुशासन-हीनता क्यों बढ़ रही है···इस पर विचार करना चाहिए···इस समस्या पर सरकार भी गंभीरता से ध्यान दे रही है···' बस, निबंध खत्म ! अनुशासनहीनता क्यों बढ़ रही है···इस पर विचार क्यों नहीं किया···चलो कान पकड़कर उठक-बैठक करो !

[मालती उठक-बैठक करने लगती है।]

जया : सुनो ··हमारे समाज को सन्निपात का रोग हो गया है। हमारे स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय को लकवा मार गया है।

रीता : सुन बेटी, सारे देश और समाज के ठेकेदार और व्यापारी अदल-बदल आयेराम-गयेराम हैं। इन्हीं के भाई-भतीजे, साले-बहनोई हमारी सरकार चलाते हैं। हमारे प्रिंसिपल, प्रोफेसर, टीचर, वाइस-चांसलर इन्हीं के गुलाम हैं।

हेमा : हमारे पापा लोग केवल नौकरी करना जानते हैं···यही शिक्षा मिली है उन्हें··· और हमारी मम्मी लोगों की चिंता है, वजन कैसे घटाया जाए···यही था उनकी शिक्षा का सार !

जया : निबंध का सार यह है—विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता और तेजी से बढ़नी चाहिए क्योंकि असेम्बली-पार्लियामेंट में अनुशासनहीनता बढ़ रही है। स्कूल-

कालेजों में अखाड़े खोदे जा रहे हैं।

रीता : इस शून्य को भरने के लिए हमारे पास पॉप म्यूजिक है, डिस्कोथिक है, मेरिजुआना है···एल० एस० डी० है···। शिक्षा मंत्रालय गंभीरता से विचार कर रहा है। कमीशन रिपोर्ट दे रहा है। ओ३म् शांतिः, ओ३म् शांतिः !

जया : हम तुझे एक शर्त पर छोड़ सकते हैं।

रीता : मतलब, पट्टी खोल सकते हैं !

हेमा : बोल···शर्त मंजूर है। सिर हिलाकर बता।

जया : शर्त यह···कि तू अपने प्रेमी का नाम बता।

रीता : यस···कोई लव अफेसर जरूर रहा होगा इसका···वरना इत्ता उठक-बैठक नहीं करती !

हेमा : सिर हिलाकर···उस प्रेमी का नाम बताएगी ?

[स्वीकृति में मालती सिर हिलाती है।]

जया : हमारी सारी शर्तें मंजूर हैं न ?···चलो इसे आज़ाद करो।

[वह मुक्त की जाती है।]

रीता : कोई रिपोर्ट नहीं करेगी ना ?

मालती : नहीं।

हेमा : अपना लव अफेयर बताएगी ना ?

मालती : बताऊँगी।

जया : तूने प्रेम किया है किसी से ?

मालती : किया है।

रीता : वह अभी जिन्दा है ?

मालती : जिन्दा है।

हेमा : वह इसी शहर का है ?

मालती : इसी शहर का।

जया : क्या है उसका नाम और पता ?···लजाती क्यों है ? बता !

मालती : मेरा प्रेमी है हरीसिंह ?

जया : कौन हरीसिंह ?

मालती : वही मशहूर गुंडा—दादा हरीसिंह।

हेमा : झूठ बोलती है। इसकी यह हिम्मत !

रीता : हमें बेवकूफ बनाती है !

मालती : बिल्कुल सच कहती हूँ—वही है मेरा 'ब्वाय फ्रेंड' !

जया : उससे दोस्ती कैसे हुई ?

मालती : उससे मेरी मुलाकात अचानक एक पार्क में हुई। रात के दस बजे थे। मैं एक टीचर के साथ सनीमा देखकर उस पार्क में टहल रही थी।

जया : टीचर या लेडी टीचर ?

मालती : टीचर···जी० एस० पाठक···हिस्ट्री पढ़ाने वाले !

हेमा : हाय, देखो कितनी चालाक है···सब बातें बना रही है। पाठक जी इसे लेकर सनीमा जाएँगे···और पार्क में टहलेंगे। अहा हा !

रीता : तुझे जलन हो रही है न ?

मालती : मैंने देखा, चम्बेली की झाड़ी के पास एक व्यक्ति रिवाल्वर ताने किसी के इन्तज़ार में खड़ा है। मैं चीख पड़ी। उसने मुझे भाग जाने का इशारा किया। पाठक जी मुझे छोड़कर भागे। वह हँस पड़ा। मेरे पास आया। बोला, 'जिसे मारने आया था, अब उसे माफ किया।' उसने मुझे एक रेस्त्राँ में कॉफी पिलाई। अपना परिचय दिया। मुझे टैक्सी में बिठाकर होस्टल छोड़ने आया और हमारी दोस्ती हो गई ! उसने मुझे तुम सबके दोस्तों के बारे में बताया है।

जया : हाय कितनी घुटी हुई लड़की है !

रीता : बाबा रे, हरीसिंह गुंडा इसका ब्वाय फ्रेंड !

हेमा : कित्ती छिपी रुस्तम निकली !

मालती : मैं उसके लिए प्राण दे सकती हूँ।

जया : जा, जा, बड़ी आई जान देने !

मालती : वह मेरे लिए कहीं कुछ भी कर सकता है।

रीता : मेरा 'डैम' भी मेरे लिए कुछ कर सकता है।

मालती : उसने बताया है—वह किसी लड़की को कहीं ले जा सकता है।

हेमा : हमारे ब्वाय फ्रेंड्स तुम्हारे मिस्टर पाठक की तरह बुज़दिल नहीं।

जया : तुम्हारा हरीसिंह के साथ रिश्ता डर-भय का है—हमारे रिश्ते मुहब्बत, लव, प्रेम के हैं।

रीता : हरीसिंह आए मुझे उठा ले जाने के लिए, मैं उसे वह मज़े चखाऊँ कि वह जेल में नज़र आए !

हेमा : मेरे टोनू के नाम से वह थरथर काँपता है। मेरा टोनू होम मिनिस्ट्री के अंडर-सेक्रेटरी का लड़का है।

रीता : मेरा 'डैम' आई० जी० इन्टेलिजेन्स का भतीजा है।

जया : मेरा टोटू प्राक्टर प्रोफेसर सिंह का कज़िन है।···हम पर कोई और आँख तक नहीं उठा सकता। और हमारी मुहब्बत में इतनी ताकत है कि हमारी जान चली जाए मगर हम किसी और के साथ नहीं जा सकते।

मालती : यही मेरी सच्चाई है।

रीता : तू डरपोक लड़की, सच्चाई की बात करती है ? कोई डाँट दे तो बकरी की तरह उसके पीछे-पीछे चली जाएगी। मेंअं···मेंअं···मेंअं···

मालती : मेरे हरीसिंह के पीछे-पीछे कोई भी लड़की चुपचाप चली जाएगी।

जया : जैसे तू चली गई दुम दबाए। वी आर माडर्न गर्ल्स, ब्रेव, डिटरमिन्ड···।

हेमा : हम जान दे सकते हैं···किसी और के सामने घुटने नहीं टेक सकते। हम सीता-

सावित्री की तरह बेवकूफ बुजदिल नहीं कि कोई रावण हमें भगा ले जाए। हम उसके सिर तोड़ देंगे।

[सन्नाटा।]

मालती : हरीसिंह यहाँ आज मुझसे मिलने आ रहा होगा···आज हमारी 'डेट' है।

जया : यहाँ ?

रीता : 'डेट' ?

हेमा : इस कमरे में ?

मालती : दरअसल तभी मैं यहाँ से तुम लोगों को हटाने के लिए आई थी। हम यहाँ, इस जगह बैठकर बातें करते हैं—फिर हम कहीं बाहर जाते हैं घूमने।

जया : कितनी अजीब बात है···तू हमें साफ-साफ बता सकती थी। हम चुपचाप चले जाते।

रीता : इसमें इस कदर बहानेबाजी की क्या जरूरत थी ?

हेमा : तूने कभी मुझे नहीं बताया।

मालती : ये बताने की बातें हैं क्या ?

जया : हाँ, इत्ते नटोरियस गुंडे के साथ दोस्ती, यह कोई बताने की बात है !

मालती : अब मैं जा सकती हूँ न ? बस मेरा हरीसिंह आ रहा होगा। वक्त हो गया··· आज बाहर ही मिलूँगी···अच्छा !

[चली जाती है। तीनों लड़कियाँ एक-दूसरे का मुँह देखने लगती हैं।]

जया : फन्टास्टिक !

रीता : इन्क्रेडिबुल !

हेमा : कमाल !

[तीनों कुर्सियों पर बैठकर विचार करती हैं।]

जया : उस गुंडे से हमारी शिकायत तो नहीं करेगी ?

रीता : करे भी तो हमें क्या डर ?

हेमा : साली को साले के साथ जेल में ठुँसवा दूँगी, हाँ !

जया : क्या हिम्मत है साली में !

रीता : ऊपर से कितनी सीधी दिखती है !

हेमा : चमचाछाप लड़की !

रीता : गऊ मार्का सरसों का तेल !

जया : बोर···बोर···बोर !

हेमा : कहीं जी नहीं लगता।

रीता : मुझे चारों तरफ दमघोंटू सन्नाटा महसूस होता है !

जया : (मस्त होकर) चिक चिक चिकनिक
चिक चिक चिकनिक
चिकनिक चिकनिक !

हेमा : मेरे ममी-डैडी में हर रात झगड़ा होता है। ममी को शक है, डैडी का किसी लड़की से 'अफेयर' है।

रीता : मेरी ममी को मेरी शक्ल से नफरत है—तभी मुझे होस्टल में रख दिया !

जया : मुझे कहा जाता है—मैं बदचलन हूँ !

हेमा : मैं बर्बाद हूँ !

रीता : मैं सबके लिए मर गई हूँ !

जया : मैं बी० ए० में चार सालों मे फेल हो रही हूँ !

रीता : मुझे सबसे नफरत है।

हेमा : मुझे किसी की परवाह नहीं !

जया : मेरी ममी को शिकायत है कि मेरे डैडी बिलकुल बेकार के शौहर हैं। उनमें न धन कमाने की ताकत है, न आगे बढ़ने की हिम्मत। और मेरे डैडी ममी से कहते हैं, 'तुझसे शादी करके मैं मर गया···खत्म हो गया !' और दोनों मिलकर मुझसे कहते हैं—'न मैं शादी के लायक हूँ···न पढ़ने के···न नौकरी के !'

रीता : हूँ ! शादी ! द लीगल प्रॉस्टीट्यूशन !

हेमा : हूँ ! पढ़ाई—द ग्रेट बोरडम !

जया : नौकरी—द हॉरिबुल ब्यूरोक्रेसी !

[रीता और हेमा हँसती हैं।]

जया : शीऽऽ···धीरे-धीरे !

रीता : मेरा 'डैम' गेट पर आ गया होगा, मैं चलती हूँ !

हेमा : मेरा टोनू भी !

जया : मैं अपने टोटू की कार की आवाज पहचानती हूँ !

रीता : आज कहीं हमारे तीनों की भेंट हरीसिंह के साथ हो गई तो···!

जया : मैं तो उस गुंडे की ओर आँख तक नहीं उठाऊँगी !

रीता : उसे कभी देखा है ?

जया : मैं क्यों ?

हेमा : मैंने भी साले को कभी नहीं देखा।

[दरवाजे पर तेज दस्तक।]

जया : वही है, वही !

रीता : हम लोग इस रास्ते से निकल जाएँ।

[उस दरवाजे पर भी तेज दस्तक।]

रीता : कौन हो सकता है ?

हेमा : होगा कोई बास्टर्ड !

[तभी तेजी से दरवाजा खुलता है—हरीसिंह का प्रवेश।]

हरीसिंह : हाय, चिड़िया लोग ! आई एम हरीसिंह—हाय ! नमस्ते करो !
हेमा : हाय !
रीता : नमस्ते !
जया : नॉनसेन्स !
हरीसिंह : नमस्ते करो !

[हेमा-रीता डरकर हाथ जोड़ती हैं । जया हँस रही है ।]

हरीसिंह : बन्द करो हँसी ! मुझे जानती नहीं ? कहाँ है मेरी मालती ?
हेमा : जी, जी, यहीं थी आपके इन्तज़ार में ।
रीता : बाहर खड़ी होगी !
हेमा : आप तशरीफ रखिए, हम उसे ढूँढ़ लाते हैं ।
हरीसिंह : रुको ! कहाँ भगाया मेरी मालती को ?
जया : (अलग से, जनान्तिक—'एसाइड'—में) हुअँ, बड़ा आया हरीसिंह बन के ! मालती की तलाश में आया है ! झूठा, दगाबाज़…फरेबी…!
रीता : हम बेकसूर हैं !
हेमा : हमने उसे नहीं भगाया !
हरीसिंह : मगर वह है कहाँ ?
जया : (एसाइड) वह भाड़ में गई । लोग हमें तरह-तरह से डराने आते हैं । डाकू… गुंडा, नौकरी…इम्तहान…शादी…इज्ज़त…!
हरीसिंह : खबरदार, कमरे से बाहर जो कदम रखा !
जया : (एसाइड) देखो-देखो…इस गुंडे की आवाज़ में ज़नानापन है । साला खुद डरा हुआ है । डरा हुआ ही दूसरे को डराता है !
हरीसिंह : ऐ…चल इधर !
जया : तमीज़ से बोलो !
हरीसिंह : कहाँ है मेरी मालती ?
जया : होस्टल के चौकीदार से पूछो ।

[रीता और हेमा डरी हुई हैं । जया को चुप रहने के इशारे करती हैं ।]

हरीसिंह : अपने-अपने ब्वाय फ्रेंड के नाम बताओ ।
रीता : डैम !
हेमा : टोनू !
जया : कोई ब्वाय फ्रेंड नहीं ।
हरीसिंह : वह टोटू कौन है ?
जया : तुम कौन हो ?
हरीसिंह : ओह ! तुम कौन हो ?
जया : जो तुम हो !

हरीसिंह : मगर मैं क्या हूँ ?
जया : जो हो तुम !
हरीसिंह : इतना गुस्सा !
जया : नफरत !
हेमा : विद्रोह !
रीता : अस्वीकार !

[जया हँसती है ।]

हरीसिंह : ब्रेव···स्मार्ट···ऐंग्री ! सुनो, तुम तीनों को आज मेरे साथ 'डेट' करना होगा। चलो, बाहर मेरी जीप खड़ी है ! चलती हो कि नहीं ?
हेमा : कहाँ ?
रीता : कैसे ?
हरीसिंह : मैंने तुम्हें देखा है, तरह-तरह के लड़कों से 'डेट' करते हुए । डिस्कोथिक्स, 'सेलर', 'तबेला' में नशे में झूमते और बुझे हुए । अजीबोगरीब पोशाकों में पॉप म्यूज़िक, जैम सेशन में धुत्त । पश्चिम की शर्मनाक नकल !
जया : हम यहीं की उपज हैं ।
हरीसिंह : चलो मेरे साथ !
जया : नहीं ! मत जाओ इसके साथ !

[हरीसिंह पिस्तौल तान लेता है ।]

जया : यह पिस्तौल झूठी है । मत डरो ! मत जाओ !
हरीसिंह : शटअप !
जया : यू शटअप !

[हरीसिंह दोनों लड़कियों को संग लेकर जाने लगता है । जया उससे संघर्ष करती है ।]

जया : लड़ो, यह झूठ है ! मरो, यह झूठ है !

[हरीसिंह जया को धक्का देकर लड़कियों के साथ चला जाता है ।]

जया (उठती हुई) कायर ! बुज़दिल ! नकलची ! हर विश्वास महज़ एक फैशन ! हम कौन हैं ? कायर हम हैं या वह गुंडा हरीसिंह ? बुज़दिल महज़ हम हैं या हमारे डैडी-मम्मी ? नकलची केवल हम हैं या हमारे कालेज, टीचर्स···किताबें··· लेक्चर्स···?

[दोनों लड़कियाँ वापस आती हैं । दौड़ती हुई, डरी हुई ।]

हेमा : हरीसिंह न जाने कहाँ एकाएक गायब हो गया !
रीता : वह कहीं छिप गया है !

हरीसिंह : मगर मैं क्या हूँ ?
जया : जो हो तुम !
हरीसिंह : इतना गुस्सा !
जया : नफरत !
हेमा : विद्रोह !
रीता : अस्वीकार !

[जया हँसती है ।]

हरीसिंह : ब्रेव···स्मार्ट···ऐंग्री ! सुनो, तुम तीनों को आज मेरे साथ 'डेट' करना होगा। चलो, बाहर मेरी जीप खड़ी है ! चलती हो कि नहीं ?
हेमा : कहाँ ?
रीता : कैसे ?
हरीसिंह : मैंने तुम्हें देखा है, तरह-तरह के लड़कों से 'डेट' करते हुए । डिस्कोथिक्स, 'सेलर', 'तबेला' में नशे में झूमते और बुझे हुए । अजीबोगरीब पोशाकों में पॉप म्यूज़िक, जैम सेशन में धुत्त । पश्चिम की शर्मनाक नकल !
जया : हम यहीं की उपज हैं ।
हरीसिंह : चलो मेरे साथ !
जया : नहीं ! मत जाओ इसके साथ !

[हरीसिंह पिस्तौल तान लेता है ।]

जया : यह पिस्तौल झूठी है । मत डरो ! मत जाओ !
हरीसिंह : शटअप !
जया : यू शटअप !

[हरीसिंह दोनों लड़कियों को संग लेकर जाने लगता है । जया उससे संघर्ष करती है ।]

जया : लड़ो, यह झूठ है ! मरो, यह झूठ है !

[हरीसिंह जया को धक्का देकर लड़कियों के साथ चला जाता है ।]

जया (उठती हुई) कायर ! बुज़दिल ! नकलची ! हर विश्वास महज़ एक फैशन ! हम कौन हैं ? कायर हम हैं या वह गुंडा हरीसिंह ? बुज़दिल महज़ हम हैं या हमारे डैडी-मम्मी ? नकलची केवल हम हैं या हमारे कालेज, टीचर्स···किताबें··· लेक्चर्स···?

[दोनों लड़कियाँ वापस आती हैं । दौड़ती हुई, डरी हुई ।]

हेमा : हरीसिंह न जाने कहाँ एकाएक गायब हो गया !
रीता : वह कहीं छिप गया है !

हेमा : मेरा डैम भी अब तक नहीं आया।
रीता : मेरा टोनू भी मर गया।
हेमा : शायद बाहर उसे मालती मिल गई हो !
रीता : चलो, अब भाग चलें !
जया : (एसाइड) हमेशा भागते ही रहना होगा।
हेमा : ना बाबा, वह मालती के साथ बाहर होगा।
रीता : हाय ! कैसी-कैसी बातें कर रहा था !
जया : (एसाइड) महज़ बातें···महज़ बातें !
रीता : दरवाज़े बन्द कर लो !

[बन्द करती हैं।]

हेमा : ईश्वर ने हमें बचा लिया।
जया : तो इन्हें अब ईश्वर में भी विश्वास हो गया। बताओ ना, कौन-सा ईश्वर··· अमेरिकन, ब्रिटिश या फ्रेंच ?
रीता : जया डियर, तुम कुछ नहीं समझतीं। प्लीज़, माइंड कर गईं क्या ?
हेमा : हम तो उसके साथ यूँ ही चले गए, वरना यहाँ खामखा स्कैंडल होता।
जया : मतलब हम लोग किसी के साथ यूँ ही चले जाते हैं !

[बन्द दरवाज़े पर दस्तक।]

हेमा : वही है···वही।
रीता : इस बार वह हमें घसीटकर ले जाएगा।
हेमा : हम दरवाज़ा नहीं खोलेंगे !
जया : वह दरवाज़ा तोड़ देगा !

[दरवाज़ा तेज़ी से खुलता है। मालती का प्रवेश।]

हेमा : हाय, तू कहाँ थी ?
रीता : तेरा वह गुंडा कहाँ है ?
मालती : (मज़े में) चला गया।
हेमा : यह कैसे बोल रही है ?
रीता : लगता है, उसके साथ इसने पी है।
जया : यह सब बनावटी है···झूठ है !
मालती : मारिजुआना···चरस···एल० एस० डी०···!

[हँसती है। दोनों डरकर भागती हैं। जया उसे पकड़ लेती है।]

जया : बन्द करो यह बकवास !
रीता : यह होश में नहीं है।
हेमा : यह पागल हो गई है। गुंडे ने इसे···।

जया : मालती···आई नो यू !

मालती : आई एम किलोपेट्रा, संताना, रेअरअर्थ, प्रीसले, खासी गर्ल···हा हो !

[झपटती है। दोनों चीखकर टेबुल के नीचे छुप जाती हैं। जया उसे फिर पकड़ती है।]

मालती : (तड़पती हुई) मैं उड़ रही हूँ···जमीन की ग्रेविटी से बाहर, चाँद की ओर, ऊपर···और ऊपर। मेरी उँगलियों से फूल झड़ रहे हैं···कीड़े निकल रहे हैं—एक प्याला रोमांस···एक प्याला पॉप म्यूजिक···एक प्याला ब्वाय फ्रेंड···एक प्याला डायवर्शन, विद्रोह···अमेरिका···फ्रांस !

जया : (जोर से) हरीसिंह !

मालती : क्या ?

जया : तू झूठी है···। बोल, तूने हरीसिंह बनकर इन्हें क्यों डराया ?

मालती : तुम सबने मुझे क्यों डराया ?

जया : हम सबको किसने डराया ?

[मालती स्थिर खड़ी रह जाती है।]

हेमा : ओह ! यह खुद बनी थी हरीसिंह !

रीता : झूठी···बदमाश !

जया : यह देखो मूँछ···यह पिस्तौल···यह चाकू !

[मालती के साथ दोनों स्थिर हो जाती हैं। जया एक कुर्सी पर खड़ी होकर जैसे गिटार बजाने लगती है।]

जया : बोलो, यह संगीत कैसा है ? यह क्या है धुन ? भारतीय या वेस्टर्न सिम्फनी···जार्ज हैरिसन···या अली अकबर ? वह हरीसिंह गुण्डा कौन था ? हम या तुम ? या हमारे चारों ओर दमघोंटू, अर्थहीन परिवेश···जहाँ हम जैसे एक प्याला कॉफी पीते हैं···उसी तरह एक प्याला ब्वाय फ्रेंड !

[पृष्ठभूमि से गिटार का संगीत उठने लगता है।]

जया : जागो-जागो मेरी प्रानसखियो···हेमा···रीता···जोनू···शशि···मालती···रेखा···पूनम···चाँद···रेनू···लवी···मोना···प्रेमा !

[विंग के दोनों ओर से नाटक के शुरू की वे सारी लड़कियाँ संगीत की लय पर जर्क करती हुई मंच पर आती हैं। उनके संग धीरे-धीरे हेमा-रीता भी 'जर्क' करने लगती हैं।]

जया : हे हे हे ! चा चा चा चा चा !

वह झूठा था हरीसिंह
जैसे हमारे टोटू-टोनू-डैम झूठे थे
सच केवल तुम हो···तुम···
केवल तुम और हम···

सभी : केवल तुम और हम···
केवल तुम और हम···

[पॉप संगीत और उस समूह नृत्य से सारा वातावरण भर जाता है।]

[पर्दा]

दूसरा दरवाज़ा

पात्र

एक पुरुष
पहला युवक
दूसरा युवक
पहली युवती
दूसरी युवती

[एक कमरा। सामने एक बेंच। दायें और बायें दो दरवाज़े। बेंच पर एक पुरुष पुराने अखबारों को लिए बैठा पढ़ रहा है—बल्कि पृष्ठों को उलट रहा है। बीच-बीच में सहसा उठकर दायें दरवाज़े से भीतर झाँकने की कोशिश करता है, फिर तेज़ी से लौटकर बेंच पर बैठ जाता है। अखबार का अंबार उठाकर बायें दरवाज़े से बाहर निकल जाना चाहता है, पर डर कर फिर बेंच पर आ बैठता है। दोनों दरवाज़ों के बीच बड़ा अशांत दिखता है। धैर्य से बेंच पर लेट जाता है। फिर उठता है। फिर दोनों दरवाजों पर झाँकता है।

सहसा तभी दायें दरवाज़े से पहला युवक जैसे धक्के खाकर निकलता है और लड़खड़ाकर फर्श पर गिर पड़ता है। उसके हाथ के काग़ज़ात ज़मीन पर बिखर जाते हैं। वह घबराहट में अपने काग़ज़ात इकट्ठे करने लगता है।]

पुरुष : चोट तो नहीं लगी ? कुछ मदद करूँ ?

[पहला युवक चुपचाप काग़ज़ात संभाल रहा है।]

पुरुष : आपको किसी ने धक्का दिया ? मेरा मतलब आप···

[पहला युवक अपने कपड़े कर रहा है।]

पुरुष : ये कपड़े आपके ही थे ? मेरा मतलब आप···।

पहला युवक : आप से मतलब ?

पुरुष : लीजिए, जिसका डर था वही हुआ। आप तो खामखा नाराज़ हो गए। मैं तो सिर्फ यह पूछ रहा था···

पहला युवक : आप यहाँ बैठे क्यों थे ?

पुरुष : समझ लीजिए, मैंने आपको गिरते नहीं देखा, बस्स !

पहला युवक : आप हैं कौन ?

पुरुष : देखिए, यह सवाल मैंने आपसे नहीं किया। मैंने सिर्फ यह जानना चाहा कि भीतर से आपको किसी ने धक्का दिया ?

पहला युवक : आपको यह शुबहा कैसे हुआ ?

पुरुष : यह मेरा अनुभव है।

पहला युवक : अनुभव ?

पुरुष : अखबारों में विज्ञापन छपते हैं—वांटेड···आवश्यकता है···इतने डॉक्टरों की···इंजीनियरों की···अध्यापकों की···सहायकों की···संपादकों की···न्यूज़ रीडरों की क्लर्कों की···। आवश्यक योग्यताएँ—एक-दो-तीन। विशेष योग्यताएँ

एक और दो—प्रिफरेन्स विल बी गिवन टू···।

पहला युवक : आपकी तबियत तो ठीक है ?

पुरुष : यही तो मैं आपसे पूछ रहा था—चोट तो नहीं आई ?

पहला युवक : नॉनसेन्स !

पुरुष : भई, मैं किसी से नहीं कहूँगा कि आप यहाँ इस तरह गिर पड़े। मुझे पता है, चोट तभी महसूस होती है, जब कोई देख लेता है। विश्वास रखिए, मैंने आपको नहीं देखा।

पहला युवक : लेकिन मैंने तो आपको देखा !

पुरुष : बताइए भला, इस संयोग के लिए क्या करूँ ? ज्यादा-से-ज्यादा अब यही हो सकता है कि आप फिर से आइए। चलिए, आइए। अब यही एक मानसिक उपचार है।

[पहला युवक टाई की नॉट ठीक करता है।]

पुरुष : और एक सिगरेट पी लीजिए। जी हल्का हो जाएगा।

पहला युवक : मैं सिगरेट नहीं पीता।

पुरुष : बहुत अच्छे विद्यार्थी रहे होंगे कालेज में।

पहला युवक : थ्रू आउट फर्स्ट क्लास रहा है मेरा।

पुरुष : बधाई। कांग्रेचुलेशन। अब तो कुछ जी हल्का हुआ ?

पहला युवक : आप इटरव्यू में आए थे ?

पुरुष : जी हाँ, वही तो मैं कह रहा था। विज्ञापन—फिर इंटरव्यू, इंटरव्यू, और हर इंटरव्यू के अंत में ऐसा लगता है, किसी ने पीछे से धक्का देकर बाहर निकाल दिया। देखिए न, यहाँ गले पे कितने निशान हैं उन हाथों के। घुटने देखिए···। अक्सर खुजली मच जाती है यहाँ। खुजलाने में मजा भी आता है। हाँ, आपको भी आएगा, धीरज रखिए।

पहला युवक : मुझे नौकरी मिल जाएगी ?

पुरुष : अगर उनका कोई चमचा न हुआ।

पहला युवक : चमचा ? ह्वाट डू यू मीन बाई चमचा ?···

पुरुष : यस सर···जी हाँ, चरणस्पर्श···यस सर···जी हाँ, चरणस्पर्श। नहीं समझे ? भई, जैसे चाय के प्याले में चीनी मिलाने के लिए चम्मच की जरूरत होती है न, वैसे एक चमचा होता है···

पहला युवक : पता नहीं।

पुरुष : ये चमचे चारों ओर हवा में इस तरह हर वक्त मौजूद रहते हैं जैसे आक्सीजन में हाइड्रोजन। आप एम० ए० हैं या एम० एस-सी० ?

पहला युवक : बी० एस०-सी० इंजीनियरिंग !

पुरुष : अच्छी डिग्री है। सम्हालकर रखिए। थोड़ा नमक लगा कर चाटा कीजिए, हाजमा ठीक रहेगा।

पहला युवक : आपको तमीज़ नहीं ?

पुरुष : दरअसल यही देखना चाहता था, आपको गुस्सा आता है या नहीं ?

पहला युवक : बंद कीजिए बकवास !

पुरुष : ओह ! वेरी स्मार्ट।

पहला युवक : थैंक्यू !

[तेजी से जाने लगता है, उसी दरवाज़े से उसी तरह दूसरा युवक आ गिरता है।]

पुरुष : देखिए···देखिए···देखिए···। ओह, आई ऐम सॉरी ! हमें देखना नहीं चाहिए। जी, हमने बिल्कुल नहीं देखा आपको इस तरह गिरते हुए···यकीन कीजिए।

पहला युवक : आप···

पुरुष : जी आप भी !

दूसरा युवक : आप···

पहला युवक : आई एम सॉरी !

पुरुष : अब बताइए, मैं क्या कहूँ···कैसे पूछूं और बिना पूछे रहा भी नहीं जाता, मगर कुछ कहा भी नहीं जाता। देखिए, मैं तुक तो जोड़ सकता हूँ। पर आपसे कुछ पूछने का तुक नहीं पा रहा हूँ। आप पूछिए···इन्हें भी धक्का दिया गया ?

पहला युवक : किसने धक्का दिया ?

दूसरा युवक : हाँ, किसने ?

पहला युवक : मैंने इंटरव्यू में ऐसा कुछ नहीं कहा।

दूसरा युवक : मैं तो अपने जवाबों में बहुत काम और क्वायट था···समझिए पेशेंस पर कमांड था मुझे।

पहला युवक : डिसिप्लिन और कान्फीडेंस मेरे ब्लड में है।

दूसरा युवक : उन्होंने पूछा—'यह नौकरी क्यों करना चाहते हैं ?' मैंने उत्तर दिया—'मुझे यही सबसे ज्यादा पसंद है।'

पहला युवक : मैंने उत्तर दिया—'यही मेरे जीवन का उद्देश्य है।'

पुरुष : मेरा ख्याल है, यह जवाब कुछ ज्यादा ही था।

दूसरा युवक : मेरी आवाज़ में शुरू से आखिर तक शराफत थी।

पहला युवक : मेरे जवाब उन्हें बेहद पसंद आते थे।

पुरुष : सबने एक ही किताब पढ़ रखी है—'हाऊ टू सक्सीड इन लाइफ एंड इंटरव्यू।'

पहला युवक : हमें किसी से क्या मतलब !

दूसरा युवक : हमें अपने काम से काम।

पहला युवक : हमारा अपना एक लक्ष्य है।

दूसरा युवक : दैट्स राइट।

पुरुष : वह लक्ष्य है महज नौकरी···दफ्तरों में बुड्ढे होने की तनख्वाह पाना।

पहला युवक : यह कौन है ?

दूसरा युवक : हमें औरों से क्या मतलब ?

पहला युवक : इक्जैक्टली !

[विराम।]

दूसरा युवक : मगर मुझे बड़ा अजीब लगा।

पहला युवक : मुझे अब तक बड़ा अजीब लग रहा है।

पुरुष : यह पहला मौका था न, तभी···।

पहला युवक : मैंने उनके सारे सवालों के जवाब दिए।

दूसरा युवक : मुझे सारे जवाब बिल्कुल जबानी याद थे।

पहला युवक : मुझे तो सारे सवालात पहले से ही मालूम थे।

पुरुष : ऐसे ही होता है।

दूसरा युवक : क्या बकता है ?

पहला युवक : बेकार !

दूसरा युवक : क्या हमें यहाँ इन्तज़ार करना होगा ?

पहला युवक : ऐसा कुछ कहा तो नहीं गया। इससे पूछा जाए···

दूसरा युवक : आप पूछिए।

पहला युवक : आप ही पूछिए ना !

दूसरा युवक : नहीं आप···।

पुरुष : अजी, आप-आप में गाड़ी छूट जाएगी।

पहला युवक : आपको यहाँ रुकने के लिए कहा गया ?

पुरुष : मुझे ?

दूसरा युवक : आप भी इंटरव्यू दे आए हैं ?

पुरुष : हाँ, देता रहा हूँ, करीब ग्यारह सालों से।

दूसरा युवक : मेरा मतलब इस इंटरव्यू से है।

पुरुष : अब मैं इंटरव्यू नहीं देता। आप शौक से कह सकते हैं, मैं बुलाया नहीं जाता। ओवर एज। पर मुझे भाग्य में विश्वास है···एक ज्योतिषी ने लिखकर दिया है—'ओवर एज के बावजूद एक दिन आप नौकरी में रख लिए जाएँगे।' आपको यकीन हो या ना, उसने बता रखा है···जब राहु की दशा खत्म होकर सूर्य अपने घर से निकलकर दाएँ वाले घर में प्रवेश करेगा तो एक दिन अचानक ऐसा होगा कि इंटरव्यू में सारे कैंडीडेट जब रिजेक्ट कर दिए जाएँगे तो बिना इंटरव्यू के मैं रख लिया जाऊँगा।

पहला युवक : वाह !

पुरुष : अजी, मुझे सब रहस्य मालूम है। मसलन, मुझे यहाँ तक पता है—'आपसे पहला सवाल यह पूछा गया होगा कि आपके पिता क्या हैं ?'

दोनों : दैट्स राइट !

पुरुष : यह भी पूछा गया होगा—आप शादीशुदा हैं या···?

पहला युवक : यह तो एप्लीकेशन फार्म में बता दिया गया है।

दूसरा युवक : अनमैरिड !

पुरुष : देखिए ना, एप्लीकेशन फार्म कोई नहीं पढ़ता। न डिग्रियों को देखा जाता है न डिप्लोमे को। जी हाँ। और यह भी पूछा गया होगा—'आपके जीवन का लक्ष्य क्या है ?'

पहला युवक : जी हाँ, मैंने बताया—'भारत का एक आदर्श नागरिक !'

दूसरा युवक : यही उत्तर तो मैंने भी दिया।

पुरुष : बिल्कुल ! इससे बढ़कर आदर्श उत्तर और क्या हो सकता है ? सुनिए, यह भी पूछा गया होगा, कि आप क्रांति में विश्वास रखते हैं या सुधार में ?

पहला युवक : जी, सुधार में···यहाँ तक कि मैंने सर्वोदय का नाम लिया।

दूसरा युवक : मैंने पालियामेंट्री डिमोक्रेसी कहा।

पुरुष : देखिए ना, फिर आप लोगों को धक्का देकर क्यों निकाला गया ?

पहला युवक : देखिए महाशय जी, आपने कहा था, यह धक्के वाली बात आप कभी नहीं कहेंगे।

दूसरा युवक : ये हमारी निजी बातें हैं। और दरअसल धक्का तो किसी ने नहीं दिया।

पहला युवक : बिल्कुल।

पुरुष : अजी···मैं अपनी बात कह रहा हूँ—ऐसा बार-बार महसूस हुआ कि किसी ने गर्दन चाँपकर बेरहमी से धक्का दिया।

दूसरा युवक : पता नहीं।

[विराम।]

पहला युवक : अब चलना चाहिए।

दूसरा युवक : गुडबाई !

पहला युवक : आप नहीं चलेंगे ?

दूसरा युवक : चलिए, मैं आता हूँ।

[पहला युवक बाएँ दरवाजे पर जाता है और भयभीत पीछे मुड़ता है।]

दूसरा युवक : क्या हुआ ? बात क्या है ?

पहला युवक : मुझे अजीब डर लगा···अजीब भयानक···डरावना !

दूसरा युवक : क्या ?

दूसरा युवक : मैं कुछ बयान नहीं कर सकता।

पुरुष : आप तो इस कदर काँप रहे हैं।

पहला युवक : इधर जाना खतरनाक है।

[पहला युवक बेंच पर जा बैठता है।]

पुरुष : अजी मैं देखता हूँ।

[उठकर जाता है।]

पुरुष : अरे···कमाल है···इधर तो ऐसा कुछ भी नहीं। बाहर बरामदा है···बरामदे के बाहर लान है। लान के ऊपर नीला आसमान···लान के चारों ओर फूल-पौधों के पेड़ पर दो कौए बैठे मजे से काँव-काँव कर रहे हैं। मेरा ख्याल है, यह मिस्टर एक्स 'पेरानौइया' के मरीज़ हैं।

पहला युवक : शटअप। आई एम नॉट मिस्टर एक्स !

पुरुष : अच्छा 'वाई' सही।

पहला युवक : कीप क्वायट !

पुरुष : अच्छा-अच्छा, मिस्टर 'ज़ेड' सही।

पहला युवक : आई से, शटअप !

[सन्नाटा।]

पुरुष : मिस्टर आप ही देख लीजिए···यह तो खामखा मुझ पर लाल-पीले हो रहे हैं।

पहला युवक : अगर तुम सामने पड़ गए होते तो यहाँ बेहोश गिरते।

दूसरा युवक : ऐसा !

पहला युवक : हाँ-हाँ, ऐसा।

पुरुष : अजी वहम है इनका···वही पेरानौइया।

पहला युवक : तुम चुप रहते हो या नहीं !

पुरुष : तो आपसे तुम पर आ गए। सच है, डर इंसान को करीब ला देता है। यकीन रखिए, मैं भाषण नहीं दूँगा।

[पहला युवक भयभीत है।]

पुरुष : जाइए साहब, आप देखिए, वरना इनका वहम दूर न होगा। जाइए ना, डरते क्यों हैं ?

दूसरा युवक : अजी कैसा डर···मैं एन० सी० सी० में कैप्टन रहा हूँ।

पुरुष : शाबाश ! क्विक मार्च···लेफ्ट-राइट···लेफ्ट···।

पहला युवक : बंद करो मज़ाक !

[दूसरा युवक दरवाज़े पर बढ़ता है। वह जैसे आहत हो चीख पड़ता है।]

पुरुष : अरे !

दूसरा युवक : (भयभीत) हू हू हू हू हू···हू···!

पहला युवक : (चीखता है) पुलिस···पुलिस !

पुरुष : (सँभालता है) आइए···आइए···यहाँ बैठिए···। बहुत चोट लग गई। लीजिए रूमाल से बांध लीजिए।

पहला युवक : किस चीज़ से मारा ?

दूसरा युवक : लोहे के रॉड से···।

पुरुष : लोहे के रॉड से ? पर मैंने नहीं देखा।

पहला युवक : तुम अन्धे हो।

पुरुष : हो सकता है।

पहला युवक : अब जाओ तुम !

पुरुष : क्यों नहीं···क्यों नहीं। (**सहसा**) पर मैं किसी के कहने से क्यों जाऊँ ? मैं एक आज़ाद इन्सान हूँ। मैं किसी का नौकर नहीं।

पहला युवक : अच्छा, आप अपनी ही खुशी से जाइए !

पुरुष : मेरी खुशी मेरी है।

दूसरा युवक : (**चीखता है**) तो खुदकुशी करो ना !

पुरुष : वाह वाह वाह ! मुझे अभी नौकरी लेनी है।

पहला युवक : आप तो किसी के नौकर नहीं।

पुरुष : वह मेरी खुशी है···बल्कि मेरी आज़ादी है···मैं चाहूँगा तभी नौकरी करूँगा। आप नहीं समझे। मेरी खुशी···मेरा चाहना···मेरी आज़ादी (**सहसा**) ओह, आपको बहुत दर्द हो रहा है। मैं कहता हूँ, यह दर्द आपके न चाहने पर मुनहसर करता है। आप न चाहें तो यह दर्द नहीं होगा।

दूसरा युवक : आपने देखा था···कितने लोग थे ?

पहला युवक : तादाद नहीं गिन पाया। कित्ते लोग थे ?

दूसरा युवक : सिर्फ कुछ शक्लें देखीं···पहचानना चाहा तभी यह चोट···।

पहला युवक : किसी ने बाकायदा मारा ?

दूसरा युवक : कुछ नहीं कह सकता···बस्स।

पहला युवक : कित्ता अजीब है !

पुरुष : अजी, लोग कहेंगे यह बच्चों की कहानियाँ हैं···और हँसेंगे ! (**विराम**) मगर हाँ, मैं कहे देता हूँ—मैं अब तक विचलित नहीं। मुझे भरोसा है, यकीन है, विश्वास है—दिस इज़ माई फेथ···जो भाग्य में होता है वही होता है। इस क्षण आपको एक दैवी चोट पहले से निश्चित थी···।

दूसरा युवक : दैवी नहीं···हाड़-मांस के लोग। जाकर देखते क्यों नहीं ?

पुरुष : मैं किसी का गुलाम नहीं। जाऊँगा तो अपनी इच्छा से—न जाऊँगा तो भी अपनी मर्ज़ी से। यहाँ मैं अपनी मर्ज़ी से ही आया था। आप लोग यहाँ बुलाने से आए थे। मतलब समझ लीजिए, हाँ।

[सन्नाटा।]

पहला युवक : आपकी वह इच्छा कब होगी ?

पुरुष : मेरी मर्ज़ी···जब मैं चाहूँगा।

पहला युवक : कब चाहेंगे ?

पुरुष : दिस इज़ नन आफ़ योर बिज़नेस !

दूसरा युवक : डैम···!

[सन्नाटा।]

पुरुष : कोई मुझसे अगर यह पूछता है कि मेरी इच्छा क्या है⋯कब होगी—मैं इसे अपनी निजी स्वतन्त्रता पर सरासर आक्रमण समझता हूँ।

[दोनों युवक एक किनारे खड़े हो गए हैं। पुरुष फिर अपनी बेंच पर जा बैठता है।]

पहला युवक : मैं अपने घर से बिल्कुल ठीक वक्त पर चला था। मुझे ऐसा कोई अंदेशा नहीं था।

दूसरा युवक : मैं अपनी घड़ी देखकर चला था और सीधे यहीं आया।

पहला युवक : न मेरी किसी से दुश्मनी है न दोस्ती।

दूसरा युवक : मुझे तब तक अपने जीवन का लक्ष्य याद था।

पहला युवक : मुझे अब सब कुछ धुंधला नज़र आ रहा है।

दूसरा युवक : मुझे सीधे डाक्टर के पास जाना होगा।

पहला युवक : क्या हम पुलिस को फोन नहीं कर सकते?

दूसरा युवक : हमें यहाँ चारों ओर से काट दिया गया है।

पहला युवक : और यह महाशय अपने को आज़ाद कहते हैं!

पुरुष : देखिए, आज़ादी एक मानसिक सत्य है। अगर मैं आपके कहने में आता तो अपनी आज़ादी से हाथ धो बैठता।

पहला युवक : क्या हम तीनों मिलकर मुकाबिला नहीं कर सकते?

पुरुष : किसी से मिलने के मतलब हैं अपने व्यक्तित्व की विशेषता खोना।

दूसरा युवक : भाड़ में जाओ!

पुरुष : किसी के कहने से क्यों जाऊँ?

[दाएँ दरवाज़े से ठहाका मारकर हँसती हुई पहली युवती का प्रवेश।]

पुरुष : अरे, हँसना तो बन्द करो। आजकल की लड़कियाँ भी कमाल हैं!

पहला युवक : अरे रे रे!

दूसरा युवक : अजीब है!

पहली युवती : पूछते हैं—'आप किसी जगह टिकती क्यों नहीं?' मैंने वह जवाब दिया कि साले मुँह देखते रह गए।

पहला युवक : क्या जवाब दिया?

पहली युवती : मुँहतोड़ जवाब!

दूसरा युवक : बताइए न!

पहली युवती : बेशर्म, हर लड़की कॉल गर्ल नहीं हो सकती।

पुरुष : मगर इसके पहले उन्होंने पूछा होगा, 'आपका एक्सपीरियेंस क्या है?'

पहली युवती : मेरा एक्सपीरियेंस यह है कि डिग्री और योग्यता कुछ नहीं⋯असल चीज़ है⋯कोई कितना झुक सकता है⋯कोई कितना बिक सकता है।

पहला युवक : आपमें कितना साहस है?

दूसरा युवक : बड़ी बोल्ड है।

पहली युवती : इत्ती चापलूसी की जरूरत मुझे नहीं। ऐसा एक दिन अपने आप हो जाना पड़ता है।

पहला युवक : मगर तब नौकरी ?

दूसरा युवक : भविष्य ?

पहली युवती : मुझे नौकरी और भविष्य नहीं, परिवर्तन चाहिए।···नहीं समझे ? वे लोग भी नहीं समझे···इसे कोई नहीं समझता। घर में अपनी बोरियत से बचने के लिए मैंने एम० ए०, बी० टी०, बी० एड०, फिर लाइब्रेरी डिप्लोमा किया। नौकरियाँ कीं···लेकिन एक से दूसरे में कोई फर्क नहीं। जैसे बी० ए० और एम० ए० में कोई फर्क नहीं। जैसे एक पुरुष से दूसरे पुरुष में कोई फर्क नहीं···जैसे एक नौकरी से दूसरी नौकरी में कोई फर्क नहीं। और उदाहरण दूं ?

पुरुष : हाँ, चुप रहने से तो अच्छा ही है, आप बोलती रहें। आखिर आप लोगों के जीवन का मात्र लक्ष्य है—दूसरों को प्रभावित करना, बस !

पहली युवती : यह बौड़म आदमी कौन है ?

[दोनों युवक हंसने लगते हैं।]

पहला युवक : इसे गुस्सा नहीं आया।

दूसरा युवक : कैसा नार्मल आदमी है !

पुरुष : हाँ-हाँ, आप लोग कुछ भी कहें, कुछ भी करें, मैं अपनी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को हाथ से जाने नहीं दूंगा। याद रखिए, स्वतन्त्रता मेरे लिए धर्म है।

पहली युवती : अर्थात्, धर्म तुम्हारे लिए राजनीति है।

पुरुष : यह आपकी स्वतन्त्रता है।

पहली युवती : स्वतन्त्रता मेरे लिए महज राजनीति है।

पुरुष : कोई और बात कीजिए।

पहली युवती : और बातें महज मौसम की हो सकती हैं।

पुरुष : मौसम भगवान की माया है।

पहला युवक : और इस कमरे का वातावरण ?

पुरुष : यहाँ उसकी इच्छा के बिना एक पत्ता नहीं हिलता।

[दोनों युवक युवती से अलग पूरी स्थिति चुपचाप बताते हैं। युवती पूरी स्थिति को समझती है।]

पुरुष : मुझे पता है, आप लोग चुपचाप क्या खिचड़ी पका रहे हैं। मुझ पर इसका कोई असर नहीं। मेरी जो मर्जी होगी वही करूंगा।

पहली युवती : आपकी मर्जी या इच्छा का मालिक कौन है, मेरा मतलब इसे आपके भीतर कौन पैदा करता है ?

पुरुष : **(हंसता है)** देखिए आप मुझे बातों में फँसाने की कोशिश मत कीजिए···मैं सारा चक्कर समझता हूँ। आप यही साबित करना चाहती हैं न कि मनुष्य की इच्छा का सम्बन्ध उसकी बाहरी परिस्थितियों से—ऑब्जेक्टिव रियल्टी से है ?

पहली युवती : नहीं।

पुरुष : भाग्य में ही कर्म है और कर्म में ही भाग्य है।

पहली युवती : बौड़म साला !

पुरुष : देखिए, यह पहले से निश्चित था कि हम लोग यहाँ इस तरह इकट्ठा होंगे और आप मुझे अपशब्द कहेंगी।

पहला युवक : फिर आप स्वतन्त्र कहाँ हैं···अगर सब कुछ इस तरह पहले से निश्चित है?

पुरुष : यही तो बात है जनाब, तभी मैं स्वतन्त्र हूँ।

दूसरा युवक : बड़ा अजीब है !

पहला युवक : इसका अटूट विश्वास देखो।

पहली युवती : विश्वास नहीं, अन्धविश्वास !

पुरुष : छोड़िए, इन बातों में क्या रखा है ! यह बताइए, और क्या-क्या पूछा गया आपसे ?

पहली युवती : आप यहाँ खड़े होइए फिर बताऊँ···चलिए उधर।

[पहली युवती बेंच पर बैठ जाती है और वह जैसे पुरुष से इंटरव्यू लेने लगती है।]

पहली युवती : आपका नाम ?

पुरुष : लिखा है, पढ़ लीजिए।

पहली युवती : अपना नाम बताने में शर्माते हैं ?

पुरुष : ऐसा ही समझ लीजिए।

पहली युवती : आपकी उमर ?

पुरुष : वह भी लिखा है—कालम नम्बर तीन में।

पहली युवती : शादी के बारे में आपके क्या ख्यालात हैं ?

पुरुष : शादी अच्छी चीज है, इससे इन्सान की सेहत ठीक रहती है।

पहली युवती : आप पहले टीचर थे···फिर एक एडवरटाइजिंग फर्म में थे···फिर कुछ दिनों बेकार रहे···फिर रिसर्च करने लगे···आपके रिसर्च का सब्जेक्ट क्या था ?

पुरुष : चीन का प्राचीन इतिहास···।

पहली युवती : ह्वाट नानसेन्स···यह सब्जेक्ट आपको किसने दिया ?

पुरुष : बस, मिल ही गया।

पहली युवती : अच्छा हुआ आपने रिसर्च छोड़ दिया।

पुरुष : जी, उस टीचर से मेरी शादी हो गई, जो मेरा गाइड था।

[दोनों युवक हँसते हैं।]

पुरुष : देखिए, ये लोग ही-ही कर रहे हैं। मुझे शरम आती है।

पहली युवती : आर्डर···आर्डर···

पुरुष : बस···बस···खत्म !

पहला युवक : शी···शोर नहीं। वे लोग दरवाजे पर झाँक रहे हैं !

दूसरा युवक : (भयभीत) सावधान ! वे लोग कमरे में घुस आ सकते हैं। मत देखो उधर। आओ, हम लोग दीवार की ओर···

[दोनों दीवार की ओर मुँह करके चुपचाप खड़े हो जाते हैं।]

पहली युवती : कमाल है, आपको मेरे सारे सवालात मालूम हैं !
पुरुष : (भयभीत) शी !···

[पहली युवती हँसती है।]

तीनों : शी !!

[सन्नाटा]

पुरुष : (सहसा) लेकिन हमें···इस तरह चुप नहीं रहना चाहिए···।
दोनों : शी !!

[पहली युवती बाएँ दरवाज़े पर झाँकती है।]

पहली युवती : हाँ-हाँ, मैंने भी देखा।
तीनों : कौन हैं वे ? क्या हैं ?
पहली युवती : वे लोग बुला रहे हैं मुझे !
पहला युवक : नहीं-नहीं···नहीं !
दूसरा युवक : मत जाओ···वे हत्यारे हैं !
पुरुष : शी !···चुप रहो। वे शायद वही लोग हैं जो हत्या की राजनीति में विश्वास करते हैं।
तीनों : शी !!

[सन्नाटा]

पहली युवती : ओह, तुम भी इत्ते डर गए ? कहाँ गई तुम्हारी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता ?
पुरुष : इस समय यही है मेरी इच्छा।
पहली युवती : इच्छा से डरा भी जाता है ?
पहला युवक : (धीरे से) शी !!···कोई झाँक रहा है !
दूसरा युवक : उधर मत देखो।
पहली युवती : वे इशारे कर रहे हैं।

[सन्नाटा। भीतर से बेतरह रोती हुई दूसरी युवती आती है।]

सभी : अरे···क्या हुआ ?
पुरुष : मेरा ख्याल है, पहले इन्हें खूब रो लेने दिया जाए।
पहली युवती : बको मत !
पुरुष : आप किसी की आजादी पे डाका डालना चाहती हैं ?
पहली युवती : प्लीज सुनिए तो···शांत होइए···डोंट बी चाइल्ड।

दूसरी युवती : उन लोगों ने मेरा अपमान किया। जो-जो कहा, मानती गई, फिर भी !

पहला युवक : (आपस में) क्या-क्या कहा होगा ?

दूसरा युवक : हाँ, क्या कहा होगा ?

दूसरी युवती : मैंने किस-किससे दोस्ती की। उनसे सिफारिश कराई।

पहली युवती : अब सिर्फ एक ही चीज़ है—भय।

पुरुष : सबकी आज़ादी लूटना चाहती हो !

पहली युवती : कैसी आज़ादी ? बताओ यहाँ कौन है आज़ाद ?

पुरुष : कौन आज़ाद नहीं है ?

पहली युवती : उल्लू के पट्ठे ! दिन-रात चारित्रिक पतन देखते-देखते जड़ होते जा रहे हैं···यही है हमारी आज़ादी !

दोनों युवक : शी !!

[सन्नाटा]

पहली युवती : बन्द करो रोना !

दूसरी युवती : मेरी माँ विधवा है···मेरे दो छोटे भाई हैं। मेरे लिए नौकरी जीवन-मरण का सवाल है।

पहली युवती : पर बुनियादी सवाल कुछ और है—तुम समझती क्यों नहीं ?

दूसरी युवती : मेरी समझ में और कुछ नहीं आता।

पहली युवती : हमें नौकरी और शादी के अलावा और कुछ बताया नहीं गया।

[सन्नाटा]

पुरुष : आपने उन्हें बताया—शादी अच्छी चीज़ है, इससे सेहत अच्छी रहती है—इस पर उन्होंने क्या कहा ?

पहली युवती : आपको तो सब मालूम है।

पुरुष : मुझे सिर्फ आपके जवाब मालूम हैं—उनके रिएक्शन नहीं।

पहली युवती : उन्होंने कहा—'देखिए न, हम सब शादीशुदा हैं, पर हमारी सेहत नहीं···किसी को ब्लड प्रेशर है, किसी को हार्ट ट्रबल, किसी को पेप्टिक अल्सर।' मैंने कहा—'आप सब बेईमान हैं—इसीलिए बीमार हैं।'

पुरुष : आपने ऐसे ऊटपटाँग उत्तर दिए तभी इसकी यह दशा हुई। आपका गुस्सा उन्होंने इस गरीब लड़की पर उतारा।

पहली युवती : तुम हमें लड़ाना चाहते हो।

पुरुष : पर यह हकीकत है।

दूसरी युवती : वे लोग बेहद गुस्से में थे।

पहली युवती : तुमने चप्पल क्यों नहीं दे मारी ?

दूसरी युवती : तूने आग लगाई, वरना मुझे नौकरी मिल जाती !

पहली युवती : झूठ। यह इन्टरव्यू फार्स था !

दूसरी युवती : नहीं, नहीं।

पहली युवती : नौकरी पहले ही किसी को दे दी गई है।

दूसरी युवती : चुड़ैल···!

[दूसरी युवती पहली युवती पर टूट पड़ती है और पागलों की तरह उसे नोचने लगती है।]

पहली युवती : (अपने को बचाती हुई) मारो, मारो, इस दगाबाज़ को !

[दोनों युवक पुरुष पर पिल पड़ते हैं। चीख और शोर से सारा वातावरण भर जाता है। तभी बाएँ दरवाज़े पर से कई मुखों से एक भयानक स्वर—'हप्प' फूटता है। सब भयभीत मूर्तिवत् खड़े रह जाते हैं।]

पुरुष : हमें ईश्वर को याद करना चाहिए। सिर्फ वही हमें बचा सकता है।

पहला युवक : ईश्वर क्या है ?

दूसरा युवक : हमने एक कैलेंडर में उसका चित्र देखा था।

पुरुष : उसके असंख्य हाथ और मुख हैं।

पहली युवती : तभी यहाँ भोजन-वस्त्र का अकाल है।

दूसरी युवती : सुना है, डाइरेक्टर जनरल का अपना कोई कैंडीडेट नहीं था, इसीलिए यह जगह फिर से एडवरटाइज़ की जाएगी।

पहली युवती : और फिर वही फार्स होगा। जिसमें होंगे दो हीरो, दो हीरोइन···और और एक विलन···

पुरुष : मुझे विलन कहती हैं ?

पहली युवती : नहीं जनाब, आप तो युवती हैं···विलन मैं हूँ।

[दोनों युवक हँसते हैं, पुरुष 'शी !' करता है। सब चुप।]

पहली युवती : पर डरने से क्या होगा ?

दूसरी युवती तुम्हें क्या,···कोई जिम्मेदारी नहीं···कोई कमी नहीं। मैं भी तुम्हारी तरह खूबसूरत और स्मार्ट होती तो···।

पहली युवती : अब तक आत्महत्या कर चुकी होतीं।

पहला युवक : शी !! धीरे-धीरे।

[सन्नाटा]

दूसरी युवती : दस रुपये उधार लिए···यह जूड़ा बनवाने में···दो घंटे तक सैलून की क्यू में···। टैक्सी में आई···ताकि मेकअप न बिगड़े।

पहली युवती : किसने कहा यह सब करने को ?

दूसरी युवती : माँ ने कल से ही व्रत रखा है।

पुरुष : इन्सान को आस्थावान होना ही चाहिए।

पहला युवक : कद्दू होना चाहिए।

दूसरा युवक : गधा होना चाहिए।

पहली युवती : बन्दूक, पिस्तौल···डैगर होना चाहिए !

दूसरी युवती : प्लीज़, मुझे ज़रा बाहर तक पहुँचा आइए।

[किसी का साहस नहीं होता। दूसरी युवती अकेली बाहर जाने लगती है, सहसा चीखकर लौटती है।]

सभी : क्या देखा ? क्या था ? कैसे लोग थे ? जानवर ? कुछ लोग ?

पहली युवती : खामोश ! उसका कोई परिचय नहीं।

पुरुष : तुमने देखा है ?

पहली युवती : हम सबने देखा है···हर रोज़ देखते हैं, दफ्तर, अस्पताल, स्कूल, कालेजों से लेकर मन्दिर, गुरुद्वारे और अदालतों तक।

पहला युवक : क्या ?

दूसरा युवक : क्या ?

पुरुष : शी ! !

दूसरी युवती : शी ! !

पहली युवती : एक सर्वग्रासी निराशा···।

[ठहाका मारकर हँस पड़ती है। शेष सभी भयभीत हैं। दोनों युवक और दूसरी युवती एक किनारे खड़े होकर—]

पहला युवक : इसे ज़रा भी डर नहीं।

दूसरा युवक : बड़ी बहादुर है।

दूसरी युवती : खाक है ! शो आफ़ करती है।

पहला युवक : इसने कितनी नौकरियाँ छोड़ी हैं।

दूसरा युवक : कितनी पढ़ी-लिखी है।

दूसरी युवती : कितने मर्द भी छोड़े हैं।

[पुरुष भी आकर इस मंडली में शामिल होता है।]

पुरुष : जी, और क्या हाल-चाल हैं ?

[पहली युवती भी आती है।]

पहली युवती : इस कदर चुप क्यों ? इस शून्य को भरने के लिए बातों से बेहतर चीज और क्या हो सकती है ?

पहला युवक : कित्ता गन्दा वक्त आ गया है !

दूसरा युवक : लोगों का कित्ता पतन हो रहा है।

पहली युवती : कोई और बात नहीं कर सकते ?

[सन्नाटा]

दूसरी युवती : यह नौकरी तेरी वजह से गई।

पुरुष : यही ख्याल मेरा भी है।
पहली युवती : कोई और ख्याल ?

[विराम।]

पहला युवक : मेरे पाँव काँप रहे हैं।
दूसरा युवक : आई एम इक्ज़ास्टेड।
पुरुष : मैंने फिर भी अपनी विशेषता नहीं खोई है।
दूसरी युवती : फेड अप···बोर !

[सब एक-एक कर उसी बेंच पर बैठ जाते हैं।]

पहला युवक : वक्त काटने के लिए यहाँ सिगरेट भी नहीं।
दूसरा युवक : आज सुबह से सिगरेट नहीं पी।
पहली युवती : चलिए···बारी-बारी से कोई कहानी कहिए।
पुरुष : यही अच्छा रहेगा।
पहला युवक : मुझे कोई कहानी नहीं आती !
दूसरा युवक : मुझे भी नहीं।
पुरुष : मुझे आती है···पर इच्छा नहीं।
पहली युवती : आप सुनाइए।
दूसरी युवती : कोई याद नहीं।

[सन्नाटा]

पहली युवती : अच्छा, मैं सुनाती हूँ—ध्यान से सुनिए !
पहला युवक : मगर ज़ोर-ज़ोर से नहीं !
दूसरा युवक : हाँ, आहिस्ते !

[विराम]

पहली युवती : सुनिए। एक थे गांधीजी !···ठीक से बैठिए···हिलिए-डुलिए नहीं। हाँ तो, एक थे गांधीजी। आप मुँह बन्द कीजिए। इधर-उधर क्या देखते हैं ? सुनिए ···गौर से सुनिए···एक थे गांधीजी। खुजलाइए नहीं···बटन फिर से बन्द कर लीजिएगा। हाँ, तो एक थे गांधीजी। आप टाँग क्यों हिलाते हैं। चुपचाप बैठिए। हाँ तो भइया, एक थे गांधीजी ! बैग क्यों खोल रही हैं ? मेकअप ठीक तो है। चुपचाप सुनिए। हाँ तो एक थे गांधीजी !···खाँसिए नहीं···खाँसिए नहीं। ध्यान से सुनिए। हाँ तो एक थे गांधीजी। लीजिए, आप तो कान खुजलाने लगे ! मुझे गुस्से से क्यों देखते हैं ? कहानी तो सुना रही हूँ।
पुरुष : तो सुनाइए ना !
पहली युवती : सुनते तो हैं नहीं। सुनिए। एक थे गांधीजी।
पहला युवक : आगे बढ़िए ना।

दूसरा युवक : एक थे गांधीजी···एक थे गांधीजी !

पहली युवती : आप लोग कहानी को आगे बढ़ने ही नहीं देते !

दूसरी युवती : हमने क्या किया ?

पहली युवती : अच्छा सुनिए···सुनिए। एक थे गांधीजी···देखिए, आप उधर देखने लगे। उधर क्या देख रहे हैं ?

पहला युवक : तो आप सुनाइए ना।

पहली युवती : किसे सुनाऊँ ? कोई सुनने को तैयार भी है ?

दूसरा युवक : कहानी कभी आगे भी बढ़ती है ?

पुरुष : वही एक रट···एक थे गांधीजी···एक थे गांधीजी !

दूसरी युवती : एक ही बात सुनते-सुनते कान पक गए। बोर !

पहली युवती : अच्छा-अच्छा···सुनिए। ध्यान से सुनिएगा तो कहानी आगे ज़रूर बढ़ेगी !

सभी : सुनाइए···सुनाइए।

पहली युवती : हाँ, तो भइया एक थे गांधीजी। देखिए आप जम्हाई लेने लगे।

पहला युवक : आपसे मतलब ? आप कहानी सुनाइए ना।

पहली युवती : कहानी से मतलब है इन बातों का।

दूसरा युवक : बकवास ! इन बातों से कहानी का क्या मतलब ?

पहली युवती : तब तक कहानी आगे बढ़ेगी ही नहीं।

पुरुष : अच्छा···अच्छा, अब बिल्कुल कहीं कुछ नहीं होगा। सुनाइए।

पहली युवती : हाँ, तो भइया, मैं सुना रही थी···कहाँ तक सुनाया था ?

पहला युवक : (**गुस्से में**) एक थे गांधीजी !

पहली युवती : आगे कुछ नहीं सुनाया ? कमाल है···ऐसा क्यों ?

पुरुष : उल्लू बना रही हैं ?

दूसरी युवती : यह फर्स्ट क्लास बोर है !

[सब बातों में लग जाते हैं।]

पहली युवती : देखिए···देखिए···आप लोग तो गुस्सा करने लगे फिज़ूल बातों पर, कहानी आगे कैसे बढ़े ? आपस में चख-चख करने लगे, फिर कहानी आगे कैसे बढ़े ?

पुरुष : (**गुस्से में**) तो आगे कहिए ना।

पहली युवती : सुनिए। एक थे गांधीजी।···देखिए आप लोग नौकरी की बातें सोचने लगे। आपका ध्यान न जाने किधर है। आप किस कदर डरे हुए हैं।

सभी : आपसे मतलब ? हम भीतर कुछ भी सोचें !

पहली युवती : आप सोचें कुछ और···और उम्मीद रखें कि कहानी आगे बढ़े ! कहानी हर्गिज़ आगे नहीं बढ़ सकती।

दूसरी युवती : बन्द करो अपनी मनहूस कहानी।

[सब उठ जाते हैं ।]

पहली युवती : कहानी आगे बढ़ती ही नहीं तो मैं क्या करूँ ?

पुरुष : कहानी आगे नहीं बढ़ती ? हम आज़ाद हुए, हमने इतनी तरक्की की···

पहली युवती : पर कहानी आगे कहाँ बढ़ी ?

पुरुष : दिमाग खराब है ।

[सन्नाटा]

पहला युवक : शायद वजह हम हैं, कहानी आगे नहीं बढ़ती ।

दूसरा युवक : क्यों ?

पहली युवती : कहानी तब बढ़ेगी ना, जब कुछ होगा ।

पुरुष : कुछ हुआ ही नहीं ?

पहली युवती : बस—एक थे गांधी जी ।

पहला युवक : इस तरह यहाँ बैठना ग़ैर-मुमकिन है ।

दूसरा युवक : चलिए, सुनाइए···

दूसरी युवती : मगर कहानी बढ़नी चाहिए, वरना···।

पुरुष : मगर वह कहानी नहीं, दूसरी···।

पहला युवक : और धीरे-धीरे ।

दूसरा युवक : शी ! ! ···किसी ने झाँककर हमें देखा है ।

[सन्नाटा । लोग कहानी शुरू करने के लिए इशारे करते हैं । पहली युवती निःशब्द कहानी सुनाने लगती है ।]

पुरुष : यह क्या तमाशा ?

पहली युवती : सुना तो रही हूँ ।

दूसरी युवती : अपना सर !

पहली युवती : तो बोलकर सुनाऊँ ? सुनिए···ठीक से बैठ जाइए···बिल्कुल हिलिए-डुलिए नहीं । चुपचाप ।···हाँ तो एक थे गांधीजी । सुन रहे हैं ना, एक थे गांधीजी । हाँ तो एक थे गांधीजी । थे, तब यह तो समझ गए । अब आगे सुनिए···सुन रहे हैं ना ? हाँ तो एक थे गांधीजी । भाई थे एक गांधीजी । मेरा मतलब एक थे गांधीजी । भाई, थे एक गांधीजी । मेरा मतलब एक गांधीजी थे । अब आगे यह हुआ कि··· वह थे···और थे । गांधीजी थे । भाई थे·· इसके आगे सुनिए । एक थे गांधीजी । थे, यही तो कह रही हूँ । हाँ, तो एक थे गांधीजी ।

पहला युवक : (चीखता है) आगे क्या हुआ ?

पहली युवती : यही कि एक थे गांधीजी ?

दूसरा युवक : वह तो सुन लिया । आगे ?

पहली युवती : आगे, एक थे गांधीजी···अब बताइए मैं क्या करूँ ?

दूसरी युवती : मैं तेरा सिर तोड़ दूँगी !

पुरुष : यह पागल है। मारो इसे !

सब उस पर टूट पड़ते हैं। युवती गिर गई है। सब दूर खड़े रह गए हैं और क्रोध से लोगों की साँसें फूल रही हैं।

पहली युवती : **(उठती हुई)** आपके जीवन के लक्ष्य हैं नौकरी···दफ्तरों में बुड्ढे होने की तनखाह···सारे सवालातों के जवाब रहे हैं···अपने अलावा किसी और से मतलब नहीं। सब भारत के आदर्श नागरिक···सुधार में विश्वास। भारत, संसार के नक्शे में कहाँ है, यह पता नहीं। उसे टटोलकर ढूंढना चाहते हैं। और जब धक्के दिए जाते हैं···तो वही ईश्वर याद आता है···फिर भी चाहते हैं, कहानी आगे बढ़े। कहानी होना नहीं चाहते···कहानी सुनना चाहते हैं। कहानी बढ़ाना नहीं चाहते···बस, कहानी अपने आप बढ़ जाए ! कहानी सुनकर मन बहलाना चाहते हैं···शून्य को भरने के लिए इन्हें कहानी चाहिए···पर कहानी आगे क्यों नहीं बढ़ती···यह नहीं पूछते···! पैंट्स की क्रीज़ न खराब हो जाए···चाहे ये खुद खराब हो जाएँ···चाहे धक्के खा-खाकर···।

सभी : चुप रहो।

सभी : शी ! शी !!

पहली युवती : यहाँ दिन-रात, हमेशा, नैतिक पतन देखते-देखते एक सर्वग्रासी निराशा हमें अपनी ओर खींचे लिए चली जा रही है···सुनो···सुनो आगे की कहानी··· सुनो।

[बाएँ दरवाजे पर सहसा कुछ तने हुए हाथ दिखाई देते हैं। उन हाथों में—डँगर, भाले, बन्दूक, तलवार, लोहे के रॉड, छुरी आदि साधे हैं। भयभीत मस्त लोगों की नजरें उन तने हुए हाथों से जैसे चिपक जाती हैं। पुरुष के अलावा सभी न चाहते हुए भी उन्हीं हाथों की ओर खिंचने लगते हैं।

पुरुष : नहीं···नहीं···! मत जाओ उधर···वे हत्यारे हैं···रुको···रुको···!

[सब बढ़ रहे हैं। पुरुष, अंतिम पहले युवक को पकड़कर उधर जाने से रोकता है। पहला युवक उसे धक्के देता है। पुरुष फर्श पर गिर जाता है। सब चले जाते हैं। हाथ अदृश्य हो जाते हैं। पुरुष उठता है।

पुरुष : मेरा कोई कुछ नहीं कर सकता। मैं अब भी आज़ाद हूँ। मैं उन हाथों को चुनौती दे सकता हूँ। डाँट सकता हूँ। अबे हाथ ! आ निकल !···देखिए न, वे हाथ मुझसे डर गए। उनकी हिम्मत नहीं कि वे फिर इधर दिखाई दें।···मैं अब मज़े से बाहर जा सकता हूँ···मगर क्यों जाऊँ ? जब तक मेरी इच्छा न हो !···हो सकता है···भीतर मेरी ही नियुक्ति हो जाए। मैं अपने विश्वास पे अटल हूँ···

[बेंच पर आकर बैठता है और उन्हीं अखबारों को उलटने-पलटने लगता है।]

[धीरे-धीरे अँधेरा छा जाता है।]

फिर बताऊँगी

पात्र

मालती
शंकर
अफसर
शर्मा
त्यागी
मेहरोत्रा
रहमान
माला
प्रहलाद

[एक दफ्तर का बड़ा-सा कमरा, जिसमें अपनी-अपनी कुर्सियों पर सामने मेज पर फाइलें रखे लोग बैठे काम कर रहे हैं। मिस माला जैन टाइपराइटर पर टाइप के काम में लगी हैं! दाईं ओर अफसर के कमरे का दरवाज़ा दिख रहा है। बाईं ओर एक दूसरा दरवाज़ा है, जिधर से कैन्टीन जाया जाता है। सामने दाईं ओर चपरासी प्रहलाद स्टूल पर बैठा कोई किताब पढ़ रहा है।]

शर्मा : ओय, लो यह फाइल सबसे बड़े साहब के पास पहुँचाओ! ओय प्रहलाद!

प्रहलाद : **(अपने में मस्त)** वाह-वाह, क्या हिरोइन है! कैसा चकमा दिया। कमाल है। वाह, पढ़ी-लिखी औरत भी क्या चीज होती है!

शर्मा : भई, नावेल फिर पढ़ना···मुसीबत तो हमारी है।

त्यागी : अच्छा शर्मा जी, एक ही दिन क्लास लग जाने में यह हाल!

मेहरोत्रा : यहाँ तो तीन दिन से बराबर क्लास लग रहा है, मगर अपनी मस्ती में कोई फर्क नहीं।

[उठकर रैक पर से कोई फाइल ढूँढ़ने लगता है। और गा पड़ता है।]

रहमान : यार, बंद करो रेंकना। यहाँ गुस्सा चढ़ा है, इन्हें जवानी चढ़ रही है।··· फिल्म में क्यों नहीं चले जाते?

त्यागी : मिसेज मालती अपने को समझती क्या हैं?

प्रहलाद : (सहसा) अयँ? क्यों?···मुझे लगा, किसी ने पुकारा है।

शर्मा : जी हाँ, मगर आपके नावेल की हिरोइन ने नहीं। इस गरीब शर्मा ने···जिसने आज तक किसी औरत की परवाह नहीं की, आज जिसे ज़िन्दगी में पहली बार मिसेज़ मालती की डाँट सहनी पड़ी। लानत है यार!

मेहरोत्रा : यार, अपनी एडमिनिस्ट्रेटिव अफसर है। और खूबसूरत औरत है। इसमें बुरा क्या मानना! **(हँसता है)** यार, हँसो ना।

त्यागी : बेटे, एक दिन क्लास लग जाए तुम पे, तो पता चले।

[इस बीच चपरासी फाइल लेकर अफसर के पास से लौटता है।]

प्रहलाद : शर्मा जी, साहब ने बुलाया है।

शर्मा : साहब के भी भाषण सुनने पड़ेंगे अब? **(जाता है।)**

त्यागी : मिसेज़ मालती ए० ओ० हैं, मगर उन्हें अपनी हैसियत नहीं भूलनी चाहिए। हम क्लर्क हैं इसके मानी यह नहीं कि···

रहमान : आफिस का टाइम साढ़े नौ बजे है, मगर कौन आता है साढ़े नौ बजे ? बस में सफर करना पड़े तो मालूम हो जाए। पास में घर है मिसेज मालती का, सो ठुमकती हुई चली आती हैं साढ़े नौ बजे ।

प्रहलाद : बाबू लोग, कुछ चाय-शाय ले आऊँ ?

त्यागी : चाय ले जाकर मिसेज मालती के सिर पै पटक दो !

प्रहलाद : आज हुआ क्या ? आप लोग इतने नाराज हैं ।

शर्मा : (लौटता है) देखा ना, वही हुआ, साहब भी ए० ओ० साहिबा का पक्ष ले रहे हैं···यार, लानत है ।

रहमान : इसकी एक ही दवा है—स्ट्राइक ।

[प्रहलाद और मिस जैन के अलावा सभी लोग एक स्वर में—'ए० ओ० मुर्दाबाद', 'मिसेज मालती हाय-हाय', 'वर्कर्स यूनिटी जिन्दाबाद' । भीतर से दौड़ा हुआ अफसर आता है ।]

अफसर : आर्डर···आर्डर···खबरदार, अपनी-अपनी सीटों पै बैठिए ! खामोश ! जो कहना हो, लिखकर दीजिए। आप लोग इत्ती देर से दफ्तर आते हैं। दफ्तर में आकर चाय पीते हैं··· गप्पें लड़ाते हैं···ऊपर से स्ट्राइक की धमकी देते हैं ! आई वार्न यू···सावधान···!

त्यागी : सर, हमें सरासर परेशान किया जाता है ।

शर्मा : हम वक्त से ज्यादा काम करते हैं—ऊपर से हमारी बेइज्जती की जाती है ।

अफसर : क्यों मिस माला जैन, बात क्या है ?

माला : सर, मुझे पता नहीं ।

रहमान : (चिढ़ाता है) सर, मुझे पता नहीं !

[सब हँसते हैं ।]

अफसर : खामोश ! आप सब लोग नौकरी से हाथ धो बैठेंगे। आप सबकी नौकरियाँ टेम्परेरी हैं। बिना किसी नोटिस के यहाँ से बर्खास्त किए जा सकते हैं ।आई वार्न यू !

[तेजी से अपने कमरे में जाता है ।]

त्यागी : बड़ा आया नौकरी से हाथ धुलाने वाला ! हुँ !

शर्मा : जो हमसे टकराएगा, चूर-चूर हो जाएगा !

रहमान : आखिर हम भी इन्सान हैं। हमारी भी अपनी इज्जत है ।

मेहरोत्रा : मिस माला जैन, आपका क्या खयाल है ?

माला : प्लीज, मुझे अपना काम करने दीजिए ।

रहमान : हाँ क्यों नहीं ! इन पर क्रास थोड़े ही लगता है ! इनकी महज एक मुस्कान काफी है ।

[सब हँसते हैं ।]

माला : शुक्रिया ।

[टाइप करने लगती है । तभी सामने से ए० ओ० मिसेज़ मालती का प्रवेश ।]

मालती : मुझसे बोलिए, किसे क्या कहना है ?···अब बोलते क्यों नहीं ? पीठ पीछे किसी के गड़बड़ करना मुझे कतई पसन्द नहीं । जिसे जो कहना है, सामने बोले । दफ्तर में आने का एक निश्चित समय है । एक दिन हो, दो दिन हो, मगर जब लोग हर रोज़ दफ्तर देर से आएँ, इसे माफ करने का मतलब है···।

शर्मा : आपने कब माफ किया ? मैं आज···सिर्फ आज, महज़ बीस मिनट देरी से आया, आपने रजिस्टर अपने कमरे में मँगा लिया । दफ्तर खुलने से पहले ही जैसे मेरे नाम के आगे क्रास लगा दिया गया ।

मालती : यह सरासर गलत है । आप पिछले बारह दिनों से लगातार दफ्तर काफी देर से आते हैं । आज मैंने मजबूर होकर···।

त्यागी : सबकी अपनी-अपनी मजबूरियाँ होती हैं । जान-बूझकर कोई दफ्तर लेट नहीं आना चाहता । हमारी भी अपनी इज्ज़त है ।

मालती : दफ्तर और काम किसी की मजबूरियाँ नहीं देख सकता ।

मेहरोत्रा : मैडम, देर-सबेर किससे नहीं होती ? माफ कीजिए···

['चुप बे' कहते हुए शर्मा, त्यागी और रहमान मेहरोत्रा पर बरस पड़ते हैं । वह ही-ही-ही करने लगता है ।]

रहमान : हम लोग जो वक्त से ज्यादा काम करते हैं, उसे आप क्यों नहीं देखतीं ? क्यों नहीं हमें ओवर टाइम दिया जाता ?

मालती : यह सवाल जाकर बड़े साहब से कीजिए ।

त्यागी : हमारे नामों के सामने क्रास आप लगाएँ और सवाल जाकर हम बड़े साहब से करें । पैर में लगे चोट, बाँधें पट्टी हाथ में !

[सब हँस पड़ते हैं ।]

मालती : खामोश ! कायदे से बात कीजिए ।

रहमान : आप भी कायदे से बात कीजिए ।

मालती : ओह, तुम लोगों की यह हिम्मत !

माला : दीदी, इन लोगों के मुँह लगना बेकार है ।

शर्मा : दफ्तर में यह दीदी-चाचीवाद नहीं चलेगा !

[सब हँसते हैं ।]

मालती : (**जाने को उद्यत**) आल राइट, आई विल सी !

मेहरोत्रा : प्लीज़ मैडम, सुनिए, सुनिए ! शर्मा की बीवी पिछले बारह दिनों से जनाना अस्पताल में भर्ती है···।

त्यागी : क्यों बेटा, यह बात···मैडम को लड्डू नहीं खिलाये ?

[त्यागी और रहमान हँसते हैं।]

मेहरोत्रा : अबे,…चुप्प ! बेशर्म ! बेचारी टी० बी० की मरीज है।

त्यागी : यार, हमें क्या मालूम।

रहमान : आई एम वेरी सॉरी शर्मा।

[सन्नाटा]

मालती : छुट्टी क्यों नहीं ले लेते ? उसे कहीं सैनेटोरियम में भर्ती कीजिए। बीवी के साथ इस तरह का मज़ाक करते हैं ?

शर्मा : न छुट्टी है, न इतने पैसे हैं।

मालती : अफसोस, मैं कुछ नहीं कर सकती !

रहमान : आज हर मर्ज़ की दवा सिर्फ अफसोस जाहिर करना है !

मालती : मिस्टर रहमान, चुपचाप अपना काम कीजिए और वक्त से दफ्तर आइए। इसके अलावा और मैं कुछ नहीं जानती।

रहमान : क्यों, आपको जानना चाहिए, हमारे शहर की बसें किस तरह चलती हैं। और, मुझे घर से यहाँ पहुँचने में तीन बसें बदलनी पड़ती हैं। बसों में चढ़ने के लिए क्यू में खड़ा होना पड़ता है।

मालती : दफ्तर के करीब घर लीजिए। मैं कुछ नहीं जानती।

रहमान : जितनी मेरी पूरी तनख्वाह है, उसमें एक कमरा भी दफ्तर के करीब नहीं मिल सकता। आपको मालूम होना चाहिए…

मालती : घर से जल्दी चला कीजिए, और गुस्सा कम कीजिए।

रहमान : यहाँ साढ़े नौ बजे पहुँचने के लिए ठीक आठ बजे घर से चलता हूँ। इसके पहले एक ट्यूशन करता हूँ, तब मेरे घर वालों को दोनों वक्त रोटी नसीब होती है। पता नहीं, आप किस दुनिया में रहती हैं।

मालती : मैं कुछ नहीं जानती।…चुपचाप काम कीजिए।

त्यागी : आप तो सिर्फ हमें गैरहाजिर करना जानती हैं, और ऊपर से रौब जमाना जानती हैं ! कुछ भी हो, हम इंसान हैं।

मेहरोत्रा : शट अप त्यागी !

त्यागी : तू चुप रह…चापलूस…मक्खनबाज़ !

मेहरोत्रा : यार लाल-पीला क्यों होता है ? (सहसा) मैडम, बात यह है कि मिस्टर त्यागी की अभी-अभी शादी हुई है, फिर तो आप जानती हैं…ऐसे में कौन थोड़ा लेट नहीं होता ! सोचिए, जिन दिनों आपकी शादी हुई थी…माफ कीजिएगा। यह तो होता ही रहता है, इंसान को इंसान पर थोड़ी मेहरबानी…मेरा मतलब…यू नो।

त्यागी : अबे चुप रह घिस्से।

मेहरोत्रा : मैडम, इन्हें बकने दो। यही इनकी तफरीह है। सच, ये सब बड़े मजबूर लोग हैं।

मालती : मैं भी बहुत मजबूर हूँ मिस्टर मेहरोत्रा, मैं भी अभी कन्फर्म नहीं हुई हूँ। मैं सब की मजबूरियाँ-दिक्कतें जानती हूँ—लेकिन आखिर मुझे भी तो नौकरी करनी है ! मेरे पति को अब तक कोई नौकरी नहीं मिल सकी है। आप लोगों को क्या पता ! आप लोग सिर्फ अपनी जानते हैं।

त्यागी : मैडम, चाय पीजिए।

मेहरोत्रा : प्रहलाद, दौड़कर सबके लिए चाय ला !

[प्रहलाद जाता है।]

मालती : नहीं-नहीं···यह चाय पीने का वक्त नहीं। अभी तक आप लोगों ने आज का काम शुरू तक नहीं किया। जब चाहते हैं आप लोग चाय पीने लगते हैं···और ज़रा-ज़रा-सी बात पर मुट्ठियाँ तान लेते हैं। कभी भी अपनी गलती नहीं मानते। पता नहीं, आप लोग अपने घरों में कैसे रहते हैं। क्या समझते हैं अपने आपको।

माला : घरों में इनकी हवा खिसकी रहती है ! वहाँ लेट नहीं होते !

मेहरोत्रा : बिलकुल सही बात की माला जी ने।···मैडम, बैठिए···।

मालती : भाई, यह बैठने का वक्त नहीं। चलकर मेरी टेबुल पर देखो···फाइलें लगी हैं। आज ही मिनिस्ट्री को सालाना रिपोर्ट भेजनी है। बड़े साहब विदेश जा रहे हैं, उनकी तीन तकरीरें तैयार करनी हैं। इसके अलावा···।

रहमान : तकरीरें मैं तैयार कर सकता हूँ।

शर्मा : चुप्प बे !

त्यागी : मैडम, आज मैं वह इस्टैब्लिशमेंट वाली फाइल बिलकुल पूरी कर दूँगा।

रहमान : मैडम, यह बात ज्यादा करता है।

मालती : आप सब लोग ज्यादा बात करते हैं।

त्यागी : और दिन भर इनके मेहमान आते हैं।

मालती : मुझे मालूम है···सब मालूम···कैन्टीन में जाकर जम जाना। फिल्म से लेकर राष्ट्रपति चुनाव तक बातें करना। दफ्तर में काम करने वाली औरतों-लड़कियों के बारे में स्कैंडल फैलाना। आप लोगों का और काम ही क्या है···!

[प्रहलाद गिलासों में चाय लिए आता है।]

प्रहलाद : सरकार, इतनी भीड़ है कैन्टीन में कि पूछो नहीं···धक्कम-धक्का, धक्कम-धक्का ! मानो सारा दफ्तर वहीं टूटा पड़ रहा है।

मालती : यही तो मैं कह रही थी।

शर्मा : लीजिए, मैडम चाय पीजिए !

मालती : शुक्रिया, मुझे काम है···आप लोग पीजिए। मैं फिर किसी दिन पी लूँगी।

रहमान : यही तो बात है···आप हमसे नाराज़ हैं !

मालती : कैसी बातें करते हैं आप लोग !

त्यागी : आइए बैठिए···चाय पीकर जाइए।

मालती : भाई, बड़े साहब देख लेंगे तो बुरा मानेंगे···आप लोग कुछ जानते-बूझते तो हैं नहीं !

प्रहलाद : अजी छोड़िए बड़े साहब को, दिन में तेरह बार चाय मँगवाता है···और कहाँ से···वह जो वी० आई० पी० रेस्ट्राँ है···पन्द्रह पैसे वाली···।

[सब हँसते हैं । अपने कमरे से तेज़ी में अफसर का निकलना ।]

अफसर : मिसेज़ मालती शंकर, यह क्या तमाशा है ? यह दफ्तर है कि···।

मालती : सॉरी सर···।

[चली जाती है ।]

अफसर : नो टॉक···माइंड यौर बिजनेस !

[गुस्से में जाता है ।]

मेहरोत्रा : (**चाय का गिलास उठाए**) फार द हेल्थ आफ मिसेज़ मालती शंकर···एंड फार द डाउन फाल आफ दिस ब्लडी आफिसर !···थ्री चियर्स···!

[सब चाय पीते हैं । प्रकाश बुझता है । थोड़ी ही देर बाद प्रकाश फिर लौटता है । मंच बिलकुल खाली है । प्रहलाद सबकी मेजें ठीक कर रहा है ।]

प्रहलाद : अब सब लोगों की नानी मर गई है । तीन महीने पहले जब यहाँ वह मैडम मालती शंकर थीं न, तो सब लोग देर में दफ्तर आते और एक भी क्रास लग जाती तो सिर पै पहाड़ उठाने लगते ! अब सबकी बीवियाँ ठीक हो गईं । अब शहर की बसें बेहतर सर्विस देने लगीं । अब आँखें जल्दी खुल जाती हैं बाबू लोगों की । अब सेकेण्ड शो सनीमा की बातें यहाँ नहीं होतीं ! (**सहसा**) कौन हैं वे !···ओह साहब, आप ! माफ कीजिएगा···अभी···इसी वक्त !

[त्यागी आता है ।]

प्रहलाद : रुकिए···पूरा झाड़-पोंछ तो लूं !

त्यागी : यार, फिर झाड़-पोंछ लेना ! (**अपनी सीट पर जा बैठता है ।**)

प्रहलाद : आज गुसल, हाथ-मुँह ?

त्यागी : भाई, काम करने दो···।

प्रहलाद : कल तो सुना रात के दस बज गए !

त्यागी : यह ऐनुअल रिपोर्ट आज पूरी तैयार होकर जानी है ।

प्रहलाद : ओवर टाइम मिलेगा साहब ?

त्यागी : यार, यहाँ नौकरी के लाल पड़े हैं, तुम ओवर टाइम की बात करते हो ! तुम नहीं जानते···(**विराम**)

त्यागी : जिस तरह से इन लोगों ने मिसेज़ मालती शंकर को यहाँ से निकाला है, उसके बाद फिर क्या रह जाता है ! ज़ालिम हैं साले । कहीं मिसेज़ मालती की तरह मुझे

निकाला तो एक-एक का खून पी जाऊँगा—समझते क्या हैं अपने आपको। (**काम करने लगता है**) एक गिलास पानी पिलाना !···नहीं, पहले वह फाइल लाओ ···अरे वह हरी वाली···यार देखते नहीं वह··· (**खुद दौड़कर उठा लेता है**) खुद तो ये हरामजादे कुछ काम करते नहीं···इनका सिर्फ काम है नीचे के लोगों को हर वक्त भयभीत रखना···हम सब में यह डर बनाए रखना कि किसी भी वक्त निकाल दिए जाओगे !

प्रहलाद : लो पानी पियो···ठंडा पानी। (**त्यागी एक साँस में पीता है**) साहब, मिसेज़ मालती जी बहुत ही शरीफ और नेक अफसर थीं। उन्हें खामखा···।

त्यागी : शरीफ और नेक अफसर ही नहीं, उससे कहीं ज्यादा वह शरीफ और नेक औरत भी थीं, वरना जिस तरह से चुपचाप वह चली गईं···दफ्तर में किसी को पता तक नहीं लगने दिया।

प्रहलाद : कैसा अत्याचार···राम···राम !

त्यागी : देखो, वह बँधा हुआ पुलिंदा उठाओ ! (**लाता है**) उसे खोलो··· (**सहसा**) पता है, मिसेज़ मालती से कहा गया—चौबीस घंटे के भीतर रिज़ाइन करो···उस बेचारी औरत को मजबूर किया गया···ज़ालिम !

[बाहर से शर्मा, मेहरोत्रा और रहमान का प्रवेश।]

शर्मा : हैलो त्यागी ! कब आए ?

रहमान : पूछो, रात कब गए !

मेहरोत्रा : अभी तो पूरे दफ्तर में सिर्फ हमीं लोग आए हैं···कहो तो यार सबके नामों के सामने क्रास मार आऊँ !

शर्मा : अफसरों की हाज़िरी-गैरहाज़िरी नहीं लगती।

[मिस माला जैन का प्रवेश। सब अपनी-अपनी सीटों पर बैठना शुरू करते हैं।]

मेहरोत्रा : हाय ! कमबख्त, जब तक मिसेज़ मालती शंकर हमारी ए० ओ० थीं, हम दस बजे से पहले कभी दफ्तर नहीं आए।

शर्मा : और अब साढ़े नौ की जगह नौ बजे भागे आए हैं !

माला : हाँ, अब बसें तेज चलने लगी हैं !

रहमान : अब पत्नियों का स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है !

मेहरोत्रा : अब मौसम भी बेहतर है !

[हँसी]

त्यागी : क्या ही-ही करते हो ! चुप रहो !

रहमान : उसे ठंडा पानी दिखाओ !

प्रहलाद : अभी तो कैन्टीन वालों को ही ठंडा पानी दिखाना होगा। (**सहसा**) साहब आ गए ! (**सब सावधान हो जाते हैं**) आज साहब भी बड़ी जल्दी आ गए।

त्यागी : मिनिस्ट्री को आज ऐनुअल रिपोर्ट जो जानी है। ऊपर मार पड़ती है, रोब हम

पर जमाते हैं।

रहमान : अबे बेटे, चुप हो जा।

[अफसर का प्रवेश। सभी लोग खड़े हो जाते हैं।]

शर्मा : गुड मार्निंग सर !

रहमान : तबीयत कैसी है ?

अफसर : हेलो माला, सब ठीक-ठाक ? किसी को कोई तकलीफ ? मैं जब ए० आई० आर० में था, तब की बात है, मिस्टर चार्ल्स ब्राउन थे हमारे डी० डी० जी०। वह एकाएक उस स्टूडियो में आए, जहाँ मैं एक परिसंवाद रिकार्ड करा रहा था। वह तपाक से बोले—'हाउ डू यू डू ?' मेरे मुँह से निकला—'भाड़ में जाओ !' (हँसी) जी हाँ, तब मैं बड़ा मस्त था···किसी की कुछ परवाह नहीं करता···मगर ऐज़ यू नो···समय का ख्याल इंसान को रखना ही चाहिए।

मेहरोत्रा : सर, आपका बहुत नाम है।

त्यागी : कद्दू !

अफसर : क्या है मिस्टर त्यागी ?

त्यागी : कुछ नहीं···कुछ नहीं···। आज काम पूरा हो जाएगा।

अफसर : ठीक है···ठीक है ! आप लोग खुश क्यों नहीं रहते ? मेरा मतलब···यू नो, काम से बढ़कर और क्या खुशी हो सकती है ! भई, मैंने तो यही सबक सीखा है। (जाते हुए) मिस माला, जरा सुनिए !

[भीतर प्रवेश। माला भी अंदर जाती है। मेहरोत्रा की हँसी फूट पड़ती है, उसी बीच अफसर लौट पड़ता है।

अफसर : मेहरोत्रा, यह लो कागज़, दुबारा ड्राफ्ट तैयार करो !

[जाता है।]

शर्मा : मिस माला को आज बोर करेगा। वाह, मज़ा आ जाएगा !

रहमान : आज वह जरूरत से ज्यादा स्मार्ट भी लग रही है।

त्यागी : यार खुदा के लिए चुप भी रहोगे !

शर्मा : इस मनहूस को आज क्या हो गया है ?

[माला वापस आती है। घंटी बजती है। प्रहलाद अंदर जाता है।]

मेहरोत्रा : भई, चाहे जो हो, औरतों को खुश रहना ही चाहिए।

माला : क्यों, औरतें मशीन हैं क्या ?

मेहरोत्रा : बहन जी, आप तो खामखा नाराज़···।

माला : हमें शर्म-लिहाज़ है···।

रहमान : जी हाँ, हम लोग तो बेहया हैं···हाय रे ज़ालिम ज़माना !

माला : ज़ालिम तो आप लोग हैं। आप लोगों ने मिसेज़ मालती शंकर को यहाँ से

निकाला। आप···एक-एक ने उन पर अत्याचार किए। उनकी शराफत का आप लोगों ने फायदा उठाया।

मेहरोत्रा : हमें क्या पता था···जो कुछ हुआ ऊपर से हुआ। हम निर्दोष हैं।

माला : कहाँ गया अब आप लोगों का गुस्सा? कहाँ गई वह स्ट्राइक की धमकी? 'जो हमसे टकराएगा चूर-चूर हो जाएगा।' वे सब क्रांतिकारी नारे कहाँ गए?

रहमान : जहाँ के अफसर इत्ते बेईमान हों···धोखेबाज हों···जालिम···।

[प्रहलाद फाइलें लिए आता है।]

प्रहलाद : रहमान साहब, भीतर बुलाया है।

मेहरोत्रा : जाओ, भीतर नाश्ता तैयार है, बेटे!

रहमान : शट-अप!

[भीतर जाता है।]

माला : आप लोगों पर मिसेज़ मालती ने ज़रा-सा भी ऐक्शन लिया होता, तो आप में से एक-एक की नौकरी जाती, मगर नहीं लिया, और खुद नौकरी से हाथ धो बैठीं। उनके पति बेकार हैं, वह खुद बेकार घर बैठी हैं, उनकी इस तबाही की जिम्मेदारी···।

शर्मा : उन्हें इस तरह चुपचाप नहीं जाना था···अफसरों के दबाव में आकर उन्हें खुद त्यागपत्र नहीं देना था। हम लोग देखते···।

माला : डरपोक···कायर, ये लोग साथ देते!

[रहमान का प्रवेश।]

रहमान : मिस माला, मैंने आपका कब मज़ाक किया?

माला : इसके अलावा आप लोगों के काम ही क्या है?

रहमान : देखिए, मैं माफी चाहता हूँ। कभी ऐसी भूल हुई हो तो···।

मेहरोत्रा : बेटे, लिखकर माफी माँग।

शर्मा : अब तो इस दफ्तर में ज़बान हिलाना भी खतरनाक है।

प्रहलाद : चाय पियो साहब, चाय।

[बीड़ी दागता है।]

त्यागी : भई, एक बीड़ी मुझे भी।

प्रहलाद : साहब, बीड़ी अब महँगी हो गई है। (बीड़ी देता है। दागता है) यह हिरोइन-छाप है, जरा सम्हल कर पीजिएगा।

त्यागी : अब तो सब कुछ सम्हल कर करना होगा।

[सहसा बाहर से मिसेज मालती अपने पति शंकर के साथ आती हैं। सब आश्चर्यचकित हो उठते हैं।]

सब : अरे ! नमस्ते···नमस्ते ! मैडम···मैडम, आप कैसी हैं ? ···सब आनन्द ?

मालती : आप सब लोग अच्छे से ना !···मिलिए इनसे···मेरे पति शंकर।

सब : नमस्ते···बड़ी खुशी हुई···बैठिए···।

मेहरोत्रा : प्रहलाद, जाओ बढ़िया-सी चाय लाओ···फ़र्स्ट क्लास।

मालती : नहीं-नहीं शुक्रिया। आप लोग बैठिए ना···। अरे, आप लोग हमें घूर-घूर कर क्यों देख रहे हैं ?

शर्मा : देखिए मैडम, आप तो यहाँ से ऐसे चुपचाप चली गईं···हम फेयरवेल भी नहीं दे पाए···आज तो हमारे साथ चाय पीजिए···बैठिए ना।

मालती : त्यागी साहब बहुत गम्भीर हैं।

माला : अब नौ बजे दफ्तर आते हैं और शाम को सात बजे से पहले नहीं जाते···।

त्यागी : मालती जी, देखिए नौकरी तो करनी है।

मेहरोत्रा : और किसी तरह खुश भी रहना है।

मालती : और होशियार भी···।

[हँसती है। सब लोग खुश हैं।]

मालती : अच्छा, ज़रा बड़े साहब से मिलना है···।

[पति के संग भीतर चली जाती है। सारे लोग पास दौड़ आते हैं।]

शर्मा : यहाँ पति की नौकरी के लिए सिफारिश करने आई हैं मैडम !

त्यागी : हाँ, ए० ओ० की जगह खाली है।

रहमान : मैंने तो कुछ और ही सुना है···पति को इनके चरित्र के सम्बन्ध में कुछ शुबहा है। वही पता लगाने आया है।

शर्मा : क्या बकता है ! ऐसा हर्गिज़ नहीं हो सकता।

रहमान : बिल्कुल यही सच है। देखा नहीं, पति का चेहरा···बंद गोभी जैसा। उसे कई शिकायतें हैं अपनी मिसेज़ से।

माला : आप लोग इसके अलावा और कुछ नहीं सोच सकते ?

शर्मा : मिस्टर शकर मुझसे पूछें मैडम के बारे में, मैं जवाब दूंगा उन्हें।

त्यागी : लेकिन यार कुछ तो ऐसी बात होगी, पति वरना ऐसा क्यों शक करता ? सोचने की बात है···क्यों, मैं गलत तो नहीं···?

मेहरोत्रा : मैडम के चरित्र पर शक करना सरासर पाप है।

प्रहलाद : साहब, चाय के आर्डर का क्या हुआ ?

शर्मा : रुको यार। सुनो···पति यहाँ ए० ओ० होकर आ जाए, तो बस मजे। मिसेज़ मालती कम प्रभावशाली नहीं, हाँ।

रहमान : पति ज़ालिम होगा···मेरा यकीन है।

माला : आप लोग मुझे काम करने देंगे या नहीं ?

मेहरोत्रा : शौक से कीजिए बहिन जी, आप नाराज़ होकर बोलती हैं तो मुझे ब्लड-

प्रेशर हो आता है।

[हँसी। भीतर से अकेले शंकर का प्रवेश।]

शर्मा : नमस्ते जी। कहिए आप को कुछ पूछना है हमसे ?

शंकर : क्या ?

त्यागी : कोई बात···कोई शक। मिसेज़ मालती एक निहायत शरीफ औरत हैं···। मुझे यह कहते हुए दुःख है कि वह यहाँ से चली गईं। वह आला दर्जे की आफिसर थीं···।

रहमान : उनके चरित्र के खिलाफ जो उँगली उठाए, वह पागल है···उल्लू है··· बेवकूफ है। कहिए, क्या पूछना है ?

शंकर : यह सब क्या कह रहे हैं आप लोग ?

शर्मा : यह हमारे समाज की बदकिस्मती है कि अगर औरत कहीं बाहर नौकरी करे, तो पुरुष समाज खामखा उसके बारे में तीन के तेरह करने लगता है।

रहमान : पति अपनी जलालत से बाज़ नहीं आता।

शंकर : अजी यह सब कहने की बातें हैं···औरतों के मामले में हम लोग बड़े संकीर्ण हो जाते हैं।

माला : जी हाँ, यकीन कीजिए, मिसेज़ मालती की यहाँ पर हर कोई इज़्ज़त करता था···उनके बारे में कभी कोई···।

शंकर : ह्वाट नानसेन्स !

त्यागी : देखिए जी, आप बहुत लाल-पीले मत होइए यहाँ···हम मिसेज़ मालती के खिलाफ कुछ नहीं सुन सकते। हाँ, नहीं तो।

शंकर : मगर उनके खिलाफ कौन क्या कह रहा है ?

शर्मा : अजी हमें सब पता है। आप घर पे उन्हें···।

शंकर : ओह माई गॉड !···यह क्या है ?···मालती···!

रहमान : देखिए, उन्हें बुलाने की यहाँ कोई ज़रूरत नहीं। आपको उनके बारे में जो पूछना है, शौक से पूछिए।

मेहरोत्रा : हमारे सामने आप मैडम को कुछ नहीं कह सकते।

शंकर : बंद कीजिए बकवास !

[मालती का आना।]

शंकर : यह लोग क्या बक रहे हैं ! यह क्या तमाशा है, तुम्हारे बारे में किसे क्या शक है ? यह बात क्या है ?

मालती : ओ हो हो (हँसती हैं) भई, आप लोग बैठिए···अपनी-अपनी सीटों पर···हाँ, चेहरे पर से गुस्सा उतारिए···बात यह है, कित्ते दिन इन्हें ना किसी पर गुस्सा उतारने को मिला···ना इन्हें कोई ऐसा स्कैंडल मिला कि उससे तफरीह करते··· ये किस पर रोबदाब दिखाएँ···किसे धमकी दें···ऐसा इन्हें पिछले दिनों कुछ भी

नहीं मिला···सो मैंने···

[हँसती है।]

शंकर : ओ हो···यह बात। दैट्स राइट।

मेहरोत्रा : ओह मैडम ! आप किस कदर लाजवाब हैं।

रहमान : हमें क्या पता, आप इस तरह के मज़ाक करती हैं।

मालती : और कैसे जिन्दा रहा जाए ?

शर्मा : वी आर वेरी सॉरी मिस्टर शंकर।

शंकर : धन्यवाद। मुझे बड़ी खुशी हुई आप लोगों से मिलकर।

[फिर सब घिर आते हैं।]

त्यागी : मैडम, जिस काम के लिए आप आई थीं, क्या हुआ ?

मालती : कमाल है, आप लोग सब कुछ मालूम कर लेते हैं।

माला : और इनके काम ही क्या हैं ?

मेहरोत्रा : मैडम, इन्हें समझाइए। जब से आप गईं, यह हर वक्त हमें डाँटती रहती हैं।

शर्मा : मुझे तो अच्छा लगता है···।

त्यागी : चुप बे !

शंकर : आप लोग कभी घर आइए ना।

रहमान : पहले आप बताइए सर, आप कब आ रहे हैं यहाँ ? हमारे नए ए० ओ०···।

मालती : उसी के लिए तो यहाँ आई थी।

सभी : क्या हुआ ?

[सन्नाटा]

मालती : (एकाएक) अरे आप लोग चुप क्यों हो गए ? उम्मीद पर यह दुनिया कायम है।

शंकर : आप लोग तशरीफ रखिए।

शर्मा : उसने क्या कहा ?

त्यागी : बातचीत क्या हुई ?

मेहरोत्रा : बताइए ना मैडम ?

रहमान : आपको इस तरह जाना पड़ा, हमें सख्त अफसोस है। आपकी जगह मिस्टर शंकर आ जाएँ···यह हमारी खुशकिस्मती होगी। बताइए···बोलिए ना।

त्यागी : कितने दिनों बाद आज हम खुलकर बोल पा रहे हैं !

मेहरोत्रा : पता नहीं, हम लोगों में इतना डर क्यों समाता जा रहा है।···बैठिए ना··· प्लीज़ ! बताइए ना !

प्रहलाद : साहब, मेरी ओर देखिए···मैं यहाँ अब बैठे-बैठे मक्खी मारता हूँ। अब जासूसी उपन्यास खतम !

शर्मा : बताइए ना, हुआ क्या ? साहब यहाँ आ रहे हैं ना ?

[सन्नाटा]

त्यागी : यार, कोई ऊपर से उल्लू का पट्ठा आ रहा होगा।

रहमान : बिना कुछ दिए-लिए कुछ नहीं होता।

मालती : आर्डर···आर्डर···देखिए प्लीज़, चुपचाप अपने काम कीजिए। प्लीज़···।

शंकर : आप लोग घर आइए ना !

माला : (दौड़कर पास आती है) बहन जी, बताइए ना, क्या हुआ ?

मालती : क्या हुआ ? (चुप) अच्छा, फिर बताऊँगी !···बाई···।

[पति के साथ तेज़ी से प्रस्थान। सारे लोग उठकर बाहर देखने लगते हैं। भीतर से अफसर का प्रवेश।]

अफसर : क्या देख रहे हैं ? चलिए अपनी-अपनी सीट पर। काम कीजिए···काम ! (सब बैठते हैं) चपरासी !

प्रहलाद : जी हुज़ूर !

अफसर : कूलर क्यों लगाया गया है दफ्तर में ? सबको ठंडा पानी पिलाया करो।

प्रहलाद : सब चाय पीते हैं साहब !

अफसर : नहीं···ठंडा पानी पिलाया करो···बिना माँगे सबकी मेज़ पर ठंडे पानी का गिलास रहना ज़रूरी है। (जाते-जाते) क्यों मिस्टर त्यागी, सब ठीक-ठाक ?

त्यागी : यस सर !

अफसर : शर्मा !

शर्मा : यस सर···!

अफसर : रहमान !

रहमान : जी हुज़ूर !

अफसर : माला !

माला : मुझे अफसोस है, यहाँ की ज़िन्दगी बड़ी एबनार्मल होती जा रही है।

अफसर : क्या मतलब ?

[सब हँस पड़ते हैं।]

अफसर : आर्डर !

[सब चुप।]

[पर्दा]

धीरे बहो गंगा

पात्र

प्रसाद साहब (डिप्टी)
श्रीमती प्रसाद—30 साल
लता—18 साल
राजेश—20 साल
नौकर (दास)—35 साल
मिस्टर और मिसेज़ छाबड़ा

[दास ड्राइंगरूम ठीक करता हुआ गाता है—]

धीरे बहो गंगा, धीरे बहो गंगा !
मोरे सैयां जी उतरेंगे पार !
मोरे सैयां जी उतरेंगे पार !

[भीतर से टाई बाँधते हुए राजेश का प्रवेश—खँखारता है। दास शरमाकर चुप हो जाता है।]

राजेश : बड़ा बढ़िया गाता है दास। एक बार और।

दास : मुझे क्या पता आप अन्दर घुसे बैठे हैं। हम तो सोचे, आप भी माता जी के संग हनुमान मन्दिर गए।

राजेश : मैं तो पिक्चर जा रहा हूँ—लता तो गई है न, माताजी के संग ?

दास : जी साहब।···तीन महीने से ऊपर हो गए—हमने सनीमा का मुंह तक न देखा —साहब से बोला, हमारी तनखाह बढ़ाओ तो डाँट दिया—'कायदे से रहना है तो चुपचाप रहो।'

राजेश : मैं भी तो बी॰ ए॰ फाइनल में पहुँच गया, मगर मेरा पाकेट खर्च वही है दो साल पुराना—तीस रुपये महीने। पापाजी कहते हैं, फर्स्ट डिज़र्व देन डिज़ायर। मतलब पहले उसके काबिल बनो फिर उसकी ख्वाहिश करो—सरासर जुल्म है !

दास : कुछ करना चाहिए···साहब किसी की बात ही नहीं सुनते···देखो साढ़े सात बज गए, अब तक दफ्तर से नहीं आए !

राजेश : और मुझे ज़रा-सी देर हो जाए, तो डाँट पिला देंगे।

दास : अजी, मुझे तो वारन करने लगते हैं। साहब, रात का खाना यहीं खाएँगे न ?

राजेश : बिल्कुल।

[राजेश का जाना। दास ड्राइंगरूम ठीक करता हुआ फिर वही गाने लगता है। दास बढ़कर रेडियो ऑन कर देता है। बाहर से श्रीमती प्रसाद और लता का प्रवेश।]

श्रीमती : साहब अब तक नहीं आए ?···लता, दफ्तर में फोन तो कर पापा को।

[लता फोन करती है। रख देती है।]

लता : घंटी बज रही है—पापाजी चल पड़े हैं।

श्रीमती : उनका कोई फोन आया था ?

लता : आ रहे होंगे।

दास : फोन तो नहीं आया।

[दास जाता है। श्रीमती बढ़कर रेडियो बन्द करती है।]

श्रीमती : यह अपने मन के होते आ रहे हैं। मेरी बात की कोई इज्जत नहीं उन्हें !

लता : मुझे भी पापाजी बात-बात में डाँटते हैं। कहा कि मेरे लिए बेलबाटम खरीद दो, डाँटने लगे—सिम्पुल लिविंग एण्ड हाई थिंकिंग।

श्रीमती : आने दो आज, आज मैं उनकी बोलती न बन्द कर दूँ तो मिसेज प्रसाद नहीं। क्या समझ रखा है इन्होंने ! (पुकारती है) दास !

[दास आता है।]

श्रीमती : सरदर्द हो रहा है, टिकिया दे मुझे।

[दास जाता है।]

लता : भइया कहाँ गया ?—दास, राजेश कहाँ गया ?

दास : (आकर टिकिया और पानी देता है) राजेश भइया सनीमा गए। आपको भी दवा दूँ ?

लता : भाग—मुझे क्यों ?

[प्रसाद साहब का प्रवेश।]

श्रीमती : कहाँ थे ? छह बजे यहाँ आने को थे—हनुमान मन्दिर जाना था आपको हमारे संग ! और अब इस समय आ रहे हैं—देखिए न, आठ बज रहे हैं। यह कोई तमाशा है क्या ?

डिप्टी : सुनो तो—सुनो—दफ्तर में पिछले दो दिनों से 'वर्क टू रूल' स्ट्राइक चल रही है। दफ्तर का सारा काम ठप्प-सा हो गया है। एक फाइल निकालने में पन्द्रह मिनट लगाते हैं बाबू लोग।

श्रीमती : हमें अकेले हनुमान मन्दिर जाना पड़ा। आपको हमारा कोई ख्याल नहीं।

लता : यह वर्क टू रूल क्या होता है पापाजी ?

डिप्टी : स्लो वर्क—मतलब सब काम धीरे-धीरे। चलकर फाइल भी उठाता है तो इस तरह (चलकर दिखाते हैं) लिखता है तो इस तरह, इतने धीरे-धीरे।

[अभिनय करते हैं। लता हँसती है।]

श्रीमती : लता, तू भी इनकी बातों में आ गई···यह ऐसे ही बातें बनाते हैं—यह इनकी आदत है।···मैं अब ज्यादा बर्दाश्त नहीं कर सकती।

डिप्टी : अरे-रे-रे इनका गुस्सा ! (पुकारते हैं) दास, एक बीड़ा पान ला।

लता : पापाजी, फिर तो हम भी घर पर वर्क टू रूल स्ट्राइक करेंगे।

डिप्टी : वाह-वाह—बहुत खूब !

श्रीमती : करना ही पड़ेगा कुछ। आप लोग डरते हैं तो केवल उसी स्ट्राइक से।

[दास पान ले आता है। डिप्टी पान खाकर मुँह बन्द कर लेते हैं।]

श्रीमती : बस, अब मुँह में पीक दबाकर चुप्प।

लता : पापाजी कल बाजार चलेंगे न? मुझे बेलबाटम चाहिए, मेरी सारी फ्रेंड्स बेलबाटम पहनती हैं। बोलिए न?

[प्रसाद मुँह में पीक दबाए चुप सोफे पर बैठे हैं।]

श्रीमती : बस, यही इनका तरीका है। मुँह में पीक दबाकर बैठ जाएँगे—दूसरा इनके सामने भौंकता रहे!

लता : आप बोलते क्यों नहीं?…मुँह खोलिए न?

श्रीमती : मुँह में अब पान जो ठूँस लिया है!

[प्रसाद बढ़कर अखबार खोलकर पढ़ने लगते हैं।]

लता : अब मुँह के सामने अखबार फैला लिया—ताकि कोई इनका मुँह भी न देख सके।

श्रीमती : यह इनकी चाल है।

लता : पापाजी!

श्रीमती : यह ऐसे नहीं सुनेंगे… (**अखबार पर हाथ मारकर फाड़ देती है**) अब यह चाल आपकी नहीं चलेगी।

लता : नहीं चलेगी! नहीं चलेगी!

दास : (**दौड़कर आता है**) नहीं चलेगी! नहीं चलेगी!

डिप्टी : यह क्या बदतमीज़ी है? (**उठते हैं**) किसी को भी कोई अदब-लिहाज़ नहीं! दास, भागता है कि नहीं? चल भाग यहाँ से—बदतमीज़!

[दास बड़बड़ाता हुआ जाता है।]

श्रीमती : जैसे आपको बड़ा अदब-लिहाज़ है हमारा! नौ बजे ही घर से निकल जाते हैं—आठ बजे रात को घर लौटते हैं।

डिप्टी : वो नौकरी छोड़ दूँ?

लता : ऊपर से हम सब पर गुस्सा करते हैं।

श्रीमती : न घर-गृहस्थी की चिन्ता, न अपनी तन्दुरुस्ती की—न मेरी। सरदर्द से मेरा माथा फटा जा रहा है।

डिप्टी : सरदर्द की दवा ले लो न, हमें क्यों डाँटती हो! वह विविध भारती का विज्ञापन क्या था?

[लता नकल करती है।]

श्रीमती : ठीक है, सरदर्द की दवा करनी ही पड़ेगी।

डिप्टी : मुझे धमकी देती हो? मैं थका-माँदा दफ्तर से आया हूँ—यह नहीं कि एक कप

चाय पूछे। आते ही महाभारत, यही सभ्यता है तुम लोगों की ! नौकर-चाकर, बाल-बच्चे, सबका दिमाग खराब !

[तेज़ी से चले जाते हैं।]

श्रीमती : लोग अपनी बीवियों के साथ शाम को घूमने निकलते हैं। ये हैं कि दफ्तर और दफ्तर, वाह ! किसी की सुनते ही नहीं।

लता : मेरी भी नहीं सुनते। लोग कहते हैं मैं डिप्टी साहब की इकलौती लड़की हूँ··· इतने बड़े आदमी की लड़की। पर पापा तो···

[दास आता है।]

दास : साहब, साहेब का पान का डिब्बा किधर है ?

श्रीमती : मुझे क्या मालूम !

लता : कितना पान खाने लगे हैं ! ···दाँत देखो पापा के ! हाय राम, छी !

दस : साहेब बोल रहे हैं बाजार से पान लाने के लिए।

श्रीमती : जा उन्हीं से पूछ। मेरा दिमाग मत खा। देखते नहीं ! सरदर्द से तबाह हो रही हूँ।

दास : साहब, आप भी मुझे डाँटती हैं !

लता : अरे तुझे नहीं—पापा के ऊपर हम लोग सोच रहे हैं।

दास : मैंने तो सोच लिया है, साहब।

श्रीमती : क्या ?

दास : अभी बताऊँगा—बस सोच रहा हूँ। (भागता है।)

लता : एक तरीका है मम्मी।

श्रीमती : क्या ?···बता। मैं तो तंग आ गई इनसे।

लता : सुनो।

[सब आपस में चुपचाप एक स्कीम बनाते हैं। भीतर से प्रसाद का प्रवेश।]

डिप्टी : देखो···सुनो···सुनती हो ?

श्रीमती : क्या है ?

डिप्टी : मिस्टर और मिसेज़ छाबड़ा आज यहाँ आने वाले थे···मैं तो भूल ही गया।

श्रीमती : आएँ, आते ही रहते हैं लोग। मेरा और काम क्या है !

डिप्टी : (पुकारते हैं), राजेश !···राजेश !

राजेश : (बाहर से दौड़ा हुआ) जी डैडी।

डिप्टी : कहाँ थे ? पिक्चर की टिकट नहीं मिली···तभी वापस। खूब देखो पिक्चर !

राजेश : कहाँ, हफ्ते में दो ही बार तो देखता हूँ।

डिप्टी : तो रोज़ देखा करो। नाम कटा लो कालेज से। कपड़े देखो, हालात देखो अपने !

श्रीमती : हर वक्त बच्चों को डाँटते हैं—यह भी कोई तरीका है ! खामखा बच्चों में

कास्प्लेक्स पैदा करते हैं।

डिप्टी : अब घर में ही रहना—खबरदार···मिस्टर और मिसेज़ छाबड़ा आ रहे हैं। उन्हीं के बिज़नेस फर्म में तुम्हें आगे चलकर बिज़नेस एक्ज़िक्यूटिव होना है। सरकारी नौकरी में अब कुछ नहीं रखा।

श्रीमती : बेटे को बनिया बनाएँगे !

डिप्टी : तुम चुप रहो—जब कुछ मालूम न हो तो बीच में खामखा···

श्रीमती : (बिगड़ती हैं) मैं खामखा हूँ—मुझे कुछ नहीं मालूम ?

डिप्टी : देखो, मेरा मूड मत खराब करो। दफ्तर में वर्क टू रूल स्ट्राइक चल रही है, और ये लोग हैं कि···

[जाने लगते हैं।]

राजेश : पापाजी···पापाजी !

डिप्टी : क्या है ! बोलते क्यों नहीं ? जल्दी बोलो, जल्दी।

राजेश : मेरे स्कूटर का क्या हुआ ?

डिप्टी : वाह ! अभी बी० ए० तक भी पास नहीं हुए···चले हैं स्कूटर पर चढ़ने ! फर्स्ट डिज़र्व, देन डिज़ायर ! यू नो, साइकिल पर चढ़कर एम० ए० फर्स्ट क्लास किया है ! माइण्ड योर सेल्फ—आई वार्न यू। मैं कतई नहीं बर्दाश्त कर सकता कि तुम और लौंडों की तरह बीटिल-हिप्पी बनो। (**तेज़ी से चले जाते हैं।**)

श्रीमती : यह ऐसे नहीं मानेंगे।

राजेश : यह हर वक्त डाँटने लगे हैं।

[लता आती है।]

लता : किसी की नहीं सुनते।

श्रीमती : इन्हें हम लोगों की कोई परवाह नहीं।

[दास आता है।]

दास : मेरा अब इस घर में रहना मुश्किल है।

श्रीमती : तो चला जा न !

दास : वाह ! ऐसे ही चला जाऊँ ? ···तीन महीने की एडवांस तनखा लेकर जाऊँगा। हाँ नहीं तो···कोई मज़ाक है ! मैं फोर्थ क्लास पब्लिक अफसर हूँ।

राजेश : वाह-वाह ! ···मेरी एक बात मानेगा ? ···लता, ममी, मेरे पास एक आइडिया है—बेहतरीन ! ···पापाजी का दिमाग दुरुस्त हो जाए।

[सभी लोग 'क्या-क्या' कहते हुए घेर लेते हैं। डिप्टी के साथ मिस्टर और मिसेज़ छाबड़ा का ड्राइंग रूम में प्रवेश।

डिप्टी : आइए, आइए, तशरीफ रखिए।

[दोनों बैठते हैं।]

डिप्टी : (पुकारते हैं) दास—ओ दास ! इधर चल।

[दास धीरे-धीरे चलकर आता है।]

डिप्टी : अरे जल्दी-जल्दी चल ! पाँव में मेंहदी लगी है क्या ?
मिस्टर : यह कैसे क्या चल रहा है ?
मिसेज : बात क्या है···इसकी तबीयत ठीक है ?
डिप्टी : थोड़ा बदमाश है।
मिस्टर : अरे !
मिसेज : कैसे चल रहा है ?
डिप्टी : अबे, बताशे पर पाँव रखकर चल रहा है क्या ?
दास : साहब, बिगड़िए नहीं, खबरदार···!
मिस्टर : अरे, यह बोल कैसे रहा है ?
मिसेज : आजकल के नौकरों का दिमाग ही ऐसा होता है।
डिप्टी : दास ! ···बात क्या है ?

[दास पास आ गया है। बहुत धीरे-धीरे मेज पर गिलास रखता है। तीनों आश्चर्य-चकित देखते हैं।]

डिप्टी : दास !
दास : जी···सा···ह···ब।
डिप्टी : तेरा दिमाग तो ठीक है ?
दास : जी···बि···ल···कुल···
डिप्टी (नाराज होकर पुकारते हैं) व्हाट, दिस इज नानसेन्स ! लता ! राजेश···लता ···राजेश !

[लता और राजेश आते हैं—उसी चाल से।]

डिप्टी : यह क्या हो गया तुम लोगों को ?
मिस्टर : इट इज वेरी इंट्रस्टिंग !
मिसेज : फंटास्टिक !

[डिप्टी पास जाते हैं।]

डिप्टी : यह क्या तमाशा है ?
राजेश : आप···चीखिए···नहीं।
लता : गुस्सा···बन्द···कीजिए।
डिप्टी : चले जाओ, मेरी आँखों के सामने से ! गेट आउट !
राजेश : थैंक्स, डैडी।
लता : थैंक्यू, फादर।

[दोनों जाते हैं। डिप्टी बढ़कर दास का कान पकड़ लेते हैं।]

डिप्टी : यह क्या तमाशा है ?···साफ-साफ बता, वरना कान खींच लूंगा !···बदमाश कहीं का !

दास : यह···देखिए···हाँ···नहीं तो।

[पाकेट में से पर्चा निकालकर कुर्ते पर लगाता है—'वर्क टू रूल'। उसे तीनों लोग देखते रह जाते हैं।]

डिप्टी : यह क्या बदतमीज़ी है ?

दास : स्ट्राइक।···कानून के मुताबिक काम ।

डिप्टी : जल्दी से दौड़कर पानी ला···देख, मेहमान आ गए हैं।···अबे, जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा ! बड़े आए स्ट्राइक करने ! दिमाग खराब हो गया है ।

[वह उसी तरह धीरे-धीरे जाता है।]

मिस्टर : कमाल है···घर में बीमारी घुस गई···वर्क टू रूल !

मिसेज : यह तो बड़ी अजीब बात है···बिल्कुल नई बीमारी। मैं कहूँ, क्या हो गया ?

डिप्टी : नहीं-नहीं, मज़ाक कर रहा है।···बड़ा अच्छा गाता है···फोक साँग···यू नो फोक साँग ?

मिसेज : यस फाक्स साँग ।

डिप्टी : फाक्स नहीं, फोक···लोक ।

मिसेज : ओह···देखा है, देखा है···।

[दास धीरे-धीरे पानी लिए आता है।]

डिप्टी : अबे तेज़ चल ! हो चुका मज़ाक। चलता है कि नहीं ? बहूजी कहाँ हैं ? भेज उन्हें ! सब लौंडों की बदमाशी है।

दास : आई रही···हैं···।

[श्रीमती धीरे-धीरे आती हैं। दायें कन्धे के नीचे ब्लाउज पर 'वर्क टू रूल' लिखा कागज चिपका है।]

मिसेज : हैलो, मिसेज़ प्रसाद !

मिस्टर : अरे···आप भी ? कमाल है !

डिप्टी : अयँ, यह मैं क्या देख रहा हूँ ?

श्रीमती : (धीरे-धीरे आकर)···और···दफ्तर से···देर में आइए। मुँह में···पान की पीक···दबाकर···बैठिए।

मिस्टर : ओह, भाभी जी, वंडरफुल !

मिसेज : गुड आइडिया ! मैं भी करूँगी, छाबड़ा साहब ।

मिस्टर : फिर मैं भी करूँगा।

श्रीमती : कहिए, आप अच्छे से···एवी थिंग आलराइट···?

डिप्टी : यह क्या बकवास है ? आई कांट टॉलरेट !

मिस्टर : आइए, तशरीफ रखिए।

मिसेज : बैठिए न ।

[श्रीमती धीरे-धीरे बैठती हैं। डिप्टी गुस्से से उठ जाते हैं।]

डिप्टी : नानसेन्स !···सब मिल गए हैं। एक-एक का दिमाग ठीक करूँगा। (**बढ़कर पुकारते हैं**) लता···लता···चलो इधर !

[लता धीरे-धीरे आती है।]

डिप्टी : तेज़ चलो—चलो ! (**खुद बढ़कर पास जाते हैं**) लता बेटी, बताओ यह किसकी शरारत है ?

लता : शरा···र···त···नहीं···तो···।

डिप्टी : मैं तुम्हारे लिए बेलबाटम खरीद लूँगा···आज ही।

लता : ऐ-से···नहीं ।

डिप्टी : बोलो, कौन है लीडर ?

लता : हम···सब ।

डिप्टी : क्या ?

लता : बिलकुल···सच ।

डिप्टी : तो नहीं बताओगी ?···बोलो, तुम्हारी ममी ने कहा या राजेश का दिमाग है ?

लता : हम सबने मिलकर फैसला किया ।

[राजेश तेज़ी से आता है।]

राजेश : आप हमसे किसी को फोड़ नहीं सकते, पापाजी।

लता : जी हाँ, पापाजी ।

डिप्टी : तो तुम्हारी ममी का दिमाग है यह ?

राजेश : दिमाग सबका है। दफ्तर में किसका दिमाग है ?

डिप्टी : चुप रहो !

राजेश : हमें डाँटकर आप नहीं डरा सकते।

लता : हमारा हक है, पापाजी !

डिप्टी : मेरा हक कुछ नहीं ? मैं इस घर का दुश्मन हूँ ?

राजेश : आप पूज्य पिता हैं।

लता : हमारे प्यारे डैडी हैं।

डिप्टी : नहीं-नहीं, मैं कुछ नहीं हूँ। राजेश, तुम्हारा और इस घर का क्या इम्प्रेशन पड़ा मि० छाबड़ा पर ?

राजेश : हम अपनी सीमा और मर्यादा में हैं।

लता : वी आर एक्सट्रीमली डिसिप्लिंड।

डिप्टी : अपनी स्ट्राइक तोड़ो···अभी तोड़ो···कल देखूँगा।···तुम्हें पहले नोटिस देनी चाहिए।

राजेश : हमें इसका दुख है···पर अब तो हो गया।

लता : हम सबको है। (दोनों जाते हैं।)

श्रीमती : चाय···या···काफी ?

मिस्टर : जो पिला दें···आपके यहाँ तो स्ट्राइक है।

[श्रीमती 'वर्क टू रूल' हँसती हैं।]

डिप्टी : (गुस्से से) राजेश, लता, चलो इधर ! किधर है चाय-नाश्ता ? ···मतलब क्या है ? चलो जल्दी, वरना···।

[बाँहों में वही 'वर्क टू रूल' बिल्ला लगाए राजेश-लता आते हैं। लता के हाथ में नाश्ते की ट्रे है। राजेश के हाथ में चाय और कप-प्लेट की ट्रे।

डिप्टी : राजेश ! माइंड योर फ्यूचर !

राजेश : यस···फा···द···र।

डिप्टी : लता ! यह क्या बदतमीज़ी है ?

लता : वर्क···टू···रूल। (दोनों उसी तरह चल रहे हैं।)

मिस्टर : आइए डिप्टी साहब, इट इज़ इंट्रस्टिंग।

मिसेज़ : ए नोबल आइडिया !

डिप्टी : चले जाओ तुम लोग यहाँ से···हट जाओ मेरी आँखों के सामने से !

राजेश : फादर···हम···नहीं डरेंगे···।

लता : हम अपना अधिकार लेके···रहेंगे। लेके रहेंगे !

श्रीमती : अब आपका···डाँटना···डपटना···नहीं चलेगा।

[राजेश-लता जाते हैं।]

डिप्टी : लीजिए साहब, शुरू कीजिए।

मिसेज़ : मैं···बनाती···हूँ चाय।

[मिसेज़ चाय बना रही हैं। श्रीमती 'वर्क टू रूल' मुस्कुरा रही है।]

डिप्टी : बन्द कीजिए मुस्कुराना।

मिस्टर : इनकी माँगें क्या हैं ?

डिप्टी : बकवास !

[भीतर से दास, लता और राजेश आते हैं। एक के हाथ में पोस्टर है। दूसरे के (दास) गले से माँगों का पोस्टर लटक रहा है। राजेश दायाँ हाथ उठाए है—तीनों आकर खड़े हो जाते हैं।]

राजेश : पिताजी दफ्तर से सीधे घर आएँ !

लता : कपड़े अपनी इच्छानुसार !

दास : हर साल तनख्वाह में बढ़ोतरी !

डिप्टी : बस, बस, बस ! भाग जाओ मेरी आँखों के सामने से ! (सब जाते हैं) माफ कीजिएगा…नमस्ते…मिस्टर मिसेज़ छाबड़ा !

[मिस्टर और मिसेज़ छाबड़ा का प्रस्थान। उनके जाने के बाद डिप्टी धीरे-धीरे चलकर अन्दर जाते हैं। धीरे-धीरे कोट, टाई, कमीज़ उतार रहे हैं और मुस्करा रहे हैं।]

श्रीमती : दौड़ो-दौड़ो…देखो, इन्हें क्या हो गया ? दौड़ो !

[तीनों दौड़े जाते हैं।]

लता : पापाजी…पापाजी…पान ले आऊँ ?

दास : अखबार ले आऊँ पढ़ने को ?

राजेश : पापाजी, आई एम सॉरी।

श्रीमती : आप बोलते क्यों नहीं…हाय राम, क्या हो गया आपको ?

[लता पान ले आती है—दास अखबार और राजेश चश्मा लाता है। डिप्टी पान खाकर और चश्मा लगाकर अखबार पढ़ने लगते हैं।]

श्रीमती : फिर वही ज्यादती !…हम लोग खड़े हैं बात करने के लिए, आप मुँह में पीक दबाए…।

[डिप्टी एक-एक का मुँह देखकर अखबार पढ़ने लगते हैं।]

[पर्दा]

है। (सब जाते हैं) माफ

बाद डिप्टी धीरे-धीरे
र रहे हैं और मुस्करा

ा है। डिप्टी पान

आप मुँह में पीक

हाथी घोड़ा चूहा

पात्र

पहला अफसर
दूसरा अफसर
तीसरा अफसर
डाक्टर
लेडी डाक्टर
एक नौकर
आगन्तुक
एक दर्शक

[पर्दा उठता है अथवा मंच पर प्रकाश आता है। मंच पर कई आराम कुर्सियाँ रखी हैं। दो एक टेबुलें हैं। बायीं ओर ऊँची टेबुल—मरीज देखने के लिए। उस पर एक स्ट्रेचर। दायीं ओर फूल-पौधों के दो गमले।

बस, यह मंच सूना पड़ा रहता है। मंच पर कोई चरित्र-अभिनेता नहीं आते। दर्शकों में से आवाजें—बोलियाँ—सीटियाँ उभरने लगती हैं।]

एक आवाज : ओजी, भाई क्या हो गया ?

दूसरी आवाज : हिरोइन भाग गई ?

[हँसी।]

तीसरी आवाज : यार, बोर करने के लिए बुलाया है !

चौथी आवाज : मालिक, ऐसा तो न करो।

एक आवाज : बहुत दूर से आए हैं···आँखें सेंकने !

[हँसी। सीटियाँ।]

एक दर्शक : (उठकर) भाई, हो सकता है, यह ऐसा ही नाटक हो। आजकल कुछ भी ताज्जुब नहीं। मंच सूना रहे। दर्शकों में शोर उठे···तब पात्र मंच पर खरामा-खरामा आएँ···।

दूसरी आवाज : खरामा-खरामा···साला !

तीसरी आवाज : यार, गाली तो मत दो···शरीफ औरतें बैठी हैं !

[ही-ही-ही।]

एक आवाज : होने को तो यह भी हो सकता है कि मंच पर नाटक हो ही नहीं। यहाँ आडीटोरियम में ही काँव-काँव होता रहे !

दूसरी आवाज : स्टडी आफ आडियन्स इन माडर्न थियेटर !

तीसरी आवाज : एब्सर्ड ड्रामा इन नेशनल स्कूल··।

पहली आवाज : चुप्प बे, साहब बैठे हैं !

तीसरी आवाज : तो ड्रामा शुरू क्यों नहीं कराते ! टिकट खरीदकर आया हूँ, मुफ्त नहीं !

पहली आवाज : मैं यह चकल्लस नहीं बर्दाश्त कर सकता। सालों के सिर तोड़ दूँगा, हाँ !

पाँचवीं आवाज : (स्त्री स्वर) प्लीज़ बिहेव प्रापर्ली। क्यों डिस्टर्ब करते हैं ? जिसे जाना

हो, वह बाहर जाकर लड़े-झगड़े। कमाल है !

तीसरी आवाज़ : देखिए, आप मंच पर जाकर बोलिए !

पाँचवीं आवाज़ : आप इत्ते स्मार्ट हैं—जाइए ना !

कई आवाज़ें : हाय ! कांग्रेचुलेशन्स !

[शोर, सीटी ।]

एक दर्शक : अच्छा-अच्छा, शांत रहिए···मैं देखता हूँ मंच पर ।

[जाता है ।]

पहली आवाज़ : मगर वहाँ जाकर कहीं बोर न करने लगना !

एक दर्शक : (मंच से) हो सकता है, ये लोग इधर-उधर कहीं छिपे न हों। (देखता है) भई, मैं ग्रीन रूम तो जाने से रहा ।

पहली आवाज़ : वहाँ भी चले जाओ—खरामा-खरामा !

एक दर्शक : ना भाई ना,···मगर हाँ, एक बात है···लगता है वे लोग नाटक करने से डर गए ।

कई आवाज़ें : डर गए ? ह्वाट नानसेन्स !

एक आवाज़ : चलिए, तब तक आप ही कुछ बोर कीजिए···मतलब कुछ सुनाइए··· गाना या स्पीच ।

एक दर्शक : देखिए । कुछ भी हो···यह मज़ेदार बात है···पहली बार एक दर्शक··· आडीटोरियम से उठकर सीधे मंच पर आ गया है। वरना यहाँ आता है सूत्रधार ···नाटककार···निर्देशक···या उद्‌घाटनकर्ता···!

दूसरी आवाज़ : लो ! आर्ट क्रिटिक को तो भूल ही गए !

[हँसी ।]

एक दर्शक : आर्डर···आर्डर···मैं किसी को नहीं भूला हूँ ! और मज़ेदार बात यह··· मैं इस नाटक का ड्रेस-रिहर्सल कल शाम देख चुका हूँ । जी, यही तो बात है !

तीसरी आवाज़ : इस नाटक का नाम ?

एक दर्शक : भाई देखो, साफ बात···मैं नाटक का नाम-वाम नहीं जानता, हाँ···हाँ । एक बात जानता हूँ—मेरे ख़्याल से वही सारी दिक्कत है। इस नाटक की···जिससे लोग भाग गए-से लगते हैं। रुको यार, बताता न हूँ ! यह मंच देख रहे हैं ना ! यह है एक नर्सिंग होम का लाउंज ।

एक आवाज़ : अरे तो उधर टेबुल पर स्ट्रेचर क्यों रखा है ?

एक दर्शक : वही तो बताता हूँ यार ! इस नाटक में पट्ठों ने तीन बड़े-बड़े···यानी बहुत बड़े अफसरों को लिया है—वे अफसर बीमार होकर नर्सिंग होम में आए हैं। अफसरों की बीमारी अजीब है—उन्हें किसी वक्त दिल और दिमाग का दौरा पड़ जाता है···एकाएक ब्लडप्रेशर बढ़ जाता है···घट जाता है···उन्हीं के लिए यह स्ट्रेचर है । दिक्कत यह है कि वे सभी अफसर अभी जिन्दा हैं···और उनके घर-

वाले, नाते-रिश्तेदार आज यहाँ दर्शकों में मौजूद हैं। जी हाँ, यही तो है सारी दिक्कत। नाटकवाले हाथ धो बैठेंगे अपनी नौकरियों से। लगता है, तभी खिसक गए हैं। (विराम) अब एक ही सूरत है। अभिनेताओं को सलाह दी जाए, वे बिना नाम के यहाँ आएँ और नाटक दिखाएँ। अफसर तीन हैं—पहला, दूसरा और तीसरा। अर्थात् अफसरों का एक चरित्र, डाक्टर दूसरा चरित्र और आगंतुक तीसरा चरित्र।

दूसरी आवाज़ : फिर तो इस नाटक का नाम हो सकता है—'एक-दो-तीन' !

चौथी आवाज़ : 'हाथी घोड़ा चूहा' क्यों नहीं ?

पहला दर्शक : बुरा नाम नहीं है, और यह जंचता भी खूब है—इट इज़ टू द प्वाइन्ट, जिस रंगमंच से अभिनेता, नाटककार और निर्देशक तीनों एक-दो-तीन हो गए हों !

तीसरी आवाज़ : इत्ता बोर मत करो कि हम भी यहाँ से एक-दो-तीन हो जाएँ। हुँह, हाथी, घोड़ा, चूहा···जैसे कोई बच्चों का खेल है !

पहला दर्शक : बस···बस···बुलाता हूँ···देखो ना, समझना तो पड़ेगा ही।

[पहला दर्शक विंग के दोनों तरफ जाकर अदृश्य अभिनेताओं से निःशब्द बातें करता है···उन्हें समझाता है।]

पहला दर्शक : सही बात। देखो भाई, नाटक समझ में न आए तो आप लोग इन्हें 'हूट' नहीं करेंगे, न इनके ऊपर कुछ फेंकेंगे। वैसे मेरा विश्वास है···आप शरीफ लोग सड़े अंडे, टमाटर, मूली वगैरह अपने साथ नहीं लाए होंगे। मगर पहले से बात साफ हो जानी चाहिए, हाँ ! तो आप लोगों की समझ में यदि नाटक न आए तो इसमें अभिनेताओं का कोई कसूर नहीं। हाँ, यदि नाटक अच्छा न लगे तो इसकी ज़िम्मेदारी इन पर ज़रूर है !

चौथी आवाज़ : वाह-वाह ! समझ में आएगा तभी तो अच्छा लगेगा !

पहला दर्शक : भई, उत्ता तो समझ में आएगा ही···सवाल सिर्फ इत्ता है कि इन चरित्रों के नाम नहीं होंगे। यार समझते क्यों नहीं···क्यों किसी के पेट पर खामखा लात मारते हो ?

कई आवाज़ें : हाँ-हाँ, समझ गए, बुलाओ।

पहली आवाज़ : इत्ता डर है तो नाटक क्यों करते हैं ?

पाँचवीं आवाज़ : प्लीज़, कीप क्वायट।

पहला दर्शक : ओ··· साहब···ओपनिंग म्यूज़िक दो, नाटक शुरू हो रहा है···भाई, हम दर्शक हैं टिकट वाले···हर चीज़ हमें चाहिए···म्यूज़िक···लाइट···स्टेज···!

[संगीत और प्रकाश।]

पहला दर्शक : अब आइए भी···आइए-आइए, हम आपका परिचय नहीं देंगे। समझ गए आपकी दिक्कत। बताइए भला, जब तक दर्शक रंगमंच की दिक्कत नहीं समझेगा, फिर थियेटर सामने कैसे आएगा। आइए···आइए !

[तीनों अफसर आते हैं।]

पहला दर्शक : पहला अफसर···दूसरा अफसर···तीसरा···। अयँ···गल्ती हो गई। अच्छा हाँ, यह दूसरा, यह तीसरा ! अच्छा फिर गल्ती हो गई ? देखिए, नाम बिना गल्ती होती है न ? देखिए, ऐसा करते हैं···मेरे पीछे पहला अफसर···! (कोई नहीं बढ़ता) हाँ, मैं तो भूल ही गया। अफसर मेरे पीछे कैसे खड़ा होगा। मैं ठहरा यू० डी० सी०···। अच्छा तो पहला अफसर यहाँ बैठेगा···दूसरा यहाँ··· तीसरा यहाँ।

[तीनों कुर्सियों पर बैठते हैं।]

पहला दर्शक : अब तो समझ गए···पहला···दूसरा···तीसरा···!

[डाक्टर का प्रवेश।]

पहला दर्शक : यह हैं एक डाक्टर ! इनका भी नाम नहीं, हाँ ! इन्हें भी ऊँचे जाना है, अगर इन तीनों मरीज़ों में से किसी एक को ठीक कर लिया तो सोना है सोना।

[आगंतुक का प्रवेश।]

पहला दर्शक : यह तो आगंतुक हैं ही, इन्हें तो कोई खतरा नहीं।

पहली आवाज़ : इस नाटक में कोई लड़की-वड़की भी है ?

पहला दर्शक : सब्र रखो यार, है क्यों नहीं !

[लेडी डाक्टर का प्रवेश।]

पहला दर्शक : यह हैं नर्सिंग होम की लेडी डाक्टर—एम० डी० कर रही हैं···डाक्टरी भी, रिसर्च भी !···नहीं-नहीं, नाम नहीं ! और हिन्दुस्तानी घरों की तरह हर नाटक में एक नौकर की जरूरत पड़ती है न··· (नौकर का प्रवेश) सो यह रहा एक नौकर ! बस्स···बिना नाम के अपना नाटक शुरू कर दो···कोई खतरा नहीं···!

[दर्शक भागना चाहता है···अभिनेताओं ने उसे घेर लिया है। और निःशब्द उससे तर्क करने लगे हैं।]

पहला दर्शक : भाई अब कैसा डर ? भई, कोई नहीं पहचान पाएगा। हाँ, बिलकुल उनकी नकल न करने लगना। थोड़ी अपनी आवाज़ में ही रहना।

[दर्शक बार-बार विंग की ओर, दर्शकों की ओर भागता है···अभिनेता उसे खींच ले आते हैं।]

पहला दर्शक : यार, यह तो बड़ी मुसीबत है ! ये कहते हैं मैं जानता हूँ उन अफसरों को जिनके चरित्र ये करने जा रहे हैं। इनका ख्याल है, मैं उनसे जाकर कह दूँगा··· लानत है !

[भागता है, फिर पकड़ा जाता है। अभिनेता उसके कान में कुछ कहते हैं।]

पहला दर्शक : ओ हो ! तो ऐसी एक्टिंग करो ना, कि उनके घर वाले, नाते-रिश्तेदार समझ न सकें !

[दर्शक छुड़ाकर दर्शकों में आ बैठता है। सारे अभिनेता चले जाते हैं। वही तीनों अफसर आते हैं।]

पहला दर्शक : हलो···हाऊ आर यू !

दूसरा अफसर : हेलो···!

तीसरा अफसर : हाऊ डू यू डू !

[तीनों परस्पर मुस्कराते हैं।]

पहला अफसर : पेप्टिक अल्सर के लिए मार्निंग वाक अच्छा है (**टहलने लगता है।**)

दूसरा अफसर : हाई ब्लड प्रेशर के लिए ब्रीदिंग एंड कंसन्ट्रेशन। हैं जी !

[यौगिक ढंग से साँस लेता है।]

तीसरा अफसर : लॉस आफ एपीटाइट के लिए यौगिक क्रियाएँ !

[हाथ-पैर की क्रियाएँ करता है।]

पहला अफसर : शी···आगे तुम्हें बोलना है···अफसर नम्बर दो ?

दूसरा अफसर : व्हाट नानसेन्स, मैं कभी भी अफसर नम्बर दो नहीं रहा।

तीसरा अफसर : और देखो न, मुझे तीसरा नम्बर दिया है जबकि गवर्नमेंट हायरारकी में, मैं सबसे ऊँचे पद पर हूँ···चेयरमैन फूड कार्पोरेशन !

दूसरा अफसर : बस···बस······बस ! आगे मत बढ़ना, हाँ !

पहला अफसर : सेक्रेट्री मिनिस्ट्री आफ···। वाह···!

दूसरा अफसर : (हँसता है) चेयरमैन ! सेक्रेट्री। बैठे रहो कुर्सी पर। इण्डियन एअर-लाइन्स का जनरल मैनेजर होना कुछ और ही बात है ! फ्री फर्निश्ड बंगला···लान···बाग-बगीचा···चपरासी···शोफर और···!

पहला अफसर : जब हाउसिंग मिनिस्ट्री में अंडर सेक्रेट्री था, क्या दिन थे वे, कितना काम करता था !···क्या मजाल कि कोई फाइल टेबुल पर रह जाए !

दूसरा अफसर : एवियेशन डिपार्टमेंट में यू० डी० सी० से नौकरी शुरू की थी, हाँ ! यह उन्नीस सौ चालीस की बात है। क्या इज्जत थी डिपार्टमेंट में ! क्या मजाल कि कोई कागज बिना मेरी नोटिंग के बाहर चला जाए ! मेरे ड्राफ्ट किए हुए नोट्स, लेटर्स, मेमो लोग याद करते हैं।

तीसरा अफसर : आखिरी बैच का आई० सी० एस० ! केरला युनिवर्सिटी का ग्रेजुएट···। त्रिवेन्द्रम में फर्स्ट पोस्टिंग। ओर्स राइडिंग में मेरा माफिक कोई नहीं देका !

पहला अफसर : कोलकता का प्रेसीडेन्सी कोलेज हमको ओव तक जानता ! हिस्ट्री

आनर्स का गोल्ड मेडलिस्ट, हें, हम पोटना शहर से चाकरी शुरू किया था। एक था मैकेन्जी शाहब। उशको माछ-भात खूब पशंद तो ! हम धड़ से उसके गुडबुक में चोला गया···पूरे स्टाफ को हम दुलत्ती मारकर घोड़ा माफिक आगे दौड़ गया ! सरपट···गैलप···!

दूसरा अफसर : हैं जी, हमारे लाओर की गल ही कुछ ओर थी···फादर कांट्रैक्टर थे···उन्नीस सौ तीस में उनके संग मैं यहाँ आया। पढ़ने-लिखने में मेरा जी कभी नहीं लगा। तब का ज़माना ही और था···बस यही सफदरजंग एअरोड्रोम बन रहा था और था···मैं चूहे की तरह इसी नए डिपार्टमेंट में घुस गया। फादर को बहुत बाद में पता चला। और वह बहुत परेशान हुए—'मेरा लड़का, दफ्तर में क्लर्क !' ओह, आज फादर जिन्दा होते, तो देखते वह लड़का किस ऊँचाई पर आ बैठा है !

तीसरा अफसर (सहसा चिल्लाता है) ओह, डाक्टर !

[डाक्टर, लेडी डाक्टर और नौकर दौड़े आते हैं।]

तीसरा अफसर : डिज़ीनेस, डिज़ीनेस ओअ···ओअ···!

[तीनों उसे सम्हालकर अंदर ले जाने लगते हैं।]

दूसरा अफसर : (सहसा) ओह गॉड···नौशिया···वोमिटिंग ! आअ···थू···थू!

पहला अफसर : मेरे कानों में फिर टेलीफोन की आवाज़, हेलो···हेलो···हेलो···रांग नम्बर···कट इट···आई हैव नो टाइम···कांटेक्ट माई पी० ए० पर्सनल···प्राइवेट अस्सिटेंट सेक्रेटरीज़···नानसेन्स···!

[तीसरे को नौकर सम्हालकर ले जाता है, दूसरे को लेडी डाक्टर और पहले को डाक्टर। क्षण-भर बाद पहला अफसर भीतर से टेलीफोन हाथ में उठाए और बात करता हुआ दौड़ा आता है। डाक्टर, नौकर और लेडी डाक्टर उसके पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं। नौकर के हाथ में दवाइयों और इंजेक्शन की ट्रे है। लेडी डाक्टर के हाथ में नोटबुक है, वह नोट करती जा रही है।

पहला अफसर : (फोन पर) यस···यस···यू० जी० सी० की रिपोर्ट पढ़ो···यस···हाँ···हाँ···! इस पर भंडारी कमीशन क्या कहता है ?···हाँ···हाँ···ठीक हाँ, हाँ···और शिमले में वाइस-चांसलर्स कांफ्रेंस के रेवमेंडेशन्स क्या थे ?···यस-यस···हमारे एजूकेशन सिस्टम में कुछ रांग है···यस-यस···इसमें बुनियादी परिवर्तन का रेकमेंडेशन है ! हाँ-हाँ, एक्स्पर्ट कमेटी की बैठक होने दो···हाँ-हाँ बोल दो, मैं प्रेसाइड कर रहा हूँ मीटिंग यहाँ से···कौन मिस्टर दास ? वह एतराज कर रहे हैं ? उनसे बोलो, उनके दामाद की अमेरिकन स्कालरशिप की फाइल मेरे पास आई है···!

डाक्टर : सर···सर, आप पर स्ट्रेन पड़ेगा। टेलीफोन हमें दीजिए !

पहला अफसर : यस, ठीक हो गया ना ! हाँ तो हायर एजूकेशन रिफार्म कमेटी की

मीटिंग शुरू करो। नमस्ते···नमस्ते···हाऊ आर यू डाक्टर भगवानदास···ओह डाक्टर नागपाल···आपका बड़ा लड़का कहाँ है ? ओह, उसका अप्वाइंटमेंट हो जाएगा···डोंट वरी···हें हें हें···। (सहसा) ओह पसीना-पसीना···शव भींग गया !

[नौकर फोन रख देता है। डाक्टर अफसर की नाड़ी देखने लगता है।]

डाक्टर : एक्ससेसिव स्वेटिंग आफ हैंड्स फीट—फेस···आर्मपिट्स···

[नौकर पसीना सुखा रहा है। लेडी डाक्टर लिखती जा रही है। अफसर चुपचाप कुर्सी पर पड़ा है। सहसा फिर फोन उठा लेता है।]

डाक्टर : सर, यह खतरनाक है। फोन रख दीजिए···प्लीज़···सर !

पहला अफसर : हेलो···डाक्टर नागपाल···लिसिन मी···प्लीज, सिक्सटी फाइव, सिक्सटी ऐट, सिक्टरी नाइन की रिफार्म कमेटियों की फाइल पढ़ दीजिए···दैट्स आल, मैं यहाँ से दफ्तर आते ही सब ठीक कर लूंगा। यस-यस···सुनिए···!

डाक्टर : सर देखिए···आपको आराम करना चाहिए···आफिस···मीटिंग···फाइल्स सब भूल जाना चाहिए।

पहला अफसर : मालूम है, एक दिन अगर मैं भूल जाऊँ तो यह मिनिस्ट्री ठप हो जाएगा। (फोन पर) हेलो चंदरमोहन···मेरे स्टेनो को दो···नहीं-नहीं···पी० ए० को···यस-यस···अंडर सेक्रेट्री सुमैइया को बोलो···ज़रा वाच रखे। अंडर हाँ, मिनिस्टर का प्रोग्राम क्या है ! (सहसा) आह···ओ माँ !

[कुर्सी पर शिथिल पड़ जाता है। डाक्टर उसे इंजेक्शन देने लगता है। अफसर की आँखें बंद हैं।]

डाक्टर : पिछले बीस साल से अलकोहलिक···हैज़ सरवाइव्ड टू माइंड कोरोनरी अटैक्स···ग्रासली ओवरवेट···क्रानिकली डिस्पेप्टिक।

[लेडी डाक्टर लिखती जा रही है।]

डाक्टर : पिछली बातों से मालूम हुआ है···डाक्टरों की सलाह से इन्होंने गॉफ़ खेलना शुरू किया। उस खेल में यह इस कदर डूबे कि लंच के बाद यह अक्सर दफ्तर नहीं गए, लेकिन नौकरी में ऊँचे से ऊँचे उठने के लिए उन सबको काकटेल डिनर देना शुरू किया···जिनसे मरीज़ को गुडबुक्स में रहना जरूरी था !

लेडी डाक्टर : गॉफ़ खेलने और अल्कोहलिक होने में···

डाक्टर : यस देयर इज़ लॉजिक···! ऐसा है, जब आदमी अपनी अयोग्यता से नौकरी की ऊँचाई पर जा पहुँचता है और जब वहाँ अपने आपको अयोग्य···इनकाम्पिटेंट महसूस करने लगता है तब उसमें तरह-तरह की मानसिक, शारीरिक, स्नायविक बीमारियाँ शुरू होती हैं—जैसे कोलाइटिस, कांस्टीपेशन, डायरिया, हाइपर टेंशन···इनसोमनिया···क्रौनिक फेटीग···माइग्रेन हेडेक···नौसिया···वोमिटिंग···

डिज़ीनेस···नर्वस डरमेटाइटिस···सेक्सुअल इम्पोटेंस···

[पहले अफसर को छींकें आनी शुरू होती हैं। वह दौड़कर टेलीफोन उठाता है और उस पर 'हेलो, हेलो' करता हुआ भीतर भागता है। नौकर, दोनों डाक्टर उसका पीछा करते हुए भीतर जाते हैं। डाक्टर दौड़ा आता है···लेडी डाक्टर पीछे है।]

लेडी डाक्टर : सर···सुनिए। यह भी कोई अटैक है ?

डाक्टर : ये मरीज़ हमारी जान लेने आए हैं। ये हमें भी मरीज़ बना देंगे। हम इन्हें डाँट नहीं सकते···ये हमें नौकरी से निकलवा देंगे। हम इन्हें समझा नहीं सकते···ये इतने समझदार हैं···ये यहाँ नर्सिंग होम में आए हैं···आराम पाने के लिए···मगर इनके दिमाग में हर वक्त वही आफिस···वही कुर्सी···वही डर···वही···वही-वही !

[लेडी डाक्टर इस बीच तेज़ी से लिखती जा रही थी।]

डाक्टर : यह क्या ?

लेडी डाक्टर : रिपोर्ट।

डाक्टर : नानसेन्स !

लेडी डाक्टर : मरीज़ और टेलीफोन में कोई रिश्ता है ?

डाक्टर : यस···अफसर कुर्सी पर जब अपने आपको अयोग्य पाता है तो उसे छिपाने के लिए वह शिकायतें करने लगता है कि उसे और स्टाफ चाहिए। और स्टाफ से सीधे संपर्क के लिए उसके टेबुल पर कई टेलीफोन चाहिए, कम-से-कम पाँच-छः टेलीफोन। और इस तरह वह अयोग्य अफसर 'फोनोफिलिया' का मरीज़ हो जाता है।

[भीतर शोर होता है। दूसरा अफसर किसी को डाँटने लगा है। दोनों डाक्टर भीतर दौड़ते हैं। दूसरा अफसर नौकर के सिर पर फाइलें लदवाए और स्वयं अपने हाथों में फाइलें लिए हुए आता है। दोनों मंच पर दौड़ रहे हैं···फाइलें रखने की उसे उचित जगह नहीं मिल पा रही है।
टेबुल के स्ट्रेचर पर फाइलें रखी जाती हैं।]

दूसरा अफसर : दरवाज़े पर खड़े हो···नो एडमीशन विदाउट परमीशन···।

नौकर : डाक्टर साहब !

दूसरा अफसर : बिना मेरी इजाज़त के कोई अंदर नहीं आ सकता !

नौकर : यस सर !

[तैनात खड़ा हो जाता है।]

दूसरा अफसर : (फाइलों में डूबता हुआ) नौकरी चाहिए ?

नौकर : जी सरकार···मेरा भाई है···बी०ए० पास···पिछले आठ सालों से बेकार है।
दूसरा अफसर : अब तक हजारों आदमियों को नौकरी दिलाई है।
नौकर : भाई का नाम इम्प्लायमेंट एक्सचेंज में रजिस्टर्ड है।
दूसरा अफसर : उसकी कोई जरूरत नहीं !
नौकर : पहले जहाँ-जहाँ वह जाता, सभी कहते, इम्प्लायमेंट एक्सचेंज के थ्रू आओ।
दूसरा अफसर : भई, आने-जाने के तमाम रास्ते हैं···एम्प्लायमेंट एक्सचेंज हमने अपनी सुविधा के लिए बना रखा है···यू नो···हैं जी, जैसे कंडक्टर के पास शिकायत की किताब रख देने में सहूलियत हो जाती है···हैं जी···यू नो !

[फाइलों से जैसे खेल रहा है।]

नौकर : हुजूर, मेरे भाई की नौकरी···
दूसरा अफसर : अर्जी मेरे पी० ए० को दे दो।
नौकर : हुजूर, माफी चाहता हूँ—ऐसा कई अफसरों ने कहा···आप जानते हैं यहाँ तो आप ही जैसे बड़े-बड़े अफसर आते हैं, मगर कुछ नहीं हुआ।
दूसरा अफसर : (सहसा) आह ! यार, मेरे हाथों में झुनझुनी होने लगी ! (दोनों हाथ तेजी से हिला रहा है) कमबख्त बढ़ती जा रही है।
नौकर : डाक्टर बुलाऊँ ?
दूसरा अफसर : नहीं-नहीं-नहीं। लगता है, मुझे पैरेलेसिस का अटैक हो जाएगा।
नौकर : हुजूर···ऐसा आपके दुश्मनों को हो।

[फाइलों को अपने सीने पर···सिर पर, हाथ में दबाए पूरे मंच पर घूमने लगता है।]

दूसरा अफसर : मेरा कोई दुश्मन नहीं। महर्षि वियोगानन्द मेरे गुरु हैं···साईं बाबा का मैं भक्त हूँ···मंगल का व्रत रखता हूँ। हनुमान मन्दिर की गवर्निंग बाडी का मैं चेयरमैन हूँ।
नौकर : जै हनुमान ज्ञान गुन सागर
जै कपीस तिहुं लोक उजागर
जै जै जै हनुमान गोसाईं···।
दूसरा अफसर : स्टॉप दिस नानसेन्स ! (भक्तिभाव में नौकर की आँखें बंद हैं। हाथ जुड़े हैं। वह निःशब्द हनुमान चालीसा का पाठ कर रहा है।) छीं: छीं: छीः छीं: छीं: !
नौकर : हुजूर, डाक्टर बुलाऊँ ?
दूसरा अफसर : छीं: छीं: !

[दोनों डाक्टर दौड़े आते हैं।]

दूसरा अफसर : गेट आउट···छीं:···गेट आउट···छीं: !

[दोनों डाक्टर भाग जाते हैं।]

दूसरा अफसर : कह, यस सर…यस सर…यस सर ! यस सर !

[नौकर 'यस सर' की रट लगाता है। अफसर की छींक रुक जाती है।]

दूसरा अफसर : तबियत ठीक हो गई न ! मैं जानता हूँ अपने मर्ज़ की दवा ! (**फाइलों को देखता है, पढ़ता है, हस्ताक्षर करता है**) अगर मैं एक हफ़्ते के लिए अपनी इस जगह से हट जाऊँ तो हवाई जहाज़ों का उड़ना बन्द हो जाए…। (**सहसा**) ग्राउण्ड इंजीनियर यूनियन की फाइल को चूहा जैसे कुतर गया ? …अरे…एअरहोस्टेस रिप्रेजेंटेशन फाइल पर नमी कहाँ से आई ?

नौकर : हुज़ूर, आपकी छींक !

दूसरा अफसर : अरे रे…रे…इस फाइल को छूना खतरनाक है…इट इज़ मोस्ट इन्फेक्शस…सारी फाइलें स्ट्रेचर में डालो !

[स्ट्रेचर पर फाइलों को रखकर दोनों भीतर उठा ले जाते हैं।]

नौकर : राम नाम सत्य है ! सत्य बोलो मुक्ति है !

दूसरा अफसर : अबे डोंट गो आउट आफ कैरेक्टर !

नौकर : अरे मारो गोली कैरेक्टर को (**एक्टर का नाम लेता है**) कहाँ के तुम बड़े जनरल मैनेजर…और कहाँ का मैं नौकर !

दूसरा अफसर : अबे, एक्ज़िट है यहाँ ?

नौकर : सुनो यार, थोड़ी देर मुझे अफसर का रोल करने दो…!

पहला दर्शक : नहीं-नहीं, अब यह रद्दोबदल नहीं हो सकता !

नौकर : चोप्प ! यह हमारा घरेलू मामला है।

पहली आवाज़ : यार, झगड़ा मत करो।

दूसरा अफसर : अच्छा खासा नाटक चल रहा था…कमाल है !

स्त्री स्वर : प्लीज़ कीप क्वायट।

नौकर : अच्छा बाबा 'एक्ज़िट !'

[दोनों का तेज़ी से प्रस्थान। मंच सूना। दर्शकों में से आवाज़ें, सीटियाँ।]

पहला दर्शक : लगता है फिर भाग गए।

तीसरी आवाज़ : कमाल है…यह नाटक नहीं मज़ाक है !

पहला दर्शक : घबड़ाओ नहीं…शांत रहिए।

तीसरी आवाज़ : क्या शांत रहिए ? कहीं ऐसे नाटक खेला जाता है ! हम भी नाटक खेलते हैं। मैं नाटक के बारे में लिखता भी हूँ।

पहली आवाज़ : जी हाँ, खबरदार…सबसे बड़े ड्रामा क्रिटिक हैं !…स्याह को सफेद और सफेद को स्याह करने वाले।

दूसरी आवाज़ : यह क्या तमाशा है ?

पहला दर्शक : आपको मालूम होना चाहिए…इत्ते बड़े-बड़े अफसरों का ड्रामा खेलना कितना खतरनाक है ! पता नहीं कोई मुसीबत आ गई हो।

[सीटियाँ और शोर। डाक्टर की भूमिका करने वाला अभिनेता दौड़ा आता है।]

डाक्टर : बस···बस शुरू कर रहे हैं। पहले अफसर की भूमिका करने वाला अभिनेता डर गया है···कहता है···वह नौकरी से बर्खास्त कर दिया जाएगा।

कई आवाजें : तो हम क्या करें ?

डाक्टर : थोड़ा नाटक में सुधार किया जा रहा है। मतलब काटा-छाँटा जा रहा है।

दूसरी आवाज : इस वक्त ? कमाल है !

लेडी डाक्टर : (आती है) आइए···आइए नाटक शुरू हो रहा है।

[दोनों जाते हैं। तीसरा अफसर बहुत बड़ा सिगार पीता हुआ आता है। लग रहा है, जैसे दफ्तर में अपने स्टाफ से घिरा हुआ है।]

तीसरा अफसर : नो···नो···नो···डोंट डिस्टर्ब मी। बिफोर ट्रबुल एराइजेज, आप मिनिस्ट्री को एक डी० ओ० भेज दीजिए। क्या यस-यस···ज्वाइंट सेक्रेट्री को बोल देना, हम दोनों साउथ इंडियन हैं।···ह्वाट···पेपर साइन करने हैं ? सेक्रेट्री को मार्क करो। मेरा हाथ टायर्ड हो जाता है। दोसरा मंगाओ···दोसरा···! वेरी इम्पार्टेन्ट फाइल···ऐसा बोलो ना···ओअ···येन्दा !

[जैसे तमाम फाइलों पर दस्तखत करने लगा है।]

तीसरा अफसर : नेई···ओओ। बोलो, मैं किसी से नेई मिलना माँगता। (उबकाइ आने लगती है) ओअ···ओ···अ

[डाक्टर, लेडी डाक्टर और नौकर भागे आते हैं।]

डाक्टर : बैठ जाइए···सर बैठ जाइए !

[बैठ नहीं पाता। जैसे अकड़ गया है।]

नौकर : हुजूर, सारा बदन सख्त हो गया है। (दर्शकों से) समझ लो, कितने सख्त अफसर हैं।

डाक्टर : अच्छा लेट जाइए।

[लेट नहीं पाता।]

लेडी डाक्टर : इन्हें कमरे में ले जाया जाए।

डाक्टर : एक्सरे लेना होगा। स्टूल, ब्लड, यूरीन···देखना होगा। ब्लड प्रेशर···ब्लड प्रेशर···!

[ब्लड प्रेशर देखने के लिए मशीन लगती है। डाक्टर जब हवा भरता है···तब अफसर मेंढक की तरह उछलता है। उसकी चापलूसी में लेडी डाक्टर और नौकर भी उछलते हैं।

डाक्टर : ब्लड प्रेशर वेरी हाई ! ···वेरी हाई···

[खड़े-खड़े ही अफसर को उठाकर अन्दर ले जाते हैं। नौकर आता है।]

नौकर : मैं तो जान छुड़ा के भाग आया। कार्डियोग्राम लिया जा रहा है। ओअ···ओअ करता हुआ सबके ऊपर थूक रहा है ! मैंने कहा खिसक चलो, बिफोर ट्रबुल एराअज़ेज़।

[लेडी डाक्टर आती है।

लेडी डाक्टर : अरे, तुम यहाँ खड़े हो···जाओ डाक्टर खन्ना, डाक्टर पाल···डाक्टर चटर्जी···डाक्टर सिंह को बुला लाओ···!

नौकर : मैंने सबको फोन कर दिया है।

लेडी डाक्टर : सीरियस केस है···दौड़कर बुलाओ···! **(जाती है।)**

[नौकर दौड़ता है पूरे मंच पर—जैसे हर डाक्टर से मिलकर खबर देता है।]

नौकर : नमस्ते, डाक्टर साहब···पहला अफसर, दूसरा, तीसरा, चौथा···पाँचवाँ सीरियस सिच्यूएशन···क्रिटिकल···बुलाया है···यस, यस नर्सिंग होम···ब्लड प्रेशर हाई टू-फिफ्टी···लो···फिफ्टी···नमस्ते डा० सिंह शुगर···शुगर···प्वाइन्ट सिक्स पेशाब में···यस-यस···एलार्मिंग···नमस्ते, डाक्टर चटर्जी···हें-हें ब्लड शुगर···यस···यस···ब्लड शुगर प्वाइंट फाइव···नमस्ते···सर···नमस्ते, डाक्टर खन्ना साहब···हें-हें फ्रीक्वेन्ट यूरीनेशन···गुड मार्निंग, डाक्टर पाल···नासिया वोमिटिंग···घोड़े की चाल माफिक दिल का धड़कना···कानों में चूहों की आवाज़ ···हाथी···घोड़ा···चूहा···!

[यह कहता हुआ भागता है। आगंतुक का प्रवेश उसकी पीठ, पेट, हाथ में छोटे डंडों में लगी तख्तियाँ बँधी हुई हैं। उन तख्तियों पर लिखा हुआ है : ब्रिज, गोल्फ, बागबानी, कुकिंग, गीता दर्शन, धर्म यात्रा, यौगिक क्रिया, तेल मालिश। नौकर आगंतुक को देखता है। आगंतुक धीरे-धीरे मंच पर चलता है। नौकर बड़ी तेज़ी से उसके चारों ओर घूम रहा है।]

नौकर : कौन है ? मेरा मतलब तू कौन है ? ऐज़ मैटर आफ फैक्ट, हू आर यू ? अरे यह तो बोलता ही नहीं ! हे भाई, कौन है तू ? अबे, कौन है तू ? अबे साले कौन है तू ? **(सन्नाटा)** कमाल है ! देख, बिफोर ट्रबुल एराइज़ेज़, बता दे, कौन है··· मैं बुलाता हूँ चौकीदार···तू यहाँ नर्सिंग होम में कैसे घुस आया ?···कैसे घुस आया !···कैसे घुस आया ?

[नौकर जाता है। थोड़ी देर बाद आगंतुक का प्रस्थान। नौकर दौड़ा आता है। पीछे-पीछे डाक्टर और लेडी डाक्टर का प्रवेश।]

नौकर : अरे ! कहाँ चला गया ?···यहीं था···यहाँ खड़ा था।

डाक्टर : यहाँ कैसे आया ?

नौकर : यही तो !

डाक्टर : ढूँढो उसे, कहाँ गया ?

लेडी डाक्टर : क्या-क्या टाँग रखा था ?

नौकर : ब्रिज···गोल्फ···बागबानी···कुकिंग···गीता दर्शन···धर्म यात्रा, यौगिक क्रिया ···तेल मालिश !

[नौकर जाता है।]

लेडी डाक्टर : डाक्टर···!

डाक्टर : यस···क्या है ?

लेडी डाक्टर : पैथोलॉजिकल रिपोर्ट्स···नम्बर वन, टू···थ्री···मेडिकल रिपोर्ट्स वन, टू···थ्री···डाइग्नोसिस···हिस्ट्री···।

[तीनों अफसर एक-एक करके आते हैं।]

पहला अफसर : काश, मेरा डाइजेशन एक बार ठीक हो जाता !

दूसरा अफसर : काश, एक रात मैं साउंड स्लीप ले पाता।

तीसरा अफसर : इफ़ ओनली आई कुड गेट बैक माई एपीटाइट !

[तीनों कुर्सियों पर गिरकर बैठते हैं।]

पहला अफसर : डाक्टर, तुम्हें स्कालरशिप चाहिए विदेश जाने के लिए ?

दूसरा अफसर : हैलो लेडी डाक्टर, तुम्हारा ग्रेड क्या है ?

तीसरा अफसर : भयंकरम् ! जिसे बोलो एप्वाइन्टमेंट देता !

[डाक्टर लेडी डाक्टर से अलग बातें करता है।

डाक्टर : इनकी ताकत इनकी बीमारी है।

लेडी डाक्टर : इनकी बीमारी इनकी ताकत है !

डाक्टर : ये कुर्सियाँ इनके लिए एलर्जिक हैं।

लेडी डाक्टर : कुर्सियाँ एलर्जिक हैं !

डाक्टर : इनसे बोलो, कुर्सियाँ छोड़ दें।

लेडी डाक्टर : छोड़ दें !

डाक्टर : ये बीमार हैं···इन्हें चाहिए, टेक थिंग्स ईजी···नाट टू वर्क सो हार्ड···क्योंकि ये कुछ काम कर नहीं सकते···इन्हें आराम चाहिए··· कम्पलीट रेस्ट···!

लेडी डाक्टर : क्यों ?

डाक्टर : दे सफर फ्रॉम वोकेशनल इनकम्पीटेंस !

लेडी डाक्टर : (लिख रही है) वोकेशनल इनकम्पीटेंस।

डाक्टर : शी···धीरे-धीरे !

[सब एक-दूसरे को शक की निगाहों से देखने लगते हैं।]

लेडी डाक्टर : प्लीज···सर, आप लोग कुर्सी छोड़ दीजिए !

पहला अफसर : क्या बोलता है ?

दूसरा अफसर : ह्वाट ?

तीसरा अफसर : आई मीन टू से···ह्वाट ? ह्वाई ?

लेडी डाक्टर : आप सब को एलर्जी है कुर्सियों से···।

तीनों : ह्वाट नानसेन्स !

[तीनों तरह-तरह से हँसते हैं ।]

पहला अफसर : आई नो बिफोर ट्रबुल एराइजेज़ ।

दूसरा अफसर : आई मीन टु से···यू नो ।

तीसरा अफसर : दैट्स राइट···यू सी···।

पहला अफसर : यू नो···।

दूसरा अफसर : ओ-के···ओ-के ।

तीसरा अफसर : यस यस यस···। नो नो नो !

पहला अफसर : नो···नो ··नो···। यस यस यस !

तीसरा अफसर : हाऊएवर···हाऊएवर···!

[यह कहते हुए तीनों पीछे कुर्सियाँ उठाए हुए घूमने लगते हैं ।]

पहला अफसर : हा हा हा हा !

दूसरा अफसर : हू हू हू हू !

तीसरा अफसर : ही ही ही ही !

[तीनों थककर फिर कुर्सियों पर बैठ जाते हैं ।

पहला अफसर : हम पैदल चल सकता !

दूसरा अफसर : हम साइन कर सकता !

तीसरा अफसर : हम कुर्सी का वज़न उठा सकता !

[तीनों की बेहूदा हँसी ।]

तीसरा अफसर : हमारा पैर टायर्ड हो गया ।

दूसरा अफसर : इनकाम्पीटेंट डाक्टर्स !

पहला अफसर : (टेलीफोन उठा लेता है) हेलो···मिसेज़ वासवानी, हमारे पी० ए० को मिलाओ···यस···पी० ए०···अण्डर सेक्रेट्री को मिलाओ···हेलो···ज्वाइंट सेक्रेट्री को दो···। हेलो···!

दूसरा अफसर : ब्रिंग माई फाइल्स !

तीसरा अफसर : आई कांट लिव विदाउट फाइल्स !]

[लेडी डाक्टर दौड़कर दोनों की फाइल्स लाकर देती है। पहला फोन पर न जाने क्या ऊटपटांग बोल रहा है और ये दोनों फाइलों में डूब गए हैं।

डाक्टर : इन पर अटैक पड़ सकता है ।

लेडी डाक्टर : अटैक पड़ सकता है···!

डाक्टर : मेडिकल सुपरिंटेंडेंट ने इनकी मेडिकल रिपोर्ट माँगी है। नम्बर वन फोनो-फीलिया···नम्बर दो···पेपीटोमीनिया···नम्बर तीन फीलियोफीलिया···। पहले पर हार्ट अटैक हो सकता है···दूसरे पर थ्रम्बोसिस···तीसरे पर पैरेलिसिस···। (चिल्लाता है) स्टॉप···स्टॉप···!

[सन्नाटा]

पहला अफसर : ओह, नानसेन्स···क्या बुरा टाइम आ गया। कोई हमारा तारीफ नहीं कोरता।

दूसरा अफसर : कोई हमारी मदद नहीं करता।

तीसरा अफसर : कोई नेहीं समझता···मेरे ऊपर कितना काम है···अउर नीचे का सारा स्टाफ कितना इनक्योरबिल इनकाम्पीटेंट है।

डाक्टर : बोलना बन्द कीजिए···आराम कीजिए···कम्प्लीट रेस्ट !

[डाक्टर 'स्टॉप स्टॉप' चिल्ला रहा है। तीनों अपनी बातें दुहरा रहे हैं। एक बिंदु पर आकर तीनों 'ओ ओ ओ' करने लगते हैं। तभी बाहर से नौकर आगन्तुक के साथ आता है। आगंतुक की तख्तियों पर लिखा हुआ है : खाना कम, शराब कम ! गिव अप नाइट लाइफ ! कर्ब सेक्स लाइफ !]

डाक्टर : कौन है तू ?

लेडी डाक्टर : हू आर यू ?

नौकर : कुछ नहीं बोलता।

डाक्टर : गूँगा है ?

नौकर : नहीं साहब, यह जनरल वार्ड में पिछले कितने महीनों से भर्ती है। पहले इसकी आँख की दवा हुई···फिर लीवर की···फिर पीलिया की···फिर···हिस्टीरिया की···फिर···फिर···फिर···

तीनों अफसर : कौन है ? हू ? हू ? हू ?

[आगंतुक भागता है। नौकर उसका पीछा करता है। नौकर वापस आता है।]

नौकर : बेहोश होकर गिर पड़ा।

पहला अफसर : उस डर्टी मैन को दूर करो हमारे नर्सिंग होम से !

दूसरा अफसर : उसे छूत की बीमारियाँ हैं !

तीसरा अफसर : हमारी तंदुरुस्ती के लिए वह डेंजरस है !

[नौकर बाहर जाता है।]

डाक्टर : सर, हमें आपके सिमटम की रिपोर्ट तैयार करनी है।

पहला अफसर : कैसा सिमटम ?

डाक्टर : प्लीज़···आइए इस टेबुल पर लेट जाइए···

पहला अफसर : पहले मैं ?

दूसरा अफसर : जी नहीं, पहले मैं···आई ऐम फ़र्स्ट इन हायरारकी आई ऐम जनरल मैनेजर···!

पहला अफसर : देन ह्वाट ?···आई ऐम दी सेक्रेट्री···! आई एम फ़र्स्ट···!

तीसरा अफसर : नो-नो···नो···ओअ येन्दा ! आई एम चेयरमैन···यू···नो···!

दूसरा अफसर : मेरी तनख्वाह चार हज़ार है !

पहला अफसर : हुअं···लुक···चार हज़ार मेरा टी० ए० बनता है !

तीसरा अफसर : मेरे यहाँ का बजट दस करोड़ है !

दूसरा अफसर : दस करोड़ हमारे यहाँ का डिफिसिट बजट है !

पहला अफसर : मेरे अन्दर ढाई हज़ार स्टाफ मेम्बर हैं !

दूसरा अफसर : पूरे मुल्क की हवाई जहाज़रानी मेरी मुट्ठी में है !

तीसरा अफसर : कंट्री का सारा फूड एग्रीकल्चर मेरे अधिकार में है !

[तीनों लड़ने लगते हैं ।]

डाक्टर : आर्डर···आर्डर···हमारे लिए हुजूर···आप तीनों बराबर हैं ।

दूसरा अफसर : नो-नो···हम तीनों कैसे बराबर हो सकते हैं ?

डाक्टर : अच्छा आप तीनों अलग-अलग हैं···।

तीनों अफसर : यू नो हम अपनी कुर्सी नहीं छोड़ सकते···। हम कभी कैजूअल लीव नहीं लेते···।

पहला अफसर : हम कभी लाँग लीव पर नहीं जाते ।

दूसरा अफसर : हम सुबह साढ़े आठ बजे दफ्तर में अपनी कुर्सी पर बैठ जाते हैं और रात के आठ बजे तक वहाँ काम करते हैं ।

पहला अफसर : हमारा इतना भारी रिस्पांसिबिल्टी है !

दूसरा अफसर : कुर्सी खींचने वाले बहुत बढ़ गए हैं !

तीसरा अफसर : ओप्···भयंकरम् !

डाक्टर : प्लीज़ कीप क्वायट···देखिए सिगार मत जलाइए···सर···! कुर्सी पर ही बैठे रहिए···यहीं इक्ज़ामिन कर लेंगे ।

पहला अफसर : हे···पोस्टपोन इट !

दूसरा अफसर : कीप पैन्डिंग !

तीसरा अफसर : मेक इट टुमारो !

डाक्टर : नो सर···ऊपर रिपोर्ट देनी है···हो सकता है सरकार आप लोगों को विदेश भेजे···स्पेशल ट्रीटमेंट के लिए···।

पहला अफसर : नो-नो···मैं अपना देश एक दिन के लिए नहीं छोड़ सकता !

दूसरा अफसर : हम···विदेश···हर महीने हम विदेश जाते हैं !

तीसरा अफसर : वी आर ऑल राइट···हमको क्या हुआ है···वी आर हेल एंड हार्टी···?

[तीनों तरह-तरह से हँसने लगते हैं ।]

पहली आवाज़ : क्या ही-ही कर रखा है···यह नाटक खत्म भी करो !

दूसरी आवाज़ : हे, बहुत हो गया !

पहला दर्शक : सब्र रखो भाई···बस, नाटक खत्म होने को है !

पहला अफसर : अच्छा-अच्छा, चलो एक्ज़ामिन करो !

पहला दर्शक : वैसे नाटक में इतनी आसानी से अफसर लोग नहीं तैयार हो···तेवड़ी बहसें होती हैं।

तीसरी आवाज़ : अजी हमारे पास इत्ता वक्त नहीं !

डाक्टर : हमारे पास भी इत्ता वक्त नहीं।

पहली आवाज़ : ऐक्शन···घटना···क्लाइमेक्स !

पहला अफसर : मतलब हमारा हार्ट अटैक हो जाए !

पहला दर्शक : साइलेंस प्लीज़ !

[नौकर दौड़ा आता है। उसके हाथ में मेडिकल रिपोर्ट्स हैं। डाक्टर, नर्स रिपोर्ट्स देखते हैं।]

डाक्टर : दिस इज़ नम्बर वन···नम्बर टू···नम्बर थ्री···। (सहसा) यह क्या ? ये किसके रिपोर्ट्स हैं ? ये तो जानवरों के अस्पताल के कागज़ात हैं !

लेडी डाक्टर : यस डाक्टर···!

नौकर : नहीं हुज़ूर···इन्हीं के हैं।

[दोनों घबड़ाए हुए रिपोर्ट्स देखते हैं।]

डाक्टर : ह्वाट ?

लेडी डाक्टर : यस डाक्टर···नम्बर वन···घोड़ा···नम्बर दो···चूहा···नम्बर तीन हाथी। आल एनिमल सिमटम्स···।

नौकर : जी सर, सारे डाक्टर लोग घबड़ा गए हैं !

डाक्टर : ओह···ह्यूमन सिमटम्स की जगह एनिमल सिमटम्स···!

[डाक्टर, लेडी डाक्टर और नौकर भयभीत होकर भागते हैं। किनारे छिपकर उन तीनों को देखते हैं।]

पहला अफसर : क्या गोलमाल है ? सबको डिसमिस करा दूँगा !

दूसरा अफसर : नौकर !

तीसरा अफसर : डाक्टर !

[डाक्टर, लेडी डाक्टर दोनों मिलकर नौकर को आगे ठेलते हैं।]

नौकर : घोड़ा···चूहा···हाथी···!

तीनों : क्या ? ह्वाट ?···

नौकर : माई-बाप, मेरा कोई कसूर नहीं···आप लोगों का पैथालाजिकल मेडिकल रिपोर्ट्स···बताता है। जानवरों के सिमटम्स ! घोड़ा···चूहा···हाथी के लक्षण···!

[तीनों हँसते हैं। फिर आवेश में उठते हैं। फिर अजीब ढंग से हँसने लगते हैं। फिर हँसते-हँसते तीनों क्रमशः घोड़ा, चूहा और हाथी जैसे व्यवहार करने लगते हैं। नौकर भागकर किनारे छिप जाता है।]

तीनों : (सहसा) क्या ?

[विराम]

तीनों : हममें जानवरों के लक्षण !

[वही आगंतुक तख्तियाँ लटकाए आता है। तीनों उसे पकड़ लेते हैं।]

पहला अफसर : डाक्टर···लेडी डाक्टर !

[दोनों डरे हुए आते हैं।]

दूसरा अफसर : एक्ज़ामिन हिम।

तीसरा अफसर : होल्ड हिम···!

[डाक्टर, नौकर उसे पकड़कर टेबुल पर लिटाते हैं और परीक्षण करते हैं। रिपोर्ट देते हैं।]

तीनों : (पढ़ते हैं) मनुष्य के लक्षण ?

पहला अफसर : हाऊ ? ह्वाई ?

लेडी डाक्टर : यस डाक्टर, हाऊ ह्वाई ?···हाऊ ह्वाई···हाऊ ह्वाई ?

नौकर : मुँह बंद करो बहनजी, सुनो, मैं बताता हूँ···सन् उन्नीस सौ पचपन में इसने बी० ए० पास किया थर्ड डिवीजन में···तब से यह बेकार है···कहीं कोई नौकरी नहीं मिली।

पहला अफसर : ओह, यह बात···मैं देता हूँ इसे नौकरी !

दूसरा अफसर : मैं अभी देता हूँ अप्वाइंटमेंट लेटर !

तीसरा अफसर : यह लो नौकरी !

[आगंतुक तीनों कागजों को मुँह में डालकर खाने लगता है।]

सभी : (घबड़ा जाते हैं) यह क्या करता है···क्या करता है ?

नौकर : बीस साल का भूखा है साहब !

सभी : यह मर जाएगा···थूक दे !

[आगंतुक में धीरे-धीरे घोड़े, चूहे और हाथी, तीनों के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। सब भागता हैं।]

नौकर : डरिए नहीं···कोई डर नहीं। इसे एक साथ तीन नौकरी मिल गई है !

पहला अफसर : घोड़ा···घोड़ा !

दूसरा अफसर : चूहा···चूहा !

तीसरा अफसर : हाथी···हाथी !

[पूरे मंच पर भगदड़ मच जाती है ।]

पहला अफसर : हे, मैंने तुझे नौकरी दी !

आगंतुक : यस सर ! यस सर !

दूसरा अफसर : तुझे एल० डी० सी० बनाया !

आगंतुक : यस सर ! यस सर !

तीसरा अफसर : बिहेव योरसेल्फ !

आगंतुक : यस सर···यस सर !

नौकर : हाय, कैसे बोले—यस सर, यस सर !

आगंतुक : हाथी···घोड़ा···

सभी : (समवेत) यस सर···यस सर !

आगंतुक : चूहा···हाथी···।

सभी : यस सर, यस सर···।

आगंतुक : प्यारा देश···।

सभी : यस सर···यस सर !

आगंतुक : यस सर···यस सर···!

सभी : यस सर···यस सर !

[पर्दा]

कॉफी हाउस में इन्तज़ार

पात्र

पहला व्यक्ति

दूसरा व्यक्ति

बेयरा

[कॉफी हाउस का एक कमरा। एक टेबल और एक ही कुर्सी। पृष्ठभूमि में तीन व्यक्तियों की परस्पर बातचीत। पहला व्यक्ति जिसकी आयु लगभग पैंतालीस साल है, पाजामा-कुर्ता पहने हुए तेजी से आता है और दौड़कर कुर्सी पर बैठ जाता है। उसके पीछे ही दूसरा व्यक्ति आता है, अवस्था लगभग पच्चीस वर्ष है, पैंट-कमीज़ में। देखते ही पहला व्यक्ति जल्दी-जल्दी टेबल पर अपने कागज़-पत्र रखता है।]

पहला व्यक्ति : (साधिकार) बेयरा !···

बेयरा : (आता है) जी, बोलिए···जी हुकुम कीजिए।

पहला व्यक्ति : एक कॉफी, तीन गिलास पानी···एक कॉफी तीन पानी···एक कॉफी तीन पानी···

[बेयरा भी यही दुहराता है। दूसरा व्यक्ति इस इन्तज़ार में है कि बात खत्म हो तो वह बोले। पर बात खत्म नहीं हो पाती है। बेयरा बोलता हुआ जाता है।]

पहला व्यक्ति : मैं यहाँ रोज़ बैठता हूँ। मैं पिछले तेरह वर्षों से यहाँ बैठता आ रहा हूँ—इसे सारी दुनिया जानती है। कोई एक न जाने तो मैं क्या करूँ !

दूसरा व्यक्ति : आप झूठ बोलते हैं। पिछले छह दिनों से मैं यहाँ लगातार बैठता आ रहा हूँ। यहाँ एक कुर्सी और हुआ करती है। मैं यहाँ बैठा उसका इन्तज़ार करता था। वह आती थी, फिर हम आमने-सामने बैठकर बातें किया करते थे।

[पहला व्यक्ति टेबल पर अपने लिखने का सामान सजाता रहता है।]

पहला व्यक्ति : मैं यहाँ बैठकर अपना काम करता हूँ···

दूसरा व्यक्ति : मैं भी तो अपने काम से ही यहाँ आया हूँ।

पहला व्यक्ति : बात करना कोई काम नहीं है।

दूसरा व्यक्ति : यहाँ बैठकर पढ़ना-लिखना करना भी कोई काम नहीं है।

पहला व्यक्ति : तुम अभी पढ़ते हो ?

दूसरा व्यक्ति : तुमसे मतलब ?

पहला व्यक्ति : अपने देश की तवारीख पढ़ी है ?

[दूसरा व्यक्ति सिगरेट जलाता है और गुस्से से चुपचाप एक ओर देखने लगता है।]

पहला व्यक्ति : अजीब बात है। आजकल के नौजवान अपने देश की तवारीख का नाम

सुनते ही सिगरेट पीने लगते हैं। हमारी पीढ़ी में यह नहीं था। हमने इतिहास जिया और भोगा है, और इतिहास के एक महान् अध्याय की रचना की है। हमने स्वतंत्रता संग्राम···

दूसरा व्यक्ति : (**काटकर**) चुप रहो, यही सब सुनाने के लिए तुम रोज़ यहाँ आते हो ?

पहला व्यक्ति : (**उठकर**) और तुम यहाँ हम पर गुस्सा निकालने आते हो ? (**रुककर**) एक सिगरेट मुझे नहीं दे सकते ? (**लेकर**) हे राम, कितनी तेज़ सिगरेटें तुम लोग पीते हो। हमारे ज़माने में इस तरह सिगरेट पीने का रिवाज नहीं था। हम इस उमर तक सत्याग्रही थे। हमारे सामने एक महान उद्देश्य था···कोई···कुछ ऐसा था, जो हर क्षण हमें इन्सपायर किया रखता था।

[यह कहता हुआ टेबल से टिक कर खड़ा हो जाता है। सिगरेट पीता है। धुआँ छोड़कर उसमें देखता हुआ बोलता है।]

पहला व्यक्ति : धुएँ में असंख्य लकीरें हैं। सब अलग-अलग बिखरती, टूटती हुई वायु-मंडल के मुँह में समाती जा रही हैं। यह परिवेश जैसे एक बहुत बड़ी छिपकली है और यह सारी लकीरों को मुँह से चाटती जा रही है।

दूसरा व्यक्ति : (**सिगरेट मसलता हुआ**) तुम्हें इस तरह बोर करने का कोई अधिकार नहीं है।

पहला व्यक्ति : हमने तब सिगरेट नहीं पी थी। कॉफी का नाम भी नहीं सुना था। 1941 में पहली बार इसका नाम सुना था···हमारे मुरारजी गुरु ने तेरह दिन का उपवास तोड़ा था···आत्मशुद्धि का उपवास···अंगरेज कलक्टर ने अपने हाथ से उन्हें कॉफी पिलायी थी।

[बेयरा आता है।]

बेयरा : एक कॉफी···तीन गिलास पानी···।

पहला व्यक्ति : अजीब लोग हैं—इनको कौन समझाए ? इनसे कोई क्या कहे ?··· इनमें इतना बेमतलब गुस्सा आता है···!

दूसरा व्यक्ति : चुप रहो !

[उसकी चिल्लाहट से जैसे सब झनझना कर टूट जाता है—एक ही क्षण में।]

दूसरा व्यक्ति : यहाँ एक और कुरसी दो।

पहला व्यक्ति : थी···यानी, यह इतिहास की बात है। और, इतिहास में क्या नहीं है ?

दूसरा व्यक्ति : यहाँ की वह कुर्सी कहाँ है ?

बेयरा : भीतर है। उस पर एक सज्जन पुरुष बैठे हैं।

दूसरा व्यक्ति : उस सज्जन पुरुष से कहो···

बेयरा : सर, वह कम सुनते हैं।

दूसरा व्यक्ति : मैं लिख कर देता हूँ···

बेयरा : सर, उन्हें बहुत कम दिखाई देता है।

[पहला व्यक्ति कॉफी पी रहा है।]

पहला व्यक्ति : दरअसल आप उस सज्जन पुरुष को नहीं जानते, तभी आपको इतना गुस्सा है। मैं उन्हें पिछले पच्चीस वर्षों से जानता हूँ।

दूसरा व्यक्ति : तो आप उन्हीं के पास जाकर क्यों नहीं बैठ जाते ?

पहला व्यक्ति : मैं यही तो आपसे अर्ज करना चाहता हूँ···आप उस सज्जन पुरुष को नहीं जानते। यही तो वह सुराजी गुरु है। अब यह हर वक्त कॉफी पीता है और एक भीड़ से घिरा रहता है।

दूसरा व्यक्ति : मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानना चाहता।

पहला व्यक्ति : यही वह चाहता है।

दूसरा व्यक्ति : यह मेरी इच्छा है।···मुझे किसी की परवाह नहीं।

पहला व्यक्ति : उसे भी किसी की परवाह नहीं।

दूसरा व्यक्ति : मैं देखता हूँ···

पहला व्यक्ति : वह हम में देख रहा।

दूसरा व्यक्ति : मैं उसे जबरन उठाकर कुर्सी ले आता हूँ। वह कुर्सी यहाँ की है। मैं उस पर पिछले छह दिनों से लगातार बैठता रहा हूँ।

बेयरा : (रोककर) सर, वह पिछले बीस वर्षों से लगातार बैठे हैं।

दूसरा व्यक्ति : पिछले छह दिनों से यहाँ हम बैठते रहे हैं। तुम गवाह हो···तुमने हमें देखा है। यहाँ वह बैठती थी···मैं यहाँ बैठता था।

बेयरा : सही है। छह दिनों तक वह शहर से बाहर थे।

पहला व्यक्ति : (**जिसने अब तक कॉफी समाप्त कर ली है**) भई, मैं छह दिनों मैडिकल चेकअप के लिए अस्पताल में था। मुझे ब्लड प्रेशर की शिकायत है। सुबह से दोपहर तक 'लो' और दोपहर से आधी रात तक 'हाई' मुझे नींद नहीं आती। तब मैं यौगिक क्रिया द्वारा ब्लड प्रेशर को बदल देता हूँ ! सुबह से दोपहर तक 'हाई' और दोपहर के बाद 'लो', फिर मैं सोता हूँ।

दूसरा व्यक्ति : बन्द करो यह अपनी बकवास।···मुझे यहाँ बैठकर उससे बात करनी है।

पहला व्यक्ति : बेयरा ! साहब क्या कह रहा है ?

बेयरा : साहब अपनी गर्ल फ्रेंड का इन्तजार करना माँगता है। गर्ल फ्रेंड !···

दूसरा व्यक्ति : (**क्रोध से**) मुझे यहाँ बैठना है। हट जाओ···छोड़ दो !···

[दोनों व्यक्तियों में कुर्सी के लिए युद्ध। बेयरा दौड़कर मेज पर से कप-प्लेट और गिलास उठाकर तेज़ी से चला जाता है। मेज गिर गई है। कुर्सी अब भी पहले व्यक्ति के हाथ में है। दूसरा व्यक्ति चोट खाकर नीचे गिरा है। बेयरा हाथ में दो गिलास पानी लिए आता है।]

बेयरा : सज्जन पुरुष ने आप लोगों को शीतल जल पिलाने के लिए कहा है। जिसे ज्यादा चोट आई है वह थोड़ा रुक कर पिएगा, जिसे कम आई है वह फौरन पिए।

[पहला व्यक्ति पानी पीता है।]

पहला व्यक्ति : आपके पास सिगरेट होगी···।

[दूसरा व्यक्ति सिगरेट का पैकट उसके मुंह पर फेंकता है। वह लेकर सिगरेट मुंह में लगाता है।]

पहला व्यक्ति : (उठकर कुर्सी पर बायाँ पैर रखकर) मैं स्वतन्त्रता संग्राम में लड़ा हूँ। देश को आजाद कराने में मेरा योग है, हाथ है, पार्ट है। इन्कलाब जिन्दाबाद के बोल पर मुझ में खून बरसा है। 'भारत छोड़ो' के नारे पर हमने बलिदान दिया है···।

[बेयरा धीरे से ताली बजाता है।]

दूसरा व्यक्ति : मैं यहाँ तुम्हारे लिए नहीं आया था। मुझे अगर पता होता कि यहाँ तुम्हारे जैसा बेहूदा आदमी बैठा है तो मैं यहाँ हरगिज नहीं आता। यह सच है कि मैं तुम्हारी तरह स्वतन्त्रता संग्राम में नहीं लड़ा, पर वह कोई संग्राम भी था। तुमने बलिदान दिया···जब विद्रोह ही नहीं तो संग्राम कैसा ?···

पहला व्यक्ति : अरे···स्वतन्त्रता संग्राम और कैसा होता है ! अरे···रे···रे···वाह रे वाह···मेरे मिट्टी के शेर···!

दूसरा व्यक्ति : स्वतन्त्रता संग्राम वह होता है जो नीचे से लड़ा जाता है···नीचे से ऊपर तक···। ऊपर से नीचे नहीं। जिस में मूलभूत परिवर्तन होता है···सुधार नहीं—'पावर का ट्रांसफर' नहीं। शक्ति की नई सृष्टि जो आजाद जमीन से पैदा होती है।

पहला व्यक्ति : अरे···रे······रे···अरे···बेयरा, इन्हें कॉफी पिला···!

दूसरा व्यक्ति : मेरा मजाक किया तो सिर तोड़ दूंगा···!

पहला व्यक्ति : दरअसल अभी आप को अनुभव नहीं है। आपमें इतना उत्साह है···यह काबिले तारीफ है। और, मैं इसकी बड़ी इज्जत करता हूँ।

दूसरा व्यक्ति : मुझे पेट्रोनाइज करने की कोशिश मत करना, तुम जैसों ने हमारी जिन्दगी बरबाद की है।

पहला व्यक्ति : क्या कहा ! क्या···रुको···रुको···जरा, मुझे समझने दो···दरअसल मैं हाई स्कूल भी नहीं पास हूँ। 1942 में नवीं कक्षा में पढ़ता था···तभी स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़ा···।

दूसरा व्यक्ति : कूद पड़े या किसी ने धक्का मार दिया !

पहला व्यक्ति : जरा समझने दो···समझने दो, यह बहुत अच्छा विषय है। देखिए न, कॉफी हाउस कितनी उम्दा जगह है।···तो आपने कहा, कि मैंने आपकी जिन्दगी बरबाद की है। अर्थात् मैं भी कहूँ, उस सज्जन पुरुष ने मेरी जिन्दगी बरबाद की।

यह बहुत अच्छा निष्कर्ष है···इस पर एक ज़ोरदार सौ रुपये वाली कहानी लिखी जा सकती है।

[काग़ज़ पर तेज़ी से नोट करने लगता है। दूसरा व्यक्ति उस काग़ज़ को छीनकर फाड़ता है।]

दूसरा व्यक्ति : तुम्हारे कल की दिलचस्पी केवल निष्कर्ष ढूँढ़ने में थी। उसी प्रक्रिया ने एक ओर सुभाष बोस को देश से बाहर निकाला, दूसरी ओर अरविन्द को योगी बनाया।

पहला व्यक्ति : यह सब मुझे लिख लेने दो, नहीं तो मैं भूल जाऊँगा।

[इस बीच बेयरा दौड़ा हुआ अन्दर जाता है और तेज़ी से बाहर आता है।]

बेयरा : सज्जन पुरुष ने आपसे विनम्र निवेदन किया है कि आप थोड़ा ज़ोर-ज़ोर से बोलें, ताकि वह आपकी स्पीच सुन सकें। उन्होंने आपके लिए काजू के साथ क्रीम कॉफी का आर्डर दे दिया है।

दूसरा व्यक्ति : वह आर्डर उसी के चेहरे पर दे मारो!

बेयरा : वह सचमुच बहुत सज्जन व्यक्ति हैं। उनमें ज़रा भी क्रोध नहीं है।

दूसरा व्यक्ति : मुझमें है···जाकर बोल दो उससे!

बेयरा : उन्हें सब पता है। वह सबके कल्याण के लिए हर वक्त चिन्तन करते रहते हैं।

दूसरा व्यक्ति : तू चुप रहता है कि नहीं?

बेयरा : जब तक वे यहाँ बैठे रहेंगे, यहीं खड़े रहने की मेरी ड्यूटी है।

दूसरा व्यक्ति : तो खड़ा रह!

बेयरा : सर, माफ कीजिए, बोलना भी मेरी ड्यूटी में शामिल है।

[इस बीच पहला व्यक्ति अपने बैग से कुछ और लेटरहेड, पैड, पेपर, रसीद-बुक और मोहरदानी निकालता है। कुछ पत्र-पत्रिकाएँ और हैण्डबिल भी।]

पहला व्यक्ति : (सहसा एक हैण्डबिल पढ़ता है) देवियो और सज्जनो! यह गहरी चिन्ता और दुःख का विषय है कि हमारी राष्ट्रीय चेतना दिनोदिन, उत्तरोत्तर, क्षीण होती जा रही है। वैयक्तिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर हमारे चरित्र का क्रमशः पतन हो रहा है। क्या परिवार, क्या घर, क्या दफ्तर, क्या शिक्षण संस्थाएँ और क्या सार्वजनिक जीवन-क्षेत्र···सर्वत्र एक इंडिसिप्लिन, इंडिसिप्लिन ···ऐं इंडिसिप्लिन का अनुवाद आप क्या करेंगे?···

दूसरा व्यक्ति : अपना सिर!

पहला व्यक्ति : अपना सिर···ऐ बेयरा, सज्जन पुरुष से पूछा—इंडिसिप्लिन का हिन्दी अनुवाद क्या होगा?

[बेयरा तेज़ी से जाकर आता है।]

बेयरा : सज्जन पुरुष ने कहा है, यही इंडिसिप्लिन चलने दीजिए। उन्हें यह बहुत प्रिय

है। इसमें उनका मनोरंजन होता है।

पहला व्यक्ति : (पढ़ता हुआ) तो हाँ, सर्वत्र एक इंडिसिप्लिन छाई हुई है। इसके लिए यह परम आवश्यक है कि हम जगह-जगह, स्थान-स्थान···(**सहसा दूसरे व्यक्ति की ओर देखता है**) क्यों, आपने कान क्यों बन्द कर रखे हैं ? यह इश्तहार कैसा लगा आपको ? यह मैंने तैयार किया है। देखिए, मुझे अभी बहुत काम करना है, घर से भागकर इसीलिए सुबह-सुबह मैं यहाँ आता हूँ।

दूसरा व्यक्ति : आप से पहले मैं आया हूँ।

पहला व्यक्ति : बन्धु, नाराज़ मत हो, हम दोनों की पीड़ा कहीं समान है। हम दोनों हमसफर हैं, हमदर्द हैं।

दूसरा व्यक्ति : मैं तुमसे बात नहीं करना चाहता।

पहला व्यक्ति : ऐसा मत कहो, बात ही तो हमारा जीवन है। हम या तो व्यस्त रहते हैं या खाली रहते हैं, उसी खाली को भरने के लिए हम यहाँ आते हैं। इस तरह चुप मत हो। यह खामोशी मुझे घूरती है ''बोलो···कुछ बोलो···। तुम तो बहुत अच्छा बोलते हो !

[दूसरे व्यक्ति को स्नेह से छूता है। वह उपेक्षा करता है।]

पहला व्यक्ति : भई, मुझे बहुत काम करना है। इतना काम कि तुम उसकी कल्पना नहीं कर सकते। इस तरह मुझे अभी पाँच इश्तहार और लिखने हैं। तीन के प्रूफ देखने हैं, दो के प्रिण्ट आर्डर देने हैं। ये सारे पैड रखे हैं न, ये सारी महत्त्वपूर्ण संस्थाएँ हैं, मैं किसी का मंत्री, किसी का अध्यक्ष, किसी का कोषाध्यक्ष और किसी का संचालक हूँ। पता नहीं, मुझे कितने-कितने पत्र लिखने हैं। यह देखो, मेरी आज की डायरी, इतने लोगों से मुझे स्वयं मिलना है। इतनी जगहों पर लोग खुद मुझ से मिलने आयेंगे। इतने लोगों को मुझे लोगों से मिलाना है।···मैं कितना व्यस्त हूँ और कितनी-कितनी ज़िम्मेदारियाँ मेरे ऊपर हैं। पूछो इस बेयरा से, यहाँ नित्य आने वाला वह पहला व्यक्ति मैं होता हूँ और रात के सवा दस बजे यहाँ से जाने वाला वह आखिरी व्यक्ति मैं होता हूँ···पहला और आखिरी ! (**कुर्सी पर बैठकर पैड पर लिखने में व्यस्त हो जाता है। लिखते-लिखते सहसा**) क्या कहा था ?···संग्राम···नीचे से होता है···नीचे···याने ?

दूसरा व्यक्ति : (**गुस्से में डूबा है**) जूतों की ठोकरों से !

पहला व्यक्ति : (**लिखता हुआ**) जूतों की ठोकरों से। (**फिर रुकता है**) नीचे से ऊपर··· और ऊपर से नीचे···इन दोनों में कुछ फर्क है क्या ?

दूसरा व्यक्ति : इस फर्क के अनुमान के अनुमान के लिए आपको शीर्षासन करना होगा !

पहला व्यक्ति : सच !···ओह तभी महापुरुष लोग हर सुबह शीर्षासन किया करते थे···जरूर इसमें कोई रहस्यशक्ति है। मैं अभी करता हूँ।

[शीर्षासन करने का प्रयत्न, बार-बार गिरता है। बेयरा ऊपर टाँग संभालता है।]

(घबरा जाता है) ओह, सारी दुनिया उलटी दिखाई पड़ रही है। जो ऊपर था वह नीचे हो गया, जो नीचे था वह ऊपर हो गया।

दूसरा व्यक्ति : और बीच में क्या है ?

पहला व्यक्ति : (**त्रस्त होकर**) केवल शून्य···केवल शून्य। छोड़ दो, छोड़ दो मुझे। छोड़ दो ! (**घबराकर खड़ा हो जाता है, साँसें फूल रही हैं**) बेकार की बातें हैं ये। मुझे इन से क्या मतलब ! मुझे कितना काम करना है। मैं तुम्हारी तरह बेकार नहीं। मेरे जीवन का अब भी एक लक्ष्य है···मुझे अब भी आशा है। प्लीज, एक सिगरेट दीजिए।

[मुँह में पेन्सिल लगा लेता है। इसे सिगरेट समझ कर पीता है और लिखने लगता है।]

दूसरा व्यक्ति : (**बेयरा से**) आज कॉफी हाउस में इस तरह चौगुनी भीड़ क्यों है ?

बेयरा : सर, आधे लोग तो वही हैं जो यहीं रोज बैठते हैं, शेष लोग नए हैं। कल से ये लोग भी बैठने लगेंगे। सर, मतलब यह कि···आज दफ्तरों, स्कूल-कालेजों में स्ट्राइक है।

दूसरा व्यक्ति : हम दोनों ने कल यहीं मिल बैठने का वायदा किया था। वह आएगी तो कहाँ बैठेगी···? तुम्हें पता होना चाहिए, वह मामूली लड़की नहीं है।

बेयरा : सर, वह बाहर सड़क पर आकर ही खड़ी हो गई होगी।

दूसरा व्यक्ति : वह किसी की परवाह नहीं करती। उसे किसी का डर नहीं है।

बेयरा : सर, वह कॉफी हाउस के भीतर आने की कोशिश कर रही होगी।

दूसरा व्यक्ति : उसे कोई नही रोक सकता !

पहला व्यक्ति : (**चिल्लाता है**) डोंट डिस्टर्ब, देखते नहीं, मैं इस वक्त कितना व्यस्त हूँ !

बेयरा : पर भीतर वह सज्जन पुरुष खाली बैठा है—मुझे उनके लिए बोलना ही होगा। यह नौकरी मुझे उन्ही की वजह से मिली है।

दूसरा व्यक्ति : वह इधर से आएगी।

बेयरा : नहीं, इधर से, हाल में···से होती हुई !

दूसरा व्यक्ति : क्यों ?

बेयरा : इधर वह सज्जन पुरुष बैठा है !

दूसरा व्यक्ति : कहाँ बैठा है ? कौन है वह ? क्या है ? क्यों है ?

बेयरा : (**रोकता है**) सर, नहीं नहीं, आप उधर नहीं जा सकते !

दूसरा व्यक्ति : (**आवेश में**) ज्यादा बकवास किया तो उठाकर फेंक दूंगा।

बेयरा : सर, मार-पीट करने के लिए उधर उतना बड़ा हाल है।

[दूसरा व्यक्ति बायें दरवाज़े पर खड़ा होकर हाल की ओर देखता है। हाल में झगड़ा हो रहा है। मार-पीट। एक प्लेट दूसरे व्यक्ति के पेट पर लगती है। वह चीख पड़ता है।]

दूसरा व्यक्ति : (**दर्द से**) हाय मार डाला ! (**बेयरा से**) बदतमीज़, तू यह दरवाज़ा बन्द क्यों नहीं रखता ?

बेयरा : सर, यह आप ही लोगों का कॉफी हाउस है।

दूसरा व्यक्ति : मुझे खामखा इतनी चोट लगी है !

[वह दरवाज़ा बन्द करना चाहता है। बेयरा उसे रोकता है।]

बेयरा : मैं कहता हूँ सर, यह दरवाज़ा इसी तरह खुला रहेगा।

दूसरा व्यक्ति : (**क्रोध से**) बदतमीज़···नालायक !

पहला व्यक्ति : अ-ह ह ! मेरा वह तीसरा इश्तहार पूरा हो गया ! (**पढ़ने लगता है**) पालतू कुत्तों की शानदार, भव्य प्रदर्शनी। आइए···आइए···बड़ी से बड़ी तादाद में आइए। अपने पालतू कुत्तों को पकड़े हुए आइए !···

दूसरा व्यक्ति : अब दरवाज़ा बन्द होगा या नहीं ?

पहला व्यक्ति : रामलीला मैदान में करीब ढाई हज़ार कुत्तों के आने की आशा है। (**पढ़ते हुए**) कुत्ता वह पहला जानवर है, जो मनुष्य के समीप आया। हज़ारों वर्ष से यह दोनों जीव साथ-साथ रहते आए हैं। दोनों ने समान रूप से एक-दूसरे को प्रभावित किया है। कुत्ते का हमारा सांस्कृतिक जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। चन्द्रलोक की परिक्रमा करने वाला जीव यही कुत्ता था। कुत्ता एक धार्मिक जीव है···यह भौंकता भी है और पूँछ भी हिलाता है ! (**जैसे कुत्ते को बुलाया जाता है वैसे बेयरे से कहता है**) जा, एक कप कॉफी ला !

बेयरा : माफ कीजिए सर, मैं कुत्ता नहीं हूं। (**बेयरा जाता है।**)

दूसरा व्यक्ति : तुम्हें एक इश्तहार के कितने पैसे मिलते हैं ?

पहला व्यक्ति : वह इस बात पर मुनहसर करता है कि इश्तहार का विषय क्या है।

दूसरा व्यक्ति : मसलन इसी कुत्ते के विषय का···?

पहला व्यक्ति : इसका पेमेंट तो सबसे ज्यादा है···मसलन यही एक हफ्ते कॉफी हाउस में आने-जाने का पूरा खर्चा।

[बेयरा आता है। दूसरा व्यक्ति दरवाज़े पर खड़ा उस सज्जन पुरुष को देखता है।]

बेयरा : हाँ सर, वहाँ खड़े-खड़े आप उन्हें बेशक निहारिए···देखिए···घूरिए···जो चाहे कीजिए।

दूसरा व्यक्ति : (**नफ़रत से**) छी···छी···इस तरह दोसा खा-खाकर अपने चारों ओर घिरे हुए लोगों के बीच बात कर रहा है जैसे चभर-चभर कोई कुत्ता खा रहा हो और कचर-कचर बेसिर-पैर की बातें कर रहा हो !

बेयरा : सर, धीरे-धीरे। वह सज्जन पुरुष इस वक्त प्रेस कान्फरेंस कर रहे हैं !

दूसरा व्यक्ति : इस तरह चभर-चभर खाते हुए प्रेस कन्फरेंस ?

बेयरा : हां, सर, प्रेस काफरेंस—फूड प्रोब्लम पर !

दूसरा व्यक्ति : वह इतने गन्दे ढंग से खा-खाकर बातें कर रहा है कि मैं आज से अब कभी दोसा नहीं खा पाऊँगा।

बेयरा : इन्कलाब ज़िंदाबाद !

पहला व्यक्ति : (सहसा लिखना बन्द कर) क्या कहा ? क्या कहा, फिर से तो कह, क्या कहा, फिर से तो कह !

बेयरा : हाँ क्या कहा ! पता नहीं क्या कहा, अभी मैंने क्या कहा था···हाँ क्या कहा था ?

दूसरा व्यक्ति : (दरवाज़े पर) चला जा यहाँ से ! भाग जा !

[पृष्ठभूमि में लोगों की हँसी।]

पहला व्यक्ति : (बेयरा के संग सोचता-सा) तूने अभी कुछ कहा था। दो शब्द थे। बहुत अच्छे शब्द थे। तूने हाथ उठाकर कहा था···तेरे होंठ फड़क पड़े थे···तेरी आँखें चमकी थीं।

बेयरा : वह दरअसल मैंने कल रात फिलिम में देखा था सर, वहीं दोनों शब्द कहकर हीरो-हिरोइन के संग गाने लगा था !

पहला व्यक्ति : वह गाना क्या था···बता, फिर वह शब्द मुझे याद आ जाएगा।

बेयरा : कुछ इसी तरह था···तनु डोले रे, मनु डोले रे···

पहला व्यक्ति : (सोचने में डूब गया है) आगे···इसके आगे और क्या है ?

बेयरा : सर, मुझे शरम लगता है।

पहला व्यक्ति : (जैसे कोई स्वप्न देख रहा है) उन्नीस सौ बयालीस के वे दिन···हम लोग अपने नेता के साथ जुलूस में जा रहे थे। वही शब्द आगे···वही शब्द पीछे···वही शब्द आगे-पीछे···पूरे वातावरण में···वही शब्द। क्या था वह शब्द···तेरे मुँह से वही शब्द अभी-अभी निकला था ··बता···याद···कर उस शब्द की मुझे सख्त ज़रूरत है···मुझे अभी लिखना है और उसमें उस शब्द का इस्तेमाल करना है !

दूसरा व्यक्ति : उसकी टेबल पर कई किताबें रखी हुई हैं। उन किताबों में शायद वह शब्द हो !

बेयरा : नहीं सर, वे किताबें ज्योतिष और हस्तरेखा की हैं।

दूसरा व्यक्ति : (आवेश में) उसकी टेबल उलट दो, तब शायद उसके नीचे वह किताब मिल जाए···जिसमें वह शब्द हो !

पहला व्यक्ति : तुम्हें भी वह शब्द भूल गया ?

दूसरा व्यक्ति : मुझे अब तक याद था···उस पिछले सेकंड तक, जब मैं यहाँ आकर खड़ा हुआ, पर उसे देखते ही मैं सब कुछ भूल गया···सबके बीच अकेले उस तरह खाना ···और खाते-खाते उसका हर क्षण बोलते रहना ! (रुककर) एक मिनिट के लिए मुझे उसके पास जाने दो···मैं उसकी टेबल उलट दूँगा···उसे ज़मीन पर गिराकर उसकी कुर्सी छीन लूँगा···

कर रहा है कि मैं आज से अब

क्या कहा, फिर से तो कह, क्या

क्या कहा था···हां क्या कहा

था !

कहा था। दो शब्द थे। बहुत
फड़क पड़े थे···तेरी आंखें

, वहीं दोनों शब्द कहकर

याद आ जाएगा।

और क्या है ?

चालीस के वे दिन···हम
आगे···वही शब्द पीछे···
क्या था वह शब्द···तेरे
कर उस शब्द की मुझे
का इस्तेमाल करना

किताबों में शायद वह

के नीचे वह किताब

वहाँ आकर खड़ा
इस तरह खाना
मिनिट के लिए
पर गिराकर

बेयरा : सर, यह नहीं हो सकता।

पहला व्यक्ति : क्या कहा ?···यह नहीं हो सकता ?

बेयरा : हाँ सर, उस सज्जन पुरुष के पास यह सज्जन साहब नहीं जा सकते।

दूसरा व्यक्ति : (**चिल्ला पड़ता है**) मेरा नाम सज्जन नहीं !···मैं इस संज्ञा से नफरत करता हूँ।

बेयरा : अच्छा, अच्छा, मैं जब तक यहाँ हूँ यह साहब उस सज्जन पुरुष के पास नहीं जा सकते।

दूसरा व्यक्ति : मैं तेरा सिर तोड़ दूंगा।

बेयरा : सर, वेरी सौरी !

दूसरा व्यक्ति : मैं तुझे यहीं खामोश कर दूंगा।

बेयरा : सर, वह सज्जन पुरुष यही चाहता है।

पहला व्यक्ति : तभी उसने बीच में तुझे खड़ा कर दिया है !···बीच में यही शून्य है, लोग यहाँ पत्थर फेंकें···यह चारों ओर आवाज है, लोग इसमें मारपीट कर अपने गुस्से को जलाएँ। लोग अपना गुस्सा उल्टी संज्ञा में निकालें···ऐंटी···ऐंटी···ऐंटी···।

[बेयरा घूमकर दूसरे व्यक्ति की जगह खड़ा हो जाता है। दूसरा व्यक्ति पहले व्यक्ति के संग खड़ा हो जाता है।]

दूसरा व्यक्ति : लगता है, यह उसी का आदमी है।

पहला व्यक्ति : उसी वजह से इसे यहाँ बेयरा की नौकरी मिली है।

दूसरा व्यक्ति : यह किसी तरह पटाया नहीं जा सकता ?

पहला व्यक्ति : मुझे कभी ऐसी जरूरत नहीं पड़ी। बल्कि, कभी सोचा ही नहीं।

दूसरा व्यक्ति : आज तो हम दोनों की जरूरत है। उस शब्द को तुम्हें लिखने में इस्तेमाल करना है, उस शब्द पर मुझे उससे कुछ बातें करनी हैं। उसके यहाँ पहुँचने से पहले मुझे वह शब्द याद रहना चाहिए।

पहला व्यक्ति : तुम्हारी उस गर्ल फ्रेंड का नाम क्या है ?

दूसरा व्यक्ति : दिस इज इर्रिलेवेंट !

पहला व्यक्ति : इर्रिलेवेंट क्या है ?

दूसरा व्यक्ति : वही शब्द ! और वह उस शब्द का प्रतीक है।

पहला व्यक्ति : ओह वंडरफुल ! फिर तो यहाँ उसके बैठने का इंतजाम होना ही चाहिए।

[इस बीच बेयरा भीतर आकर प्लेट में बची जूठी चीजें ले जाता है।]

पहला व्यक्ति : बेयरा, कहीं से एक कुर्सी का इन्तजाम करना ही होगा।

बेयरा : इम्पॉसीबुल सर, बाहर भीड़ बढ़ती जा रही है।

पहला व्यक्ति : कहाँ जा रहा है ?

बेयरा : सज्जन पुरुष की आज्ञा है, देश में अनाज की कमी है, खाने की चीजें फेंकी न जाएँ। बाहर भिखारियों की भीड़ खड़ी है।

[बायीं ओर से चला जाता है। उसी क्षण बायीं ओर से शोर उठता है। बेयरा उलटे पाँव दौड़ा आता है।]

बेयरा : बाप रे बाप ! इतनी भीड़ !

पहला व्यक्ति : इधर से क्यों नहीं जाता ?

बेयरा : अब इधर से जाना मना है।

दूसरा व्यक्ति : क्यों ?

बेयरा : अब यहीं से यह जूठन भिखारियों के पास फेंकना होगा, इस देश में भिखमंगों की हालत देखो, खाएँगे तो 'सेंडविचेज' के ही जूठन खाएँगे। (फेंकता है) ले ! अरे···रे···रे झगड़ता क्यों है ! अरे सालो, आपस में झगड़ने से क्या होगा ? ये ले···हॉट डॉग।···सब इम्पोर्टेड है, बेटा !···अरे झगडना नहीं···लड़ना नहीं ···सज्जन पुरुष अभी भीतर बैठा है···आज बहुत माल निकलेगा। (फेंकता है) ये ले···हैम्बर्गर !···यही है अब स्वदेशी···!

पहला व्यक्ति : (सहसा) क्या कहा ! तूने अभी क्या कहा ?

बेयरा : दाँत से पकड़े हूँ···कहीं उस शब्द की तरह वह भी न भूल जाए, स्वदेशी··· स्वदेशी···यानी इम्पोर्टेड···!

पहला व्यक्ति : हमने तब विदेशी माल में आग लगाई थी (दूसरे व्यक्ति से) तुम लिखने जाओ, मैं बोल रहा हूँ···मैं बोलता जाऊँगा···रुका कि सब कुछ भूल जाऊँगा।··· स्वदेशी···स्वदेशी···स्वदेश मन है, स्वदेश है। स्वदेश नाम की तब एक लड़की भी थी।

बेयरा : स्वदेश प्रसाद मेरे पिता का नाम था।

पहला व्यक्ति : तब भारतवर्ष ही स्वदेश था।

[दूसरा व्यक्ति तेजी से लिखता जा रहा है। पैड के कागज भरते जा रहे हैं, वह फाड़-फाड़कर नीचे फेंकता जाता है। पहला व्यक्ति बटोरता जाता है···समेटता है।]

पहला व्यक्ति : हमारे उस स्वदेश में कैसे-कैसे नेता थे ! उन्होंने कितने-कितने बलिदान दिए ! सारा स्वदेश एक महान् प्रेरणा में बँधा था···चारों ओर एक प्रकाश फूट रहा था···। ओह, तुम लिखा क्यों नहीं रहे ? सारा गुड़ गोबर कर दिया···यह एक सम्पादकीय था···आज शाम को इसे मैं बीस रुपये में बेच देता···।

दूसरा व्यक्ति : (उठता हुआ) तुम इसे केवल बीस रुपये में बेचोगे। और यह देश ?

पहला व्यक्ति : सावधान, मैं अपने देश के गौरव के खिलाफ कुछ भी सुनना पसन्द नहीं करूँगा।

दूसरा व्यक्ति : इस देश की क्या कीमत है, इसका सही-सही हिसाब जोड़ा जा चुका है,

बल्कि आधी रकम एडवांस में दी जा चुकी है।

पहला व्यक्ति : तेरी गर्ल फ्रेंड नहीं आई अभी तक, तेरा दिमाग कहीं चढ़ तो नहीं गया ?

दूसरा व्यक्ति : अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में इसका भाव खुल चुका है। सट्टेबाज शेयर मार्केट में चिल्ला रहे हैं।

[पृष्ठभूमि में अनेक स्वरों में 'आए राम', 'गए राम',···'गए राम !']

पहला व्यक्ति : (चीख पड़ता है) चुप करो···चुप करो !

[एक ठंडी खामोशी खिंच गई है।]

बेयरा : सर, भीतर वह आ गई है !

दूसरा व्यक्ति : वह आ गई है !

बेयरा : गर्ल फ्रेंड !

दूसरा व्यक्ति : मिनी···! **(दौड़ता है, दरवाज़े पर रुककर देखता है और पुकारता है)** मिनी !

बेयरा : सर, ज़रा धीरे पुकारिए, सज्जन पुरुष उससे कुछ बात कर रहे हैं।

दूसरा व्यक्ति : (गुस्से से) क्या बकता है ? ···मिनी, सुना मिनी ! **(रुक कर)** ओह ! उसके लिए अब कुर्सी का इन्तज़ाम करना ही होगा। **(आवेश में)** मैं उसे कुर्सी से धक्का देकर अपनी दोस्त के लिए कुर्सी लाने जा रहा हूँ।

[बेयरा दौड़कर पकड़ लेता है।]

बेयरा : (पैर पकड़ कर) नहीं-नहीं, सर, ऐसा करना गलत होगा। चारों ओर उपद्रव फैल जाएगा।

दूसरा व्यक्ति : अब मेरे बर्दाश्त के बाहर है।

पहला व्यक्ति : (दौड़कर रास्ता रोकता है) हाँ, यह सही कहता है। सज्जन पुरुष को मत हटाओ। नहीं तो महा ज़ुल्म हो जाएगा। चारों ओर केयास फैल जाएगा। यह सारी व्यवस्था भंग हो जाएगी। हमारा यहाँ रहना गैरमुमकिन हो जाएगा।

दूसरा व्यक्ति : कौन है तू ?

पहला व्यक्ति : मैं···मैं·· मैं···मैं···एक व्यक्ति हूँ।

दूसरा व्यक्ति : तू कुछ और है !

पहला व्यक्ति : मैं तुम्हारी ही तरह एक व्यक्ति हूँ, इस देश का नागरिक हूँ।

दूसरा व्यक्ति : नहीं, तू अंग्रेज़ है ! वही अंग्रेज़, जिससे शायद तू लड़ा था। उस अजीब लड़ाई ने तुझे उलटे वही बनने को मजबूर कर दिया जिससे तू लड़ रहा था। वह इतना आश्चर्यजनक दुश्मन था कि तू उसी के अनुसार संग्राम करने को विवश हुआ। तेरे संग्राम की सारी नीति उसी दुश्मन के हाथ में थी।

पहला व्यक्ति : तूने देखा था ?

दूसरा व्यक्ति : देख रहा हूँ।

पहला व्यक्ति : असम्भव !

दूसरा व्यक्ति : मैं तेरा ही वर्तमान हूँ···जैसे कि तू मेरा भूत है। (**विराम**) यहाँ की सारी लड़ाई व्यक्तिगत है···बिल्कुल निजी स्तर पर। बहुत छोटी-सी बात को हम बड़ा रूप देने के आदी हैं। और बड़ी बात को हम न देख पाने को अभिशप्त हैं।

बेयरा : सर, तभी आप उस कुर्सी के लिए आज इतना परेशान हैं। कल से मैं यहाँ दो कुर्सी रखूंगा।

पहला व्यक्ति : रुको-रुको, मुझे याद कर लेने दो···कितने पते की बात है यह, (**दौड़कर लिखने लगता है**) हम जिसके खिलाफ लड़ते हैं, एक दिन वही खुद बन जाते हैं···और···और क्या कहा? (**सहसा**) ओह···सब कुछ मैं कितनी जल्दी भूल जाता हूँ···लगता है मेरा लिवर खराब है।

बेयरा : सर, इस उमर में गेहूँ नहीं खाना चाहिए।

पहला व्यक्ति : वह शब्द है, सोच, तूने क्या कहा था?

बेयरा : सर, फिलिम में है···जयहिन्द टाकीज में वह फिलिम चल रही है।

पहला व्यक्ति : मुझे अभी जरूरत है अभी, अपने लेख में उसे डालना है, इन्हें गर्ल फ्रेंड से उसी विषय पर बात करनी है।

दूसरा व्यक्ति : तुम लोग मुझे जाने क्यों नहीं देते? मैं उस सज्जन पुरुष को कुर्सी से उलट दूंगा! फिर वह शब्द अपने आप फूटेगा!

पहला व्यक्ति : (**सोचता है**) कुर्सी उलटने से ही वह शब्द फूटेगा तो मूल वही कुर्सी है। यह सारा चक्कर उसी के लिए है। (**दौड़ता है**) नहीं-नहीं, (**लिखने लगता है**) आप उस सज्जन पुरुष के पास नहीं जा सकते। कम-से-कम वह आदमी सीधा तो है, मैं उसे इतने दिनों से जानता हूँ। अगर तूने उसे कुर्सी से नीचे गिराने की कोशिश की तो उसके बाद यहाँ इस तरह मारपीट, लूट, डाके शुरू होंगे कि तू यहाँ खड़ा नहीं बचेगा।

दूसरा व्यक्ति : याद करो स्वतन्त्रता संग्राम के वे दिन···ठीक ऐसा ही उसने भी कहा था, कि हम स्वेज़ कनाल पार नहीं कर पाएँगे कि···।

[दोनों मूर्तिवत् चुप हो जाते हैं।]

बेयरा : (**घबराया हुआ**) कि···कि···कि··· (**सहसा दौड़ता है**) यस सर!

[दायीं ओर जाता है। दोनों व्यक्ति गुस्से से निःशब्द बातें कर रहे हैं। पहला व्यक्ति सत्याग्रही चेष्टाएँ करता है, दूसरा व्यक्ति क्रोध भरी आवेशजन्य मुद्राएँ दिखा रहा है। बेयरा थोड़ी देर बाद आता है।]

बेयरा : सर···ओ मिस्टर! ओ बाबू लोग···सज्जन पुरुष बहुत परेशान हैं, आप लोग इस तरह अचानक चुप क्यों हो गए? आप लोगों की बातें आप लोगों का गुस्सा, आप लोगों का सारा व्यवहार उन्हें बहुत प्रिय है। उनका प्रेस कान्फरेंस खत्म हो गया है। स्ट्राइक वालों का एक डेलिगेशन उनसे मिलने आया है। वह भी थोड़ा

देर में चला जाने वाला है। आप लोग बोलकर बातें कीजिए और सर···सर···ओ सर !

[दोनों व्यक्ति उसी तरह बेयरा को निःशब्द पूछते हैं कि क्या उनके मुँह से बोल नहीं निकल रहा है ।]

बेयरा : अरे आप लोग बोल नहीं पा रहे हैं ? जी नहीं, मुझे तो कुछ नहीं सुनाई पड़ रहा है। जी···कुछ नहीं···कोई आवाज़ नहीं। अच्छा-अच्छा···ज़रा ज़ोर से हँसिए, शायद कुछ सुनाई पड़े ।

[दोनों हँसते हैं, पर वही निःशब्द ।]

बेयरा : अरे खिलखिला कर हँसिए···अरे, ठहाका मारकर हँसिए !

[दोनों हँसते हैं ।]

बेयरा : (**परेशान**) नहीं, कुछ नहीं, कोई आवाज़ नहीं···कोई एक शब्द भी नहीं···क्या कहा ? मैं बहरा हूँ, जी नहीं, आप दोनों गूँगे हो गए। आपके मुँह से कोई आवाज़ ही न निकले तो मैं क्या सुनूँ ! देखिए न, दायीं ओर से आवाज़ आ रही है···मैं उसे सुनना भी न चाहूँ तो मुझे सुनाई दे रही है । (**कान लगाकर सुनता है**) सज्जन पुरुष ने अभी आपकी फ्रेंड से कहा है, किसी एक बड़ी नौकरी के लिए । (**फिर सुनता है**) ओह, वह अपने फ्यूचर कैरियर के बारे में बात कर रही है। (**कान लगाता है**) उसके साथ इंटरप्रेटर बनकर विदेश यात्रा पर जाएगी ।

[दूसरा व्यक्ति लगातार प्रयत्न करता हुआ इस बिन्दु पर आकर चीख पड़ता है ।]

दूसरा व्यक्ति : नहीं, नहीं, नहो !

[पहला व्यक्ति निःशब्द बोल रहा है ।]

बेयरा : ओह, अब विश्वास हो गया कि मैं बहरा नहीं हूँ, मुझे भी विश्वास था कि आप लोग गूँगे नहीं हो सकते। (**सहसा कान लगाकर सुनता है ।**) ओह ! सज्जन पुरुष कहता है कि हमें नित्य अपनी डायरी लिखनी चाहिए। (**फिर सुनता है**) और डायरी वह होनी चाहिए जिसके हर पृष्ठ पर किसी महापुरुष का धर्म-सन्देश छपा हो। (**सुनता है**) महापुरुष वही जो अपने व्यक्तिगत विश्वास के लिए लाखों-करोड़ों आदमी की जान की ज़रा भी परवाह नहीं करता। (**सुनता है**) भावना-प्रधान व्यक्ति ही महान होता है ।

[पहला व्यक्ति भी इस बिन्दु पर बोलने लगता है ।]

पहला व्यक्ति : नहीं, नहीं, नहीं, उसे कुछ पता नहीं । वह सब कुछ भूल गया है । वह अपनी बेहोशी में सो रहा है। अन्याय, अत्याचार का घड़ा मुँह तक भर गया है। लोग अब बर्दाश्त नहीं करेंगे । हर चीज़ की हद होती है । अब रात बीतने को है। नया सूरज उगने को है । हमारे बीच में से कोई एक सहसा उठ खड़ा होगा, और···

और···और···और···।

बेयरा : और···और···और···।

[वही निःशब्द हँसी। वह स्वयं हँसने लगता है। उसी तरह निःशब्द वह भी बोलता है। न बोल पाने की असमर्थता पर बेहद दुखी होता है। संकेत से कह रहा है कि उसकी नौकरी चली जाएगी।]

पहला व्यक्ति : अरे, तुझे क्या हो गया?

दूसरा व्यक्ति : बस, इसे इसी तरह गूंगा रहने दो। इससे बात मत करो। अच्छा है, तेरी नौकरी छूट जाए···तू उसका आदमी था न! जा, अब उसी के पास···हम से हाथ मत जोड़।···मुझे तुझ से कोई हमदर्दी नहीं।

[बेयरा पहले व्यक्ति के पैर पर गिरता है।]

पहला व्यक्ति : मुझे भी तुझ से कोई हमदर्दी नहीं (सहसा रुककर) शायद हम दोनों में भी कोई हमदर्दी नहीं है। उन दोनों में भी नहीं···। यह (बेयरा) महापुरुष है··· इसमें अभी कुछ चमका है। यह अपनी गूंगी वाणी में कुछ कह रहा है···उसने हमारे भीतर से एक दूसरे के लिए हमदर्दी छीनकर हमें अलग-अलग बांट दिया है।

दूसरा व्यक्ति : (आवेश में) यह सारा फ्राड है, मैं उसे खत्म करके रहूंगा।

[बेयरा इस बिन्दु पर ठहाका मार कर हँस पड़ता है।]

बेयरा : (उसी हँसी में) तुम दोनों (पहले व्यक्ति से) तुम्हें कोई महापुरुष चाहिए (दूसरे व्यक्ति से) और तुम्हें एक फ्रेंड चाहिए···और मुझे वही सज्जन पुरुष··· जिंदाबाद···!

[भीतर भागता है।]

पहला व्यक्ति : जिन्दाबाद···इसके पहले वाला शब्द क्या है?

[तेज़ी से दौड़ता है और सोचने लगता है। दूसरा व्यक्ति उसे बड़े गौर से देखता है। तभी बेयरा आता है। उसके हाथ में कुछ सामान है।]

बेयरा : देखिए···सुनिए···सज्जन पुरुष ने आप दोनों के लिए यह उपहार दिया है। आप बड़े हैं, महान में विश्वास करते हैं, इसलिए आप को भेंट है यह एक महापुरुष की आत्मकथा। (पहले व्यक्ति को भेंट करता है) और आप बड़े उत्साही हैं। आपके विद्रोह भाव से सज्जन पुरुष बहुत प्रभावित हुए हैं। (डिब्बा खोलता है) आप के लिए उन्होंने यह मिनी सूट भेजा है।

दूसरा व्यक्ति : मिनी सूट, यह क्या बतमीजी है!

बेयरा : आपकी गर्ल फ्रेंड को सज्जन पुरुष ने मिनी साड़ी प्रेज़ेन्ट की है।

दूसरा व्यक्ति : (फेंकता है) ले जाओ, उसके सिर पर फेंक दो!

बेयरा : सज्जन पुरुष ने कहा है, यदि आप एक मिनिट में इस सूट को पहन कर तैयार

हो जाएँगे तो आप भीतर जा सकते हैं।

[दूसरा व्यक्ति नफरत से उस मिनी सूट को पहनने का प्रयत्न करता है।]

बेयरा : (पहले व्यक्ति से) आप इस पुस्तक में वही शब्द ढूँढ़िए। यदि एक मिनिट में ढूँढ़ लेंगे तो अन्दर जा सकते हैं।

[एक सूट पहन रहा है। दूसरा पुस्तक में कुछ ढूँढ़ रहा है।]

बेयरा : जल्दी कीजिए, वह एक मिनिट खत्म हो जाएगा !

दूसरा व्यक्ति : यह मुझसे नहीं पहना जाता।

पहला व्यक्ति : इस पुस्तक में मुझे कुछ नहीं सूझ रहा है।

बेयरा : जल्दी कीजिए···।

दूसरा व्यक्ति : इसका पहनना असम्भव है !

पहला व्यक्ति : इसके पृष्ठ कोरे हैं !

बेयरा : ढूँढ़िए···ढूँढ़िए। आप पहनने की कोशिश कीजिए।

पहला व्यक्ति : यहाँ सब कुछ निजी स्तर पर है—ऊपर-नीचे···नीचे-ऊपर···जो जिसका विरोध करता है, वह वही होना चाहता है !

बेयरा : जल्दी, जल्दी···समय खत्म हो रहा है।

[बेयरा यही बोल रहा है। पहला व्यक्ति अपनी बात एक बिन्दु पर पहुँचाता है। तीनों मूर्तिवत् रह जाते हैं।]

[पर्दा]